

ॐ

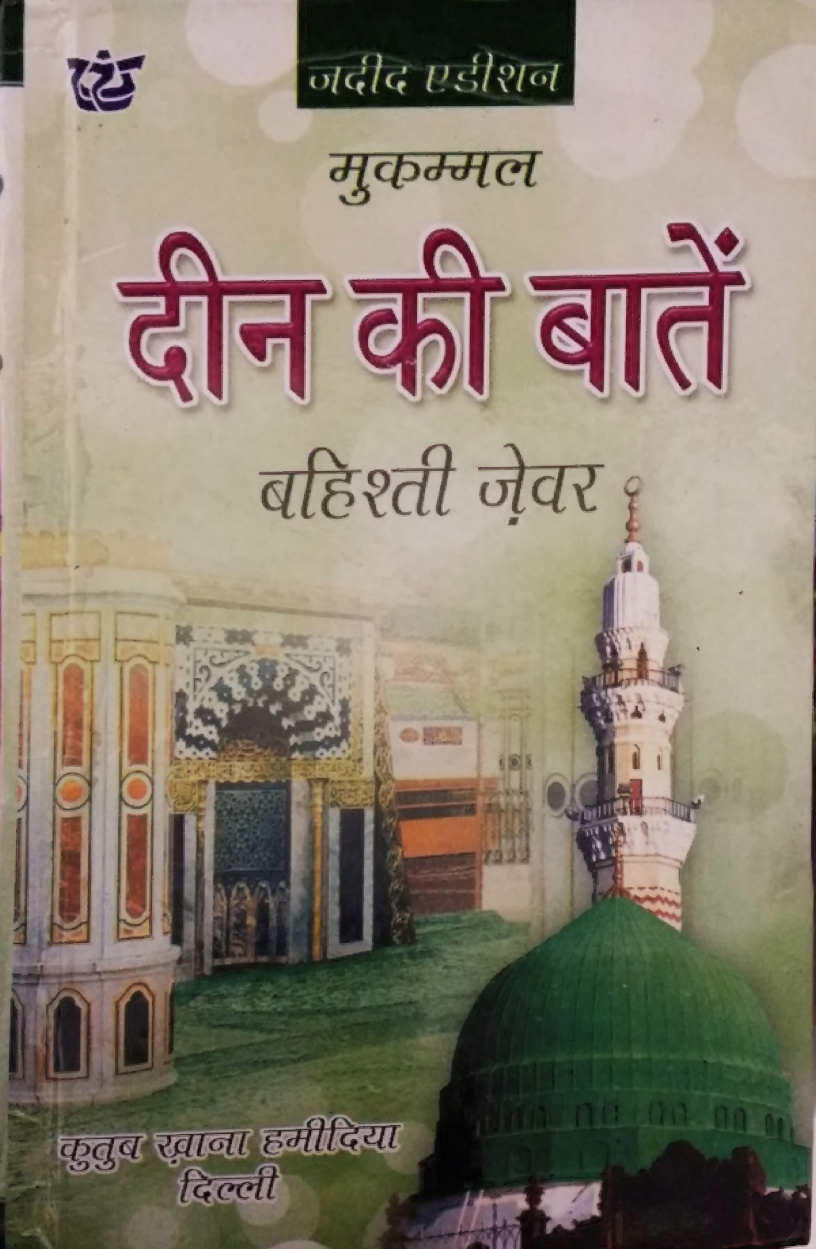
नदीद एडीशन

मुकम्मल

दीन की बातें

बहिश्ती ज़ेवर

कुतुब खाना हमीदिया
दिल्ली



मुकम्मल

दीन की बातें

(बहिश्ती ज़ेवर)

रचयिता

मौलाना अशरफ अली धानवी

नाशिर

कुतुबखाना हमीदिया

324, गली गढ़ीया, जामा मस्जिद, दिल्ली-6

फोन 23261834 (S), 23264113 (R)

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

मुकम्मल

दीन की बातें

(बहिश्ती ज़ेवर)

किताब का नाम : मुकम्मल दीन की बातें (बहिश्ती ज़ेवर)

लेखक : मौलाना अशरफ़ अली धानवी

पृष्ठ : 416

प्रकाशन वर्ष :

संख्या : 1100

मूल्य : 100 रुपये

प्रकाशक : कुतुबख़ाना हमीदिया

324, गली गङ्गीया, जामा मस्जिद, दिल्ली-8
फोन : 23261834 (S), 23264113 (R)

विषय सूची

1. तहारत (स्वच्छता)

१	१ बुजू (बदन के अंगों का पाक करना)	1
२	२ बुजू तोड़ने वाली बातें	7
३	३ मजबूरियाँ	12
४	४ गुस्स (स्नान करना)	14
५	५ गुस्स कैसे वाजिब होता है ?	17
६	६ गुस्स कब फर्ज नहीं होता ?	19
७	७ जब गुस्स करना मुन्नत होता है	20
८	८ गुस्स कब मुस्तहब होता है ?	21
९	९ बुजू और गुस्स का पानी	22
१०	१० पानी का इस्तेमाल कब और कैसे ?	26
११	११ कुआँ	27
१२	१२ बुजू न होने पर	30
१३	१३ सोते में नापाक हो जाना	31
१४	१४ जानवरों का जूटन	31
१५	१५ तयम्मूम	33
१६	१६ मौजों का मसह	39
१७	१७ हैज और इस्तिहाजा	43
१८	१८ हैज की पाबन्दियाँ	45
१९	१९ निफास	48
२०	२० हैज और निफास का ब्यान	50
२१	२१ निजासत कैसे पाक की जाए ?	52
२२	२२ पाकी और नापाकी	57
२३	२३ इस्तिजा	60
२४	२४ पेशाब-पाखाने के वक़्त की एहतियातें	63
२५	२५ चीज़ें जिन से इस्तिजा नहीं होता	63
२६	२६ चीज़ें जिन से इस्तिजा किया जाए	64

2. सलात (नमाज़)

२७	१ नमाज़ क्या है ?	65
२८	२ नमाज़ का वक़्त	65

२९	३ अज्ञान	69
३०	४ अज्ञान व तकबीर	72
३१	५ अज्ञान, तकबीर की सुन्नतें व मुस्तहब	74
३२	६ नमाज़ की शर्तें	78
३३	७ जवान होना	82
३४	८ कबले की तरफ मुंह करना	83
३५	९ फर्ज नमाज़ पढ़ना	84
३६	१० कुरआन शरीफ पढ़ने का तरीका	93
३७	११ जमाअत	94
३८	१२ जमाअत की बड़ाई और ताकीद	95
३९	१३ जमाअत के वाजिब होने की शर्त	96
४०	१४ जमाअत का सही होना	97
४१	१५ जमाअत के अहकाम	105
४२	१६ मुक्तदी और इमाम	106
४३	१७ जमाअत में शामिल हो सकना	113
४४	१८ नीयत के मसायल	116
४५	१९ नमाज़ के खास मसायल	117
४६	२० फर्ज और वाजिब के मसायल	119
४७	२१ नमाज़ की सुन्नतें	121
४८	२२ नमाज़ टूट जाना	122
४९	२३ नमाज़ का फासिद हो जाना	125
५०	२४ नमाज़ मकरुह करने वाली बातें	127
५१	२५ नमाज़ तोड़ देना	131
५२	२६ नमाज़ में गंदगी हो जाना	133
५३	२७ वित्र नमाज़	135
५४	२८ सुन्नत और नफिल नमाज़ें	137
५५	२९ तरावीह की नमाज़	145
५६	३० भूल का सज्दा	147
५७	३१ तिलावत का सज्दा	155
५८	३२ बीमारी की नमाज़	160
५९	३३ सफर की हालत में नमाज़	163
६०	३४ कजा नमाज़ें	169
६१	३५ इस्तखारा	172
६२	३६ डर की नमाज़	174

६३.	३७ कत्ल और तौबा की नमाज़ें	174
६४.	३८ इस्तिस्का की नमाज़	175
६५.	३९ कुसूफ और खुसूफ नमाज़ें	176
६६.	४० जुमे की नमाज़	177
६७.	४१ जुमे के दिन किए जाने वाले काम	178
६८.	४२ जुमे की नमाज़ का सवाब	179
६९.	४३ जुमे की नमाज़ कब वाजिब होती है ?	179
७०.	४४ जुमे की नमाज़ की शर्तें	180
७१.	४५ खुत्बे के मसायल	181
७२.	४६ नबी सल्ल० का जुमे वाला खुत्बा	183
७३.	४७ जुमा की नमाज़ के मसायल	188
७४.	४८ ईदैन की नमाज़ें	189
७५.	४९ कअबे में नमाज़ पढ़ना	193

3. जनाज़ा (अन्त्येष्टि)

७६.	१ मर जाने पर क्या करें?	195
७७.	२ नहलाना	197
७८.	३ कफन	200
७९.	४ जनाज़े की नमाज़	204
८०.	५ मैयत का दफनाना	211
८१.	६ शहीद की मौत	218
८२.	७ मस्जिद के अहकाम	220

4. रोज़ा

८३.	१ रोज़ा	223
८४.	२ रमज़ान शरीफ के रोज़े	224
८५.	३ चांद देखना	226
८६.	४ सहरी और इफ्तार	228
८७.	५ क़ज़ा रोज़े रखना	230
८८.	६ नज़र का रोज़ा	231
८९.	७ नफ़ली रोज़ा	232
९०.	८ रोज़े की क़ज़ा और कफ़ारा	234
९१.	९ रोज़ा तोड़ना	242

९२	१० फिदया	245
९३	११ एतकाफ	247

5. ज़कात

९४	१ ज़कात क्या है ?	253
९५	२ पैदावार की ज़कात	258
९६	३ ज़कात किस पर जायज़ है?	260
९७	४ जानवरों की ज़कात	264
९८	५ ऊट की ज़कात	265
९९	६ गाय और भैंस का हिसाब	265
१००	७ बकरी और भेड़ की ज़कात	266
१०१	८ ज़कात के खास मसालत	266
१०२	९ सदका-ए-फ़ित्र क्या है	267
१०३	१० कुर्बानी	269
१०४	११ अकीका	277

6. हज

१०५	१ हज क्या है ?	280
१०६	२ हज करने का तरीका	286
१०७	३ हज्जे बदल	293
१०८	४ औरतें हज में क्या करें ?	294
१०९	५ हज करने से रुक जाना	295
११०	६ जज़ा और कफ़ारा	296
१११	७ मदीने की ज़ियारत	299

7. निकाह

११२	१ निकाह का मतलब	300
११३	२ जिन लोगों से निकाह हराम है	301
११४	३ वली या मालिक	305
११५	४ मेल और बेमेल आदमी	309
११६	५ महर	310
११७	६ महर मिस्त	314
११८	७ काफ़िरों का निकाह	314
११९	८ बीवियों में बराबरी करना	315

१२०	९ दूध पीना और पिलाना	316
१२१	१० तलाक	319
१२२	११ रुखसती से पहले तलाक	322
१२३	१२ तीन बार तलाक देना	323
१२४	१३ बीमार आदमी का तलाक देना	326
१२५	१४ तलाक के बाद बीवी को रोक लेना	327
१२६	१५ बीवी के पास न जाने की कसम	330
१२७	१६ बीवी को माँ के बराबर कह देना	331
१२८	१७ कफ़ारा अदा करना	334
१२९	१८ बीवी को बदचलन कहना	335
१३०	१९ महर को बदले तलाक देना	336
१३१	२० शौहर का लापता हो जाना	338
१३२	२१ इहत	338
१३३	२२ मौत की इहत	340
१३४	२३ सोग करना	341
१३५	२४ रोट्टी कपड़ा	342
१३६	२५ रहने का घर	344
१३७	२६ हलाती लड़का	345
१३८	२७ औलाद का पालना	346
१३९	२८ कसम खाना	347
१४०	२९ दीन से फिर जाना	348
१४१	३० जिक्र करना	350
१४२	३१ हलाल और हराम चीज़ें	350
१४३	३२ नशे की चीज़ें	351
१४४	३३ चांदी सोने के बर्तन	352
१४५	३४ लिबास और पर्दा	352
१४६	३५ खुदा के लिए देना	358
१४७	३६ बदन के बाल	359

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
نَحْمَدُهُ وَنُصَلِّي عَلَى رَسُولِهِ الْكَرِيمِ

1. तहारत (स्वच्छता)

1. वुजू (बदन के अंगों का पाक करना)

वुजू करने वाले को चाहिए कि वुजू करते वक़्त क़िबले की तरफ़ मुंह करके किसी ऊँची जगह बैठे और वुजू शुरू करते ही “बिस्मिल्लाह” (शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से) कहे। सबसे पहले तीन बार पंहुँचों तक हाथ धोए। फिर तीन बार कुल्ली करे और मिस्वाक करे अगर मिस्वाक (दातून) न हो तो उंगली से अपने दांत साफ़ कर ले और अगर रोज़ादार हो तो गरारा न करे। फिर तीन बार नाक में पानी डाले और बाएँ हाथ से नाक साफ़ करे लेकिन जिसका रोज़ा हो, वह जितनी दूर तक नर्म गोश्त है, उससे ऊपर पानी न ले जाए। फिर तीन बार मुंह धोए कि सर के बालों से लेकर ठोड़ी के नीचे तक और इस कान की लौ से उस कान की लौ तक सब जगह पानी बह जाए फिर तीन बार दाहिना (सीधा) हाथ कोहनी समेत धोए। फिर बायाँ (उल्टा) हाथ कोहनी समेत तीन बार धोए और एक हाथ की उंगलियों को दूसरे हाथ की उंगलियों में डालकर खिलाल (दांत, दाढ़ या मसूढ़ों में लगी खाने की कोई चीज़ साफ़ करना, क़ुरेदनी) करे और अंगूठी व छल्ला जो कुछ पहने हुए हो, हिला ले। फिर एक बार पूरे सर का मसह (हाथ फेरना) करे, फिर कान का मसह करे। कान के अन्दर

की तरफ कलमे की उंगली (हाथ के अंगूठे के बराबर वाली पहली उंगली) से और कान के ऊपर की तरफ का अंगूठों से मसह करे लेकिन गले का मसह न करे।

कान के मसह के लिए नया पानी लेने की ज़रूरत नहीं है। सर के मसह से जो बचा हुआ पानी हाथ में लगा है वही काफी है। और तीन बार दाहिना (सीधा) पांव टखने समेत धोए, फिर बायां (उल्टा) पांव टखने समेत तीन बार धोए। बायें हाथ की उंगलियों से पैर की उंगलियों का खिलाल करे। पैर की दाहिनी उंगलियों से शुरू करे और बाईं उंगलियों पर ख़त्म करे। यह वुजू का मसनून (विधिवत रूप से बताया हुआ) तरीका है लेकिन इसमें कुछ चीज़ें फर्ज़ (अत्यावश्यक) हैं; कुछ सुन्नत (रसूले खुदा हज़रत मुहम्मद सल्ल० का कार्य) और कुछ मुस्तहब (अच्छा, वह आदत जिसका अदा करना बेहतर हो)!

मस'ला १— (प्रश्न, समस्या, धार्मिक आदेश) १— वुजू में फर्ज़ कुल चार बातें हैं— एक बार पूरा मुंह धोना, एक बार कोहनियों समेत दोनों हाथ धोना, एक बार चौथाई सर का मसह करना, एक बार टखनों समेत दोनों पांव धोना। बस फर्ज़ इतना ही है, इनमें से अगर एक भी चीज़ छूट जाएगी या कोई (जगह) बाल बराबर भी सूखी रह जायेगी तो वुजू न होगा।

मस'ला २— पहले पहुंचों तक दोनों हाथ धोना, बिस्मिल्लाह कहना, कुल्ली करना, नाक में पानी डालना, मिस्वाक करना, सारे सर का मसह करना, बदन के हर हिस्से को तीन-तीन बार धोना कानों का मसह करना हाथों और पैरों की उंगलियों का खिलाल करना। ये सब बातें सुन्नत हैं और इनके सिया और जो बातें हैं वे सब मुस्तहब हैं।

मस'ला ३— जब चार हिस्से जिनका धोना फर्ज़ है, धुल जायेंगे तो वुजू हो जाएगा, चाहे वुजू का कस्द (इरादा) हो या न हो। जैसे: कोई नहाते वक़्त सारे जिस्म (शरीर) पर पानी बहाए और वुजू न करे या हौज़ में गिर पड़े या पानी बरसते में बाहर खड़ा हो जाए और वुजू

के हिस्से धुल जायें तो बुजू पूरा हो जाएगा, लेकिन बुजू का सबाब (नेक बदला) न मिलेगा।

मस'ला ४— सुन्नत यह है कि उसी तरह बुजू करे, जिस तरह ऊपर बताया गया है। अगर कोई उल्टा बुजू करे जैसे पहले पांव धो डाले, फिर मसह करे, फिर दोनों हाथ धोए; फिर मुंह धो डाले या और किसी तरह उलट-पलट कर बुजू करे, तब भी बुजू तो हो जाता है लेकिन सुन्नत के मुताबिक नहीं होता और गुनाह हो जाने का डर है।

मस'ला ५— इसी तरह अगर बायां हाथ या बायां पांव पहले धोया तब भी बुजू हो गया लेकिन यह मुस्तहब के खिलाफ (दिरुद्ध) है।

मस'ला ६— एक हिस्से को धोकर दूसरे हिस्से को धोने में इतनी देर न लगाए कि पहला हिस्सा खुरक हो जाए बल्कि उसके खुरक होने से पहले-पहले दूसरा हिस्सा धो डाले।

मस'ला ७— हर हिस्से को धोते वक़्त यह भी सुन्नत है कि उस पर हाथ फेर ले ताकि कोई जगह सूखी न रहे।

मस'ला ८— मुंह धोने के बाद दाढ़ी का और तीन बार खिलाल करे।

मस'ला ९— जो जगह रुख़सार (गाल, कपोल) और कान के बीच में है, उसका धोना फर्ज़ है।

मस'ला १०— टोढ़ी का धोना फर्ज़ है, बशर्ते कि दाढ़ी के बाल उस पर न हों या हों तो इतने कम कि खाल नज़र आए।

मस'ला ११— होठों का जो हिरसा होंट बन्द होने के बाद दिखाई देता है, उसका धोना फर्ज़ है।

मस'ला १२— दाढ़ी या मूँछ या भवें अगर इतनी घनी हों कि खाल नज़र न आए तो उस खाल का धोना जो छुपी हुई है, फर्ज़ नहीं है बल्कि बालों पर से ही पानी बहा देना काफी है।

मस'ला १३— भौवें, दाढ़ी या मूँछ इतनी घनी हों कि उसके नीचे की जिल्द (घर्म, खाल) छुप जाए और नज़र न आए तो ऐसी सूरत में इतने बालों का धोना वाजिब (ज़रूरी, जिसके लिए रसूलुल्लाह सल्ल० ने ताकीद फ़रमाई) है जो चेहरे की हद के अन्दर हो। बाकी जो बाल बताई हुई हद से आगे बढ़ गए हों उनका धोना वाजिब नहीं है।

मस'ला १४— वक़्त से पहले ही पुजू करना मुस्तहब है।

मस'ला १५— जब तक कोई मजबूरी न हो खुद अपने हाथ से पुजू करे यानी किसी और से पानी न डलवाए और पुजू करने में दुनिया की कोई बातचीत न करे। पानी चाहे फ़राग़त (बहुतायत) का क्यों न हो, चाहे दरिया के किनारे पर हो, लेकिन तब भी पानी ज़रूरत से ज़्यादा खर्च न करे और न पानी में बहुत कमी करे ताकि अच्छी तरह धोने (पुजू करने) में दिक्कत (परेशानी, कठिनाई) न हो। न किसी हिस्से को तीन बार से ज़्यादा धोए और मुंह धोते वक़्त पानी का छीटा ज़ोर से मुंह पर न मारे न फुंकार मार कर छीट उड़ाए और न अपने मुंह और आंखों को बहुत ज़ोर से बन्द करे (क्योंकि) ये सब बातें मकरुह (नापसन्दीदा, धिनीनी) और मना (वर्जित) हैं।

मस'ला १६— किसी औरत की अंगूठी छल्ले, घूड़ी, कंगन, नाक की कील (जैसी घीज़ें) ढीली हों कि बग़ैर हिलाए भी उनके नीचे पानी पहुंच जाए सब भी उनका हिला लेना मुस्तहब है और (वे) ऐसी तंग हों कि बग़ैर हिलाए पानी न पहुंचने का गुमान (शक, सन्देह) हो तो उनको हिला कर अच्छी तरह पानी पहुंचा देना ज़रूरी और वाजिब है।

मस'ला १७— अगर किसी के नाखून के ऊपर आटा लग कर सूख गया और उसके नीचे पानी नहीं पहुंचा तो पुजू नहीं हुआ। जब भी याद आए और आटा देखे तो छुटा कर पानी डाल ले और अगर कोई नमाज़ पढ़ ली तो उसको फिर से पढ़े।

मस'ला १८— जब पुजू कर घुके तो कुरआन शरीफ की सूर: 'इन्ना अन्जलना' पढ़कर यह नीचे वाली दुआ पढ़े :

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِيْ مِنَ التَّوَّابِيْنَ وَاجْعَلْنِيْ مِنَ الْمُتَطَهِّرِيْنَ
 وَاجْعَلْنِيْ مِنْ عِبَادِكَ الصَّالِحِيْنَ وَاجْعَلْنِيْ مِنَ الدِّيْنِ
 لَا خَوْفَ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ط

अल्लाहुम्माज्जअल्ली मिनत्तव्वाबीन वज्जअलनी मिनल् मु त-तह
 हिरीन वज्जअल्ली मिन् इबादिकस्सालिहीन वज्जअल्ली मिनल्लजी न
 ला खौफुन अलैहिम बला हुम यहजनून०

ऐ अल्लाह! कर दे मुझे तौबा करने वालों में से और कर दे मुझको
 गुनाहों से پاک होने वाले लोगों में से। कर दे मुझको नेक बन्दों में से
 और कर दे मुझे उन लोगों में से जिनको दोनों जगहों में कुछ डर
 नहीं।

मस'ला १९— जब वुजू कर चुके तो दो रकअत नमाज़ (तहीय्यतुल
 वुजू) पढ़े। हदीस शरीफ में इसका बड़ा सवाब आया है।

मस'ला २०— अगर एक नमाज़ के लिए वुजू किया और दूसरी
 नमाज़ का वक़्त आ गया और वुजू नहीं टूटा तो दूसरी नमाज़ पढ़ना
 जायज़ है। अगर ताज़ा वुजू करे तो बहुत सवाब मिलता है।

मस'ला २१— जब एक बार वुजू कर लिया और वह नहीं टूटा तो
 जब तक उस वुजू से कोई इबादत न करे, उस वक़्त तक दूसरा वुजू
 करना मकरूह और मना है।

मस'ला २२— अगर किसी के हाथ या पांव फट गए हों और
 उसने उन में मोम, रौगन (तेल) या और कोई दवा (औषधि) भर ली
 और उस के निकालने (पोंछने) से नुकसान होगा तो उसे बिला
 निकाले ऊपर पानी बहा दिया तो वुजू ठीक है।

मस'ला २३— वुजू करते वक़्त ऐड़ी या बदन के किसी और हिस्से
 पर पानी नहीं पहुंचा और वुजू कर चुकने पर मालूम हुआ कि कोई

खास जगह सूखी रह गई तो वहां पर हाथ फेर लेना काफी नहीं है बल्कि पानी बहाना ज़रूरी है।

मस'ला २४— अगर हाथ पैर में कोई फोड़ा या फुंसी है या और कोई ऐसी बीमारी है कि उस पर पानी डालने से नुकसान होता है तो पानी न डाले, बल्कि भीगा हुआ हाथ फेर ले — यह मसह कहलाता है। अगर इससे भी नुकसान हो तो हाथ भी न फेरे। और उतनी जगह बगैर धोए छोड़ दे।

मस'ला २५— अगर जख्म (घाव) पर पट्टी बंधी हो और पट्टी खोल कर जख्म पर मसह करने से नुकसान हो या पट्टी खोलने-बांधने में बड़ी दिक्कत हो तो पट्टी के ऊपर मसह कर लेना ठीक है।

मस'ला २६— हड्डी के टूट जाने के वक़्त बांस की खपचियां रख कर टक्की बनाकर बांध ली जाती है। उसके लिए भी यह हुक्म (आदेश) है यानी जब तक टक्की न खुले, उसके ऊपर ही हाथ फेर लिया करे। फ़स्द (रग खोलना, गन्दा खून निकालना) की पट्टी के लिए भी यह हुक्म है।

मस'ला २७— टक्की या पट्टी (दोनों में) अच्छा तो यह है कि पूरी टक्की पर मसह किया जाए। अगर पूरी टक्की पर मसह न करे बल्कि आधे से ज्यादा पर करे तब भी जायज़ है, लेकिन आधी टक्की या उस से कम पर मसह करना जायज़ नहीं।

मस'ला २८— टक्की या पट्टी अगर खुल कर गिर पड़े और जख्म अच्छा नहीं हुआ तो उसे फिर बांध ले। अगर पहला मसह बाकी है तो दोबारा मसह करने की ज़रूरत नहीं। अगर जख्म अच्छा हो गया और बांधने की ज़रूरत नहीं है तो मसह टूट गया। अब उतनी जगह धो कर नमाज़ पढ़े, मगर दोबारा बुज़ू करना ज़रूरी नहीं।

मस'ला २९— मरिजद के फ़र्श पर बुज़ू करना ठीक नहीं है।

2. वुजू तोड़ने वाली बातें

मस'ला १— पेशाब, पाखाने और पेट की हवा निकलने से वुजू टूट जाता है। अगर आगे (पेशाब करने की इच्छियाँ) से कोई कीड़ा जैसे केंचुआ कंकरी वगैरा निकले तब भी वुजू टूट जाता है।

मस'ला २— अगर किसी के जख्म में से कोई कीड़ा निकले, या कान या जख्म में से गोरत का कोई हिस्सा कटकर गिरा मगर खून नहीं निकला तो इससे वुजू नहीं टूटता।

मस'ला ३— अगर किसी ने फस्द ली। नवसीर फूटी या चोट लगी और खून व पीप निकले तो वुजू टूट गया। लेकिन अगर खून या पीप जख्म के मुँह पर ही दिखाई दे और आगे न बढ़े तो वुजू ठीक रहा। अगर किसी के सूई चुभ गई और उस जगह से खून निकला मगर बहा नहीं तो वुजू नहीं टूटा लेकिन अगर थोड़ा-सा भी अपनी जगह से यह बढ़ा तो वुजू टूट गया।

मस'ला ४— अगर किसी ने अपनी नाक में उंगली डाली और उसे बाहर निकालने पर उंगली में खून का धब्बा मालूम हुआ लेकिन वह खून बस इतना ही है कि उंगली में थोड़ा-सा लगा, बहा नहीं तो वुजू नहीं टूटा।

मस'ला ५— किसी की आँख के अन्दर कोई दाना फूट गया और उस का पानी या पीप आँख में फैल गया, मगर बाहर नहीं निकल सका तो वुजू नहीं टूटा। लेकिन अगर आँख से बाहर पानी या पीप निकल पड़ा तो वुजू टूट गया। इसी तरह अगर कान के अन्दर कोई दाना है और वह फट गया तो जब तक खून या पीप उस जगह तक सूराख के अन्दर रहे जहाँ नहाते वक़्त पानी पहुंचाना फर्ज नहीं है, तब तक वुजू नहीं टूटता। लेकिन अगर खून पीप बह कर ऐसी जगह आ जाये जहाँ पानी पहुंचाना फर्ज है तो वुजू टूट जाएगा।

मस'ला ६— अगर किसी ने अपने फोड़े या छाले के ऊपर का

छिलका नोच डाला और उसके नीचे खून या पीप दिखाई देने लगा लेकिन किसी तरफ निकलकर बह न सका तो बुज्जू ठीक रहा। लेकिन वह बह पड़ा तो बुज्जू दूट जाएगा।

मस'ला ७— किसी के फोड़े में बड़ा गहरा घाव हो गया तो जब तक खून व पीप जख्म के सुराख के अन्दर ही अन्दर रहे, बाहर निकलकर बदन पर न आए तो बुज्जू नहीं दूटता।

मस'ला ८— अगर फोड़े-फुन्सी का खून अपने आप नहीं निकला बल्कि उसे दबा कर निकाला गया और बहने लगा तब भी बुज्जू दूट जाएगा।

मस'ला ९— किसी के घाव से थोड़ा-थोड़ा पीप और खून निकलने लगा और उसने उसे कपड़े से साफ कर लिया। थोड़ी देर बाद फिर निकला और फिर उसने साफ कर लिया। इस तरह कई बार ऐसा हुआ तो दिल में सोचे कि अगर ऐसा मालूम हो कि साफ न किया जाता तो बह पड़ता तब बुज्जू दूट जाएगा, लेकिन अगर ऐसा मालूम हो कि साफ न किया जाता तब भी न बहता तो बुज्जू न दूटेगा।

मस'ला १०— अगर किसी के थूक में खून मालूम हुआ और थूक सफेद या पीले रंग का है तो बुज्जू नहीं दूटा। लेकिन अगर थूक में खून ज्यादा निकला और उसकी रंगत सुर्ख है तो बुज्जू दूट गया।

मस'ला ११— अगर दांत से कोई चीज़ काटने पर खून का धब्बा मालूम हुआ या दांत या दाढ़ कुरेदा और खिलाल (दांत कुरेदने की सीक या पतली नोकदार सलाई जिससे दांतों या दाढ़ों में फंसा कचरा निकाला जाए) में सुर्खी दिखाई दी लेकिन थूक में खून का रंग बिल्कुल भी मालूम नहीं हुआ तो बुज्जू नहीं दूटता।

मस'ला १२— मक्खर या खटमल के खून पी लेने से बुज्जू नहीं दूटता।

मस'ला १३— अगर किसी के कान में दर्द होता है और पानी निकलता है तो यह पानी नजिस (नापाक) है। उसके निकलने से बुज्जू

दूट जाएगा। जब पानी कान के सुराख में से निकल कर उस जगह खून आ जाए जिसका नहाते वक़्त धोना फर्ज है या अगर आंखें दुखती या खटकती हैं तब भी पानी या आंसू बहने से बुजू दूट जाता है। लेकिन अगर आंखें न दुखें और न उनमें कुछ खटक हो तो आंसू निकलने से बुजू नहीं दूटता।

मस'ला १४— अगर औरत की छाती से पानी निकलता है और दर्द भी होता है तो वह भी नापाक है, उससे बुजू जाता रहेगा।

मस'ला १५— अगर क़य (मतली) हुई और उसमें खाना या पानी या पित्त (कड़वा पदार्थ) निकला तो अगर मुंह भर के क़य हुई तो बुजू दूट गया। अगर मुंह भर क़य नहीं हुई तो बुजू नहीं दूटा। मुंह भरकर मतली होने का यह मतलब है कि पेट की गंदगी मुश्किल से मुंह में रुके। अगर मतली में निरा बलगम निकला तो बुजू नहीं गया चाहे वह कितना ही हो। अगर मतली में खून निकले और वह पतला हो और बहता हुआ हो तो बुजू दूट जाएगा। अगर जमा हुआ टुकड़ा गिरे और मुंह भर कर हो तो भी बुजू दूट जाएगा लेकिन अगर कम हो तो न दूटेगा।

मस'ला १६— अगर थोड़ी-थोड़ी मतली कई बार हो लेकिन कुल मिलाकर इतनी हो कि अगर एक बार होती तो मुंह भर जाता तो अगर एक ही मतली बराबर बाकी रही तो बुजू दूट गया। और अगर एक ही मतली बराबर नहीं रही तो बुजू नहीं दूटता।

मस'ला १७— अगर किसी की लेटे-लेटे आंख लग गई या किसी चीज़ से टेक लगाकर बैठे-बैठे नींद आ गई और ग़फ़लत हो गई कि अगर वह टेक न होती तो गिर पड़ता तो बुजू जाता रहा और अगर नमाज़ में बैठे-बैठे या खड़े-खड़े सो गया तो बुजू नहीं गया, अगर सज़्दे में सोजाए तो बुजू दूट जाएगा

मस'ला १८— अगर कोई नमाज़ से बाहर बैठे-बैठे सोए और अपना घूतड़ एड़ी से दबा ले लेकिन दीवार या किसी चीज़ से टेक न लगाए तो बुजू नहीं दूटता।

मस'ला १९— बैठे-बैठे नींद का ऐसा झोंका आया कि गिर पड़ा तो अगर गिर कर उसी वक़्त आंख खुल गई तो बुज़ू नहीं गया। लेकिन गिरने के थोड़ी देर बाद आंख खुली तो बुज़ू जाता रहा। अगर बैठा-बैठा झूमता रहा, गिरा नहीं, तब भी बुज़ू नहीं गया।

मस'ला २०— अगर बेहोशी हो गई या जुनून (पागलपन) से अकल (बुद्धि, मति) जाती रही तो बुज़ू टूट गया, चाहे बेहोशी और जुनून थोड़ी ही देर रहे। ऐसे ही अगर तम्बाकू या कोई नशीली चीज़ खा ली और इतना नशा हो गया कि अच्छी तरह चला नहीं गया और कदम-कदम पर इधर-उधर भटका व डगमगाया तब भी बुज़ू जाता रहा।

मस'ला २१— अगर नमाज़ में इतने जोर से हँसी निकली कि खुद उसने और आस-पास वालों ने भी सुन ली, उससे भी बुज़ू टूट गया और नमाज़ भी टूट गई लेकिन अगर ऐसा हो कि हँसी की आवाज़ खुद सुन ले, पास वाले सब न सुन सकें, मगर बहुत ही पास वाला कोई सुन ले तो नमाज़ टूट जाएगी बुज़ू नहीं टूटेगा। अगर हँसी में दांत खुले, आवाज़ न निकली तो न बुज़ू टूटा और न नमाज़ ही गई।

मस'ला २२— हाथ लगाने या ख्याल करने से आगे की जगह (लिंग) से पानी आ जाए तो बुज़ू टूट जाता है। उस पानी को 'वदी' कहते हैं।

मस'ला २३— अगर बीमारी की वजह से आगे की तरफ़ से जो लेशदार पानी आता है, नापाक है तो उससे निकलनेसे बुज़ू टूट जाता है।

मस'ला २४— पेशाब या 'वदी' का कतरा सुराख़ से बाहर निकला, लेकिन अभी ऊपर वाली खाल में ही है, तब भी बुज़ू नहीं गया।

मस'ला २५— मर्द की पेशाब की जगह (लिंग) से जब औरत की पेशाब की जगह मिल जाए और कोई कपड़ा आड़ में न हो तो बुज़ू टूट जाता है। ऐसे ही अगर दो औरतें आपस में अपनी शर्मगाहें मिलायें तब भी बुज़ू टूट जाता है।

मस'ला २६— मनी (वीर्य) अगर बगैर शहवत (उत्तेजना) खारिज हो तो वुजू टूट जाएगा। जैसे किसी ऊंची जगह से गिरे और मनी निकल पड़े।

मस'ला २७— वुजू के बाद नाखून कटाए या घाव के ऊपर की मुर्दा खाल नोच डाली तो वुजू नहीं टूटा।

मस'ला २८— वुजू के बाद किसी का सतर (छुपा हुआ भाग) देख लिया या अपना सतर खुल गया या नंगे होकर नहाया और नंगे ही नंगे वुजू किया तो उसका वुजू ठीक है, दोबारा वुजू करने की ज़रूरत नहीं है।

मस'ला २९— जिस चीज के निकलने से वुजू टूट जाता है, वह नापाक होती है और जिससे वुजू नहीं टूटता वह नापाक नहीं। तो अगर ज़रा-सा खून निकला कि ज़रूम के मुंह से बहा नहीं या ज़रा-सी मतली हुई, मुंह भरकर नहीं हुई तो यह खून और मतली नापाक नहीं है अगर यह कपड़े या बदन में लग जाए तो इसका धोना वाजिब नहीं लेकिन अगर मुंह भर कर मतली हुई या खून घाव से बह गया तो वह नापाक है। उसका धोना वाजिब है अगर इतनी मतली करके कटोरे या लोटे को मुंह लगा कर कुल्ली के लिए पानी लिया तो वह बर्तन नापाक हो जाएगा, इसलिए चुल्लू से पानी लेना चाहिए।

मस'ला ३०— छोटा लड़का जो दूध डालता है उसके लिए भी यह हुक्म है। अगर मुंह भरकर न हो तो वह नापाक नहीं हैं, मगर जब मुंह भरकर हो तो नापाक है। अगर औरत उसके धोए बगैर नमाज़ पढ़े तो नमाज़ नहीं होगी।

मस'ला ३१— अगर वुजू करना याद है, लेकिन वुजू टूटना अच्छी तरह याद नहीं तो वुजू बाक़ी समझा जाएगा। इससे नमाज़ ठीक है, लेकिन दोबारा वुजू कर लेना अच्छा है।

मस'ला ३२— किसी को वुजू करने में शक हुआ है कि कोई हिस्सा धोया या नहीं तो वह हिस्सा फिर धो लेना चाहिए। अगर वुजू

कर चुकने के बाद शक हुआ तो कुछ परवाह न करे; पुजू हो गया। लेकिन अगर यह यकीन हो जाए कि कोई चीज धुलने से रह गई तो पुजू नहीं है, उसे कर ले।

मस'ला ३३— जनाजे की नमाज और तिलावत (कुरआन शरीफ पढ़ना) के सज्दे में कहकहा लगाने से पुजू नहीं जाता — चाहे बालिग हो या नाबालिग।

मस'ला ३४— बिना पुजू किए कुरआन मजीद का छूना ठीक नहीं है। हां अगर ऐसे कपड़े से छूए जो बदन से अलग है तो ठीक है। कुर्ते के दामन से जब कि उसे पहने हुए हो छूना ठीक नहीं। अगर कलाम मजीद खुला हुआ रखा है और उसे देख-देखकर पढ़ा मगर हाथ न लगाया तो यह भी ठीक है। इसी तरह बगैर पुजू ऐसे तावीज और तश्तरी का छूना भी ठीक नहीं है, जिसमें कुरआन की आयतें लिखी हों।

3. मजबूरियां

जिस किसी को ऐसी नक्सीर फूटी कि किसी तरह बन्द नहीं हुई या कोई ऐसा घाव है कि वह बराबर रिसता रहा या किसी को पेशाब की बीमारी है तो ऐसे आदमी को मा'जूर कहते हैं। उसके लिए यह हुक्म है कि वह हर नमाज के वक़्त पुजू किया करे जब तक वक़्त रहेगा तब तब उसका पुजू बाकी रहेगा। इसकी मिसाल यह है कि किसी की ऐसी नक्सीर फूटी कि किसी तरह बन्द नहीं होती और उसने जुहर (दोपहर के बाद वाली नमाज) के वक़्त पुजू कर लिया तो जब तक जुहर का वक़्त रहेगा, उसका पुजू न दूटेगा। जब यह वक़्त चला गया और दूसरी नमाज का वक़्त आ गया तो अब दूसरे वक़्त दूसरा पुजू करना चाहिए। इसी तरह हर नमाज के वक़्त पुजू कर लिया करे और उस पुजू से फर्ज, नफ़ल जो भी नमाज चाहे पढ़ी जा सकती है।

मस'ला १— अगर फज्र (सुबह प्रातःकाल) के वक़्त बुजू किया तो आफ़ताब (सूर्य) निकलने के बाद उस बुजू से नमाज़ नहीं पढ़ सकता। दूसरा बुजू करना चाहिए और जब सूर्य निकलने के बाद बुजू से जुहर की नमाज़ पढ़ना दुरुस्त (ठीक) है, तब नया बुजू करने की ज़रूरत नहीं है। जब अस्त्र (तीसरा पहर) का वक़्त आयेगा तब नया बुजू करना पड़ेगा।

मस'ला २— किसी को ऐसा ज़ख्म था जो हर वक़्त बहता रहता था उसने बुजू किया फिर दूसरा घाव पैदा हो गया और बहने लगा तो बुजू टूट गया अब फिर से बुजू करना चाहिए।

मस'ला ३— आदमी उस वक़्त मा'ज़ूर बनता है और यह हुक्म उस वक़्त लगता है जब पूरी एक नमाज़ का वक़्त इसी तरह गुज़र जाए कि खून बराबर बहा करे और इतना भी वक़्त न मिले कि उस वक़्त की नमाज़ पाकी से पढ़ सके। अगर इतना वक़्त मिल गया कि उसमें तहारत (पाकी, पवित्रता) से नमाज़ पढ़ सकता है तो उसे मा'ज़ूर न कहा जाएगा। हाँ, जब पूरा एक वक़्त इसी तरह गुज़र गया। इसके लिए वही हुक्म है कि हर वक़्त नया बुजू किया करे फिर जब दूसरा वक़्त आये तो उसमें हर वक़्त खून बहना शर्त नहीं है बल्कि पूरे वक़्त में अगर एक बार भी खून आ जाया करे और सारे वक़्त बन्द रहे तब भी मा'ज़ूर रहेगा। हाँ, इसके बाद अगर एक पूरा वक़्त ऐसा गुज़र जाये जिसमें खून बिल्कुल न आये तो अब मा'ज़ूर नहीं रहा। अब उसके लिए यह हुक्म है कि जितनी बार खून निकले, बुजू टूट जायेगा।

मस'ला ४— जुहर का कुछ वक़्त हुआ था कि घाव का खून बहने लगा तो आख़िर वक़्त तक इन्तज़ार करे, अगर बन्द हो जाए तो ठीक नहीं तो बुजू करके नमाज़ पढ़ ले। फिर अगर अस्त्र के पूरे वक़्त में इसी तरह खून बहा कि नमाज़ पढ़ने की मोहलत नहीं मिली तो अब अस्त्र का वक़्त गुज़रने के बाद मा'ज़ूर होने का हुक्म लग जायेगा। और अगर अस्त्र के वक़्त में पढ़ी जा चुकी, वे दुरुस्त नहीं रहीं; उन्हें फिर से पढ़ना चाहिए।

मस'ला ५— ऐसे मा'जूर ने पेशाब या पाखाने की वजह से बुजू किया और जिस वक़्त बुजू किया, उस वक़्त खून बन्द था, मगर जब बुजू कर चुका तो खून आया तो उस खून के निकलने से बुजू टूट जायेगा, लेकिन जो बुजू नवसीर के सबब से किया है, खास वह बुजू नवसीर की वजह से नहीं टूटा।

मस'ला ६— अगर नवसीर का खून कपड़े में लग जाये तो इसमें यह देखना चाहिए कि अगर वह नमाज़ खत्म करने से पहले ही लग जाये तो उसका धोना वाजिब नहीं है लेकिन अगर यह मालूम हो कि इतनी जल्द न मरेगा बल्कि नमाज़ तहारत से अदा हो जाएगी तो धो डालना वाजिब है। अगर वह खून एक रुपये से बढ़ जाये तो बिना धोये नमाज़ नहीं हो सकती।

4. गुस्ल (स्नान करना)

मस'ला १— गुस्ल करने वाले को चाहिए कि वह पहले पहुँचों तक दोनों हाथ धोये फिर इस्तिंज्जे की जगह धोये। फिर जहाँ बदन पर नजासत (गन्दगी) लगी हो पाक करे, फिर बुजू करे। अगर किसी चौकी या पत्थर पर गुस्ल करता हो तो बुजू करते वक़्त पैर भी धो ले। और अगर ऐसी जगह हो कि पैर भर जायेंगे और नहाने के बाद फिर धोने पड़ेंगे तो पूरा बुजू करे मगर पैर न धोये। फिर बुजू के बाद अपने सर पर इस तरह पानी डाले कि पूरे बदन पर पानी बह जाये। फिर उस जगह से हटकर पाक जगह में आये फिर पैर धोये। अगर बुजू के वक़्त पैर धो लिए हों तो अब धोने की हाजत (आवश्यकता) नहीं।

मस'ला २— पहले सारे बदन पर अच्छी तरह हाथ फेर ले, तब पानी बहाए ताकि सब जगह पानी अच्छी तरह पहुँच जाये कि कहीं सूखा न रहे।

मस'ला ३— गुस्ल करते वक़्त कबले की तरफ मुंह न करे और

पानी बहुत ज्यादा न बहाये। न बहुत कम ले कि अच्छी तरह गुस्ल भी न कर सके और ऐसी जगह गुस्ल करे कि उसे कोई न देखे और गुस्ल करते वक़्त बातें न करे। गुस्ल के बाद किसी कपड़े से अपना बदन साफ कर डाले और बदन ढकने में बहुत जल्दी न करे।

मस'ला ४— गुस्ल का जो तरीका यहां ब्यान किया गया है, यह सुन्नत के हिसाब से है। इसमें कुछ बातें फर्ज़ हैं और कुछ सुन्नत हैं। फर्ज़ कुल तीन बातें हैं : १ कुल्ली इस तरह करना कि पूरे मुंह में पानी पहुंच जाये, २ नाक में पानी डालना जहां तक नाक नर्म है, ३ पूरे बदन पर पानी पहुंचाना।

मस'ला ५— अगर अकेली जगह हो जहां कोई देख न पाये तो नंगे होकर नहाना भी ठीक है — चाहे खड़े होकर नहाया जाये, या बैठकर। चाहे गुस्लखाने की छत बन्द हो या खुली हुई, लेकिन बैठकर नहाना बेहतर है। नाफ से घुटने के नीचे तक किसी के सामने बदन खोलना गुनाह है। अक्सर औरतें दूसरी औरत के सामने बिल्कुल नंगी हो कर नहाती हैं यह बड़ी बुरी और बेशर्मी की बात है।

मस'ला ६— जब पूरे बदन पर पानी पड़ जाये और कुल्ली करे और नाक में पानी डाल ले तो गुस्ल हो जाएगा — चाहे गुस्ल करने का इरादा हो या न हो। अगर पानी बरसने में ठंड की वजह से खड़ा हो गया, या हौज़ वगैरा में गिर पड़ा और सब बदन भीग गया और कुल्ली भी कर ली और नाक में पानी भी डाल लिया तो गुस्ल हो गया। नहाते वक़्त कलिमा या और कोई दुआ न पढ़ना अच्छा है।

मस'ला ७— अगर बदन में बाल बराबर भी सूखी कोई जगह रह गई तो गुस्ल न होगा। इसी तरह अगर गुस्ल करते वक़्त कुल्ली करना भूल गया या नाक में पानी नहीं डाला तब भी गुस्ल नहीं हुआ।

मस'ला ८— अगर गुस्ल के बाद याद आये कि कोई जगह सूखी रह गई थी तो दोबारा नहाना वाजिब नहीं बल्कि जहां सूखा रह गया था, उसा को धो ले और अगर कुल्ली करना भूल गया हो तो अब कर ले। अगर नाक में पानी न डाला हो तो अब डाल ले। गर्ज़ यह है कि

जो घीज रह गई हो अब उसे पूरा कर ले, नये सिर से गुस्ल करने की ज़रूरत नहीं।

मस'ला ९— अगर किसी औरत को बीमारी की वजह से सर पर पानी डालने से नुवसान हो और वह सर को छोड़ कर पूरा बदन धो ले तो उसका गुस्ल हो गया, लेकिन जब वह अच्छी हो जाए तो अपना सर धो ले दोबारा नहाने की ज़रूरत नहीं है।

मस'ला १०— पेशाब की जगह आगे की खाल के अन्दर पानी पहुंचाना गुस्ल में फर्ज है। अगर पानी न पहुंचा तो गुस्ल न होगा।

मस'ला ११— अगर औरत के सर के बाल गुथे हुए न हों तो सब बाल भिगोना और सारी जड़ों में पानी पहुंचाना फर्ज है, अगर एक भी बाल सूखा रह गया या एक बाल की जड़ में पानी नहीं पहुंचा तो गुस्ल न होगा। अगर बाल गुथे हुए हैं तो बाल का भिगोना माफ़ है, मगर सब जड़ों में पानी पहुंचाना फर्ज है, यहां तक कि एक जड़ भी सूखी न रहे। अगर बाल बिना खोले सब जड़ों में पानी न पहुंच सके तो खोल दिया जाये, और बालों को भिगो दिया जाये।

मस'ला १२— औरत को चाहिए कि नथ, बालियों और अंगूठी छल्लों को खूब हिला ले ताकि पानी सुराखों में पहुंच जाये। अगर बालियां न पहनी हों तब भी सुराखों में पानी ज़रूर डाला जाये। ऐसा न हो कि पानी न पहुंचे और गुस्ल ठीक न हो।

मस'ला १३— अगर नाखुन में आटा लग कर सूख गया और उसके नीचे पानी न पहुंचा तो गुस्ल नहीं हुआ। जब याद आये और आटा देखे तो छुटा कर पानी डाल ले और अगर उससे पहले कोई नमाज़ पढ़ ली तो उसे फिर पढ़े।

मस'ला १४— अगर हाथ-पैर फट गये और उनमें मोम, रोगन या कोई और दवा भर ली तो उसके ऊपर से पानी बहाना ठीक है।

मस'ला १५— कान और नाक में भी ज़रूरी तौर पर पानी पहुंचाना चाहिए, अगर पानी नहीं पहुंचा तो गुस्ल न होगा।

मस'ला १६— अगर नहाते वक़्त कुल्ली न की लेकिन मुंह भर कर इस तरह पानी लिया कि वह सारे मुंह में पहुंच गया, तब भी गुस्ल हो गया। अगर इस तरह पानी पिये कि पानी पूरे मुंह में न पहुंचे तो यह पीना काफी नहीं। कुल्ली कर लेनी चाहिए।

मस'ला १७— अगर सर के बालों या हाथ-पैरों में तेल लगा हुआ है और बदन पर पानी अच्छी तरह नहीं ठहरता बल्कि पड़ते ही ढलक जाता है तो इसकी कोई बात नहीं है, गुस्ल हो जायेगा।

मस'ला १८— माथे पर अफ़शां चुनी है या बालों में इतना गोंद लगा है कि बाल अच्छी तरह न भीग सके तो गोंद छुड़ा दे और अफ़शां पोंछ डाले। अगर गोंद के नीचे पानी न पहुंचा और ऊपर ही ऊपर बह गया तो गुस्ल न होगा।

मस'ला १९— अगर किसी औरत ने दांतों में मिस्सी की धड़ी जमाई है तो उसे छुड़ा कर कुल्ली करे, वरना गुस्ल न होगा।

मस'ला २०— किसी की आंखों के दुखने से खूब कीचड़ निकली और वह इस तरह सूख गयी कि अगर उसे न छुड़ाया तो उसके नीचे आंख के कोए पर पानी न पहुंचेगा तो उसका छुड़ाना वाजिब है और उसे छुड़ाए बग़ैर न बुजू दुरुस्त है और न गुस्ल।

मस'ला २१— जिस किसी पर नहाना वाजिब है, अगर वह नहाने से पहले कुछ खाना-पीना चाहे तो पहले अपने हाथ और मुंह धो ले और कुल्ली कर ले, तब खाये।

5. गुस्ल कैसे वाजिब होता है ?

मस'ला १— सोते या जागते जब जवानी के जोश में मनी निकल पड़े तो गुस्ल वाजिब हो जाता है, चाहे वह किसी तरह निकले।

मस'ला २— जब मर्द के पेशाब की जगह की सुपारी औरत के

पेशाब की जगह में चली जाये और छुप जाये तब भी गुस्ल वाजिब हो जाता है चाहे मनी निकले या न निकले। अगर सुपारी आगे की जगह में गई हो या पीछे की जगह में गई तब भी गुस्ल वाजिब है लेकिन मर्द और औरत — किसी की पीछे की जगह में करना या कराना बड़ा गुनाह है।

मस'ला ३— अगर आँख खुली और कपड़े या बदन पर मनी लगी देखी तो गुस्ल करना वाजिब है। चाहे सोते में कोई ख्याब देखा हो या न देखा हो, लेकिन मज्जी निकलने से गुस्ल वाजिब नहीं होता वुजू टूट जाता है।

मस'ला ४— जब हैज (मासिक धर्म) का खून बन्द हो जाये तो गुस्ल करना वाजिब है और निफास (औरत की ज़च्चागिरी का खून) बन्द होने पर भी गुस्ल करना वाजिब है। मतलब यह है कि चार बातों से गुस्ल वाजिब होता है (१) जोश से मनी निकलना, (२) सुपारी का अन्दर चला जाना, (३) हैज (४) निफास के खून का बन्द हो जाना।

मस'ला ५— अगर किसी मर्द ने नाबालिग (कम उम्र) लड़की से सोहबत (सम्भोग) की तो उस पर गुस्ल वाजिब नहीं लेकिन आदत डालने के लिए उस लड़की से गुस्ल कराना चाहिए।

मस'ला ६— नींद में सोहबत करने का ख्याब देखा और मज्जा भी आया लेकिन आँख खुलने पर देखा तो मनी नहीं निकली तो उस पर गुस्ल वाजिब नहीं है, लेकिन अगर मनी निकल गई तो गुस्ल वाजिब है अगर बदन या कपड़े पर कुछ भीगा मालूम हो तब भी गुस्ल करना वाजिब है।

मस'ला ७— बीमारी या किसी और वजह से आप ही आप मनी निकल आई मगर जोश और ख्वाहिश बिल्कुल नहीं थीं तो गुस्ल वाजिब नहीं हुआ मगर वुजू जरूर टूट जायेगा।

मस'ला ८— मियाँ-बीवी दोनों एक पलंग पर सोये और जब उठे तो चादर पर मनी का धब्बा देखा। मगर सोते हुए ख्याब का देखना

न मर्द को याद रहा और न औरत को। ऐसी हालत में दोनों को नहा लेना चाहिए।

मस'ला ९— अगर किसी का खतना (मुसलमानी) न हुआ हो और उसकी मनी उसकी पेशाब की जगह से बाहर निकल कर उसकी उस खाल के अन्दर रह जाये जो खतना में काट दी जाती है तो उस पर गुस्ल फर्ज हो जाएगा।

मस'ला १०— अगर कोई मर्द अपनी पेशाब की जगह को कपड़े से लपेट कर औरत की पेशाब की जगह में दाखिल करे तो अगर जिरम को हरात (गर्मी) महसूस हो तो गुस्ल फर्ज हो जायेगा।

मस'ला ११— अगर कोई काफिर इस्लाम लाये और उससे पहले उसे एहतलाम (स्वप्न दोष) हुआ हो उस पर मुसलमान हो जाने पर नहाना वाजिब है।

मस'ला १२— अगर कोई १५ बरस की उम्र से पहले ही बालिग हो जाये और उसे पहली बार एहतलाम हो तो उस पर गुस्ल वाजिब है। उसके बाद जो एहतलाम हो या १५ बरस की उम्र के बाद एहतलाम हो तो उस पर भी गुस्ल वाजिब है।

मस'ला १३— मुसलमान मर्द की लाश को नहलाना मुसलमानों पर बहुत ही जरूरी है।

6. गुस्ल कब फर्ज नहीं होता ?

मस'ला १— मनी अगर अपनी जगह से शहवत से सबब जुदा न हो लेकिन बाहर निकल आए तो गुस्ल फर्ज न होगा, जैसे कोई ऊँचाई से गिर पड़ा और उस झटके से उसकी मनी बगैर शहवत के निकल आई तो गुस्ल फर्ज नहीं।

मस'ला २— अगर कोई मर्द किसी कम्बिन (कम उम्र) औरत के साथ हम बिस्तरी (सम्मोग) करे और मनी न गिरे तो गुस्ल फर्ज नहीं होगा।

मस'ला ३— अगर कोई मर्द अपने पेशाब की जगह की सुपारी के अगले हिस्से से भी कम उम्र औरत के पेशाब की जगह में दाखिल करे तब भी गुस्ल फर्ज नहीं होगा।

मस'ला ४— मज़ी और वदी के निकलने से गुस्ल फर्ज नहीं होता।

मस'ला ५— इस्तिहाज़ा (औरत के मासिक धर्म से निवृत्त होने के बाद खून का धम्बा आना) से गुस्ल फर्ज नहीं होता।

मस'ला ६— अगर किसी को मनी निकलते रहने का रोग हो तो उस मनी के निकलने से गुस्ल फर्ज न होगा।

मस'ला ७— हफना (सम्मोग-क्रिया) के मिले-जुले हिस्से में दाखिल होने से गुस्ल फर्ज नहीं होता।

मस'ला ८— अगर कोई मर्द अपने पेशाब की जगह किसी औरत या मर्द की नाफ (पेट, नाभि) में दाखिल करे और मनी न निकले तो उस पर गुस्ल फर्ज न होगा।

मस'ला ९— कोई शख्स ख़्वाब में अपनी मनी गिरते देखे और उसके गिरने से लज्जत (मज़ा) महसूस हो मगर कपड़ों पर तरी (भीगावन) और असर (लक्षण) मालूम न हो तो गुस्ल फर्ज न होगा।

7. जब गुस्ल करना सुन्नत होता है

(रसूलुल्लाह सल्ल० जो काम किया करते थे उसे सुन्नत कहा जाता है)

मस'ला १— जुमे के दिन फज्र की नमाज़ के बाद से जुमे तक उन लोगों को गुस्ल करना सुन्नत है, जिन पर जुमे की नमाज़ पढ़ना बाज़िब है।

मस'ला २— ईद (ईदुल फ़ित्र) और बकरईद (ईदुलज्जुहा) के दिन फज्र के बाद उन लोगों को गुस्ल करना सुन्नत है जिन पर दोनों ईदों की नमाज़ पढ़ना बाज़िब है।

मस'ला ३— हज या उमरा (साल के किसी भी हिस्से) में काबे का तवाफ़ (चक्कर) कर के एहराम (बगैर सिला कपड़ा, चादर) के लिए गुस्ल करना सुन्नत है।

मस'ला ४— हज करने वाले को अरफा (हज का दिन) के दिन ज़वाल (घटना कम होना, बारह बजे के बाद सूर्य की अवस्था) के बाद गुस्ल करना सुन्नत है।

8. गुस्ल कब मुस्तहब होता है ?

मस'ला १— इस्लाम लाने के लिए गुस्ल करना मुस्तहब है, मगर वह एहतलाम (हृदय से अकबर) से पाक हो।

मस'ला २— कोई मर्द या औरत जब पन्द्रहवें बरस की उम्र को पहुँचे और उस वक़्त तक जवानी की कोई निशानी न पाई जाए तो उसे गुस्ल करना मुस्तहब है।

मस'ला ३— मुर्दे को नहलाने के बाद उसे नहलाने वाले आदमी का नहाना मुस्तहब है।

मस'ला ४— शबे बरात यानी शा'बान के महीने की १५ वीं रात को गुस्ल करना मुस्तहब है।

मस'ला ५— मदीना मुनव्वरा में दाखिल होने के लिए गुस्ल करना

मुस्तहब है।

मस'ला ६- मुजदल्फा (मक्का मुअज्जमा का एक स्थान) में ठहरने के लिए १० वीं तारीख की सुबह (ईदुल अज्जहा) को सूरज निकलने से पहले गुस्ल करना मुस्तहब है।

मस'ला ७- रसूलुल्लाह सल्ल० की ज़ियारत (मुलाकात, साक्षात्कार) के तवाफ (चक्कर काटना) के लिए गुस्ल मुस्तहब है।

मस'ला ८- हज में कंकरी फेंकने के वक़्त गुस्ल करना मुस्तहब है।

मस'ला ९- नमाज़े कुसूफ (सूर्य ग्रहण के वक़्त की नमाज़) खुसूफ (चन्द्र ग्रहण के वक़्त की नमाज़) और इस्तिस्का (वर्षा के लिए पड़ी जाने वाली नमाज़) के लिए गुस्ल करना मुस्तहब है।

मस'ला १०- खौफ और मुसीबत की नमाज़ के लिए गुस्ल मुस्तहब है।

मस'ला ११- सफ़र से वापस आने के बाद गुस्ल मुस्तहब है।

मस'ला १२- किसी मज्लिस में जाने और नए कपड़े पहनने के लिए गुस्ल मुस्तहब है।

मस'ला १३- जिस किसी पर नहाना वाजिब है, अगर वह नहाने से पहले कुछ खाना-पीना चाहे तो पहले अपने हाथ और मुंह धो ले, फिर कुल्ली करे तब खाए-पीए। अगर बिना हाथ मुंह धोए खाया-पीया तब भी कोई गुनाह नहीं है।

९. वुजू और गुस्ल का पानी

मस'ला १- आसमान से बरसे हुए पानी, नदी, नाले, चश्मे, कुएं, तालाब और दरियाओं के पानी से वुजू और गुस्ल करना दुरुस्त

है, चाहे वह पानी भीठा हो या खारा हो।

मस'ला २— किसी पेड़, फल या पत्तों से निचोड़े हुए अर्क से बुजू करना ठीक नहीं। इसी तरह तरबूज के पानी और गन्ने के रस से बुजू ठीक नहीं है।

मस'ला ३— जिस पानी में कोई चीज़ मिल गई या पानी में कुछ पकाया गया और वह पानी न होकर और कुछ हो गया तो उससे बुजू और गुस्ल ठीक नहीं है। जैसे: शर्बत, शीरा, शराब, सिरका, गुलाब व अर्क गावज़बां।

मस'ला ४— जिस पानी में कोई पाक चीज़ पड़ गई और पानी के मजे या रंग में कुछ फर्क आ गया, लेकिन वह चीज़ पानी में पकाई न गई, न पानी के पतलेपन में कोई फर्क आया जैसे बहते हुए पानी में कुछ रेत मिली होती है या पानी में जाफरान पड़ गया और उसका बहुत हल्का-सा रंग आ गया या उसमें साबुन पड़ गया तो बुजू और गुस्ल दोनों दुरुस्त हैं।

मस'ला ५— अगर कोई चीज़ पानी में डालकर पकाई गई, मगर उससे रंग या मज़ा नहीं बदलता तो उस पानी से बुजू नहीं करना चाहिए — हां! अगर कोई ऐसी चीज़ पकाई गई जिससे मैल-कुचैल खूब साफ हो जाता है और उसके पकाने से पानी गाढ़ा न हुआ हो तो उससे बुजू ठीक है। जैसे: मुर्दे को नहलाने के लिए बेरी के पत्ते पकाए जाते हैं तो इसमें कुछ हर्ज नहीं अलबत्ता अगर इतने ज़्यादा डाल दें कि पानी गाढ़ा हो जाए तो बुजू और गुस्ल ठीक नहीं।

मस'ला ६— कपड़ा रंगने के लिए जाफरान या पुड़िया घोलें गए तो उस पानी से बुजू ठीक नहीं है।

मस'ला ७— अगर पानी में दूध मिल गया और दूध का रंग पानी में अच्छी तरह आ गया तो बुजू ठीक नहीं। लेकिन अगर दूध कम था तो बुजू कर लेना चाहिए।

मस'ला ८— अगर जंगल में कहीं थोड़ा-सा पानी मिला तो जब

तक उसकी नजासत का यक्रीन न हो जाए तब तक उससे बुजू करे और इस ख्याल से न छोड़ दे कि शायद वह नजिस है। मगर उसके होते हुए तयम्मूम (पानी के बजाय मिट्टी का प्रयोग करना) न होगा।

मस'ला ९- किसी कुएं या तालाब में पेड़ के पत्ते गिर पड़ें और पानी में बदबू आने लगी, साथ ही रंग और मज़ा भी बदल गया तब भी उससे बुजू ठीक है यहां तक कि पानी उसी तरह पतला बाकी रहे।

मस'ला १०- जिस पानी में नजासत पड़ जाए उससे बुजू और गुस्ल ठीक नहीं। चाहे वह गन्दगी थोड़ी हो या बहुत हो। हां! अगर वह बहता हुआ पानी हो तो वह नजासत के पड़ने से नापाक नहीं होता जब तक उसके रंग, मज़े या बू में फर्क न आए। अगर फर्क आ गया तो बहता हुआ पानी भी नापाक हो जाएगा। जो पानी घास, तिनके पत्ते वगैरा को बहा ले जाए वही बहता हुआ पानी है, चाहे वह कितनी ही आहिस्ता-आहिस्ता क्यों न बहता हो।

मस'ला ११- बड़ा भारी हौज़ जो दस हाथ लम्बा, दस हाथ चौड़ा और इतना गहरा हो कि अगर चुल्चू से पानी उठायें तो ज़मीन न खुले वह भी बहते हुए पानी की तरह है। ऐसे हौज़ को दहददह (दस हाथ लम्बा, दस हाथ चौड़ा, दस हाथ गहरा) कहा जाता है। मगर इसमें ऐसी कोई नजासत पड़ जाए जो दिखाई न दे, जैसे पेशाब, खून या शराब, तो चारों तरफ बुजू करना ठीक है, लेकिन अगर नजासत दिखाई देती है तो जिधर वह दिखाई दे, उधर बुजू न करे। हां अगर इतने बड़े हौज़ में इतनी गंदगी पड़ जाए कि पानी का रंग या मज़ा बदल जाए या उसमें बू आने लगे तो वह नापाक हो जायेगा।

मस'ला १२- अगर बीस हाथ लम्बा, पांच हाथ चौड़ा या पच्चीस हाथ लम्बा और चार हाथ चौड़ा हो तो ऐसा हौज़ भी दहददह की तरह है।

मस'ला १३- अगर पानी धीरे-धीरे बहता हो तो बहुत जल्दी बुजू

न करे ताकि जो धोवन गिरता है वही हाथ में न आ जाए।

मस'ला १४— दहदह होज में जहां पर धोवन गिरा है, अगर वहीं से पानी फिर उठा ले तो जायज़ है।

मस'ला १५— अगर कोई काफिर लड़का या बच्चा पानी में हाथ डाल दे तो पानी नापाक नहीं होता। लेकिन अगर यह मालूम हो जाये कि उसके हाथ में नजासत लगी थी तो नापाक हो जायेगा। चूँकि छोटे बच्चों का एतबार (विश्वास) नहीं इसलिए उनके हाथ डाले हुए पानी से जुजू न करना ही अच्छा है।

मस'ला १६— जिस पानी में मच्छर, मक्खी, भिड़, ततैया, बिच्छू, शहद की मक्खी या ऐसा जानवर जिसके बहता हुआ खून नहीं होता या वह बाहर मर कर पानी में गिर पड़े तो इस तरह पानी नापाक नहीं होता।

मस'ला १७— जिसकी पैदाइश (उत्पत्ति) पानी की हो और वह हर दम पानी में ही रहे तो उसके मर जाने से भी पानी खराब नहीं होता जैसे मछली, मेंढक, कछुआ, केकड़ा।

मस'ला १८— जो जानवर पानी में रहे मगर उनकी पैदाइश पानी से बाहर की हो तो उनके मर जाने से पानी खराब व नापाक हो जाता है।

मस'ला १९— धूप में गर्म हुए पानी से सफेद दाग हो जाने का-डर रहता है। इसलिए ऐसे पानी से जुजू और गुस्ल नहीं करना चाहिए।

मस'ला २०— मुर्दार की खाल को जब धूप में सुखा लिया जाए या कुछ दवा मसाला लगाकर ठीक कर लिया जाये तो वह पाक हो जाती है। उस पर नमाज़ पढ़ना ठीक है और उसी की मशक बनाकर पानी भी रखना ठीक है। लेकिन सूअर की खाल कभी भी पाक नहीं होती और आदमी की खाल से काम लेना और उसे बरतना बहुत गुनाह है।

मस'ला २१— कुत्ता, बन्दर, विल्ली, शेर जैसे जानवरों की खाल बनाने से पाक हो जाती है। बिस्मिल्लाह कहकर ज़बह करने से भी खाल पाक हो जाती है — चाहे वह बनाई हुई हो या न बनाई हुई हो। लेकिन ज़बह करने से उसका गोश्त पाक नहीं हो जाता उसे खाना ठीक नहीं।

मस'ला २२— मुर्दार के बाल, रींग, हड्डी और दांत — सब चीज़ें पाक हैं अगर ये पानी में पड़ जायें तो पानी नापाक नहीं होता लेकिन अगर हड्डी और दांत पर कुछ चिकनाई या गोश्त लगा हो तो वह नापाक है और उससे पानी भी नापाक हो जायेगा।

मस'ला २३— आदमी की भी हड्डी और बाल पाक हैं लेकिन उन्हें बरतना और काम में लाना जायज़ नहीं बल्कि किसी जगह उन्हें दफन कर देना चाहिए।

10. पानी का इस्तेमाल कब और कैसे ?

ऐसे नापाक पानी का बरतना जिसकी तीनों खूबियां — मज़ा, बू और रंग गन्धगी की वजह से बदल गई हों किसी भी तरह ठीक नहीं। न उसे जानवरों को ही पिलाना चाहिए, न मिट्टी में डालकर गारा ही बनाया जाए।

मस'ला १— दरिया, नदी और वह तालाब जो किसी की ज़मीन में न हो और जिसे बनाने के बाद वक्फ कर दिया गया हो तो उस पानी से सब लोग फायदा उठा सकते हैं।

मस'ला २— किसी आदमी की निजी ज़मीन में कुआँ, चश्मा, हौज़ या नहर हो तो दूसरे लोगों को पानी पीने या जानवरों को पिलाने, बुजु गुरल या कपड़े धोने के लिये पानी लेने या घड़े भरकर

अपने पेड़ या ययारी में पानी देने से रोका नहीं जा सकता क्योंकि पानी पर सबका हक (अधिकार) है। अलबत्ता अगर जानवरों की ज्यादाती की वजह से पानी खत्म होने या नहर वगैरा के खराब होने का डर है तो रोकने का एख्तियार है, लेकिन अपने खेत या बाग को बिला इजाजत लिए पानी देना जायज़ नहीं। यही हुक्म अपने आप उगने वाली घास और जितने भी पेड़-पौधे हैं सब के लिए हैं। लेकिन तने वाले पेड़ ज़मीन वाले की भित्कियत में आते हैं।

मस'ला ३— दरिया, तालाब, कुएं वगैरा से जो आदमी अपने बर्तन में पानी भरे तो वही उस पानी का मालिक हो जायेगा, उस पानी को बिना उसकी इजाजत के किसी को बरतना ठीक नहीं।

मस'ला ४— लोगों के पीने के लिए जो पानी रखा हो (जैसे गर्मियों में रास्ते पर पानी रख देते हैं) उससे बुज़ू ठीक नहीं। हां, अगर वह ज्यादा हो तो कोई बात नहीं। जो पानी बुज़ू करने के लिए रखा हो, उसे पीना ठीक है।

मस'ला ५— अगर कुएं में बकरे की दो मेंगनियां गिर जायें और वे बिना घुले निकल जायें तो कुआ नापाक नहीं होता, चाहे वह कुआँ जंगल, बस्ती का हो और उस पर मन हो या न हो।

11. कुआँ

मस'ला १— जब कुएँ में कुछ गन्दगी गिर पड़े तो कुआँ नापाक हो जाता है, लेकिन पानी खींच डालने से वह पाक हो जाता है — चाहे गन्दगी थोड़ी गिरी हो या बहुत। जब सब पानी निकल जाएगा तो गन्दगी से पाक हो जायेगा। कुएं के अन्दर कंकर व दीवारें धोने की जरूरत नहीं — ये सब आप-ही-आप पाक हो जाते हैं। इसी तरह रस्सी डोल जिन से पानी निकाला गया, कुएं के पाक होने से ही पाक हो जायेंगे।

मस'ला २-— कुएँ का सब पानी निकालने का यह मतलब है कि वह इतना निकले कि पानी टूट जाये और आधा डोल भी न भरे।

मस'ला ३-— कुएँ में कबूतर या चिड़िया की बीट पड़ी तो वह नापाक नहीं हुआ लेकिन अगर उसमें मुर्गी या बत्तख की बीट गिर पड़े तो नापाक हो जायेगा और सारा पानी निकालना चाहिये।

मस'ला ४-— अगर कुएँ में आदमी, कुत्ता, बकरी या इनमें से किसी के भी बराबर कोई जानवर गिर पड़े और मर जाये तब सारा पानी निकाला जाये। अगर वह बाहर मरे और बाद में कुएँ में गिरे तब भी यही हुक्म है।

मस'ला ५-— अगर कोई जानदार चीज़ कुएँ में भर जाये, फूल जाये या फट जाए तब भी सब पानी निकाला जाए—चाहे जानवर छोटा हो या बड़ा।

मस'ला ६-— अगर घूहा, चिड़िया या इनके बराबर कोई जानवर गिरकर मर गया, लेकिन फूला व फटा नहीं तो बीस डोल निकालना वाजिब है। अगर तीस डोल निकाले जायें तो और अच्छा है। लेकिन पहले मरा हुआ जानवर निकाले और तब पानी निकालना शुरू करें।

मस'ला ७-— बड़ी छिपकली जिसमें बहता खून हो, उसके लिए भी यही हुक्म है। अगर जिसमें बहता हुआ खून न हो तो उसके मरने से कुआँ नापाक नहीं होता।

मस'ला ८-— अगर कबूतर, मुर्गी या बिल्ली या इनके बराबर कोई जानवर गिर कर मर जाये और फूले व फटे नहीं तो चालीस डोल पानी निकाल देना अच्छा है, लेकिन साठ डोल निकाल देना बहुत अच्छा है।

मस'ला ९-— जिस कुएँ पर जो भी डोल पड़ा रहता है उसी हिसाब से पानी निकालना चाहिये। अगर पानी इतने बड़े डोल से निकाला जिसमें बहुत पानी आता हो, तो उसका हिसाब लगा लेना चाहिये।

मस'ला १०— अगर कुएं में इतना बड़ा स्रोत है कि सब पानी नहीं निकाला जा सकता और जैसे-जैसे पानी निकाला जाता है, वैसे-वैसे उसमें और निकलता है तो जितना पानी कुएं में उस वक़्त मौजूद है, अन्दाज़ा करके उतना ही निकाले, वरना तीन सौ डोल निकाला जाये।

मस'ला ११— कुएँ में मरा हुआ चूहा या कोई और जानवर निकला मगर यह मालूम नहीं कि वह कब से गिरा है और वह फूला या फटा भी नहीं तो जिन लोगों ने उस कुएँ से बुजू किया है, वे एक दिन व एक रात की नमाज़ दोहराये और उस पानी से जो कपड़े धो लिये हैं, उनको फिर पाक पानी से धोना चाहिए। अगर जानवर फूल गया व फट गया है कि जिस वक़्त कुएं का नापाक होना मालूम हुआ है, उसे उसी वक़्त से नापाक समझे और उससे पहले की सब नमाज़ें व बुजू ठीक हैं।

मस'ला १२— जिसे नहाने की ज़रूरत है वह डोल दूबने के लिये कुएँ में उतरा और उसके बदन पर गंदगी न हो, तब कुआँ पाक रहेगा, अलबत्ता अगर गंदगी लगी हो तो कुआँ नापाक हो जायेगा और सब पानी निकालना पड़ेगा।

मस'ला १३— कुएँ में बकरा गिरा या चूहा, और जिन्दा निकल आया तो पानी पाक है।

मस'ला १४— चूहे को दिल्ली ने पकड़ा और उसके दांत लगने से जख्मी हो गया फिर उससे धूटकर उसी तरह खून से भरा हुआ कुएं में गिर पड़ा तो कुएँ का सब पानी निकाला जाएगा।

मस'ला १५— चूहा गन्दी नाली में से निकलकर भागा और उसमें गंदगी भर गई। फिर वह कुएं में गिर पड़ा तो सब पानी निकाला जायेगा चाहे चूहा कुएं में मर जाए या जिन्दा निकल आये।

मस'ला १६— चूहे की दुम कट कर गिर पड़ी तो सारा पानी निकाला जाये। इसी तरह यह छिपकली जिसमें बहता हुआ खून हो उसकी दुम गिरने से भी सब पानी निकाला जाये।

मस'ला १७— जिस जानदार या चीज़ के गिरने से कुँआँ नापाक है, अगर वह कोशिश के बाद भी न निकल सके तो देखना चाहिये कि वह क्या है। अगर ऐसी है कि खुद तो पाक होती मगर नापाकी लगने से नापाक हो गई है। जैसे: नापाक कपड़ा, गेंद, जूता तो उसका न निकालना माफ है। वैसे ही पानी निकाल दिया जाये। अगर गन्दी धीज़ ऐसी है कि खुद नापाक है। जैसे: मुर्दा घूहा जैसा जानवर, तो जब तक यह यकीन न हो जाये कि वह बिल्कुल गल सड़कर खत्म हो गया तो उस वक़्त तक कुँआँ पाक नहीं हो सकता। जब यह यकीन हो जाये उसी वक़्त सब पानी निकाल दें तो कुँआँ पाक हो जायेगा।

मस'ला १८— कुँएँ में से जितना पानी निकालना ज़रूरी हो चाहे एकदम से निकालें या थोड़ा करके कई बार निकालें हर तरह कुँआँ पाक हो जायेगा।

12. वुजू न होने पर

मस'ला १— कुरआन मजीद और सिपायों के पूरे कागज़ को छूना हराम होने की वजह से नापसंदीदा है, चाहे उस जगह को छुए जिसमें आयत लिखी है या उस जगह को जो सादा है। अगर कुरआन न हो बल्कि किसी कागज़, कपड़े या झिल्ली पर कुरआन शरीफ की एक पूरी आयत लिखी हुई हो, बाकी हिस्सा सादा हो तो उसे छूना जायज़ है, मगर आयत पर हाथ न लगे।

मस'ला २— एक आयत से कम का लिखना मकरूह नहीं। अगर किताब या कागज़ में लिखे, मगर कुरआन शरीफ में एक आयत से कम का लिखना भी जायज़ नहीं।

मस'ला ३— नाबालिग बच्चों को उनके पेशाब करने की जगह से गन्दगी आने की हालत में भी कुरआन मजीद छूना मकरूह नहीं।

13. सोते में नापाक हो जाना

मस'ला १— जिस पर नहाना फर्ज हो उसे मस्जिद में जाना हराम है। लेकिन अगर कोई सख्त ज़रूरत है तो तयम्मुम करके जायज़ है।

मस'ला २— ईदगाह, मदरसा और दरगाह में जाना जायज़ है।

मस'ला ३— माहवारी (मासिक धर्म) व निफास (बच्चा होने के चालीस दिन तक औरत को गन्दा खून आता है) की हालत में औरत की नाफ और ज़ानू (रान) को देखना या उस से अपने जिस्म को मिलाना जब कि कोई कपड़ा बीच में न हो और सोहबत करना हराम है।

मस'ला ४— माहवारी और निफास की हालत में औरत का प्यार लेना और उसका झूठा पानी पीना, उससे लिपट कर सोना और उसकी नाफ के ऊपर और ज़ानू व ज़ानू के नीचे के जिस्म से अपने जिस्म को मिलाना अगर कपड़ा बीच में न हो और नाफ व ज़ानू के दर्मियान कपड़े के साथ मिलाना जायज़ है, बल्कि औरत की माहवारी की वजह से अलग होकर सोना या उसके मिलाप से बचना मकरूह है।

14. जानवरों का जूठन

मस'ला १— आदमी का जूठा पाक है चाहे वह बेदीन हो, नापाक हो या औरत माहवारी से हो — जूठन हर हाल में पाक है इसी तरह सबका परीना भी पाक है।

मस'ला २— कुत्ते का जूठा नापाक है। अगर वह किसी बर्तन में

मुंह डाल दे तो बर्तन तीन बार धोने से पाक हो जाता है — चाहे वह ताँबे का हो या मिट्टी का लेकिन अच्छा यह है कि उससे सात बार धोए एक बार मिट्टी लगाकर माँझ भी डाले ताकि खूब साफ हो जाए।

मस'ला ३— सूअर का जूठा नजिस है। इसी तरह शेर, भेड़िया, बन्दर, गीदड़ वगैरह चीर-फाड़ करने वाले जानवर हैं, इन सबका जूठा नजिस है।

मस'ला ४— बिल्ली का जूठा पाक तो है लेकिन मकरुह है (महरूह उसे कहते हैं जिसका खाना पाक है पर जिसे आम तौर पर पसंद नहीं किया जाए)। पानी होते हुए उससे बुजू न करे, अगर और पानी न हो तो उसी से कर ले।

मस'ला ५— दूध या सालन में बिल्ली ने मुंह डाल दिया तो अगर अल्लाह ने सब कुछ दिया हो तो उसे न खाये और अगर गरीब आदमी हो तो खा ले फिर उसमें कुछ हर्ज और गुनाह नहीं और न ही वह मकरुह है।

मस'ला ६— बिल्ली ने चूहा खाया और तुरन्त आकर बर्तन में मुंह डाल दिया तो वह नापाक हो जाएगा। अगर वह थोड़ी देर ठहर कर मुंह डाले कि अपना मुंह जबान से चाट चुकी हो तो नजिस न होगा बल्कि मकरुह रहेगा।

मस'ला ७— खुली हुई मुर्गी जो इधर-उधर गन्दी और पत्तीद चीजें खाती फिरे उसका जूठा मकरुह है। मगर जो मुर्गी बन्द रहती हो उसका जूठन मकरुह नहीं बल्कि पाक है।

मस'ला ८— शिकार करने वाले परिन्दे जैसे शिकारी, बाज का जूठा मकरुह है। लेकिन जो पालतू परिन्दे हों और मुरदार न खायें न उनकी घोंच में गन्दगी का शक हो, उनका जूठा पाक है।

मस'ला ९— हलाल (खाई जाने वाली चीजें) जानवर जैसे मेंढा, बकरी, भेड़, गाय, भैंस, हिरनी और हलाल चिड़ियाँ जैसे तोता, मैना, फारुखा गोरेया का जूठा पाक है। इसी तरह घोड़े का जूठा भी पाक है।

मस'ला १०— जो चीजें घरों में रहती हैं, जैसे सांप, बिच्छू, चूहा, छिपकली का जूठा मकरूह है बल्कि जानलेवा भी है।

मस'ला ११— गधे और खच्चर का जूठा पाक तो है, लेकिन बुजू होने में शक है। अगर कहीं सिर्फ गधे और खच्चर का जूठा पानी मिले और इसके सिवा और पानी न मिले तो बुजू भी करे और तयम्मूम भी।

मस'ला १२— अगर चूहा रोटी कुतर कर खा ले तो अच्छा यही है कि उस जगह से ज़रा-सा हिस्सा तोड़ डाले, तब खाए।

मस'ला १३— जिन जानवरों का जूठा नजिस है उनका पसीना भी नजिस है और जिनका जूठा पाक है उनका पसीना भी पाक है। जिनका जूठा मकरूह है उनका पसीना भी मकरूह है। गधे और खच्चर का पसीना पाक है। अगर यह बदन और कपड़े पर लग जाए तो धो डालना वाजिब नहीं है लेकिन धो डाला जाए तो अच्छा है।

मस'ला १४— किसी ने बिल्ली पाली और वह पास आकर बैठे, हाथ पांव घाटे तो जहां घाटे या उसका थूक लगे उसे धो डालना चाहिए। अगर उसे धोया न गया और ऐसे ही रहने दिया तो मकरूह और बुरा है।

मस'ला १५— औरत के लिए ग़ैर मर्द का जूठा खाना और पानी पीना मकरूह है। लेकिन अगर उसे कुछ पता न चले तो मकरूह भी नहीं है।

15. तयम्मूम

मस'ला १— अगर कोई जंगल में है और उसे पता नहीं कि पानी कहाँ है, न वहां कोई ऐसा आदमी ही है, जिससे यह मालूम किया जाए तो उस वक़्त तयम्मूम कर ले। अगर कोई सच्चा आदमी मिल

गया और उस ने इस्लामी कानून के मुताबिक एक मील के अन्दर-अन्दर पानी का पता दिया या किसी निरानी से खुद उसके दिल ने कहा कि वहां एक मील अन्दर पानी जरूर है तो पानी इस कदर तलाश करे कि उसे और उसके साथियों को किसी तरह की तकलीफ और हर्ज न हो तो तलाश किये बगैर तयम्मूम करना ठीक नहीं है। अगर खूब यकीन है कि पानी एक मील के अन्दर है तो पानी लाना बाजिब है। इस्लामी कानून से एक मील नौ फरसांग के बराबर होता है।

मस'ला २— अगर पानी का पता चल गया और वह एक मील से दूर है तो वहां जाकर पानी मांगने पर न मिले तो तयम्मूम ठीक है।

मस'ला ३— अगर कोई आबादी से एक मील के फासले पर हो और एक मील के करीब कहीं पानी न मिले तब भी तयम्मूम कर लेना चाहिए—चाहे मुसाफिर हो या न हो।

मस'ला ४— अगर राह में कुआँ मिल गया मगर लोटा और रस्सी नहीं है इसलिए कुएँ से पानी नहीं निकाला जा सकता तो तयम्मूम ही दुरुस्त है।

मस'ला ५— अगर कहीं पानी मिल गया लेकिन वह बहुत-थोड़ा है, तो अगर इतना थोड़ा है कि एक बार मुंह और दोनों हाथ और दोनों पैर धो सके तो तयम्मूम करना दुरुस्त नहीं है, बल्कि एक-एक बार इन हिस्सों को धो ले और सर का मसह कर ले और अगर इतना भी न हो तो तयम्मूम कर ले।

मस'ला ६— अगर बीमारी की वजह से पानी नुक्सान करता हो कि अगर बुजू या गुस्ल करेगा तो बीमारी बढ़ जायेगी या देर में अच्छा होगा तब भी तयम्मूम दुरुस्त है। लेकिन अगर ठंडा पानी नुक्सान करता हो और गर्म पानी नुक्सान न करे तो गर्म पानी से बुजू या गुस्ल करना बाजिब है। अलबत्ता अगर ऐसी जगह है कि गर्म पानी नहीं मिल सकता तो तयम्मूम करना दुरुस्त है।

मस'ला ७— अगर पानी करीब है तो औरत को मर्दों से शर्म की

वजह से पानी लेने न जाना और तयम्मूम कर लेना दुरुस्त नहीं। ऐसा पर्दा जिसमें शरीरअत (इस्लामी क़ानून) का कोई हुक्म छूट जाये नाजायज़ और हराम है, अलबत्ता लोगों के सामने हाथ मुंह न खोले।

मस'ला ८— जब तक पानी से बुजू न कर सके बराबर तयम्मूम करता रहे चाहे जितने दिन भी क्यों न गुज़र जायें, दिल में कुछ ख्याल या वसयसा (शंका) न करे। जितनी पाकी बुजू और गुस्त करने से होती है उतनी ही पाकी तयम्मूम से भी हो सकती है।

मस'ला ९— अगर पानी मोल बिकता है तो अगर उसके पास पैसे हों और ज़रूरत से ज़्यादा भी हों तो ख़रीदना वाजिब है। अगर पानी बहुत महंगा है तो ख़रीदना वाजिब नहीं, तयम्मूम कर लेना दुरुस्त है।

मस'ला १०— अगर कहीं इतनी सर्दी पड़ती हो कि नहाने से मर जाने या बीमार हो जाने का डर हो और रज़ाई, लिहाफ़-जैसी चीज़ भी नहीं कि नहा कर उसमें गर्म हो जाये तो उस वक़्त तयम्मूम कर लेना ठीक है।

मस'ला ११— अगर किसी मैदान में तयम्मूम करके नमाज़ पढ़ ले और पानी वहां से करीब था, लेकिन उसे ख़बर न थी तो तयम्मूम और नमाज़ दोनों दुरुस्त है, दोहराना दुरुस्त नहीं।

मस'ला १२— अगर किसी के आधे से ज़्यादा बदन पर ज़ख़्म हों। घेचक निकली हो तो नहाना वाजिब नहीं बल्कि तयम्मूम कर ले।

मस'ला १३— अगर ज़मज़म (पवित्र घश्मा, एक बार जब हज़रत इस्माईल अलै० ने बचपन में रोते-रोते प्यास की तेज़ी से एड़ियां रगड़ीं तो पानी जारी हो गया था) का पानी ज़मज़मी में भरा हुआ है तो तयम्मूम करना ठीक नहीं। ज़मज़मियों को खोलकर उस पानी से नहाना और बुजू करना वाजिब है।

मस'ला १४— किसी के पास पानी है लेकिन रास्ता ख़राब है कि कहीं पानी नहीं मिल सकता इसलिए राह में प्यास के मारे तकलीफ़

और मर जाने का डर है तो बुजू न करे बस तयम्मुम कर लेना ठीक है।

मस'ला १५— अगर गुस्ल करना नुक्सान करता हो और बुजू नुक्सान न करे तो गुस्ल की जगह तयम्मुम कर ले। फिर अगर गुस्ल के तयम्मुम के बाद बुजू टूट जाये तो बुजू के लिए तयम्मुम न करे बल्कि बुजू करना चाहिए।

मस'ला १६— तयम्मुम करने का तरीका यह है कि दोनों हाथ पाक जमीन पर मारे और पूरे मुंह को मल ले। फिर दूसरी बार जमीन पर दोनों हाथ मारे और दोनों हाथों को कोहनी समेत मले। तयम्मुम हो गया। औरत छूड़ियों, कंगन वगैरह के दर्मियान अच्छी तरह मले। अगर नाखून बराबर भी कोई जगह छूट जायेगी तो तयम्मुम न होगा और उंगलियों में खिलाल भी कर ले।

मस'ला १७— मिट्टी पर हाथ मार कर हाथ झाड़ डाले ताकि बाहों और मुंह पर भूत न लग जाये और सूरत न बिगड़े।

मस'ला १८— जमीन के सिवा और जो चीज़ मिट्टी की किस्म से हो, उस पर भी तयम्मुम दुरुस्त है। जैसे: रेत, मिट्टी पत्थर, गच, चूना, सुर्मा, गेरू और जो चीज़ मिट्टी की किस्म से न हो, उससे तयम्मुम दुरुस्त नहीं। जैसे: सोना, चांदी, रांगा, गेहूँ, लकड़ी, कपड़ा क्लाग़ और अनाज।

मस'ला १९— जो चीज़ न आग में जले और न गले, वह चीज़ मिट्टी की किस्म से है, उस पर तयम्मुम दुरुस्त है और जो चीज़ जलकर राख हो जाए या गल जाए उस पर तयम्मुम दुरुस्त नहीं।

मस'ला २०— अगर जमीन पर पेशाब-जैसी कोई निजासत पड़ गई और धूप से सूख गई और बदबू भी जाती रही तो वह जमीन पाक हो गई। उस पर नमाज़ दुरुस्त है। लेकिन उस जमीन पर तयम्मुम करना दुरुस्त नहीं, जब मालूम हो कि वह जमीन ऐसी है। अगर न मालूम हो तो वहम न करे।

मस'ला २१— ताँबे के बर्तन, तकिये, गन्दे कपड़े पर तयम्मूम करना दुरुस्त नहीं। मिट्टी के घड़े, बधने पर तयम्मूम दुरुस्त है—चाहे उसमें पानी भरा हुआ हो या न हो, लेकिन अगर रोगन फिरा हो तो तयम्मूम दुरुस्त नहीं।

मस'ला २२— तयम्मूम के लिए तयम्मूम का इरादा होना जरूरी है। तयम्मूम करते वक़्त अपने दिल में बस इतना इरादा कर ले कि मैं पाक होने के लिए तयम्मूम करता हूँ या नमाज़ पढ़ने के लिए तयम्मूम करता हूँ तो तयम्मूम हो जाएगा।

मस'ला २३— अगर एक नमाज़ के लिए तयम्मूम किया तो दूसरे वक़्त की नमाज़ पढ़ना दुरुस्त है। कुरआन मजीद का घूना भी उस तयम्मूम से दुरुस्त है।

मस'ला २४— किसी को नहाने की ज़रूरत है और उसे वुजू भी करना है तो एक ही तयम्मूम करे। अलग-अलग तयम्मूम करना ठीक नहीं है।

मस'ला २५— अगर पानी एक मील से दूर नहीं लेकिन वक़्त बहुत तंग है कि अगर पानी लेने जाएगा तो वक़्त जाता रहेगा तब भी तयम्मूम दुरुस्त नहीं है। पानी लाकर वुजू करे और कज़ा नमाज़ पढ़े।

मस'ला २६— किसी ने तयम्मूम करके नमाज़ पढ़ ली, फिर पानी मिल गया तो नमाज़ का दोहराना याजिब नहीं, वही नमाज़ दुरुस्त हो गई।

मस'ला २७— अगर आगे चलकर पानी मिलने की उम्मीद हो तो अच्छा है कि अव्वल वक़्त नमाज़ न पढ़े बल्कि पानी का इन्तज़ार करे लेकिन इतनी देर न लगाए कि वक़्त मकरूह हो जाए।

मस'ला २८— अगर पानी पास है लेकिन डर यह है कि रेल से उतरेगा तो रेल चल देगी। तब भी तयम्मूम दुरुस्त है या सांप वगैरह कोई जानवर पानी के पास है जिससे पानी नहीं मिल सकता तब भी तयम्मूम ठीक है।

मस'ला २९— सामान के साथ पानी बंधा था लेकिन याद न रहा और तयम्मूम करके नमाज़ पढ़ ली। फिर याद आया तो अब नमाज़ का दोहराना बाज़िब नहीं।

मस'ला ३०— अगर बुज़ू का तयम्मूम है तो बुज़ू करने के लिए (जितना पानी मिलेगा, तब तयम्मूम दूटेगा। अगर पानी कम मिला तो तयम्मूम नहीं दूटा।

मस'ला ३१— अगर रास्ते में पानी मिला लेकिन उसे पानी की कुछ खबर न हुई कि कहाँ है तब भी तयम्मूम नहीं दूटा। इसी तरह अगर रास्ते में पानी मिला और भालूम भी हो गया लेकिन रेल से न उतर सका तो भी तयम्मूम नहीं दूटा।

मस'ला ३२— अगर बीमारी की वजह से तयम्मूम किया तो जब बीमारी जाती रहे तो तयम्मूम टूट जाएगा। अब बुज़ू और गुस्ल करना बाज़िब है।

मस'ला ३३— पानी नहीं मिला इसलिए तयम्मूम कर लिया। फिर ऐसी बीमारी हो गई जिससे पानी नुकसान करता है। मगर जब पानी मिल गया तो अब वह तयम्मूम बाकी नहीं रहा जो पानी न मिलने की वजह से किया था, अब फिर से तयम्मूम करे।

मस'ला ३४— अगर नहाने की ज़रूरत थी इसलिए गुस्ल किया लेकिन ज़रा-सा बदन सूखा रह गया और पानी खत्म हो गया तो अभी वह पाक नहीं हुआ। उसे तयम्मूम कर लेना चाहिए। जब कहीं पानी मिले तो उतनी सूखी जगह धो ले, दोबारा नहाने की ज़रूरत नहीं है।

मस'ला ३५— किसी का कपड़ा या बदन नजिस है और उसे बुज़ू की भी ज़रूरत है, मगर पानी थोड़ा है तो बदन और कपड़ा धो ले और बुज़ू के बदले तयम्मूम कर ले।

मस'ला ३६— कुर्र से पानी निकालने की कोई चीज़ न हो और पानी मटके या घड़े में हो और उसे झुका कर पानी भी न लिया जा सके कि हाथ नापाक है और कोई शख्स ऐसा न हो जो उसके हाथ

धुला सके तो ऐसी हालत में तयम्मूम दुरुस्त है।

मस'ला ३७— जिस वजह से तयम्मूम किया गया है, अगर वह आदमियों की पैदा की हुई पाबंदी से हो तो जब वह दूर हो जाए तो जितनी भी नमाज़ें उसने तयम्मूम से पढ़ी हैं, सब दोबारा पढ़नी चाहिए जैसे: कोई आदमी जेलखाने में हो और जेल के मुलाज़िम उसे पानी न दें या कोई उससे कहे कि अगर वह वुजू करेगा तो जान से मार दिया जाएगा, तो उस तयम्मूम से जो नमाज़ पढ़ी उसे दोहराना पड़ेगा।

मस'ला ३८— एक जगह से और एक ठेले से कुछ आदमी आगे-पीछे तयम्मूम करें तो दुरुस्त है।

मस'ला ३९— जो शख्स पानी और मिट्टी—दोनों के इस्तेमाल की ताकत न रखता हो चाहे पानी और मिट्टी न होने की या बीमारी की वजह से, तो उसे चाहिए कि नमाज़ बिना पाक हुए पढ़ ले। फिर उसे तहारत से लौटा ले। जैसे: कोई आदमी रेल में हो और नमाज़ का वक़्त आ जाये और पानी, मिट्टी और मिट्टी के बर्तन या धूल मिट्टी न हो और नमाज़ का वक़्त जाने वाला हो तो ऐसी हालत में बिना पाक हुए नमाज़ पढ़ ले।

मस'ला ४०— जिस शख्स को आखिर वक़्त तक पानी मिलने का यकीन हो उसको नमाज़ के आखिर मुस्तहब वक़्त तक पानी का इन्तज़ार करना मुस्तहब है। जैसे: कोई आदमी रेल पर सवार हो और उसे यह अन्दाज़ा हो कि आखिर वक़्त तक रेल ऐसे स्टेशन पर पहुंच जाएगी जहां पानी मिल सकता है तो इन्तज़ार मुस्तहब है।

16 . मोज़ों का मसह

मस'ला १— अगर चमड़े के मोज़े वुजू कर के पहन ले और फिर वुजू टूट जाये तो दूसरा वुजू करते वक़्त मोज़ों पर मसह कर लेना ठीक है और अगर मोज़ा उतारकर पैर धो लिया करे तो यह सबसे बेहतर है।

मस'ला २- अगर मोजा इतना छोटा है कि टखने मोजे के अन्दर घुसे हुए न हों तो उस पर मसह ठीक नहीं। इसी तरह अगर बगैर बुजू किए मोजा पहन लिया तो वह मसह दुरुस्त नहीं। मोजा उतार कर पैरों को धोना चाहिए।

मस'ला ३- सफर में तीन दिन और तीन रात तक मोजों पर मसह करना ठीक है और सफर में न हो तो उसे एक दिन और एक रात तक और जिस वक़्त बुजू दूटा है, उस वक़्त से एक दिन या तीन रात का हिसाब किया जाएगा। जिस वक़्त मोजा पहना है उसका भरोसा न करेंगे। जैसे किसी ने जुहर के वक़्त बुजू करके मोजा पहना, फिर सूरज डूबने के वक़्त बुजू दूटा तो अगले दिन का सूरज डूबने तक मसह करना दुरुस्त है और सफर में तीसरे दिन के सूरज डूबने तक। जब सूरज डूब गया तो अब मसह करना ठीक नहीं।

मस'ला ४- अगर कोई ऐसी बात हो गई जिससे गुस्ते करना बाजिब हो गया तो मोजे उतारकर नहाए। गुस्ते के साथ मोजों पर मसह करना दुरुस्त नहीं।

मस'ला ५- मोजों पर मसह करने का तरीका यह है कि हाथ की पूरी उंगलियां तर करके आगे की तरफ मोजों पर रख दे और हथेली मोजे से अलग रखे फिर उनको खींचकर टखने की तरफ ले जाए।

मस'ला ६- अगर कोई उल्टा मसह करे यानी टखनों की तरफ से खींचकर उंगलियों की तरफ लाए तो भी जायज़ है। लेकिन यह मुस्तहब नहीं है ऐसे ही अगर लम्बाई में मसह न करे बल्कि मोजे की चौड़ाई में करे तब भी ठीक है लेकिन मुस्तहब नहीं है।

मस'ला ७- अगर तत्वों की तरफ से या एड़ियों के अगल-बगल मसह किया तो यह ठीक नहीं।

मस'ला ८- अगर पूरी उंगलियों का सिरा मोजे पर नहीं रखा बल्कि सिर्फ उंगलियों का सिरा मोजे पर रख दिया और उंगलियां खड़ी रखीं तो यह मसह ठीक नहीं हुआ।

मस'ला ९— मसह में मुस्तहब तो यह है कि हथेली की तरफ से मसह करे और अगर कोई हथेली के ऊपर की तरफ से मसह करे तब भी दुरुस्त है।

मस'ला १०— अगर किसी ने मोजों पर मसह नहीं किया लेकिन पानी बरसते वक़्त बाहर निकला या भीगी घास में चला जिस से मोजा भीग गया तो मसह हो गया।

मस'ला ११— हाथ की तीनों उंगलियों भर हर मोजे पर मसह फर्ज है इससे कम में मसह दुरुस्त न होगा।

मस'ला १२— जो चीज़ बुजू तोड़ देती है, उससे मसह भी टूट जाता है। मोजों के उतार देने से भी मसह टूट जाता है। जैसे किसी का बुजू न टूटा हो लेकिन उसने मोजे उतार डाले तो मसह जाता रहा। अब वह दोनों पैर धो ले। बुजू करने की ज़रूरत नहीं।

मस'ला १३— अगर एक मोजा उतार डाला तो दूसरा मोजा भी उतारकर दोनों पांव धोना वाजिब है।

मस'ला १४— अगर मसह की मुद्त पूरी हो गई तब भी मसह जाता रहा। अगर बुजू न टूटा तो मोजे उतारकर दोनों पांव धो ले। पूरे बुजू का दोहराना वाजिब नहीं है। अगर बुजू टूट गया हो तो मोजे उतारकर पूरा बुजू करे।

मस'ला १५— मोजे पर मसह करने के बाद कहीं पानी में पैर पड़ गया और मोजा ढीला था इसलिए उसके अन्दर पानी चला गया और पूरा या आधे से ज्यादा पांव भीग गया तब भी मसह जाता रहा। अब दूसरा मोजा भी उतार दे और दोनों पैर अच्छी तरह धोये।

मस'ला १६— जो मोजा इतना फट गया हो कि चलने में पैर की तीन छोटी उंगलियों के बराबर खुल जाता है तो उस पर मसह करना दुरुस्त नहीं और अगर इससे कम खुलता है तो मसह दुरुस्त है।

मस'ला १७— अगर एक मोजे में दो उंगलियों के बराबर पैर खुल

जाता है और दूसरे मोड़े में एक उंगली के बराबर तो कुछ हरज नहीं। मसह जायज़ है। अगर एक ही मोड़ा कई जगह से फटा है और सब मिलाकर तीन उंगलियों के बराबर खुल जाता है तो मसह जायज़ नहीं। और अगर सब मिलाकर भी पूरी तीन उंगलियों के बराबर नहीं होता तो मसह दुरुस्त है।

मस'ला १८— किसी ने मोड़े पर मसह करना शुरू किया और अभी एक दिन रात गुजरने न पाया था कि मुसाफिर हो गया तो तीन दिन तीन रात तक मसह करता रहे।

मस'ला १९— जुराबों पर मसह करना दुरुस्त नहीं, अलबत्ता अगर उन पर घमड़ा चढ़ा दिया हो या सारे मोड़े पर घमड़ा न चढ़ाया हो बल्कि मर्दाना जूते की शायल पर लगा दिया गया हो या बहुत संगीन और सख्त हों कि बगैर किसी चीज़ के बांधे हुए आप-ही-आप ठहरे रहते हों और उनको पहन कर तीन-चार मील रास्ता भी चल सकता हो तो इन सब सूरतों में जुराबों पर भी मसह दुरुस्त है।

मस'ला २०— बुर्का और दास्तानों का मसह दुरुस्त नहीं।

मस'ला २१— बूट या जूते पर मसह करना जायज़ है बशर्ते कि पूरे पैर को टखनों समेत छुपाये और उसका चाक तस्मों से इस तरह बंधा हो कि पैर की इस कदर खाल नज़र न आए जो मसह में रुकावट डाले।

मस'ला २२— किसी ने तयम्मूम की हालत में मोड़े पहने हों तो जब बुजू करे तो उन मोड़ों पर मसह नहीं कर सकता क्योंकि तयम्मूम पूरी पाकी नहीं है।

मस'ला २३— गुस्ल करने वाले को मसह जायज़ नहीं ख्याह गुस्ल फर्ज हो या सुन्नत। यानी इस तरह से कि पैरों को ऊंचा रखकर खुद बैठे और बाकी जिस्म को धोए मगर पैरों पर मसह करे, यह दुरुस्त नहीं है।

मस'ला २४— जैसे मजबूरी में बुजू नमाज़ का वक़्त जाने से दूर

जाता है वैसे ही उसका मसह भी खत्म हो जाता है और उस को मोजे उतार कर धोना बाजिब है।

17. हैज़ और इस्तिहाज़ा

हर महीने औरत की पेशाब की जगह थोड़ा बहुत खून बहता है उसे हैज़ कहते हैं। अगर खून न बहे बल्कि उसका धब्बा ही आ जाए तो वह इस्तिहाज़ा है।

मस'ला १— हैज़ की कम-से-कम मुद्त तीन दिन और तीन रात और ज्यादा-से-ज्यादा दस दिन और दस रात है। अगर किसी को तीन दिन व तीन रात से कम खून आया तो वह हैज़ नहीं इस्तिहाज़ा है।

मस'ला २— अगर तीन दिन और तीन रात ज़रा भी कम हो वह हैज़ नहीं है। जैसे: जुमे के दिन सूरज निकलते वक़्त खून आया और दोशम्बा (पीर, सोमवार) को सूरज निकलने से ज़रा पहले बन्द हो गया तो वह हैज़ नहीं इस्तिहाज़ा है।

मस'ला ३— हैज़ की मुद्त के अन्दर सुर्ख, ज़र्द, सब्ज़, खाकी यानी मटियाला स्याह जिस रंग का खून आए सब हैज़ है, जब तक गुद्दी बिल्कुल सफ़ेद दिखाई न दे, मगर जब बिल्कुल सफ़ेद दिखाई दे जैसी कि रखी गई थी तो औरत हैज़ से पाक हो गई।

मस'ला ४— नौ बरस से पहले और पचपन बरस के बाद किसी औरत को हैज़ नहीं आता, इसलिए नौ बरस से छोटी लड़की को जो खून आए वह हैज़ नहीं बल्कि इस्तिहाज़ा है। अगर पचपन बरस के बाद खून निकले और खून खूब सुर्ख या स्याह हो तो हैज़ है। मगर औरत को इस उम्र से पहले भी ज़र्द, सब्ज़ या खाकी रंग आता हो तो पचपन बरस के बाद भी ये रंग हैज़ के ही समझे जायेंगे।

मस'ला ५— किसी को हमेशा तीन-चार दिन खून आता था मगर

किसी महीने ज़्यादा आ गया और दस दिन से ज़्यादा नहीं आया तो वह सब हैज़ है और अगर दस दिन से भी बढ़ गया तो जितने दिन पहले से आदत के हैं उतना तो हैज़ और बाकी सब इस्तिहाज़ा है। उन दिनों की नमाज़ों की कज़ा पढ़ना वाज़िब है।

मस'ला ६— किसी को हमेशा चार दिन हैज़ आता था मगर एक महीने में पांच दिन खून आया। उसके बाद दूसरे महीने में पन्द्रह दिन खून आया तो इन पन्द्रह दिनों में पांच दिन हैज़ के हैं और दस दिन इस्तिहाज़ा के हैं।

मस'ला ७— किसी लड़की ने पहले पहले खून देखा तो अगर दस दिन से ज़्यादा आए तो पूरे देस दिन हैज़ के और जितना ज़्यादा हो वह सब इस्तिहाज़ा है।

मस'ला ८— एक औरत है जिसके हैज़ का कोई एक वक़्त नहीं है कभी सात दिन आता है कभी दस दिन भी जाता है तो यह सब हैज़ है। ऐसी औरत को कभी दस दिन रात से ज़्यादा खून आए तो यह देखना चाहिए कि उससे पहले कितने दिन हैज़ आया था। बस उतने ही दिन हैज़ के हैं और बाकी सब इस्तिहाज़ा है।

मस'ला ९— दोनों हैज़ों के दर्मियान पाक रहने की मुद्त कम से कम पन्द्रह दिन है और ज़्यादा की कोई हद नहीं। सो अगर किसी वजह से किसी औरत को हैज़ आना बन्द हो जाए तो जितने महीने तक खून न आएगा पाक रहेगी।

मस'ला १०— अगर किसी को तीन दिन रात खून आया। और पन्द्रह दिन पाक रही। फिर तीन दिन रात खून आया तो तीन दिन पहले के और तीन वे जो पन्द्रह दिन के बाद के हैं, हैज़ के हैं। बीच में पन्द्रह दिन पाकी का ज़माना है।

मस'ला ११— अगर किसी को एक या दो दिन खून आया फिर पन्द्रह दिन से कम पाक रही। एक या दो दिन खून आया तो बीच में पन्द्रह दिन तो पाकी का ही ज़माना है। इधर एक दो दिन खून आया

वह भी हैज़ नहीं इस्तिहाज़ा है।

मस'ला १२— अगर एक दिन या कई दिन खून आया। फिर पन्द्रह दिन से कम पाक रही है। इसका कुछ एतबार नहीं बल्कि यूँ समझा जायेगा कि जैसे शुरु से आखिर तक बराबर खून जारी रहा तब जितने दिन हैज़ के आने की आदत हो उतने दिन तो हैज़ के हैं बाकी सब इस्तिहाज़ा है। इसकी मिसाल यह है कि किसी को हर महीने की पहली, दूसरी और तीसरी तारीखों को हैज़ आने की आदत है मगर किसी महीने में ऐसा हुआ कि पहली तारीख को खून आया। और चौदह दिन पाक रही, फिर एक दिन खून आया तो ऐसा समझेंगे कि जैसे सोलह दिन बराबर खून आता रहा सो उसमें तीन दिन शुरु के तो हैज़ के हैं और तेरह दिन इस्तिहाज़ा हैं। और अगर उसकी कुछ आदत न हो बल्कि पहले-पहले खून आया हो तो दस दिन हैज़ के और छः दिन इस्तिहाज़ा के हैं।

मस'ला १३— हमल (गर्भावस्था) के दौरान जो खून आए वह भी हैज़ नहीं है। चाहे जितने दिन आए।

मस'ला १४— बच्चा पैदा होने के वक़्त बच्चा निकलने से पहले जो खून आए वह भी इस्तिहाज़ा है बल्कि जब तक आधे से ज़्यादा बच्चा न निकल आये तब तक जो खून आएगा उसे इस्तिहाज़ा ही कहेंगे।

18 . हैज़ की पाबन्दियां

मस'ला १— हैज़ के ज़माने में नमाज़ पढ़ना और रोज़ा रखना ठीक नहीं इस दौरान नमाज़ तो बिल्कुल माफ़ हो जाती है और पाक होने के बाद भी उसकी क़ज़ा वाजिब नहीं होती लेकिन रोज़ा माफ़ नहीं होता पाक होने के बाद क़ज़ा रखना पड़ेगा।

मस'ला २— अगर फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ने में हैज़ आ गया तो वह नमाज़ भी माफ़ हो गई पाक होने के बाद उसकी क़ज़ा न पड़े। और

जबकि रोज़े में हैज़ आया तो वह रोज़ा टूट गया। जब पाक हो तो कज़ा रखे। अगर नफ़्ती रोज़े में हैज़ आ जाये तो उसकी भी कज़ा रखे।

मस'ला ३— अगर नमाज़ के आखिर वक़्त में हैज़ आया और तभी नमाज़ नहीं पढ़ी तब भी वह माफ़ हो गई।

मस'ला ४— हैज़ के ज़माने में मर्द के पास रहना यानी सोहबत करना बहुत बड़ा गुनाह है। सोहबत के सिवा और सब बातें दुरुस्त हैं, यानी साथ खाना-पीना, लेटना वगैरा दुरुस्त है।

मस'ला ५— किसी की आदत पांच दिन या नौ दिन की थी। सो जितने दिन की आदत थी उतने ही दिन खून आया। फिर बन्द हो गया तो जब तक नहा न ले, तब तक सोहबत करना दुरुस्त नहीं। अगर गुस्ल न करे तो जब तक नमाज़ का वक़्त गुज़र न जाए यानी एक नमाज़ की कज़ा उसके ज़िम्मे वाजिब न हो जाये, तब तक सोहबत दुरुस्त है इससे पहले दुरुस्त नहीं।

मस'ला ६— अगर आदत पांच दिन की थी और खून चार दिन आकर ही बन्द हो गया तो गुस्ल करके नमाज़ पढ़ना वाजिब है, लेकिन जब तक पांच दिन पूरे न हो लें तब तक सोहबत करना दुरुस्त नहीं चाहे नहा चुकी हो या अभी न नहाई हो।

मस'ला ७— अगर पूरे दस दिन रात हैज़ आया तो जब से खून बन्द हुआ है उसी वक़्त से सोहबत करना दुरुस्त है चाहे नहा चुकी हो या अभी न नहाई हो।

मस'ला ८— अगर एक या दो दिन खून आकर बन्द हो गया तो नहाना वाजिब नहीं। चुज़ू करके नमाज़ पढ़े। लेकिन अभी सोहबत करना ठीक नहीं। अगर पन्द्रह दिन गुज़रने से पहले खून आ जाएगा तब मालूम होगा कि वह हैज़ का ज़माना था। हिसाब से हैज़ के जितने दिन हों उन को हैज़ समझे और अब गुस्ल करके नमाज़ पढ़े और अगर पूरे पन्द्रह दिन बीच में गुज़र गए और खून नहीं आया तो मालूम

हुआ कि इस्तिहाजा था सो एक या दो दिन खून आने की वजह से जो नमाज़ें नहीं पढ़ीं अब उनको कज़ा पढ़ना चाहिए।

मस'ला ९— तीन दिन हैज़ आने की आदत है लेकिन किसी महीने ऐसा हुआ कि तीन दिन पूरे हो चुके और अभी खून बन्द नहीं हुआ तो अभी गुस्ल न करे, न नमाज़ पढ़े। अगर पूरे दस दिन रात पर या इससे कम में खून बन्द हो जाए तो उन सब दिनों की नमाज़ें माफ हैं। कुछ कज़ा न पढ़नी पड़ेगी और यह कहा जाएगा कि आदत बदल गई इसलिए ये सब दिन हैज़ के ही होंगे। और अगर ग्यारहवें दिन भी खून आया तो अब मालूम हुआ कि हैज़ के कुल तीन ही दिन थे बाकी सब इस्तिहाजा हैं। इसलिए ग्यारहवें दिन नहाए और सात दिन की नमाज़ें कज़ा पढ़े और आगे नमाज़ न छोड़े।

मस'ला १०— अगर दस दिन से कम हैज़ आया और ऐसे वक़्त खून बन्द हुआ जब नमाज़ का वक़्त बिल्कुल तंग है कि जल्दी से नहा धो डाले तो नहाने के बाद बिल्कुल ज़रा-सा वक़्त बचेगा। जिसमें बस एक बार अल्लाहु अकबर कहकर नीयत बांधी जा सकती है। उससे ज्यादा कुछ नहीं पढ़ सकती तब भी उस वक़्त की नमाज़ वाजिब हो जायेगी और कज़ा पढ़नी पड़ेगी। अगर इससे भी कम वक़्त हो तो नमाज़ माफ है। उसकी कज़ा पढ़ना वाजिब नहीं।

मस'ला ११— अगर पूरे दस दिन रात हैज़ आया और खून ऐसे वक़्त बन्द हुआ जब कुल इतना वक़्त है कि एक दफ़ा अल्लाहु अकबर कह सकती है, इससे ज्यादा कुछ नहीं कह सकती और गुस्ल करने की कोई गुंजाइश नहीं तब भी नमाज़ वाजिब हो जाती है। उसको कज़ा पढ़नी चाहिए।

मस'ला १२— अगर रमज़ान शरीफ में दिन को पाक हुई तो अब पाक होने के बाद कुछ खाना-पीना ठीक नहीं है। शाम तक रोज़ादारों की तरह रहना वाजिब है, लेकिन वह दिन रोज़े में नहीं गिना जाएगा बल्कि उसकी भी कज़ा रखनी पड़ेगी।

मस'ला १३— अगर रात को पाक हुई और पूरे दस दिन रात हैज़

आया है तो अगर इतनी रात बाकी है कि फुर्ती से गुस्ल कर सकती है तो भी सुबह का रोज़ा वाजिब है। अगर इतनी रात तो न थी लेकिन गुस्ल नहीं किया तो रोज़ा न तोड़े बल्कि रोज़े की नीयत कर ले और सुबह को नहा ले और जो इससे भी कम रात हो यानी गुस्ल भी न कर सके तो सुबह का रोज़ा जायज़ नहीं है, लेकिन दिन को कुछ खाना-पीना भी ठीक नहीं बल्कि सारा दिन रोज़ेदारों की तरह रहे, फिर उसकी कज़ा रखे।

मस'ला १४— पाक औरत ने रात को अपनी शर्मगाह में गद्दी रख ली। जब सुबह हुई तो उस पर खून का धब्बा देखा तो जिस वक़्त से धब्बा देखा है उसी वक़्त से हैज़ माना जाएगा।

मस'ला १५— इस्तिहाज़ा का ऐसा हुक्म है जैसे किसी को नवसीर फूटे और बन्द न हो। ऐसी औरत नमाज़ भी पढ़े, रोज़ा भी रखे, कज़ा नहीं करना चाहिए और उससे सोहबत करना भी ठीक है।

19. निफ़ास

बच्चा पैदा होने के बाद आगे की राह से जो खून आता है उसे निफ़ास कहते हैं। निफ़ास की मुद्दत ज़्यादा से ज़्यादा चालीस दिन है और कमी की तो कोई हद नहीं। अगर किसी को एक-आध घड़ी खून आकर बन्द हो जाए तो वह भी निफ़ास है।

मस'ला १— अगर बच्चा पैदा होने के बाद किसी को बिल्कुल खून न आए तब भी जनने के बाद नहाना वाजिब है।

मस'ला २— आधे से ज़्यादा बच्चा निकल आया लेकिन अभी पूरी तरह नहीं निकला उस वक़्त जो खून आयेगा वह भी निफ़ास है।

मस'ला ३— किसी औरत का हमल गिर गया तो अगर बच्चे का एक आधा हिस्सा बन गया तो गिरने के बाद जो खून आयेगा वह भी निफ़ास है और अगर बिल्कुल नहीं बना, बस गोश्त का तोथड़ा है तो

वह निफास नहीं है। इसलिए अगर वह खून हैज़ बन सके तो हैज़ है और अगर हैज़ भी न बन सके जैसे तीन दिन से कम आए या पाकी का ज़माना अभी पूरे पन्द्रह दिन नहीं हुआ तो वह इस्तिहाज़ा है।

मस'ला ४— अगर खून चालीस दिन से बढ़ गया तो अगर पहली बार वही बच्चा हुआ तो चालीस दिन निफास के हैं और जितना ज़्यादा आया है, वह इस्तिहाज़ा है। इसलिए चालीस दिन के बाद नहा डाले और नमाज़ पढ़ना शुरू कर दे, खून बन्द होने का इन्तज़ार न करें। और अगर वह पहला बच्चा नहीं बल्कि उससे पहले भी जना है और उसकी आदत मालूम है कि इतने दिन निफास आता है तो जितने दिन निफास की आदत हो, उतने दिन निफास के हैं और जो इससे ज़्यादा है वह इस्तिहाज़ा है।

मस'ला ५— किसी को तीस दिन निफास आता है, लेकिन तीस दिन गुज़र गए और खून भी बन्द नहीं हुआ तो अभी न नहाए। अगर पूरे चालीसवें दिन खून बन्द हो गया तो यह सब निफास है। अगर चालीस दिन से ज़्यादा हो जायें तो निफास के कुल तीस दिन हैं और बाकी सब इस्तिहाज़ा है। इसलिए वह जल्दी से गुस्ल कर ले और उस दिन की नमाज़ की कज़ा पढ़े।

मस'ला ६— अगर चालीस दिन से पहले निफास बन्द हो जाए तो उसी वक़्त गुस्ल करके नमाज़ पढ़ना शुरू कर दे। और अगर गुस्ल नुवसान करे तो तयम्मूम करके नमाज़ पढ़ना शुरू कर दे। कभी कोई नमाज़ कज़ा न होने दे।

मस'ला ७— निफास में भी नमाज़ बिल्कुल माफ़ है और रोज़ा नमाज़ और सोहबत करने के बाद यहां वही मसले हैं जो ब्यान किए जा चुके हैं।

मस'ला ८— अगर छः महीने के अन्दर-अन्दर आगे-पीछे दो बच्चे हों तो निफास की मुद्दत पहले बच्चे से मानी जाएगी। अगर दूसरा बच्चा दस-बीस दिन या एक-दो महीने बाद हुआ तो दूसरे बच्चे से हिसाब न होगा।

20. हैज और निफास का ब्यान

मस'ला १— जो औरत हैज या निफास से हो और जिस पर नहाना वाजिब हो उसे मस्जिद में जाना, का'बा शरीफ का तवाफ करना और कलाम मजीद का घूना व पढ़ना ठीक नहीं अलबत्ता अगर कलाम मजीद जुजदान (गिलाफ) में लिपटा हो या उस पर कपड़े की चोली घदी हो और जित्द के साथ सिली हुई न हो बल्कि अलग होकर उतर सके तो इस हालत में कुरआन मजीद का घूना और उठाना ठीक है।

मस'ला २— जिस रुपये, पैसे, तरतरी, तावीज़ या किसी और चीज़ में कुरआन शरीफ की कोई आयत लिखी हो उसे भी घूना उसके लिए ठीक नहीं। हां, अगर धैली या बर्तन दगैरा में रखे हों तो उस धैली और बर्तन को घूना और उठाना ठीक है।

मस'ला ३— कुर्ते के दामन और दुपट्टे के आंचल से भी कुरआन मजीद को पकड़ना और उठाना ठीक नहीं अलबत्ता अगर बदन से अलग कोई कपड़ा हो जैसे रुमाल, तौलिया से पकड़ कर उठाना जायज़ है।

मस'ला ४— अगर पूरी आयत न पढ़े बल्कि आयत का एक लफ़्ज़ या आधी आयत पढ़े तो ठीक है लेकिन आयत इतनी बड़ी न हो कि किसी छोटी आयत के बराबर हो जाए।

मस'ला ५— अगर 'अलहम्दु' की पहली सूरत दुआ की नीयत से पढ़े या दुआएं जो कुरआन मजीद में आई हैं उन्हें दुआ की नीयत से पढ़े, तिलावत के इगदे से न पढ़े तो ठीक है। इसमें कुछ गुनाह नहीं जैसे यह दुआ—

رَبَّنَا إِنَّا أَلَيْنَا عَلَى الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةٌ وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ

रखना आतिना फिटुन्वा ह--स--नतीं व फिल आखिरति
ह--स--नतीं व किना अज़ाबन्नार०

(ऐ खुदा हमें दुनिया में भलाई दे, आखिरत में भलाई दे और कष्ट
के अज़ाब से बचा)

رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَا إِنْ نَسِينَا أَوْ أَخْطَأْنَا

और यह दुआ:-

रखना ला तुआखिज़्ना इन्नसीना औ अख़्तअन्ना

(ऐ खुदा! अगर हम भूल जाएं तो हम से पूछताछ न कर।)

आखिर तक जो सूरः बकरः के आखिर में लिखा है या और कोई
दुआ जो कुरआन शरीफ में आई हो दुआ की नीयत से पढ़ना भी ठीक
है।

मस'ला ६- दुआए कुनूत का पढ़ना ठीक है।

मस'ला ७- अगर कोई औरत लड़कियों को कुरआन शरीफ
पढ़ाती हो तो ऐसी हालत में हिज्जे कराना ठीक है। और बिना हिज्जे
कराए पढ़ाते वक़्त पूरी आयत न पढ़े बल्कि एक-एक दो-दो लफ़्ज़ के
बाद सांस छोड़ दे और काट-काट करके आयत रवां कहलाए।

मस'ला ८- कलिमा, दुरुद शरीफ पढ़ना और खुदा का नाम
लेना, 'इस्तिग़फ़ार' पढ़ना या और कोई वज़ीफ़ा पढ़ना जैसे:-

لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ ط

लाहील व ला कूव्वत इल्ला बिल््लाहील अलीय्यिल अज़ीम०

'नहीं है कोई ताक़त सिवाए बुजुर्ग व बरतार अल्लाह के'

मना नहीं है, यह सब ठीक है।

मस'ला ९- हैज़ के ज़माने में मुस्तहब है कि नमाज़ के वक़्त बुजु

करके किसी पाक जगह थोड़ी देर बैठकर अत्लाह अत्लाह कर लिया करे ताकि नमाज़ की आदत छूट न जाए और पाक होने के बाद नमाज़ से जी उघाट न हो।

मस'ला १०— किसी को नहाने की ज़रूरत थी और अभी नहाने न पाई थी कि हैज़ आ गया तो अब उस पर नहाना वाजिब नहीं बल्कि जब हैज़ से पाक हो तब नहाए। एक ही गुस्ल काफी हो जायेगा।

21. नजासत कैसे पाक की जाए?

नजासत दो तरह की होती है— एक वह जिसकी गन्दगी ज्यादा सख्त है। थोड़ी-सी लग जाए तब भी धोने का हुक्म है उसे नजासत गलीज़ा (गाढ़ी नापाकी) कहते हैं और दूसरी वह जिसकी नजासत ज़रा कम और हल्की है उसे नजासत खफीफा (हल्की नापाकी) कहते हैं।

मस'ला १— खून और आदमी का पाखाना, पेशाब, मनी और शराब, कुत्ते, बिल्ली का पाखाना, पेशाब, सूअर का गोश्त और उसके बाल व हड्डी, घोड़े, खच्चर की लीद और गाय, बैल, भैंस वगैरा का गोबर और बकरी भेड़ की मँगनी वगैरा यहां तक कि सब जानवरों का पेशाब पाखाना मुर्गी, बत्ख, और मुर्गाबी की बीट, गधे, खच्चर और सब जानवरों का पेशाब— ये सह चीज़ें गाढ़ी नजासत में आती हैं। इनका हुक्म वही है जो ऊपर ब्यान किया गया है।

मस'ला २— छोटे दूध पीते बच्चे का पेशाब, पाखाना भी गाढ़ी नजासतें हैं।

मस'ला ३— हराम परिन्दों की बीट और हलाल जानवरों का पेशाब जैसे बकरी, गाय, भैंस, वगैरह और घोड़े का पेशाब सब हल्की नजासतें हैं।

मस'ला ४— मुर्गी, बत्ख, मुर्गाबी के सिवा और हलाल परिन्दों की बीट पाक है जैसे कबूतर, चिड़िया मैना बगैरा। घमगादड़ का पेशाब और बीट भी पाक है। गाढ़ी नजासतों में अगर पतली और बहने वाली चीज़ कपड़े या बदन पर लग जाए और वह अगर फैलाव में रुपये के बराबर या इससे कम हो तो माफ़ है। अगर इसको धोए बगैर नमाज़ पढ़ ले नमाज़ हो जाएगी। लेकिन न धोना और वैसे ही नमाज़ पढ़ते रहना मकरूह और बुरा है। अगर नजासत रुपये से ज्यादा हो तो वह माफ़ नहीं, बिना उसके धोए नमाज़ न होगी। अगर उस गाढ़ी नजासत में से गाढ़ी चीज़ लग जाए जैसे मुर्गी बगैरा, कुल बीट अगर वज़न में साढ़े चार माशे या इससे कम हो तो बगैर धोए नमाज़ ठीक है लेकिन अगर इससे ज्यादा लग जाए तो बिना धोए नमाज़ ठीक नहीं।

मस'ला ५— अगर हल्की नजासत कपड़े या बदन में लग जाए तो जिस हिस्से में लगी है, अगर चौथाई से कम में लगा हो तो माफ़ है अगर पूरा चौथाई या इससे ज्यादा हो तो माफ़ नहीं। उसका धोना वाजिब है। मतलब यह है कि बगैर धोए नमाज़ ठीक नहीं है।

मस'ला ६— गाढ़ी नजासत जिसमें पानी पड़ जाए वह भी गाढ़ी निजासत हो जाती है। अगर हल्की नजासत पड़ जाए तो वह पानी भी हल्का नजिस हो जाता है चाहे वह थोड़ी पड़े या ज्यादा।

मस'ला ७— कपड़े में नजिस तेल लग गया और हथेली के गहराव यानी रुपये से कम भी है, लेकिन दो एक दिन में फैलकर ज्यादा हो गया तो जब तक रुपये से ज्यादा न हो माफ़ है और जब बढ़ गया तो माफ़ नहीं रहा। अब उसका धोना वाजिब है। बगैर धोए हुए नमाज़ न होगी।

मस'ला ८— मछली का खून नजिस नहीं है अगर लग जाए तो कुछ हरज नहीं। इसी तरह मक्खी, खटमल, मच्छर का खून भी नजिस नहीं है।

मस'ला ९— अगर पेशाब की छोटें सूई की नोक के बराबर पड़

जाए जो देखने से दिखाई न दें तो इसका कुछ हरज नहीं है। धोना बाजिब नहीं है।

मस'ला १०— अगर दलदार नजासत लग जाए जैसे पाखाना, पेशाब, खून तो इतना धोए कि नजासत छूट जाए और धब्बा जाता रहे चाहे जितनी बार में छूटे। जब भी नजासत छूट जाए कपड़ा पाक हो जाएगा। और अगर बदन में लग गई हो तो उसके लिये भी यही हुक्म है। कम-से-कम तीन बार तो जरूर ही धोए।

मस'ला ११— अगर ऐसी नजासत है कि कई बार धोने और नजासत के छूट जाने पर बदबू नहीं गई या कुछ धब्बा रह गया तब भी कपड़ा पाक हो जाएगा। साबुन लगाकर धब्बा छुड़ाना और बदबू दूर करना जरूरी नहीं।

मस'ला १२— अगर पेशाब की तरह कोई नजासत लग गई जो बलदार नहीं है तो तीन बार धोए और हर बार निचोड़े और तीसरी बार पूरी ताकत लगाकर खूब जोर से निचोड़े तब पाक होगा। अगर खूब जोर से न निचोड़ेगा तो कपड़ा पाक न होगा।

मस'ला १३— अगर नजासत ऐसी चीज़ में लगी है जिसे निचोड़ा न जा सके जैसे तख्त, घटाई, जेवर, बर्तन, जूता तो उसके पाक करने का यह तरीका है कि एक बार धोकर ठहर जाए जब पानी टपक कर बन्द हो जाए, फिर धोए। फिर जब टपकना बन्द हो जाए फिर धोए। इसी तरह तीन बार धोए तो वह चीज़ पाक हो जाएगी।

मस'ला १४— पानी की तरह जो चीज़ पतली और पाक हो उससे भी नजासत का धोना दुरुस्त है जैसे अर्क गुलाब, सिरका वगैरा, लेकिन घी, तेल और दूध जैसे चिकनी चीज़ से धोना दुरुस्त नहीं है। वह चीज़ नापाक रहेगी।

मस'ला १५— जूते और चमड़े के मोजे में अगर दलदार नजासत लग जाए जैसे गोबर, पाखाना, खून वगैरह तो ज़मीन पर इतना रगड़ डाले कि नजासत का नाम भी बाकी न रहे तो पाक हो जाएगा।

मस'ला १६— अगर पेशाब की तरह कोई पतली नजासत जूते या चमड़े के मोजे में लग गई जो दलदार नहीं है तो पाक हो जाएगा।

मस'ला १७— कपड़ा और बदन सिर्फ धोने से ही पाक होता है चाहे दलदार नजासत लगे या बेदल वाली। किसी और तरह पाक नहीं होता।

मस'ला १८— आईने का शीशा, छुरी, चाकू, चांदी-सोने के जेवर, फूल, तांबे, लोहे, गिलठ, सीसा वगैरह की चीजें अगर नजिस हो जायें तो खूब साफ कर लेने और रगड़ लेने या मिट्टी से मलने से पाक हो जाती हैं लेकिन अगर नदशीन चीजें हों तो धोए बिना पाक न होगी।

मस'ला १९— जमीन पर नजासत पड़ गई और ऐसी सूख गई कि नजासत का निशान बिल्कुल जाता रहा। न तो नजासत का धब्बा है, न बदबू आती है तो इस तरह सूख जाने से जमीन पाक हो जाती है। लेकिन ऐसी जमीन पर तयम्मूम करना दुरुस्त नहीं, अलबत्ता नमाज़ पढ़ना ठीक है। जो ईंटें या पत्थर, चूना या गारे से जमीन में खूब जमा दिए गए हों कि बगैर खोदे जमीन से जुदा न हो सकें उनका भी यही हुक्म है कि सूख जाने और नजासत का निशान न रहने से पाक हो जायेंगे।

मस'ला २०— जो ईंटें जमीन पर बिछा दी गई हों और चूने या गारे से उनकी गुड़ाई नहीं की गई है तो वे सूखने से पाक न होगी। उनको धोना ही पड़ेगा।

मस'ला २१— जमीन पर जमी हुई घास भी सूखने और नजासत का निशान जाते रहने से पाक हो जाती है। अगर कटी हुई घास हो तो बिना धोए पाक न होगी।

मस'ला २२— नजिस चाकू, छुरी या मिट्टी और तांबे वगैरह के बर्तन अगर दहकती आग में डाल दिए जाएं जब भी पाक हो जाते हैं।

मस'ला २३— नजिस मिट्टी से जो बर्तन कुम्हार ने बनाए तो जब

तक वे कच्चे हैं नापाक हैं, मगर जब पका लिए गए तो पाक हो गए।

मस'ला २४— शहद, शीरा, घी, तेल नापाक हो गया तो जितना तेल बगैरह हो, उतना या उससे ज्यादा पानी डालकर पकाए। जब पानी पक जाये तो फिर पानी डाल कर पकाये। इसी तरह तीन बार पकाने से पाक हो जाएगा।

मस'ला २५— नजिस रंग में कपड़ा रंगा तो फिर इतना धोये कि पानी साफ आने लगे तो पाक हो जायेगा। चाहे कपड़े से रंग छूटे या न छूटे।

मस'ला २६— गोबर के कड़े और लीद-जैसी नजिस चीजों की राख पाक है और उनका धुआ भी पाक है। रोटी में लग जाए तो कुछ हरज नहीं।

मस'ला २७— बिछौने का एक कोना नजिस है और बाकी सब पाक है तो पाक कोने पर नमाज़ पढ़ना दुरुस्त है।

मस'ला २८— जिस ज़मीन को गोबर से लीपा हो वह नजिस है। उस पर बगैर कोई पाक चीज़ बिछाए नमाज़ दुरुस्त नहीं।

मस'ला २९— गोबर से लिपी हुई ज़मीन अगर सूख गई हो तो उस पर गीला कपड़ा बिछाकर भी नमाज़ पढ़ना दुरुस्त है लेकिन वह इतना गीला न हो कि उस ज़मीन की कुछ मिट्टी छूटकर कपड़े में लग जाये।

मस'ला ३०— पैर धोकर नापाक ज़मीन पर घला और ज़मीन पर पैर का निशान बन गया तो उससे पैर नापाक न होगा। हां अगर पैर के पानी से ज़मीन इतनी भीग गई कि ज़मीन की कुछ मिट्टी या नजिस चीज़ पैर में लग जाए तो नजिस हो जाएगा।

मस'ला ३१— जिस बिछौने पर सोया और पसीने से वह कपड़ा तर हो गया तो इसका भी यही हुक्म है कि उसका कपड़ा और बदन नापाक न होगा।

मस'ला ३२— नजिस मेंहदी हाथों, पैरों में लगाई तो तीन बार खूब धो डालने से हाथ पैर पाक हो जाएंगे, रंग का छुड़ाना वाजिब नहीं।

22. पाकी और नापाकी

मस'ला १— गुल्ला उगाहने के वक़्त अगर बैल गुल्ले पर पेशाब कर दे तो ज़रूरत की वजह से यह माफ़ है यानी गुल्ला उससे नापाक न होगा। और अगर उस वक़्त के सिवा दूसरे वक़्त में पेशाब करे तो नापाक हो जाएगा।

मस'ला २— काफ़िर खाने की जो चीज़ें बनाते हैं उनको और इसी तरह उनके बर्तन और कपड़े वगैरह को नापाक न कहा जाएगा। जब तक कि उनका नापाक होना किसी दलील या तरीक़े से मालूम न हो।

मस'ला ३— कुछ लोग जो शेर वगैरह की घर्बी को काम में लाते हैं और इसे पाक जानते हैं, यह दुरुस्त नहीं। हां अगर किसी दीनदार हकीम की यह राय हो कि उस मर्ज़ का इलाज सिवाय घर्बी के और कुछ नहीं तो ऐसी हालत में कुछ आलिमों के नज़दीक दुरुस्त है लेकिन नमाज़ के वक़्त उसे पाक करना ज़रूरी होगा।

मस'ला ४— रास्तों की कीचड़ और नापाक पानी माफ़ है बशर्ते कि बदन या कपड़े में नजासत का असर मालूम न हो, फत्वा (धार्मिक आदेश) इसी पर है।

मस'ला ५— नजासतों से जो बुखारात (गैसें) उठें वे पाक हैं। फल वगैरह के कीड़े पाक हैं मगर उनका खाना दुरुस्त नहीं, अगर उनमें जान पड़ गई हो। गूलर वगैरह सब फलों के लिए यही हुक्म है।

मस'ला ६— खाने की चीज़ें अगर सड़ जायें और बू देने लगें तो नापाक नहीं होतीं जैसे गोश्त, हलवा। मगर नुक़सान के इत्थाल से

उनका खाना दुरुस्त नहीं।

मस'ला ७— मुश्क और उसका नाफा (नाभि) पाक है और इसी तरह अम्बर भी।

मस'ला ८— सोते में आदमी के मुंह से जो पानी निकलता है वह पाक है।

मस'ला ९— हलाल जानवर का गन्दा अंडा पाक है मगर जब कि वह टूटा न हो।

मस'ला १०— जिस पानी से कोई नजिस चीज़ धोई जाए वह नापाक है।

मस'ला ११— मुर्दा इन्सान के मुंह का लुआब नापाक है।

मस'ला १२— साँप की केंचुली पाक है लेकिन उसकी खाल नापाक है, यानी वह जो उसके बदन से लगी रहती है।

मस'ला १३— इकहरे कपड़े में एक तरफ माफी के काबिल नजासत लगे और दूसरी तरफ निकल जाये और हर तरह से कम हो लेकिन दोनों के योग उस भिक्दार से बढ़ जाए तो वह कम ही समझी जायेगी और माफ होगी। अगर कपड़ा दोहरा हो और उस भिक्दार से बढ़ जाए तो वह ज्यादा समझी जाएगी और माफ न होगी।

मस'ला १४— दूध दूहते वक़्त दो-एक मेंगनियां दूध में पड़ जाएं या थोड़ा-सा गोबर दो-एक मेंगनियों के बराबर गिर जाये तो माफ है बशर्ते कि गिरते ही निकाल डाला जाये।

मस'ला १५— अगर पांच साल का ऐसा लड़का जो बुज्जू को नहीं समझता वह अगर बुज्जू करे या दीवाना बुज्जू करे तो यह पानी काम में नहीं लाना चाहिए।

मस'ला १६— पाक कपड़ा बर्तन और दूसरी पाक चीज़ें भी जिस पानी से धोयी जायें उससे बुज्जू और गुस्ल दुरुस्त है बशर्ते कि पानी

की तीन खूबियों में से दो खूबियाँ बाकी हों अगरचे एक खूबी बदल गई हो। अगर दो खूबियाँ बदल जायें तो फिर मकरुह है।

मस'ला १७— काम में लाए हुए पानी का पीना और खाने की चीज़ों में लेना मकरुह है। बुजू और गुस्ल भी इससे ठीक नहीं है। हां ऐसे पानी से अगर नजासत धो ली जाए तो ठीक है।

मस'ला १८— ज़मज़म के पानी से बग़ैर बुजू करने वाले को बुजू न करना चाहिए। इसी तरह वह आदमी जिसको नहाने की ज़रूरत है उससे गुस्ल न करे। इससे नापाक चीज़ों का धोना और इस्तिंजा करना मकरुह है। हां! अगर मजबूरी हो और ज़रूरी पाकी किसी और तरह से हासिल न हो सकती हो तो ज़मज़म के पानी से गुस्ल करना चाहिए। मस'ला १९— औरत के बुजू और गुस्ल के बचे हुए पानी से मर्द को बुजू और गुस्ल न करना चाहिए।

मस'ला २०— तन्नूर अगर नापाक हो जाए तो उसमें आग जलाने से पाक हो जायेगा, बशर्ते कि गर्म होने के बाद नापाकी का असर न रहे।

मस'ला २१— नापाक ज़मीन पर मिट्टी वग़ैरह डालकर नजासत छिपा दी जाए। इस तरह की नजासत की बू न आए तो मिट्टी का ऊपर का हिस्सा पाक है।

मस'ला २२— नापाक तेल या घर्बी का साबुन लिया जाए तो पाक हो जाएगा।

मस'ला २३— फ़स्द के मक़ाम या किसी और हिस्से को जो खून पीप के निकलने से नजिस हो गया हो और धोना नुवसान करता हो तो उसे तर कपड़े से साफ़ कर ले तो काफी है अगरचे रंग दूर न हो।

मस'ला २४— ऐसी नापाक चीज़, जो चिकनी हो जैसे तेल, घी, मुर्दार की घर्बी। अगर किसी चीज़ में लग जाए और इतनी धोई जाए कि पानी साफ़ निकलने लगे तो पाक हो जाएगी।

मस'ला २५— नापाक तेल सर में डाल लिया या बदन में लगा लिया तो कायदे के मुताबिक तीन बार धोने से पाक हो जाएगा।

मस'ला २६— कुत्ते ने आटे में मुंह डाल दिया या बन्दर ने जूठा कर दिया तो उतना गुंधा हुआ आटा निकाल दे। बाकी का खाना दुरुस्त है और अगर सूखा आटा हो तो जहां-जहां उसके मुंह का लुआब लगा हो निकाल दे। बाकी सब पाक है।

मस'ला २७— कुत्ते का लुआब नापाक है और खुद कुत्ता नजिस नहीं, सो अगर कुत्ता किसी के कपड़े या बदन से छू जाए तो नजिस नहीं होता। चाहे कुत्ते का बदन सूखा हो या गीला।

मस'ला २८— रुमाली भीगी होने के वक़्त पेट की हवा निकले तो उससे कपड़ा नापाक नहीं हुआ।

मस'ला २९— अगर लकड़ी का तख्ता एक तरफ से नजिस है और दूसरी तरफ से पाक है तो अगर इतना मोटा है कि बीच से घिर सकता है तो उसको पलट कर दूसरी तरफ नमाज़ पढ़ना ठीक है और अगर इतना मोटा न हो तो ठीक नहीं।

मस'ला ३०— दो तहों का कोई कपड़ा है जिसकी एक तह पाक और दूसरी नापाक है तो अगर दोनों तहें सिली हुई हों तो एक तह पर भी नमाज़ पढ़ना दुरुस्त नहीं।

23. इस्तिंजा

मस'ला १— जब सो कर उठे तो जब तक पहुंचों तक हाथ न धो ले उस वक़्त तक पानी में हाथ न डाले। चाहे हाथ पाक हो या नापाक हो। अगर पानी छोटे बर्तन में रखा हो जैसे लोटा या आबखूरा तो उसे बाएं हाथ से उठा कर दाएं पर डाले और तीन बार धोए। फिर बर्तन दाहिने हाथ से लेकर बायां हाथ तीन बार धोए अगर छोटे बर्तन में पानी न हो बड़े मटके वगैरह में हो तो किसी आबखूरे या गिलास

वगैरह से निकाल ले लेकिन उंगलियां पानी में न डूबें।

मस'ला २— जो नजासत आगे या पीछे की जगह से निकले उसका पानी से इस्तिजा करना सुन्नत है।

मस'ला ३— अगर नजासत बिल्कुल इधर-उधर न लगे और इस लिए पानी से इस्तिजा न करे बल्कि पाक पत्थर या ढेले से इस्तिजा कर ले और इतना साफ कर डाले कि नजासत बिल्कुल जाती रहे तो भी जायज़ है लेकिन यह बात सफाई के मिज़ाज के खिलाफ है अलबत्ता अगर पानी न हो या कम हो तो मजबूरी है।

मस'ला ४— ढेले से इस्तिजा करने का कोई ख़ास तरीका नहीं है बस इतना ख़्याल रखे कि नजासत इधर-उधर न फैलने पाए और बदन ख़ूब साफ हो जाए।

मस'ला ५— ढेले से इस्तिजा करने के बाद पानी से इस्तिजा करना सुन्नत है लेकिन अगर नजासत हथेली के गहराव यानी रुपए से ज़्यादा फैल जाये तो ऐसे वक़्त में पानी से धोना वाजिब है। वगैर धोये नमाज़ न होगी।

मस'ला ६— पानी से इस्तिजा करे तो पहले दोनों हाथ पहुंचों तक धो ले फिर तनहाई की जगह जाकर बदन ढीला करके बैठे और इतना धोए कि दिल कहने लगे कि अब बदन पाक हो गया।

मस'ला ७— हड्डी और नजासत जैसे गोबर, लीद, वगैरह और कोयला, कंकर, शीशा, पक्की ईंट, खाने की धीज़ और कागज़ से और दाहिने हाथ से इस्तिजा करना बुरा और मना है। ऐसा नहीं करना चाहिए।

मस'ला ८— खड़े-खड़े पेशाब करना मना है।

मस'ला ९— पेशाब पाखाना करते वक़्त कबले की तरफ मुंह और पीठ करना मना है।

मस'ला १०— छोटे बच्चे को कबले की तरफ बिठा कर हगाना

और मुताना भी मकरूह है।

मस'ला ११— इस्तिज्जे के बचे हुए पानी से बुजू करना ठीक है और बुजू के बचे हुए पानी से इस्तिजा भी ठीक है लेकिन न करना ही अच्छा है।

मस'ला १२— जब पाखाना, पेशाब करने के लिए जाये तो पाखाने के दरवाजे से बाहर बिस्मिल्लाह कहे और यह दुआ पढ़े :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنَ الْغُبِّ وَالْخَبَائِثِ

अल्लहुम्म इन्नी अउजुबिक मिनल खुब्बि वल खबाइस०

(ऐ अल्लाह ! मैं खराब मर्दों और औरतों से तेरी पनाह मांगता हूँ।)

वहां नंगे सिर न जायें। अगर किसी अंगूठी पर अल्लाह, रसूल का नाम हो तो उसे उतार लें। पहले बायां पैर रखे और खुदा का नाम न ले और अगर छींक आये तो बस दिल ही दिल में अल्हमुदिल्लिहाह कहे, ज़बान से कुछ न कहे; न वहां कुछ बोले; न बात करे। फिर जब निकले तो दाहिना पैर बाहर निकाले और दरवाजे से निकल कर यह दुआ पढ़े :-

غُفِرَ اَنْتَ الْاَمْرُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَذْهَبَ عَنِّیْ الْاَذٰی وَغَاثَنِیْ

गुफरानक अल्हमुदु लिल्लाहिल्लज़ी अज़हब अन्निल् अज़ा व आफ़ानी०

(मैं तेरी क्षमा चाहता हूँ। सब प्रशंसा उस अल्लाह की है जिसने मुझसे कष्ट दूर कर दिया और मुझे सुरक्षा दी।) इस्तिज्जे के बाद बाएँ हाथ को साबुन से मल कर धो लें।

24. पेशाब-पाख़ाने के वक़्त की एहतियातें

मस'ला १— बात करना बिना ज़रूरत खांसना, किसी आयत, हदीस या और किसी पाक चीज़ का पढ़ना जिस पर खुदा, नबी या किसी फ़रिश्ते का नाम या कोई आयत, हदीस या दुआ लिखी हुई हो अपने साथ रखना। हां। अगर ऐसी चीज़ जेब में हो या तावीज़, कपड़े वगैरह में लिपटी हुई हो तो कराहियत (मकरूह होना) नहीं। बिना ज़रूरत खड़े हो कर या लेट कर पाख़ाना, पेशाब करना, सब कपड़े उतार कर नंगे होकर पाख़ाना पेशाब करना, चाँद, सूरज की तरफ़ पाख़ाना पेशाब के वक़्त मुंह या पीठ करना मकरूह है।

नहर या तालाब वगैरह के किनारे पाख़ाना पेशाब करना मकरूह है अगरचे उसमें नजासत न गिरे। इसी तरह ऐसे पेड़ के नीचे जिसके साये में लोग बैठते हों। और इसी तरह फल-फूल वाले पेड़ के नीचे और जाड़ों में जिस जगह धूप लेने को लोग बैठते हों। जानवरों के दर्मियान, मस्जिद और ईदगाह के इतना करीब जिसकी बदबू से नमाज़ियों को तकलीफ़ हो, क़स्तिन में या ऐसी जगह जहां लोग गुज़्र या गुस्त करते हों। रास्ते में और हवा के रुख़ पर, सूराख़ में और काफ़िला या किसी भीड़ के करीब मकरूह है। मतलब यह है कि ऐसी जगह जहां लोग बैठते हों और उनको तकलीफ़ हो। और ऐसी जगह भी जहां गन्दगी बहकर अपनी तरफ़ आए मकरूह है।

25. चीज़ें जिन से इस्तिंजा नहीं होता

मस'ला १— हड्डी, खाने की चीज़ें, लीद और सब नापाक चीज़ें, वह ढेला और पत्थर जिससे एक बार इस्तिंजा किया जा चुका हो,

पुख्ता ईट, ठीकरी, शीशा, कोयला, घूना, लोहा, वगैरह और ऐसी चीजों से इस्तिजा करना जो नजासत को साफ न करें। जैसे सिका, वे चीजें जिनको जानवर वगैरह खाते हों। जैसे: भुस और घास वगैरह। और ऐसी चीजें जो कीमत वाली हों, चाहे थोड़ी कीमत हो या बहुत। जैसे: कपड़ा, अर्क वगैरह आदमी के बदन के हिस्से जैसे: बाल, हड्डी, गोश्त वगैरह मस्जिद की चटाई, कूड़ा या झाड़ वगैरह। पेड़ों के पत्ते, कागज़, चाहे लिखा हो या सादा ज़मज़म का पानी, रुई और सब ऐसी चीजें जिनसे इन्सान या उसके जानवर फायदा उठाए— इन तमाम चीजों से इस्तिजा मकरूह है।

26. चीजें जिनसे इस्तिजा किया जाए

मस'ला १— पानी, मिट्टी का ढेला, पत्थर, बे-कीमत कपड़ा और वे सब चीजें जो पाक हों और नजासत को दूर कर दें, उनसे इस्तिजा दुरुस्त है बशर्ते कि कीमती और एहतशाम (आदर) वाली न हों।

2. सलात (नमाज़)

1. नमाज़ क्या है?

अल्लाह तआला के नज़दीक नमाज़ का बहुत बड़ा रुत्बा है। कोई इबादत अल्लाह के नज़दीक नमाज़ से ज़्यादा प्यारी नहीं है। अल्लाह ने अपने बन्दों पर पांच वक़्तों की नमाज़ें फ़र्ज़ कर दी हैं जिनके पढ़ने का बड़ा सवाब है और छोड़ना बहुत बड़ा गुनाह।

हदीस शरीफ़ में आया है कि जो कोई अच्छी तरह से जुज़ू किया करे और ख़ूब दिल लगा कर अच्छी तरह नमाज़ पढ़ा करे, क़ियामत के दिन अल्लाह उसके छोटे-बड़े सब गुनाह बख़्शा देगा। रसूलुल्लाह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि नमाज़ दीन का सुतून है। सो जिसने नमाज़ को अच्छी तरह पढ़ा उसने दीन ठीक रखा। जिसने उस सुतून को गिरा दिया यानी नमाज़ न पढ़ी उसने दीन को बरबाद कर दिया। रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया है कि क़ियामत में सबसे पहले नमाज़ों की ही पूछ होगी और नमाज़ियों के हाथ, पांव और मुँह क़ियामत में सूरज की तरह चमकते होंगे।

औलाद जब सात बरस की हो जाए तो मां-बाप को हुक्म है कि उसे नमाज़ पढ़वाएं और जब दस बरस की हो जाए तो मार कर पढ़वाएं। नमाज़ का छोड़ना किसी वक़्त दुरुस्त नहीं है।

2. नमाज़ का वक़्त

मस'ला १— पिछली रात को सुबह होते वक़्त पूरब की तरफ़ यानी जिधर से सूरज निकलता है आसमान की लम्बाई पर कुछ

सफेदी दिखाई देती है। फिर थोड़ी देर में आसमान के किनारे पर चौड़ाई में सफेदी मालूम होती है और पलक झपकते में बढ़ती जाती है और थोड़ी देर में उजाला हो जाता है तो जब थोड़ी सफेदी दिखाई दे तब से फज्र की नमाज़ का वक़्त शुरू हो जाता है और सूरज निकलने तक बाकी रहता है। जब सूरज का ज़रा सा किनारा निकल आता है तो फज्र का वक़्त ख़त्म हो जाता है।

मस'ला २— दोपहर ढल जाने से जुहर का वक़्त शुरू हो जाता है। सूरज निकल कर जितना ऊंचा होता है, हर चीज़ का साया घटता जाता है। पर जब घटना रुक जाए उस वक़्त ठीक दोपहर का वक़्त है। फिर जब साया बढ़ना शुरू हो जाए तो समझो कि दिन ढल गया वस उसी वक़्त से जुहर का वक़्त शुरू होता है। उसे छोड़ कर जब तक हर चीज़ का साया दूना न हो जाए उस वक़्त तक जुहर का वक़्त रहता है। जब एक हाथ लकड़ी का साया ठीक दोपहर को चार अंगुल का था तो जब तक दो हाथ और चार अंगुल न हो तब तक जुहर का वक़्त है और जब दो हाथ और चार अंगुल हो गया तो अस्त्र का वक़्त आ गया और अस्त्र का वक़्त सूर्य डूबने तक बाकी रहता है। लेकिन जब सूरज का रंग बदल जाए और धूप ज़र्द पड़ जाए उस वक़्त अस्त्र की नमाज़ पढ़ना मकरुह है। अगर किसी वजह से इतनी देर न करे और उस अस्त्र के सिवा और कोई नमाज़ ऐसे वक़्त दुरुस्त नहीं है। न कज़ा न नफ़ल— कुछ भी न पड़े।

मस'ला ३— जब सूरज डूब गया तो मगरिब का वक़्त आ गया फिर जब तक पश्चिम की तरफ आसमान के किनारे पर सुर्खी बाकी रहे तब तक मरिब का वक़्त रहता है, लेकिन मरिब की नमाज़ में देर न करे कि तारे ख़ूब चटक जायें, इतनी देर करना मकरुह है। फिर जब वह सुर्खी जाती रहे तो इशा का वक़्त शुरू हो गया और सुबह होने तक बाकी रहता है लेकिन आधी रात के बाद इशा का वक़्त मकरुह हो जाता है और सवाब कम मिलता है, इसलिए इतनी देर करके नमाज़ न पड़े और अच्छा यह है कि तिहाई रात जाने के पहले ही पढ़ ले।

मस'ला ४— गर्मी के मौसम में जुहर की नमाज़ में जल्दी न करे। गर्मी की तेज़ी का वक़्त जाता रहे तब पढ़ना मुस्तहब है और जाइ़ों में शुरु वक़्त में नमाज़ पढ़ लेना मुस्तहब है।

मस'ला ५— अस्त्र की नमाज़ ज़रा इतनी देर करके पढ़ना बेहतर है कि वक़्त आने के बाद अगर कुछ नफ़ल पढ़ना चाहे तो पढ़ सके क्योंकि अस्त्र के बाद तो नफ़ल पढ़ना दुरुस्त नहीं चाहे गर्मी का मौसम हो या जाड़े का—दोनों के लिए एक ही हुक्म है। लेकिन इतनी देर न करे कि सूरज में ज़र्दी आ जाए और धूप का रंग बदल जाए। मग़ि़ब की नमाज़ में जल्दी करना और सूरज डूबते ही पढ़ लेना मुस्तहब है।

मस'ला ६— जो कोई तहज़ज़ुद की नमाज़ पिछली रात को उठकर पढ़ा करता हो अगर पक्का भरोसा हो कि आँख ज़रूर खुलेगी तो उसे वित्र की नमाज़ तहज़ज़ुद के वक़्त पढ़ना बेहतर है लेकिन अगर आँख खुलने का एतबार न हो और सो जाने का डर हो तो इश्रा के बाद सोने से पहले ही वित्र पढ़ लेना चाहिए।

मस'ला ७— बदली के दिन फ़ज़्र, जुहर, मग़ि़ब की नमाज़ ज़रा देर करके पढ़ना बेहतर है और अस्त्र की नमाज़ में जल्दी करना मुस्तहब है।

मस'ला ८— सूरज निकलते वक़्त और ठीक दोपहर को और सूरज डूबते वक़्त कोई नमाज़ सही नहीं है। अलबत्ता अगर अस्त्र की नमाज़ अभी न पढ़ी हो तो वह सूरज डूबते वक़्त भी पढ़ ले और इन तीनों वक़्त में तिलावत का सज़्दा करना भी मकरूह और मना है।

मस'ला ९— फ़ज़्र की नमाज़ पढ़ लेने के बाद जब तक सूरज निकल कर ऊँचा न हो नफ़ल नमाज़ पढ़ना मकरूह है। अलबत्ता सूरज निकलने से पहले क़ज़ा नमाज़ पढ़ना दुरुस्त है और तिलावत का सज़्दा भी दुरुस्त है। जब सूरज निकल गया तो जब तक ज़रा रौशनी न आ जाये क़ज़ा नमाज़ पढ़ना भी दुरुस्त नहीं। ऐसे ही अस्त्र की नमाज़ पढ़ लेने के बाद नफ़ल नमाज़ पढ़ना जायज़ नहीं अलबत्ता क़ज़ा नमाज़ और सज़्दे की आयत का सज़्दा दुरुस्त है लेकिन जब

धूप फीकी पड़ जाये तो यह भी दुरुस्त नहीं।

मस'ला १०— फज्र के वक़्त सूरज निकल आने के डर से जल्दी के मारे सिर्फ़ फर्ज़ पढ़ ली तो अब जबतक सूरज ऊँचा और रौशन न हो जाये तब तक सुन्नत न पड़े।

मस'ला ११— जब सुबह हो जाये और फज्र का वक़्त आ जाये तो दो रकअत सुन्नत और दो रकअत फर्ज़ के सिवा और कोई नफ़ल की नमाज़ पढ़ना दुरुस्त नहीं यानी भकरूह है। अलबत्ता कज़ा नमाज़ें पढ़ना और सज्दे की आयत पर सज्दा करना दुरुस्त है।

मस'ला १२— अगर फज्र की नमाज़ पढ़ने में सूरज निकल आया तो नमाज़ नहीं हुई। सूरज में रौशानी आ जाने के बाद कज़ा पढ़े और अगर अन्न की नमाज़ पढ़ने में सूरज डूब गया तो नमाज़ हो गई, कज़ा न पड़े।

मस'ला १३— इशा की नमाज़ पढ़ने से पहले सोना भकरूह है। नमाज़ पढ़कर सोना चाहिए लेकिन कोई मरीज़ हो या सफ़र से थका-माँदा हो और किसी से कह दे कि उसको नमाज़ के वक़्त जगा दे और दूसरा वादा कर ले तो सोये रहना दुरुस्त है।

मस'ला १४— मर्दों के लिए मुस्तहब है कि फज्र की नमाज़ ऐसे वक़्त शुरू करें कि रौशानी ख़ूब फैल जाये और इतना वक़्त बाकी हो कि अगर नमाज़ पढ़ी जाए तो उसमें चालीस पचास आयतों की तिलावत अच्छी तरह की जाये और बाद नमाज़ के अगर किसी वजह से नमाज़ का इरादा करना चाहें तो इसी तरह चालीस पचास आयतें उसमें पढ़ सकें। औरतों को तो हमेशा और मर्दों को हज की हालत में, मुज़दलफ़ा में फज्र की नमाज़ अंधेरे में पढ़ना मुस्तहब है।

मस'ला १५— जुमे की नमाज़ का भी यही वक़्त है जो जुहर की नमाज़ का है, लेकिन जुमे की नमाज़ हमेशा शुरू वक़्त में पढ़ना सुन्नत है।

मस'ला १६— ईदेन (दोनों ईदों अर्थात् ईदुल फ़ित्र व ईदुल

अज़हा) की नमाज़ का भी वक़्त सूरज के अच्छी तरह निकल आने के बाद शुरू होता है और दोपहर से पहले तक रहता है। सूरज के अच्छी तरह निकल आने से यह मतलब है कि सूरज की ज़र्दी जाती रहे और रौशनी इतनी तेज़ हो जाये कि नज़र न ठहर सके। सूरज एक नेज़े के करीब ऊंचा हो जाये। ईदैन की नमाज़ का जल्द पढ़ना मुस्तहब है। मगर ईदुल फ़ित्र की नमाज़ शुरू वक़्त से कुछ देर में पढ़नी चाहिये।

मस'ला १७— जब पेशाइमाम खुत्बे के लिए अपनी जगह से उठ खड़ा हो और खुत्बा जुमे का हो या हज का तो इन वक़्तों में नमाज़ पढ़ना मकरूह है।

मस'ला १८— जब फ़र्ज़ नमाज़ों की तकबीरें कही जायें तो उस वक़्त भी नमाज़ मकरूह है। हां, अगर फ़ज़्र की सुन्नतें न पढ़ी हों और किसी तरह यह यक़ीन हो जाये कि एक रकअत जमाअत से मिल जायेगी तो फ़ज़्र की सुन्नतों का पढ़ लेना मकरूह नहीं जो सुन्नत शुरू कर दी हो उसको पूरा कर ले।

मस'ला १९— ईदैन की नमाज़ से पहले— चाहे घर में हो या ईदगाह में— नमाज़ नफ़ल मकरूह है और ईदैन की नमाज़ के बाद सिर्फ़ ईदगाह में मकरूह है।

3. अज़ान

मस'ला १— अगर किसी अदा नमाज़ के लिए अज़ान दी जाये तो इसाके लिए उस नमाज़ के वक़्त का होना ज़रूरी है। अगर वक़्त आने से पहले अज़ान दी जाये तो ठीक न होगी। वक़्त आने के बाद फिर उसे कहना होगा। चाहे वह अज़ान फ़ज़्र की हो या किसी और वक़्त की।

मस'ला २- अज़ान और इक़ामत (तकबीर) का अरबी ज़बान में उन्हीं खास अल्फ़ाज़ में अदा करना ज़रूरी है जो नबी करीम सल्ल० से नक़ल किए गए हैं।

मस'ला ३- अज़ान देने वाले का मर्द होना ज़रूरी है। औरत का अज़ान देना दुस्त नहीं। अगर कोई औरत अज़ान दे तो फिर से अज़ान दी जाए। अगर ऐसा न किया तो गोया बग़ैर अज़ान कहे नमाज़ पढ़ी गई।

मस'ला ४- अज़ान देने वाले का साहिबे अक़ल होना भी ज़रूरी है। अगर कोई नासमझ बच्चा या मजनू मस्त अज़ान दे तो वह ठीक न होगी।

मस'ला ५- अज़ान का मसनून तरीका यह है कि अज़ान देने वाला दोनों गंदगियों से पाक होकर किसी ऊँचे मकान पर मस्जिद से अलग किबले की तरफ़ मुंह करके खड़ा हो और अपने दोनों कानों के सुराखों को कलिमे की उंगली से बन्द करके अपनी ताक़त के मुवाफ़िक़ बुलन्द आवाज़ से इन कलिमात को कहे :

(अल्लाह बड़ा है) अल्लाहु अक़बर (४ बार) **اَللّٰهُ اَكْبَرُ**

अशहादु अल्ला इला ह इल्लल्लाह (२ बार) **اَشْهَدُ اَنْ لَا اِلَهَ اِلَّا اللّٰهُ**

(मैं शहादत देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं।)

अशहादु अन्न मुहम्मदरसूलुल्लाह (२ बार) **اَشْهَدُ اَنْ مُحَمَّدًا**

मैं शहादत देता हूँ कि मुहम्मद (स) अल्लाह के रसूल हैं **رَسُوْلَ اللّٰهِ**
हैय्य अलस्सला: (आओ नमाज़ की तरफ़) (२ बार) **حَيَّ عَلَى الصَّلٰوةِ**

हैय्य अलल फ़लाह (आओ भलाई की तरफ़) (२ बार) **حَيَّ عَلَى**
الفلاح

اللَّهُ أَكْبَرُ अल्लाहु अकबर (अल्लाह बड़ा है) (२ बार)
 لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ ला इला ह इल्लल्लाहु (२ बार)
 (नहीं कोई माबूद सिवाए अल्लाह के)

और हैय्य अलस्सला : कहते वक़्त अपने मुंह को दाहिनी ओर और हैय्य अलल फलाह कहते वक़्त अपने मुंह को बायीं ओर फेर लिया करे, इस तरह कि सीना और कदम क़िबले से न फिरने पाये और फज़ की अज़ान में हैय्य अलल् फलाह के बाद—

الصَّلَاةُ خَيْرٌ مِنَ النَّوْمِ

अस्सलातु ख़ूरुम मिनननौमि (२ बार)
 (नमाज़ नींद से बेहतर है।)

भी दो बार कहना चाहिए। अज़ान को गाने के तौर पर न कहे बल्कि ठहर-ठहर कर कहे।

मस'ला ६— तकबीर का भी यही तरीका है। बस फ़र्क सिर्फ़ इतना है कि अज़ान मस्जिद से बाहर कही जाती है जबकि तकबीर मस्जिद के अन्दर हल्की आवाज़ से। तकबीर में—

فَذَقَامَتِ الصَّلَاةُ

क़दक़ामतिस्सलात

(बेशक नमाज़ खड़ी हो गई) कहा जाता है।

तकबीर कहते वक़्त कानों के सूराखों को बन्द करना भी नहीं है और न दायें, बायें तरफ़ मुंह फेरना चाहिए।

4. अज़ान व तकबीर

मस'ला १— सब फर्ज नमाज़ों के लिए एक बार अज़ान कहना मदीं पर ताकीद वाली सुन्नत है। मुसाफिर हो या मुकीम (ठहरा हुआ) जमाअत की नमाज़ हो या अकेली, अदा नमाज़ या कज़ा। जुमे की नमाज़ के लिए दो बार अज़ान कहनी चाहिए।

मस'ला २— अगर नमाज़ किसी वजह से कज़ा हुई हो जिसमें आम लोग मुस्तहब हों तो उसकी अज़ान जोर से दी जाए।

मस'ला ३— मुसाफिर के लिए अगर उसके सब साथी मौजूद हों तो अज़ान मुस्तहब है, ताकीद वाली सुन्नत नहीं है।

मस'ला ४— जो शख्स अपने घर में नमाज़ पढ़े—अकेले या जमाअत से उसके लिए अज़ान और तकबीर दोनों मुस्तहब नहीं बरतें कि मुहल्ले की मस्जिद में अज़ान और तकबीर हो चुकी हो। इसलिए कि मुहल्ले की अज़ान और तकबीर सब मुहल्ले वालों के लिए काफी है।

मस'ला ५— जिस मस्जिद में अज़ान और तकबीर के साथ नमाज़ हो चुकी हो, उसमें अगर नमाज़ पढ़ी जाये तो अज़ान और तकबीर का कहना मकरुह है। हां, अगर उस मस्जिद में कोई अज़ान देने और नमाज़ पढ़ने वाला न हो तो मकरुह नहीं बल्कि अपज़ल है।

मस'ला ६— अगर कोई आदमी ऐसी जगह जहां जुमे की नमाज़ की शर्तें पाई जाती हों और जुमे की नमाज़ होती हो। जुहर की नमाज़ पढ़े तो उसे अज़ान और तकबीर का कहना मकरुह है।

मस'ला ७— औरतों को अज़ान और तकबीर कहना मकरुह है। घाहेजमाअतसे नमाज़ पढ़े या अकेले।

मस'ला ८— फर्ज नमाज़ों के सिवा और किसी नमाज़ के लिए अज़ान व तकबीर मसनून नहीं है। चाहे फर्ज क़िफ़ाय़ा हो जैसे जनाजे की नमाज़ या याज़िब जैसे वित्र और ईदैन की नमाज़ या नफ़ल हो।

जैसे और नमाजें।

मस'ला ९— जो शर'स अज़ान सुने—मर्द हो या औरत—पाक हो या नापाक, उस पर अज़ान का जवाब देना मुस्तहब है यानी जो लफ्ज़ मुअज़्ज़िन की जुबान से सुने, वही कहे। मगर हैय्य अलस्सला: (आओ नमाज़ की तरफ) और हैय्य अतल फलाह (आओ भलाई की तरफ) के जवाब में—

لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ

ला होल व ला कुय्य त इल्ला बिल्लाह

(ताकत नहीं कोई अल्लाह के सिवा)

भी कहे और अस्सलातु खैरुम्मिन-नौम (नमाज़ नींद से बेहतर है) के जवाब में—

صَدَقْتَ وَبَرَرْتَ

सदकत व बररत०

(तूने सच कहा और एहसान किया) कहे।

बाद अज़ान के दुरुद शरीफ पढ़कर यह दुआ पढ़े—

اَللّٰهُمَّ رَبِّ هَذِهِ الدَّعْوَةُ الشَّامِتَةُ وَالصَّلَاةُ الْقَائِمَةُ اِنِّ مُحَمَّدًا اِلٰوَسِيْلَةٍ

وَالْفَضِيْلَةِ وَالذَّرَجَةُ الرَّفِيْعَةُ وَابْعَثْهُ

مَقَامًا مَّحْمُوْدًا الَّذِي وَعَدْتَهُ وَاَرْزُقْنَا

شَفَاعَتَهُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ اِنَّكَ لَا تَخْذُلُ الْمُتَعِلِّمِ

अल्लाहुम्म रब्बि हाज़िहिद्दअवतिताम्मति वस्सलाति ल काइमति आति सैय्यिदिना मुहम्मद निल वसीले त वल फज़ीलत वदद-र-ज-त-र-फी अ त वबअ-र-हु मुकामम् महमू द निल्लजी वअत्तहू इन्न क ला तुख़िलफ़ुल मीआद०

(ऐ इस पूरी दायत और खड़ी होने वाली नमाज़ के अल्लाह। हमारे आका मुहम्मद रसलुल्लाह सल्ल० को वसीला, उध्यता तथा

ऊंची श्रेणी प्रदान कर और मुहम्मद सल्ल० को उसी उच्च स्थान में उठा जिसका तुने वचन दिया। निस्सन्देह तू कभी अपनी बात से नहीं फिरता।

मस'ला १०— जुमे की पहली अज़ान सुनकर सब कामों को छोड़कर जुमे की नमाज़ के लिए मस्जिद जाना वाजिब है। खरीद व फरोस्त या और किसी काम में लग जाना हराम है।

मस'ला ११— तकबीर का जवाब देना भी मुस्तहब है, वाजिब नहीं और कद कामतिस्सलाति

(निस्सन्देह नमाज़ खड़ी हो गई।) के जवाब में कहे—

अकामहल्लाहु व अदामहा०

(अल्लाह उसे कायम और सुरक्षित रखे)

मस'ला १२— आठ सूरतों में अज़ान का जवाब नहीं देना चाहिए— (१) नमाज़, (२) खुत्बा सुनते वक़्त—चाहे वह जुमे का हो या किसी और चीज़ का, (३) हैज़, (४) निफास, (५) दीनी इल्म पढ़ने-पढ़ाने की हालत में, (६) सोहबत में, (७) पाखाने पेशाब की हालत में, (८) खाना खाने की हालत में हो। बाद इन चीज़ों की फरागत के अगर अज़ान हुए ज़्यादा वक़्त न गुज़रा हो तो जवाब देना चाहिए, वरना नहीं।

5. अज़ान, तकबीर की सुन्नतें व मुस्तहब

अज़ान और तकबीर की सुन्नतें दो तरह की हैं— कुछ अज़ान देने वाले के सिलसिले में और कुछ अज़ान व तकबीर से मुतअल्लिक हैं। इसकी कुछ शर्तें हैं—

१- अज़ान देने वाला मर्द हो। औरत को अज़ान व तकबीर कहना मकरुह तहरीमी है।

२- मुअज़्ज़िन का आकिल होना जरूरी है। मजनून, मस्त और नासमझ बच्चों की अज़ान और इक़ामत (तकबीर) मकरुह है और उनकी अज़ानों और इक़ामतों को दोबारा अदा करना चाहिए।

३- मुअज़्ज़िन को जरूरी मसाइल और नमाज़ के औकात से वाकिफ़ होना चाहिए। अगर जाहिल आदमी अज़ान दे तो उसे मुअज़्ज़िन के बराबर सवाब नहीं मिल सकेगा।

४- मुअज़्ज़िन परहेज़गार और दीनदार होना चाहिए। उन लोगों के हाल से ख़बरदार होना चाहिए जो लोग जमाअत में न आते हों। उन्हें तम्बीह करना यानी उसे यह ख़ौफ़ न हो कि कोई सतायेगा।

५- मुअज़्ज़िन को चाहिए कि बुलन्द आवाज़ से अज़ान कहे।

६- अज़ान किसी ऊँची जगह पर मस्जिद से अलग होकर कहे और इक़ामत मस्जिद के अन्दर। मस्जिद के अन्दर अज़ान कहना मकरुह तन्ज़ीही है। हाँ, जुमे की दूसरी अज़ान का मस्जिद के अन्दर मिम्बर के सामने कहना मकरुह नहीं बल्कि सब इस्लामी शहरों में मामूल (स्वाभाविक) है।

७- अज़ान का खड़े होकर कहना। अगर कोई राख़्त बैठे-बैठे अज़ान कहे तो मकरुह है। अज़ान दोबारा कहना चाहिए। हाँ, अगर मुसाफ़िर सवार हो या मुकीम (ठहरा हुआ) अज़ान सिर्फ़ अपनी नमाज़ के लिए कहे तो फिर दोबारा कहने की जरूरत नहीं।

८- अज़ान का बुलन्द आवाज़ से कहना। अगर सिर्फ़ अपनी नमाज़ के लिए कहे तो अख़्तियार है, मगर फिर भी ज्यादा सवाब बुलन्द आवाज़ में होगा।

९- अज़ान कहते वक़्त कानों के सुराख़ों को उंगलियों से बन्द करना मुस्तहब है।

१०— अज़ान के अल्फाज़ का ठहर-ठहर कर अदा करना और इकामत का जल्द कहना सुन्नत है यानी अज़ान की तकबीरों में हर दो तकबीर के बाद इतनी खामोशी रखे कि सुनने वाला उसका जवाब दे सके और तकबीर के अलावा और अल्फाज़ में हर एक लफ्ज़ के बाद इतनी खामोशी करके अल्फाज़ कहे।

१ - अज़ान में—

حَيَّ عَلَى الصَّلَاةِ حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ

हैय्य अलस्सला: (आओ नमाज़ की तरफ)

कहते वक़्त दायीं तरफ को मुंह फेरना और

हैय्य अल्लल् फलाह (आओ भलाई की तरफ)

कहते वक़्त बायीं तरफ को मुंह फेरना सुन्नत है। मगर सीना और कदम क़िबले से न फिरने पाये।

मस'ला १— अज़ान और तकबीर का क़िबले की तरफ मुंह करके कहना। बग़ैर क़िबले की तरफ मुंह किये अज़ान और तकबीर कहना मकरूह तन्ज़ीही (हल्का मकरूह) है।

मस'ला २— अज़ान कहते वक़्त एहतलाम से पाक होना सुन्नत है और गंदगियों से पाक होना मुस्तहब है। इकामत कहते वक़्त भी यही होना चाहिए। अगर एहतलाम की हालत में कोई शख्स अज़ान कहे तो यह मकरूह तहरीमी है और उस अज़ान का दोबारा कहना मुस्तहब है। इसी तरह अगर कोई बड़ी नापाकी जैसे एहतलाम या पाखाना पेशाब दूसरी और छोटी नापाकी जैसे पेट की हवा निकलने की हालत में इकामत कहे तो यह मकरूह तहरीमी है, मगर इकामत का दोबारा कहना मुस्तहब नहीं।

—अज़ान और इकामत के अल्फाज़ का तर्तीबवार (क्रमानुसार) कहना सुन्नत है।

—अज्ञान और इकामत की हालत में कोई दूसरा कलाम न करना चाहिए, ख्वाह वह सलाम या सलाम का जवाब ही क्यों न हो।

मस'ला ३— अगर कोई शख्स अज्ञान का जवाब देना भूल जाये और अज्ञान खत्म होने के बाद ख्याल आये तो अगर ज्यादा वक़्त न गुज़रा हो तो जवाब दे दे वरना नहीं।

मस'ला ४— इकामत कहने के बाद अगर ज्यादा वक़्त गुज़र जाये और जमाअत कायम न हो तो इकामत दोबारा कहनी चाहिए। हाँ, अगर थोड़ी-सी देर हो जाये तो कुछ ज़रूरत नहीं। अगर इकामत हो जाये और इमाम ने फज़ की सुन्नतें न पढ़ी हों और वह पढ़ने में लग जाये तो यह ज़माना ज्यादा फसल (लम्बा) न समझा जायेगा और तकबीर दोबारा न कही जायेगी।

मस'ला ५— अगर मुअज़्ज़िन अज्ञान देने की हालत में मर जाए या बेहोश हो जाये उसकी आवाज़ बन्द हो जाये या वह भूल जाये और कोई बताने वाला न हो या उसे नापाकी हो जाये और वह उसे दूर करने के लिए चला जाये तो अज्ञान का नये सिरों से कहना ज़रूरी है।

मस'ला ६— अगर किसी को अज्ञान या तकबीर कहने की हालत में गंदगी हो जाए तो अच्छा यह है कि अज्ञान या तकबीर पूरी कर ले फिर उस नापाकी को दूर करने जाये।

मस'ला ७— एक मुअज़्ज़िन का दो मरिजदों में अज्ञान देना मकरुह है। वह जिस मरिजद में फ़र्ज पड़े वहीं अज्ञान दे।

मस'ला ८— जो शख्स अज्ञान दे, तकबीर कहना भी उसी का हक़ है। हाँ, अगर वह अज्ञान देकर कहीं चला जाए या किसी दूसरे को इजाज़त दे दे तो दूसरा भी कह सकता है।

मस'ला ९— कई मुअज़्ज़िनों का एक साथ अज्ञान कहना जायज़ है।

मस'ला १०— मुअज़्ज़िनों को चाहिए कि जिस जगह इकामत कहना शुरू करे, वहीं ख़त्म करे।

मस'ला ११— अज़ान और इकामत के लिए नीयत शर्त नहीं। हाँ, सवाब बग़ैर नीयत से नहीं मिलता और नीयत यह है कि दिल में यह इरादा कर ले कि मैं यह अज़ान सिर्फ़ अल्लाह तआला की खुशानूची और सवाब के लिए कहता हूँ और कुछ मकसूद (इच्छित) नहीं।

6. नमाज़ की शर्तें

मस'ला १— नमाज़ के शुरू करने से पहले कई चीज़ें वाजिब हैं। अगर बुज़ू न हो तो बुज़ू करे। नहाने की ज़रूरत हो तो गुस्ल करे। बदन या कपड़े पर कोई नजासत लगी हो तो उसे पाक करे। जिस जगह नमाज़ पढ़ता है वह जगह पाक होनी चाहिए और फकत मुंह और दोनों हथेली और दोनों पैरों के सिवा सर से पैर तक सारा बदन खूब ढके ले। क़िबले की तरफ़ मुंह करे। जिस नमाज़ को पढ़ना चाहता है उसकी नीयत यानी दिल से इरादा करे। वक़्त आने के बाद नमाज़ पढ़े। ये सब काम नमाज़ के लिए ज़रूरी हैं। अगर इनमें से एक काम भी छूट जाएगा तो नमाज़ न होगी।

मस'ला २— औरत को बारीक तनज़ेब या जाली यगैरह का बहुत बारीक दुपट्टा ओढ़कर नमाज़ पढ़ना ठीक नहीं।

मस'ला ३— अगर नमाज़ पढ़ते वक़्त औरत की चौथाई पिंडली या चौथाई रान या चौथाई बाज़ू खुल जाए और इतनी देर खुली रहे जितनी देर में तीन बार सुक़ानल्लाह कह सके तो नमाज़ जाती रही। फिर से पढ़े और अगर इतनी देर ही लगी बल्कि खुलते ही ढक लिया तो नमाज़ हो गयी। इसी तरह जितने बदन का वाजिब है, उसमें से चौथाई हिस्सा खुल जाये तो नमाज़ न होगी।

मस'ला ४- जो लड़की अभी जवान नहीं हुई अगर उसकी ओढ़नी सरक गयी और उसका सर खुल गया तो उसकी नमाज़ हो गयी।

मस'ला ५- अगर किसी कपड़े या बदन पर कुछ नजासत लगी है। लेकिन पानी नहीं मिलता तो इसी तरह नजासत के साथ ही नमाज़ पढ़ ले।

मस'ला ६- अगर किसी के पास बिल्कुल कपड़ा न हो तो गंगा नमाज़ पढ़े। लेकिन ऐसी जगह पढ़े कि कोई देख न सके और खड़े होकर न पढ़े। बल्कि बैठ कर पढ़े और रुकू व सज्दे को इशारे से अदा करें।

मस'ला ७- सफर करने के दौरान किसी के पास थोड़ा-सा पानी है। अगर नजासत धोता है तो वुजू के लिये नहीं बचता और अगर वुजू करे तो नजासत पाक करने के लिये पानी न बचेगा तो उस पानी से गंदगी धो डाले। फिर वुजू के लिये तयम्मुम कर ले।

मस'ला ८- जुहर की नमाज़ पढ़ी। लेकिन जब पढ़ चुका तब मालूम हुआ कि जिस वक़्त नमाज़ पढ़ी थी उस वक़्त जुहर का वक़्त नहीं रहा था, बल्कि अस्म का वक़्त हो गया था अब फिर क़ज़ा पढ़ना वाजिब नहीं बल्कि यही नमाज़ जो पढ़ी है क़ज़ा में आ जायेगी।

मस'ला ९- अगर वक़्त आ जाने से पहले ही नमाज़ पढ़ ली तो नमाज़ नहीं हुई

मस'ला १०- ज़बान से नीयत करना ज़रूरी नहीं है। बल्कि दिल में जब इतना सोच ले कि जुहर के फ़र्ज पढ़ता हूँ और सुन्नत पढ़ता हो तो यह सोच ले कि जुहर की सुन्नत पढ़ता हूँ। बस इतना स्थायत करके अल्लाहु अकबर कह कर हाथ बांध ले तो नमाज़ हो जायेगी। जो लम्बी-चौड़ी नीयत लोगों में मशहूर है उस का कहना कुछ ज़रूरी नहीं है।

मस'ला ११- अगर ज़बान से नीयत कहना चाहे तो इतना कह

लेना काफी है— नीयत करता हूँ आज के जुहर के फर्ज की, अल्लाहु अकबर या नीयत करता हूँ, जुहर की सुन्नतों की, अल्लाहु अकबर।

मस'ला १२— अगर दिल में यह ख्याल है कि मैं जुहर की नमाज़ पढ़ता हूँ लेकिन जुहर की जगह ज़बान से अस्र का वक़्त निकल गया, तब भी नमाज़ हो जाएगी।

मस'ला १३— अगर भूल से चार रकअत की छः रकअत या तीन रकअत ज़बान से निकल जाये तब भी नमाज़ हो जायेगी।

मस'ला १४— अगर कई नमाज़ें कज़ा हो गईं और कज़ा पढ़ने का इरादा किया तो वक़्त मुक़र्रर करके नीयत करे, यानी यूँ नीयत करे कि मैं फ़ज़्र के फर्ज की कज़ा पढ़ता हूँ। अगर जुहर की कज़ा पढ़ना हो तो यूँ नीयत करे कि जुहर के फर्ज की कज़ा पढ़ता हूँ। अगर बस इतनी नीयत कर ली कि मैं कज़ा नमाज़ पढ़ता हूँ और खास उस वक़्त की नीयत नहीं हो तो कज़ा ठीक न होगी। फिर से पढ़नी होगी।

मस'ला १५— अगर कई दिन की नमाज़ कज़ा हो गई तो दिन तारीख़ भी कह कर नीयत करना चाहिए। जैसे: किसी की सनीचर, इतवार, पीर मंगल— चार दिन की नमाज़ें जाती रहीं तो अब बस इतनी नीयत करे कि फ़ज़्र की नमाज़ पढ़ता हूँ, दुरुस्त नहीं है। बल्कि यूँ नीयत करे कि सनीचर की फ़ज़्र की कज़ा पढ़ता हूँ। फिर जुहर पढ़ते वक़्त कहे— सनीचर के जुहर की कज़ा पढ़ता हूँ। इसी तरह कहता जाए। अगर कई महीने या कई साल की नमाज़ें कज़ा हों तो महीने और साल का भी नाम ले और कहे कि फ़लां साल के फ़लां महीने की फ़लां तारीख़ की फ़ज़्र की कज़ा पढ़ता हूँ। बग़ैर इस तरह नीयत किये कज़ा नहीं होती।

मस'ला १६— अगर किसी को दिन, तारीख़, महीना, साल कुछ न याद हो तो नीयत करे कि फ़ज़्र की नमाज़ें जितनी मेरे जिम्मे कज़ा हैं, उनमें जो सबसे पहले है उसकी कज़ा पढ़ता हूँ। या जुहर की जितनी नमाज़ें मेरे जिम्मे कज़ा हैं उनमें से जो सबसे पहली है, उस की कज़ा पढ़ता हूँ। इसी तरह नीयत करके बराबर कज़ा पढ़ता रहे।

जब दिल गयाही दे दे कि अब सब नमाज़ें जितनी जाती रही थीं सबकी कज़ा पढ़ चुका हूँ तो कज़ा पढ़ना छोड़ दे।

मस'ला १७— सुन्नत और नफ़ल की नमाज़ में सिर्फ़ इतनी नीयत कर लेना कि मैं नमाज़ पढ़ता हूँ। सुन्नत होने और नफ़ल होने की कुछ नीयत नहीं की तो भी दुरुस्त है मगर सुन्नत तरावीह की नीयत कर लेना एहतियात की बात है।

मस'ला १८— अगर कोई चादर इतनी बड़ी हो कि उसका नजिस हिस्सा नमाज़ पढ़ने वाले के उठने-बैठने से जुबिश न करे तो कुछ हरज नहीं। अगर नमाज़ पढ़ने वाले के जिस्म पर कोई ऐसी नजिस चीज़ हो जो अपनी पैदाइश की जगह में हो और बाहर उसका असर मौजूद न हो तो कुछ हर्ज नहीं, इसलिए कि उसका खून उसी जगह है जहां पैदा हुआ है बाहर निकलने में नहीं आया।

मस'ला १९— नमाज़ पढ़ने की जगह नजासत हकीका (पाख़ाना, पेशाब, और गोबर आदि गंदगियों) से پاک होना चाहिए। अगर नजासत माफी के काबिल हो तो कोई हर्ज नहीं। नमाज़ पढ़ने की जगह से वह जगह मुराद है जहां नमाज़ वाले के पैर रहते हैं और इसी तरह सज्दा करने की हालत में जहां घुटने, हाथ, नाक या माथा रहते हैं।

मस'ला २०— अगर सिर्फ़ एक पैर की जगह पाक हो और दूसरे पैर को उठाए रहे तब भी काफी है।

मस'ला २१— अगर किसी कपड़े पर नमाज़ पढ़ी जाये तब भी उसका उतना हिस्सा पाक होना जरूरी है। पूरे कपड़े का पाक होना जरूरी नहीं— चाहे वह कपड़ा छोटा हो या बड़ा।

मस'ला २२— अगर किसी नजिस जगह पर कोई पाक कपड़ा बिछा कर नमाज़ पढ़ी जाए तो उसके नीचे की चीज़ साफ़ तौर पर उसमें से नज़र न आए।

मस'ला २३— अगर नमाज़ पढ़ने की हालत में नमाज़ पढ़ने वाले का कपड़ा किसी नजिस जगह पर पड़ता है तो कुछ हर्ज नहीं।

मस'ला २४— अगर कपड़े के इस्तेमाल से आदमियों के काम की वजह से मजबूरी हो तो जब वह मजबूरी जाती रहे नमाज़ पढ़नी पड़ेगी। जैसे: कोई शख्स जेल में हो और जेल के मुलाजिमों ने उसके कपड़े उतार लिए हों और अगर आदमियों की तरफ से न हो तो फिर नमाज़ तौटाने की जरूरत नहीं। जैसे किसी के पास कपड़े ही न हों।

मस'ला २५— अगर किसी के पास एक कपड़ा हो कि चाहे उससे जिस्म को छुपा ले चाहे उसको बिछाकर नमाज़ उसी नजिस जगह में पढ़ ले, तो उसको चाहिए कि अपने जिस्म को छुपा ले और नमाज़ उसी नजिस जगह पढ़ ले, अगर पाक जगह मयस्सर न हो।

7. जवान होना

मस'ला १— जब किसी लड़के की उम्र १६-१७ साल हो जाए, उसकी लबें निकल आयें या उसे ख़्बाव में एहतलाम हो जाए तो वह बालिग़ हो गया।

मस'ला २— जब किसी लड़की को हैज़ हो गया या उसके पेट रह गया या उसकी उम्र पूरे पन्द्रह बरस की हो चुकी तब भी वह जवान समझी जाएगी। नमाज़, रोज़ा व दग़ैरह रीअत के सब अहक़ाम उस पर लगाए जाएंगे।

मस'ला ३— जवान होने को शरीअत में बालिग़ होना कहते हैं। नौ बरस से पहले कोई औरत जवान नहीं हो सकती। अगर उसे खून भी आए तो वह हैज़ नहीं बल्कि इस्तिहाज़ा है।

8. किबले की तरफ मुंह करना

मस'ला १— अगर कोई ऐसी जगह है कि किबला मालूम नहीं होता कि किस तरफ है और न वहां कोई आदमी है जिससे पूछ सके तो अपने दिल में सोचे। जिस तरफ दिल गवाही दे, उसी तरफ पढ़ ले। अगर वे सोचे-समझे पढ़ लेगा तो नमाज़ न होगी। अगर बाद में मालूम हो जाए कि ठीक किबले की ही तरफ पढ़ी है तब भी नमाज़ नहीं हुई वहां आदमी मौजूद हैं, लेकिन औरत ने पर्दे और शर्म की वजह से पूछा नहीं इसी तरह नमाज़ पढ़ ली तो भी नमाज़ नहीं हुई।

मस'ला २— अगर कोई बताने वाला न मिला और दिल की गवाही पर नमाज़ पढ़ ली तो फिर मालूम हुआ कि जिस तरफ नमाज़ पढ़ी है उस तरफ किबला नहीं है, तब भी नमाज़ हो गयी।

मस'ला ३— अगर बेरुख नमाज़ पढ़ता था और नमाज़ में ही मालूम हो गया कि किबला उस तरफ नहीं है, बल्कि दूसरी तरफ है तो नमाज़ में ही किबले की तरफ घूम जाए। मालूम हो जाने पर अगर किबले की तरफ न फिरेगा तो नमाज़ न होगी।

मस'ला ४— का'बा शरीफ के अन्दर फर्ज नमाज़ भी ठीक है और नफ़ल भी।

मस'ला ५— किबला मालूम न होने की सूरत में अगर जमाअत से नमाज़ पढ़ी जाये तो इمام व उसके पीछे नमाज़ पढ़ने वाले मुक्तदी सब को अपने ग़ालिब (पूरा) गुमान पर अमल करना चाहिए लेकिन अगर किसी मुक्तदी का पूरा यकीन इمام के खिलाफ़ होगा तो उसकी नमाज़ उस इمام के पीछे न होगी, क्योंकि वह इمام उसके नज़दीक ग़लती पर है और ग़लती समझ कर किसी को वह काम करना जायज़ नहीं है।

9. फर्ज नमाज़ पढ़ना

मस'ला १— नमाज़ की नीयत करके अल्लाहु अकबर कहे और कहते वक़्त अपने दोनों हाथ कानों तक उठाए। फिर नाफ़ के नीचे हाथ बांधे और अपने दायें हाथ से बायां पहुंचा पकड़े फिर यह दुआ पढ़े—

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالَى
جَدُّكَ وَلَا إِلَهَ غَيْرُكَ

सुब़्हान क ल्लाहुम्म व बिहमदि क व तबारकस्सु क व तजाला
जद्दु क व लाइला ह गैरुक०

(ऐ अल्लाह! हम तेरी पवित्रता को स्वीकार करते हैं और तेरी ही प्रशंसा करते हैं। तेरा नाम बड़ा बरकत वाला है और तेरा बड़प्पन ऊंचा है। तेरे अतिरिक्त कोई उपासना योग्य नहीं।)

फिर अऊजु बिल्लाह (पनाह लेता हूं खुदा की शैतान से) और बिस्मिल्लाह (शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से) पढ़कर 'अलहम्बु'

पढ़े और आखिरी लफ़्ज़ बलज़्जाल्लीन (गुमराह न हों) के बाद आमीन (ऐसा हो) कहे। उसके बाद बिस्मिल्लाह पढ़कर कोई सूरः पढ़े। फिर अल्लाहु अकबर कह कर रुकू में जाये और

सुब़्हान रब्बियल अज़ीम० (अपने रब की पाकी वर्णित करता हूँ) **سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيمِ**

तीन या पांच या सात बार कहे और रुकू में दोनों हथेलियों से घुटने पकड़े और उंगलियां खुली रखे। फिर बाजू पहलू से अलग रखे और पैरों में थोड़ा सा फासला रखे। उसके बाद :-

سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ

समिअल्लाहु लिमन हमिदह। रबबना लकल् हम्दु

(अल्लाह ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली, जिसने उसकी प्रशंसा की। हमारे रब! तेरे ही लिए प्रशंसा है।)

कहता हुआ सर को उठाए, खूब सीधा खड़ा हो जाये और अल्लाहु अकबर कहता हुआ सज्दे में जाये। ज़मीन पर पहले घुटने रखे, फिर कानों के बराबर हाथ रखे और दोनों हाथों के बीच में माथा रखे। सज्दे के वक़्त माथा और नाक दोनों ज़मीन पर रख दे। और हाथ पांव की उंगलियाँ किबले की तरफ रखे और सज्दे में कम-से-कम तीन बार

سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلَى

सुब्हान रबिबिल आला (पाक है मेरा रब जो बड़ा है)

कहकर अल्लाहु अकबर कहता हुआ उठे और ज़मीन पर हाथ टेककर न उठे फिर बिस्मिल्लाह कहकर 'अलहम्दु' और कोई सूरः पढ़े। इसी तरह दूसरी रकअत पूरी करे। जब दूसरा सज्दा कर चुके तो बायें पैर को बिछाकर उस पर बैठे। दाहिना पांव खड़ा करे। उंगलियाँ किबले की तरफ रखे, फिर पढ़े।

التَّحِيَّاتُ لِلَّهِ وَالصَّلَوَاتُ وَالطَّيِّبَاتُ السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا

النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ السَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلَى عِبَادِ اللَّهِ

الصَّالِحِينَ أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا

عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ

अत्तहीयातु तिल्लाहि बस्सलावातु यत्तय्यिवातु अस्सलामु
अल्लिकि ऐय्युहन्नबाय्यु वरहमतुल्लाहि व बरकातुहू अस्सलामु अलेना
व अला इबादिल्ला हिस्सालिहीन। अरहदु अल्लाइला ह इल्लल्लाहु
व अशहदुअन्न न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुह०

(कहीं और की जाने वाली सब प्रार्थनाएं अल्लाह के लिए हैं।
सलाम हो तुम पर, ऐ नबी! और अल्लाह की रहमत और उसकी
बरकतें। सलाम हो हम पर और अल्लाह के नेक बन्दों पर। मैं गवाही
देता हूँ कि मुहम्मद सल्ल० अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं।)

और जब कलिमे पर पहुंचे तो बीच की (अंगूठे के बराबर की
पहली) उंगली और अंगूठे से घेरा बनाकर लाइलाह इल्लल्लाह
(अल्लाह के सिवा कोई नहीं) कहने के वक़्त कलिमे की उंगली उठाये
और इल्लल्लाह (अल्लाह के सिवा) कहने के वक़्त झुका दे मगर
उंगली के घेरे को आखिरी नमाज़ तक रखे। अगर चार रकअत पढ़ना
हो तो इससे ज़्यादा और कुछ न पढ़े बल्कि फौरन अल्लाहु अकबर
कह कर उठ खड़ा हो और दो रकअत और पढ़ ले और फर्ज़ नमाज़
में पिछली दो रकअत में अलहम्दु के साथ और कोई सूरः न मिलाए।
जब चौथी रकअत पर बैठे तो फिर 'अत्तहीयात' पढ़ कर यह दरुद
पढ़े :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ

عَلٰى اِبْرٰهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرٰهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ

عَلٰى اِبْرٰهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرٰهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ

अल्लाहुम् सल्लि अला मुहम्मदिं व अला आलि मुहम्मदिन
कमा सल्लै त अला इब्राही म व अला आलि इब्राही म इन्न-क
हमीदुम्मजीद०

अल्लाहुम् बारिक अला मुहम्मदिं व अला आलि मुहम्मदिन
कमा बारिक त अला इब्राही म व अला आलि इब्राही म इन्न क
हमीदुम्मजीद०

(ऐ अल्लाह अपनी रहमत की वर्षा मुहम्मद सल्ल० और उनकी
औलाद पर फरमा जैसे कि तूने हजरत इब्राहीम अलैहि० और उनकी
औलाद पर रहमत फरमायी। निस्सन्देह तू सब प्रशंसा का पात्र और
बड़ी बुजुर्गी वाला है।

(ऐ अल्लाह ! मुहम्मद पर और उनकी आल पर बरकत भेज
जैसा कि तूने इब्राहीम पर और उनकी आल पर बरकत भेजी। तू
बेशक तारीफ वाला बुजुर्ग है।

फिर यह दुआ पढ़े :-

رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ط

रब्बना आतिना फिदुनिया ह-स-न-तौव फिल आखिरति ह-स-न-तौव
फिना अजाबन्नार०

(ऐ मेरे खुदा हमको दुनिया में भी अच्छाई दे और आखिरत में भी
हमें नेकी दे और हमें आग के अजाब से बचा।)

या यह दुआ पढ़े :

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِجَمِيْعِ الْمُوْمِنِيْنَ وَالْمُوْمِنَاتِ
وَالْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ الْاَحْيَاءِ مِنْهُمْ وَالْاَمْوَاتِ

अल्लाहुम्मग़िफरली व लि वालिदैय्य व लिजमीइल मोमिनी न वल
मोमिनाति वल मुस्लिमी न वल मुस्लिमातिल् अह्याई मिन्हुम वल् अम्वात०

(अल्लाह ! मुझे तथा मेरे माता-पिता को और तमाम ईमान वाले मर्दों और औरतों तमाम मुसलमान मर्दों और औरतों को, चाहे वे जिन्दा हों या मुर्दा, माफ़ कर)।

या कोई और दुआ पढ़े जो हदीस या कुरआन में आई हो। फिर अपनी दाहिनी तरफ सलाम फेरे और कहे अस्सल्लामु अलैकुम वरहमतुल्लाह (तुम पर सलाम हो और अल्लाह की रहमत)। फिर यही कहकर बायीं तरफ सलाम फेरे और सलाम कहते वक़्त इमाम, मुक़तदियों, फरिश्तों पर सलाम करने की नीयत करे। यह नमाज़ पढ़ने का तरीका है। लेकिन इनमें जो फराइज़ हैं, उनमें से अगर एक बात भी छूट जाये तो नमाज़ नहीं हुई चाहे जानकर छोड़ा हो या भूल से, दोनों के लिए एक ही हुक्म है और कुछ चीज़ें वाजिब हैं कि उनमें से अगर कोई चीज़ जानकर छोड़ दे तो नमाज़ निकम्मी और ख़राब हो जाती है और फिर से नमाज़ पढ़नी पड़ती है। अगर कोई फिर से नमाज़ न पढ़े तो ख़ैर, तब भी फर्ज़ सर से उतर जाता है। लेकिन गुनाह बहुत होता है। अगर भूले से कोई फर्ज़ छूट जाए तो 'भूल का सज़्दा कर लेना चाहिए।

मस'ला २— नमाज़ में छः बातें फर्ज़ है :—

१. नीयत बांधते वक़्त अल्लाहु अकबर कहना, २. खड़ा होना, ३. कुरआन मजीद में से कोई सूरः या आयत पढ़ना, ४. रुकूअ करना, ५. दोनों सज़्दे करना, ६. नमाज़ के आखिर में जितनी देर अतहीयात पढ़ने में लगे, बैठना।

मस'ला ३— ये चीज़ें नमाज़ में वाजिब हैं, (१) 'अलहम्दु' का पढ़ना, (२) उसके साथ कोई सूरः मिलाना, (३) हर फर्ज़ को अपने-अपने मौक़े पर अदा करना और पहले खड़े होकर अलहम्दु पढ़ना, (४) सूरः मिलाना, (५) रुकूअ करना, (६) सज़्दा करना, (७) दो रकअत पर बैठना, (दोनों बैठकों में अतहीयात पढ़ना, (८) बित्र की नमाज़ में दुआए कुनूत पढ़ना, (हर चीज़ को इल्मीनान से अदा करना, (९) बहुत जल्दी न करना।

मस'ला ४— इनके सिवा और जितनी बातें हैं—वे सुन्नत हैं या मुस्तहब हैं।

मस'ला ५— अगर कोई नमाज़ में अलहम्दु न पढ़े, बल्कि कोई और आयत या कोई और सूरः पढ़े या बस अलहम्दु पढ़े उसके साथ कोई सूरः या कोई आयत न पढ़े या दो रकअत पढ़कर न बैठे, बिना बैठे और अत्तहीयात पढ़े तीसरी रकअत के लिए खड़ा हो जाए या बैठ जाए लेकिन अत्तहीयात न पढ़े तो इन सब सूरतों में सर से फर्ज तो उतर जाएगा मगर नमाज़ बिल्कुल निकम्मी और खराब है, फिर से पढ़ना वाजिब है। न दोहराए तो बहुत गुनाह होगा।

मस'ला ६— अगर अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह कहते वक़्त सलाम नहीं फेरा बल्कि सलाम का वक़्त आया तो किसी से बोल पड़ा, बातें करने लगा या उठकर कहीं चला गया और कोई ऐसा काम किया जिससे नमाज़ टूट जाती है तो उसके लिए भी यही हुक्म है कि फर्ज तो उतर जाएगा लेकिन नमाज़ का दोहराना वाजिब है। फिर से न पढ़ेगा तो बड़ा गुनाह होगा।

मस'ला ७— अगर पहले सूरः पढ़ो, फिर अलहम्दु पढ़ो तब भी नमाज़ दोहरानी पड़ेगी। अगर भूल कर ऐसा किया तो भूल का सज़ा बग़ले।

मस'ला ८— अलहम्दु के बाद कम-से-कम तीन आयतें पढ़नी चाहिए। अगर एक ही आयत इतनी बड़ी है कि छोटी-छोटी तीन आयतों के बराबर हो जाये, तब भी ठीक है।

मस'ला ९— अगर रुकू से खड़ा होकर

سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ
समिअल्लाहु लिमन हमिदः

'अल्लाह ने उसकी सुन ली जिसने उसकी प्रशंसा की। ऐ अल्लाह! सब प्रशंसा तेरे ही लिए है।'

या रुकूअ में

सुल्हान रब्बियल अजीम०

‘पाकी ब्यान करता हूँ अपने बड़े खुदा की’

न पढ़े या सज्दे में

सुल्हान रब्बियल आला **سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلَى**

‘पाकी ब्यान करता हूँ अपने सर्वोच्च खुदा की’

न पढ़े या आखिर की बैठक में अत्तहीय्यात के बाद दुरुद शरीफ न पढ़े तो भी नमाज़ हो गयी। लेकिन यह सुन्नत के खिलाफ है। इसी तरह अगर दुरुद शरीफ के बाद कोई दुआ न पढ़ी फकत दुरुद शरीफ पढ़कर सलाम फेर लिया तब भी नमाज़ दुरुस्त है लेकिन सुन्नत के खिलाफ है।

मस'ला १०— नीयत बांधते वक़्त दोनों हाथों का उठाना सुन्नत है। अगर कोई न उठाए तब भी नमाज़ दुरुस्त है मगर यह सुन्नत के खिलाफ है।

मस'ला ११— हर रकअत में बिस्मिल्लाह पढ़कर अलहम्दु पढ़े।

मस'ला १२— सज्दे के वक़्त अगर नाक और माथा, दोनों ज़मीन पर न रखे, बल्कि सिर्फ़ माथा ज़मीन पर रखे और नाक न रखे तब भी नमाज़ दुरुस्त है और अगर माथा नहीं लगा या सिर्फ़ नाक ही ज़मीन पर लगायी तो नमाज़ नहीं हुई। अलबत्ता अगर कोई मजबूरी हो तो सिर्फ़ नाक लगाना भी दुरुस्त है।

मस'ला १३— अगर दोनों सज्दों के बीच में अच्छी तरह नहीं बैठा, ज़रा-सा सर उठाकर दूसरा सज्दा कर लिया तो अगर ज़रा ही सर उठाया हो तो एक ही सज्दा हुआ। दोनों सज्दे अदा नहीं हुए। और नमाज़ बिल्कुल नहीं हुई। अगर इतना उठा कि करीब-करीब बैठने के हो गया है तो खैर नमाज़ तो सर से उतर गई लेकिन निकम्मी और ख़राब हुई। इसलिए फिर से पढ़नी चाहिए नहीं तो बड़ा गुनाह होगा।

मस'ला १४— अगर पुआल या रुई की चीज़ पर सज्दा करे तो सर को खूब दबाकर सज्दा करे और इतना दबाए कि उससे ज़्यादा न दब सके। अगर ऊपर-ऊपर ज़रा इशारे से सर रख दिया दबाया नहीं तो सज्दा नहीं हुआ।

मस'ला १५— फर्ज नमाज़ में पिछली दो रकअत अगर अलहम्दु के बाद कोई सूरः भी पढ़ गया तो नमाज़ में नुकसान नहीं आया। नमाज़ बिल्कुल ठीक है।

मस'ला १६— अगर पिछली दो रकअत में अलहम्दु न पढ़े बल्कि तीन बार सुक़ानल्लाह, सुक़ानल्लाह कह ले तो भी दुरुस्त है लेकिन अलहम्दु पढ़ लेना बेहतर है और अगर कुछ न पढ़े चुप खड़ा रहे तो भी कुछ हर्ज नहीं, नमाज़ ठीक है।

मस'ला १७— पहली दो रकअत में अलहम्दु के साथ सूरत मिलाना वाजिब है। अगर कोई पहली रकअत में सिर्फ अलहम्दु के साथ सूरत न मिलाए तो अब पिछली रकअतों में अलहम्दु के साथ सूरत मिलाना चाहिए। फिर अगर जानकर ऐसा किया है तो नमाज़ फिर से पढ़े और अगर भूल से ऐसा हो गया है तो भूल का सज्दा कर ले।

मस'ला १८— नमाज़ में अलहम्दु और सूरत वगैरह सब आहिस्ता और चुपके से पढ़े लेकिन इस तरह पढ़ना चाहिए कि खुद अपने कान में आवाज़ ज़रूर आए। अगर अपनी आवाज़ खुद अपने को भी सुनाई न दे तो नमाज़ न होगी।

मस'ला १९— किसी नमाज़ के लिए कोई सूरत तय न करें बल्कि जो भी चाहे पढ़ा करे सूरत तय कर लेना मकरूह है।

मस'ला २०— दूसरी नमाज़ में पहली रकअत से ज़्यादा लम्बी सूरत न पढ़ें।

मस'ला २१— अगर नमाज़ पढ़ने में वुजू टूट जाए तो वुजू करके फिर नमाज़ पढ़ें।

मस'ला २२— मुस्ताहब यह है कि जब खड़ा हो तो अपनी निगाह सज्दे की जगह रखे और जब रुकूअ में जाए तो पांव पर निगाह रखे और सज्दा करे तो नाक पर, सलाम करते वक़्त कन्धों पर निगाह रखे और जब कभी जमाही आए तो मुंह खूब बंद कर ले और अगर किसी तरह न रुके तो हाथ को हथेली के ऊपर की तरफ से रोके और जब गला सहलाए तो जहां तक हो सके खांसी को रोके और जस्त करे।

मस'ला २३— औरतें भी इसी तरह नमाज़ पढ़ें सिर्फ़ कुछ जगहों पर उनको इस के ख़िलाफ़ करना चाहिए जिसकी तफ़सील नीचे दी हुई है :-

(१) तकबीरे तहरीमा (पहली तकबीर) के वक़्त मर्दों को चादर बग़ैरह से हाथ निकालकर कानों तक हाथ उठाने चाहिए।

(२) बग़ैर तकबीरे तहरीमा के मर्दों को ाफ़ के नीचे हाथ बांधने चाहिये और औरतों को सीने पर।

(३) मर्दों को छोटी उंगली और अंगूठे का घेरा बनाकर बायीं कलाई को पकड़ना और दाहिनी तीन उंगलियां बाईं कलाई पर बिछानी चाहिए और औरतों को दाहिनी हथेली बाईं हथेली की पुरत पर रख देना चाहिए। घेरा बनाना और बाईं कलाई को न पकड़ना चाहिए।

(४) मर्दों को अच्छी तरह रुकूअ में झुक जाना चाहिए कि सर और कुरीन और पुरत बराबर हो जाये। औरतों को इतना नहीं झुकना चाहिए बल्कि सिर्फ़ इतना ही जिसमें उनके हाथ घुटनों तक पहुंच जाये।

(५) मर्दों को रुकूअ में उंगलियां चौड़ी करके घुटनों पर रखनी चाहिये और औरतों को बिछी हुई।

(६) मर्दों को सज्दे में कोहनियां ज़मीन से उठी हुई रखनी चाहिये और औरतों को मिले हुए।

(७) मर्दों को सज्दे में पेट, रानों, बाजू और बगलों से अलग रखने चाहिये और औरतों को मिले हुए।

(८) मर्दों को सज्दे में दोनों पैर उंगलियों के बल खड़े रखने चाहिये, औरतों को नहीं।

(९) मर्दों को बैठने की हालत में बायें पैर पर बैठना चाहिए और दाहिने पैर की उंगलियों के बल खड़ा रखना चाहिए। औरतों को बायें सुरीन के बल बैठना चाहिए और दोनों पैर दाहिनी तरफ निकाल देना चाहिए— इस तरह कि दाहिनी रान बाई रान पर जाए और दाहिनी पिंडली बाई पिंडली पर।

(१०) औरतों को किसी वक़्त बुलन्द आवाज़ से सूरत पढ़ने का इस्तिथार नहीं बल्कि उनको हर वक़्त आहिस्ता आवाज़ से सूरतें पढ़नी चाहियें।

10. कुरआन शरीफ़ पढ़ने का तरीका

मस'ला १— कुरआन शरीफ़ को ठीक-ठीक पढ़ना वाजिब है। हर हर्फ़ को ठीक-ठीक पढ़ें 'हमज़ा' और ऐन में तो फर्क है, इसी तरह बड़ी 'ह' छोटी 'ह', 'ज़ाल', 'ज़ो', 'ज़े', 'ज़्याद' और 'सीन', 'से', 'स्वाद', को ठीक अपनी जगहों से निकाल कर पढ़ें एक हर्फ़ की जगह दूसरा हर्फ़ न पढ़ें।

मस'ला २— अगर किसी से कोई हर्फ़ नहीं निकला जैसे बड़ी 'ह' की जगह छोटी 'ह' पढ़ता है या 'ऐन' नहीं निकलता या 'से' 'सीन' 'स्वाद' सबको 'सीन' ही पढ़ता है तो सही पढ़ने की भश्क करना लाज़िम है। अगर सही पढ़ने की भश्क और मेहनत न करेगा तो गुनहगार होगा और उसकी कोई नमाज़ सही न होगी। अलबत्ता अगर मेहनत से भी दुरुस्ती न हो तो लाचारी है।

मस'ला ३— अगर बड़ी 'ह', 'ऐन' वगैरह सब हरफ निकलते हैं मगर ऐसी बेपरवाही से पढ़ता है कि बड़ी 'ह' की जगह छोटी 'ह' और 'ऐन' की जगह 'हम्ज़ा' हमेशा पढ़ जाता है और कुछ ख्याल करके नहीं पढ़ता तब भी गुनाहगार है और नमाज़ ठीक नहीं होती।

मस'ला ४— जो सूरत पहली रकअत में पढ़ी है वही सूरत दूसरी रकअत में फिर पढ़ ली तब भी कुछ हर्ज नहीं लेकिन ऐसा करना ठीक नहीं है।

मस'ला ५— जिस तरह कलाम मजीद में सूरतें आगे-पीछे लिखी हैं, नमाज़ में उसी तरह पढ़नी चाहिए, जिस तरह पहले सिपारे (अम्म का पारा) में लिखी है बेतरतीब न पढ़े।

मस'ला ६— जब कोई सूरत शुरू करे तो बेज़रूरत उसको छोड़कर दूसरी सूरत शुरू करना मकरूह है।

मस'ला ७— जिसको नमाज़ बिल्कुल न आती हो या नया-नया मुसलमान हुआ हो, वह सब जगह सुब्कानल्लाह, सुब्कानल्लाह वगैरा पढ़ता रहे तो फर्ज अदा हो जायेगा। लेकिन नमाज़ बराबर सीखता रहे। अगर नमाज़ सीखने में कमी करेगा तो गुनाहगार होगा।

11. जमाअत

जमाअत से नमाज़ पढ़ना वाजिब या सुन्नते मुअक्कदा है। जमाअत कम-से-कम दो आदमियों के मिलकर नमाज़ पढ़ने को कहते हैं। इस तरह कि एक शख्स उनमें हुक्म देने वाला हो और दूसरा मानने वाला तो हुक्म देने वाले को इमाम और मानने वाले को मुक़तदी कहते हैं।

मस'ला ९— इमाम के सिया एक आदमी के भी नमाज़ में शरीक हो जाने से जमाअत हो जाती है। चाहे वह आदमी मर्द हो या औरत, गुलाम या आज़ाद या बालिग हो या नासमझ, नाबालिग बच्चा। हाँ,

ईदैन व जुमे की नमाजों में इमां के साथ कम-से-कम तीन आदमियों के बगैर जमाअत नहीं होती।

12. जमाअत की बड़ाई और ताकीद

जमाअत की बड़ाई और ताकीद में सही हदीसों काफी आई हैं। जमाअत नमाज के पूरा होने में एक बड़ी ऊंची शर्त है। नबी करीम सल्ल० ने कभी इसे तर्क नहीं फरमाया। यहां तक कि रोग की हालत में भी जब खुद चलने की ताकत न थी तो दो आदमियों के सहारे से मस्जिद में तशरीफ ले गए और जमाअत से नमाज पढ़ी। जमाअत छोड़ने से आपको बहुत गुस्सा आता था और इस पर लोगों को कड़ी से कड़ी सजा देने को जी चाहता था।

हदीस १— नबी करीम सल्ल० ने फरमाया कि अकेले नमाज पढ़ने से एक आदमी के साथ नमाज पढ़ना बहुत अच्छा है और दो आदमियों के साथ और भी बेहतर है। और जितनी बड़ी जमाअत हो, अत्लाह को उतनी ही ज्यादा पसन्द है।

हदीस २— नबी करीम सल्ल० ने एक दिन इशा के वक़्त अपने उन असहाब (रज़ि०) से जो जमाअत में मशगूल थे—फरमाया कि लोग नमाज पढ़कर सो रहे हैं और तुम्हारा वह वक़्त जो इन्तज़ार में गुज़रा सब नमाज में महसूब हुआ।

हदीस ३— नबी करीम सल्ल० से हज़रत बरीदा अरलमी रज़ि० रियायत करते हैं कि आपने फरमाया : बशारत दो उन लोगों को जो अधेरी रातों में जमाअत के लिए मस्जिद जाते हैं। इस बात की कि कियामत (महाप्रलय) में उनके लिए पूरी रौशनी होगी।

हदीस ४— हज़रत अबू हुसैर : रज़ि० ध्यान करते हैं कि एक दिन आपने फरमाया : 'बेशक मेरे दिल में यह इरादा हुआ कि किसी को हुक्म दूं कि लकड़ियाँ जमा करे, फिर अज़ान का हुक्म दूं और किसी

शस्त्र से कहूँ कि वह इमामत करे और मैं उन लोगों के घरों पर जाऊँ जो जमाअत में नहीं आते और उनके घरों को जला दूँ।

हदीस ५— इब्ने अब्बास रज़ि० नबी करीम सल्ल० ध्यान करते हैं कि जो शस्त्र अज्ञान सुनकर जमाअत में न आए और उसे कोई मजबूरी भी न हो तो उसकी वह नमाज़ जो उसने अकेले पढ़ी कुबूल न होगी। सहाबा रज़ि० ने पूछा मजबूरी क्या है? हज़रत सल्ल० ने फरमाया — डर या बीमारी।

13. जमाअत के वाजिब होने की शर्तें

१. मर्द होना— औरत पर जमाअत वाजिब नहीं।

२. बालिग होना— नाबालिग बच्चों पर जमाअत वाजिब नहीं।

३. आज़ाद होना— गुलाम पर जमाअत वाजिब नहीं।

४. सब मजबूरियों से ख़ाली होना— ये सब बातें जिनमें जमाअत वाजिब नहीं मगर अदा करना बुरा भी नहीं।

जमाअत से नमाज़ न पढ़ सकने में १४ रुकावटें हो सकती हैं।

१. इतना कपड़ा न होना जितना औरत के छुपे हुए हिस्सों को छुपाने के लिए काफी होता है।

२. मस्जिद के रास्ते में इतनी कीचड़ हो कि चलने में परेशानी हो।

३. पानी ज़ोर से पड़ता हो।

४. सर्दी बहुत सख्त हो जिससे बाहर निकलने या मस्जिद तक जाने में बीमारी पैदा होने या उससे बढ़ जाने का डर हो।

५. मस्जिद जाने में साधन की चोरी होने का डर हो।

६ मस्जिद जाने में किसी दुश्मन के मिल जाने का डर हो।

७ मस्जिद जाने में कर्जख़ाह (साहूकार) के मिल जाने या उससे तकलीफ़ पहुंचाने का डर हो जबकि उसका कर्ज अदा करने की हालत में न हो।

८ अंधेरी रात के सबब रास्ता सुझाई न देता हो और अपने पास भी रोशनी करने का सामान न हो।

९ रात का वक़्त हो और आंधी बहुत सज़ा चलती हो।

१० किसी मरीज की तीमारदारी (देखभाल) करता हो और जमाअत में जाने से उस रोग की तेज़ी या बहरात (जी घबराना) का डर हो।

११ खाना तैयार होने वाला हो और इतनी भूख लगी हो कि नमाज़ में दिल न लग सके।

१२ पेशाब या पाख़ाना ज़ोर का लग रहा हो।

१३ सफ़र का इरादा रखता हो और डर हो कि जमाअत से नमाज़ पढ़ने में देर हो जाने से काफ़िला निकल जाएगा। रेल का मामला भी इसी में आ सकता है।

१४ कोई ऐसी बीमारी हो जिसकी वज़ह से चल फिर न सके। या अन्धा, लुंजा, पैर कटा हो। लेकिन जो नाबीना (अन्धा आदमी) बेतक़त्तुफ़ (निस्सकोध) मस्जिद तक पहुंच सके उसे जमाअत नहीं छोड़नी चाहिए।

14. जमाअत का सही होना

जमाअत के लिए ये शर्तें ज़रूरी हैं :

१- मुसलमान होना— काफ़िर की जमाअत ठीक नहीं।

२- आकिल (बुद्धिमान) होना- मस्त, बेहोश या दीवाने की जमाअत ठीक नहीं।

३- मुकतदी (इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ने वाले लोग) को नमाज़ की नीयत के साथ इमाम की इक़तदा (अनुसरण, देखादेखी) की भी नीयत करनी यानी दिल में इरादा करना कि इस इमाम के पीछे फलों नमाज़ पढ़ता हूँ।

४- इमाम और मुक़तदी दोनों की जगहों का साथ मिला होना जैसे: दोनों एक ही मस्जिद या एक ही घर में खड़े हों।

मस'ला १- अगर मुक़तदी मस्जिद की छत पर खड़ा हो और इमाम मस्जिद के अन्दर तो ठीक है, क्योंकि मस्जिद की छत मस्जिद में ही शामिल है और दोनों जगहें बराबर समझी जायेंगी। इसी तरह अगर किसी की छत मस्जिद से मिली हुई हो और बीच में कोई चीज़ या रुकावट न हो तो वह जगह भी मस्जिद से मिली हुई ही समझी जाएगी, और उस पर खड़े होकर उस इमाम की इक़तदा करना जो मस्जिद में नमाज़ पढ़ा रहा है, ठीक है।

मस'ला २- अगर दो सफ़ों (पवितयां, लाइनें) के बीच कोई नहर या सड़क पड़ जाए तो उस सफ़ की इक़तदा ठीक न होगी जो उनके दूसरी तरफ़ है।

मस'ला ३- पैदल चलने वाले की घुड़सवार के या एक सवार की दूसरे सवार के पीछे इक़तदा ठीक नहीं क्योंकि दोनों की जगह बराबर नहीं है। लेकिन अगर दोनों एक ही सवारी पर हों तो दुरुस्त है।

मस'ला ४- नमाज़ी और इमाम दोनों की नमाज़ों में अलाहदगी न हो। अगर ऐसा हो तो सही जमाअत न होगी जैसे : इमाम जुहर की नमाज़ पढ़ता हो और पीछे वाला अज़्र की नमाज़ की नीयत करे या इमाम एक दिन पहले के जुहर की। अलबत्ता अगर इमाम फर्ज़ पढ़ता हो और मुक़तदी नफ़ल तो जमाअत ठीक है। क्योंकि इमाम

की नमाज़ मजबूत है।

मस'ला ५— अगर मुकतदी रमजान शरीफ में तरावीह पढ़ना चाहे और इमाम नफल पढ़ता हो तब भी जमाअत ठीक न होगी क्योंकि इमाम की नमाज़ कमजोर है।

मस'ला ६— इमाम की नमाज़ का हर तरह सही होना बहुत ही ज़रूरी है क्योंकि अगर इमाम की नमाज़ ख़ालिस न होगी तो सब मुकतदियों की नमाज़ भी वैसी ही हो जाएगी, चाहे यह ख़राबी नमाज़ के ख़त्म होने से पहले मालूम हो जाए या ख़त्म होने के बाद, जैसे कि इमाम का वुजू न था और यह बात नमाज़ या उसके बाद याद आई।

मस'ला ७— अगर किसी वजह से इमाम की नमाज़ ग़लत हो जाए और मुकतदियों को पता न चल सके तो इमाम के लिए यह ज़रूरी है कि वह जहां तक भी हो बता दे ताकि वे लोग अपनी नमाज़ों को फिर से पढ़ लें। यह इत्तिहा आदमी के ज़रिए से की जाए या स्वत के ज़रिए से, दोनों तरह से बताई जा सकती है।

मस'ला ८— मुकतदी का इमाम से आगे न खड़ा होना—चाहे वह बराबर खड़ा हो या पीछे अगर मुकतदी इमाम से आगे खड़ा हो तो उसकी जमाअत न होगी। इमाम से आगे खड़ा होना उस वक़्त समझा जाएगा जब मुकतदी की एड़ी इमाम की एड़ी से आगे हो जाए।

मस'ला ९— मुकतदी को इमाम की हरकतों (जैसे रुकू, कौमा सज्दा, क़अ्दा वगैरह) का मालूम होना, चाहे इमाम को देखकर या किसी तकवीर कहने वाले की आवाज़ सुनकर या किसी मुकतदी को देखकर। अगर मुकतदी को इमाम की हरकतों का पता न लग सके, चाहे वह किसी चीज़ के बीच में हो, या कोई पर्दा या दीवार आ जाए मगर इमाम का हिलना-जुलना मालूम होता हो तो जमाअत सही है।

मस'ला १०— अगर इमाम का सफ़र या रुकना मालूम न हो लेकिन अन्दाज़े से उसके रुकने का ख़्याल हो बशर्त कि वह शहर या गांव के अन्दर हो और मुसाफ़िर की-सी नमाज़ पढ़ाए यानी चार

रकअत वाली नमाज़ में दो रकअत पर सलाम फेर दे और मुक्तदी का उस सलाम से इमाम के बारे में भूल का शुद्ध हो तो उस मुक्तदी को अपनी चार रकअत (नमाज़) पूरी कर लेने के बाद इस बात का पता लगाना बाजिब है कि इमाम से कोई भूल हुई थी या वह मुसाफिर था। अगर पूछने पर वह मुसाफिर है तो नमाज़ हो गई लेकिन अगर नमाज़ में भूल का पता चला तो नमाज़ दोबारा पढ़ी जानी चाहिए।

मस'ला ११— अगर इमाम के बारे में यह ख्याल है कि वह रुका हुआ है मगर वह नमाज़ शहर या गांव से बाहर पढ़ा रहा है और उसने चार रकअत वाली नमाज़ में मुसाफिर की-सी नमाज़ पढ़ाई और मुक्तदी को इमाम के भूल लग जाने का शुद्ध हुआ तो इस सूरत में भी मुक्तदी अपनी चार रकअत पूरी करे और बाद नमाज़ के इमाम का हाल मालूम करे तो अच्छा है।

मस'ला १२— मुक्तदी को किरअत (नमाज़ की हालत में इमाम का कुरआन शरीफ पढ़ना) के सिवा सब अरकान (कामों) में इमाम का शरीक रहना, चाहे नमाज़ इमाम के साथ अदा करे, उसके बाद या पहले अदा करे बशर्ते कि इसी काम के पूरे होने तक इमाम उसका साथ दे पहली सूरत की मिसाल, इमाम रुकू करके खड़ा हो जाए, उसके बाद मुक्तदी रुकू करे। दूसरी सूरत की मिसाल—इमाम से पहले रुकू में इतनी देर तक रहे कि इमाम का रुकू उससे मिल जाए।

मस'ला १३— बारह हालत में मुक्तदी की हालत का इमाम से कम या बराबर होना ज़रूरी है जैसे—

(अ) रुकने वाले के पीछे नमाज़ पढ़ना रुकने से मजबूर इमाम के पीछे दुरुस्त है। शरीअत में मजबूर का रुकना मंज़िल पर ठहरने के बराबर है।

(आ) तयम्मूम करने वाले के पीछे चाहे जुजू का हो या गुस्ल का। गुस्ल करने वाले की इकतदा ठीक है। क्योंकि तयम्मूम जुजू और गुस्ल का हुक्म पाकी में बराबर है। कोई किसी से कम या ज्यादा नहीं।

(इ) मसह करने वाले के पीछे चाहे वह मोजों पर खूँचि करता हो या पट्टी पर और धोने वाले के पीछे नमाज़ पढ़ी जा सकती है क्योंकि मसह करना और धोना एक ही वर्ज की पाकियां हैं।

(ई) मजबूर आदमी एक-दूसरे के पीछे नमाज़ पढ़ सकते हैं। बशर्त कि दोनों को एक-सी मजबूरी हो, जैसे: दोनों की बीमारी हो या दोनों को पेट की हवा निकलने का रोग हो।

(उ) उम्मी (बिना पढ़ा-लिखा) की इकतदा उम्मी के पीछे दुरुस्त है बशर्त कि मुकतदियों में क़ारी (कुरआन का, विद्वान) न हो।

(ऊ) औरत और नाबालिग, बालिग मर्द के पीछे नमाज़ पढ़ सकते हैं।

(ओ) औरत, औरत के पीछे नमाज़ पढ़ सकती है।

(औ) नाबालिग औरत या नाबालिग मर्द के पीछे नाबालिग मर्द पढ़ सकते हैं।

(अं) नफ़ल पढ़ने वाले की इकतदा वाजिब पढ़ने वाले के पीछे दुरुस्त है। जैसे कोई जुहर की नमाज़ पढ़ चुका हो और वह जुहर की नमाज़ पढ़ने वाले किसी आदमी के पीछे पढ़े।

(अः) नफ़ल पढ़ने वाले की इकतदा नफ़ल पढ़ने वाले के पीछे दुरुस्त है।

(क) कसम वाली नमाज़ पढ़ने की इकतदा नफ़ल नमाज़ पढ़ने वाले के पीछे दुरुस्त है क्योंकि कसम वाली नमाज़ भी असल में नफ़ल नमाज़ है यानी एबु शरूस् ने कसम खाई कि वह दो रकअत नमाज़ पढ़ेगा और फिर किसी नफ़ल नमाज़ पढ़ने वाले के पीछे उसने दो रकअत नमाज़ पढ़ ली तो नमाज़ हो जाएगी और कसम भी पूरी हो जाएगी।

(ख) नज़र की नमाज़ पढ़ने वाले की इकतदा नज़र की नमाज़ पढ़ने वाले के पीछे दुरुस्त है बशर्त कि दोनों की नज़र एक हो। जैसे

कि एक शस्त्र की नज़र के बाद दूसरा शस्त्र कहे कि उसने भी इस चीज़ की नज़र की जिसकी फलां शस्त्र ने की है और अगर यह सूरत न हो बल्कि एक ने दो रकअत की अलग नज़र की है और दूसरे ने अलग, तो उन में से किसी के लिए दूसरे के पीछे नमाज़ पढ़ना दुरुस्त न होगी। मतलब यह कि जब इमाम से मुकतदी कम या बराबर होगा तो इकतदा दुरुस्त हो जाएगी।

नीचे की १६ सूरतों में मुकतदी इमाम से ज़्यादा हो तो किसी सूरत में भी उसके पीछे नमाज़ दुरुस्त नहीं।

(अ) बालिग की इकतदा चाहे वह मर्द हो या औरत नाबालिग के पीछे दुरुस्त नहीं।

(आ) मर्द की इकतदा चाहे बालिग हो या नाबालिग, औरत के पीछे दुरुस्त नहीं।

(इ) जिस औरत को अपने हैज़ का ज़माना याद न हो उसकी इकतदा उसी तरह की औरत के पीछे दुरुस्त नहीं। इन दोनों सूरतों में मुकतदी को इमाम से ज़्यादा होना समझा गया है।

(ई) होश व हवास वाले की इकतदा मजनु, मस्त, बेहोश व बेअकल के पीछे दुरुस्त नहीं।

(उ) ताहिर (पाक, पवित्र) की इकतदा मा'ज़ूर के पीछे जैसे उस शस्त्र के जिसको पथरी की बीमारी की शिकायत हो, दुरुस्त नहीं जैसे किसी को पेट की हवा निकलते रहने का रोग हो और वह ऐसे शस्त्र की इकतदा करे जिसको पथरी की बीमारी हो।

(ऊ) एक तरह की मजबूरी वाले की इकतदा दूसरी तरह की मजबूरी वाले के पीछे दुरुस्त नहीं। जैसे: पथरी का बीमार आदमी ऐसे आदमी की इकतदा करे जिसको नक्सीर बहने की शिकायत हो।

(ओ) एक मजबूरी वाले की इकतदा दो मजबूरियों वाले के पीछे ठीक नहीं जैसे किसी को पेट की हवा निकलने का रोग हो और वह

ऐसे आदमी की इकतदा करे जिसे पेट की हवा निकलने और पथरी के दो रोग हों।

(औ) पढ़े-लिखे आदमी की इकतदा उम्मी के पीछे दुरुस्त नहीं। कारी वह कहलाता है जिसे इतना कुरआन शरीफ सही याद हो जिससे नमाज़ हो जाती हो और उम्मी वह, जिसे इतना भी याद न हो।

(अ) उम्मी की इकतदा उम्मी के पीछे जब कि मुक्तदियों में कोई कारी मौजूद हो दुरुस्त नहीं क्योंकि इस सूरत में उस उम्मी इमाम की नमाज़ फासिद हो गई तो सब मुक्तदियों की नमाज़ फासिद हो जाएगी जिनमें वह कारी भी मुक्तदी है।

(अः) उम्मी की इकतदा गूंगे के पीछे दुरुस्त है क्योंकि उम्मी अगरचे कुरआन शरीफ नहीं पढ़ सकता लेकिन उसमें ऐसा करने की ताकत तो है इसलिए वह पढ़ना सीख सकता है जबकि गूंगे में यह ताकत बिल्कुल नहीं।

(क) जिस शख्स का जिस्म जितना ढकना फर्ज है छुपा हुआ हो, उसकी इकतदा नंगे आदमी के पीछे दुरुस्त नहीं।

(ख) रुकू व सुजूद करने वाले की इकतदा इन दोनों से मजबूर के पीछे दुरुस्त नहीं और अगर कोई शख्स सज्दे से मजबूर हो, उसके पीछे भी इकतदा दुरुस्त नहीं।

(ग) फर्ज नमाज़ पढ़ने वाले की इकतदा नफल पढ़ने वाले के पीछे दुरुस्त नहीं क्योंकि नफल की नमाज़ याजिब है।

(घ) नज़र की नमाज़ पढ़ने वाले की इकतदा नफल पढ़ने वाले के पीछे दुरुस्त नहीं।

(ङ) नज़र की नमाज़ पढ़ने वाले की इकतदा कसम की नमाज़ पढ़ने वाले के पीछे दुरुस्त नहीं जैसे कि किसी ने कसम खाई कि वह चार रकअत नमाज़ पढ़ेगा और किसी ने नज़र की और नज़र करने

बासा उसके पीछे नमाज़ पढ़े तो दुरुस्त न होगी क्योंकि नज़र की नमाज़ वाजिब है और कसम की नफ़ल क्योंकि कसम से ही कफ़फ़ारा (प्रायश्चित्त) वाजिब होता है और उसमें यह भी हो सकता है कफ़फ़ारा दे दे और नमाज़ न पढ़े।

(घ) जिस शख्स से साफ़ हरफ़ अदा न हो सकते हों या किसी हरफ़ में तब्दीली होती हो तो उसके पीछे साफ़ और सही पढ़ने वाले की नमाज़ दुरुस्त नहीं। हाँ, अगर पूरी क़िरअत में एक-दो हरफ़ ऐसे आ जाएं तो इक़तदा दुरुस्त हो जाएगी।

(छ) इमाम का अकेला न होना यानी ऐसे शख्स के पीछे इक़तदा दुरुस्त नहीं जिसका उस वक़्त रहना ज़रूरी है। जैसे: जमाअत में देर से शामिल होने वालों की कि उस को इमाम की नमाज़ ख़त्म हो जाने के बाद अपनी छूटी हुई रकअत को अकेले पढ़ना ज़रूरी है। बस अगर कोई शख्स किसी मस्बूक (जो व्यक्ति देर से नमाज़ में सम्मिलित हो और उसकी कुछ नमाज़ इमाम के साथ पढ़ने से छूट जाए) की इक़तदा करे तो दुरुस्त न होगी।

(ज) इमाम को किसी का मुक़तदी न होना यानी ऐसे शख्स को इमाम न बनाना चाहिए जो खुद किसी का मुक़तदी हो ख़्वाह वह आदमी जिसे जमाअत की नमाज़ पूरी मिल जाए या जो जमाअत में शामिल हो मगर किसी मजबूरी से जमाअत से अलग होकर फिर जमाअत में शामिल हो। लाहिक (लगा हुआ, मिला हुआ) अपनी उस रकअत में जो इमाम के साथ उसको नहीं मिली मुक़तदी का हुक्म रखता है। इस लिए अगर कोई शख्स लाहिक की इक़तदा करे तो दुरुस्त नहीं। इसी तरह अब किसी मस्बूक की या लाहिक मस्बूक की इक़तदा करे तो दुरुस्त नहीं।

ये सब शर्तें जमाअत के ही होने की हैं अगर इनमें से कोई शर्त किसी मुक़तदी में न पाई जाए तो उसकी इक़तदा ठीक नहीं होगी और जब किसी मुक़तदी की इक़तदा ठीक न होगी तो उसकी वह

नमाज़ भी न होगी जिसको उसने इकतदा करने की हालत में अदा किया है।

15. जमाअत के अहकाम

जुमा और ईदैन की नमाज़ों में यह शर्त है कि ये नमाज़ें बगैर जमाअत के नही होतीं। यानी ये नमाज़ें अकेले नही होतीं। पांच वक़्ती नमाज़ों में भी जमाअत वाजिब है बशर्त कि कोई मजबूरी न हो और तरावीह में ताकीद वाली सुन्नत है, अगरचे एक कुरआन जमाअत के साथ पढ़ा जा चुका हो। इसी तरह नमाज़ें कुसूफ़ (सूर्यग्रहण) के लिए और रमज़ान शरीफ़ के वित्त्रों में इससे बचना चाहिए यानी जबकि मवाजिबत (हमेशा एक ही काम करना) की जाए और अगर हमेशा एक ही गिनती में लोग जमाअत न बनाएं बल्कि कभी-कभी दो-तीन आदमी जमाअत से पढ़ लें तो मकरूह नहीं और नमाज़ खुसूफ़ (चन्द्रग्रहण) में और सब नफ़लों में मकरूह तहरीमी (नापसन्दीदा) है बशर्त कि इस तरीक़े से अदा की जाए जिस तरीक़े से फ़र्ज़ों की जमाअत होती है यानी अज़ान बे-इक़ामत के साथ या और किसी तरीक़े से लोगों को जमा करके हो। अगर बे-अज़ान बे इक़ामत के और बिना बुलाए हुए दो-तीन आदमी जमा होकर किसी नफ़ल की नमाज़ जमाअत से पढ़ लें तो कुछ हरज नहीं और फिर भी दवाम (एक ही बात हमेशा करना) न करें और इसी तरह मकरूह तहरीमी हैं। हर फ़र्ज़ की दूसरी जमाअत इन चार शर्तों के साथ अदा की जाए।

(१) मरिजद मुहल्ले की हो और आम रास्ता न हो, मुहल्ले की मरिजद वह है जिसमें यहां का इमाम और नमाज़ी गिने-चुने हों,

(२) पहली जमाअत ऊंची आवाज़ से अज़ान व इक़ामत कहकर पढ़ी गई हो,

(३) पहली जमाअत उन लोगों ने पढ़ी हो जो उस मुहल्ले में रहते हों और जिनको उस मस्जिद के इन्तजाम का एख्तियार हासिल हो,

(४) दूसरी जमाअत उसी तरीके और इन्तजाम से अदा की जाए जिस तरह पहली जमाअत अदा की गई है। यह चौथी शर्त सिर्फ इमाम अबू यूसुफ रहमतुल्लाह अलैहि० के नजदीक है और इमाम साहब रह० के नजदीक हालत बदल देने पर भी कराहियत (बुराई, खराबी, मकरूह होना) रहती है इसलिए अगर दूसरी जमाअत मस्जिद में अदा न करके घर में की जाए तो यह मकरूह नहीं है।

अगर इन चार शर्तों में से कोई शर्त न पाई जाए। जैसे: मस्जिद आम रास्ते पर हो मगर मुहल्ले की न हो तो उसमें दूसरी बल्कि तीसरी और चौथी जमाअत भी मकरूह नहीं या पहली जमाअत उन लोगों ने पढ़ी जो उस मुहल्ले में नहीं रहते, न उनको मस्जिद का इन्तजाम करने का एख्तियार हासिल है या बकौल इमाम अबू यूसुफ रह० दूसरी जमाअत उस तरीके से अदा न की जाए जिस तरीके से पहली जमाअत अदा की गई है। जिस जगह पहली जमाअत का इमाम खड़ा हुआ था दूसरी जमाअत का इमाम वहां से हटकर खड़ा हो तो हालत बदल जाएगी और जमाअत मकरूह न होगी।

16. मुक़तदी और इमाम

मस'ला १— मुक़तदियों को चाहिए कि मौजूद लोगों में इमाम बनने की खूबियां जिस शख्स में ज्यादा से ज्यादा हों उसी को इमाम बनाएं अगर कुछ लोग ऐसे हों जो इमाम की लियाक़त में बराबर हों तो ज़ियादा लोग जिसे चाहें उसी को इमाम बनाया जाए अगर इमाम से ज्यादा लायक होने वाले शख्स के होते हुए भी उससे कम लियाक़त वाले आदमी को इमाम बनाया तो सुन्नत छोड़ने की खराबी पैदा हो जाएगी।

मस'ला २— इमाम बनाने का सबसे ज़्यादा हक उस शख्स को है जो नमाज़ के मसाइल खूब जानता हो बशर्त कि ऊपरी तौर पर उसमें कोई खराबी न हो यानी वह मसनून किरअत पढ़ना जानता हो। कुरआन मजीद ठीक और अच्छ पढ़ता हो। वह सबसे ज़्यादा परहेज़गार, ज़्यादा उम्र वाला, मेहरबान, खूबसूरत, शरीफ, अच्छी आवाज़ वाला और अच्छे कपड़े पहनने वाला हो, वह शख्स एक जगह रुका हुआ हो। मुसाफ़िरो के बनिस्बत उसमें दो खूबियां पाई जायें— जैसे वह शख्स नमाज़ के मसाइल भी जानता हो और कुरआन पाक भी अच्छा पढ़ता हो।

मस'ला ३— अगर किसी के घर जमाअत की जाए तो घर वाले को इमाम बनाना चाहिए। इसके बाद जिसे वह शख्स कह दे।

मस'ला ४— जिस मस्जिद में कोई इमाम मौजूद हो वहां उसके होते हुए दूसरा इमाम नहीं हो सकता। लेकिन अगर वह किसी को इमाम बना दे तो कोई हर्ज नहीं है।

मस'ला ५— काज़ी यानी शरीअत के हाकिम या मुसलमान बादशाह के होते हुए दूसरे को इमाम बनाने का हक नहीं।

मस'ला ६— लोगों की मर्ज़ी के बगैर किसी को इमाम बनाना मकरूह तहरीमी है। हाँ, अगर वह शख्स इमामत का सबसे ज़्यादा हकदार हो यानी उसमें इमाम बनने की जितनी खूबियां हों उनके बराबर किसी में न हों तो कुछ बुरा नहीं बल्कि जो उसकी इमामत से नाराज़ हो, वह ग़लती पर है।

मस'ला ७— फासिक (गुनाहगार, बदकार) और बिदअती (नई बात निकालने वाला) को इमाम बनाना मकरूह तहरीमी है। हाँ, अगर खुदा-न-स्वास्तता ऐसे लोगों के सिवा कोई दूसरा शख्स वहां मौजूद न हो तो मकरूह नहीं। इसी तरह अगर बिदअती और फासिक असर वाले हों और उन्हें हटाने की ताकत न हो या झगड़ा होने का डर हो तब भी बुराई नहीं है।

मस'ला ८- फिकः (धार्मिक बातों वाली पुस्तक) के कायदे से गुलाम आदमी को इमाम बनाना, चाहे वह आजाद हो या गंवार यानी गांव का रहने वाला और अन्धा जो पानी की एहतियात न रखता हो या ऐसा आदमी जिसे रात को कम नज़र आता हो या हरामी को इमाम बनाना मकरूह तन्ज़ीही है। हौं, अगर ये लोग पढ़े-लिखे हों और लोग उन्हें इमाम बनाना पसन्द करें तो कोई बात नहीं। इसी तरह से किसी नौजवान को इमाम बनाना जिसकी दाढ़ी न निकली और कोई पागल हो उसको इमाम बनाना मकरूह तन्ज़ीही है।

मस'ला ९- इमाम का नमाज़ में बड़ी-बड़ी सूरतें पढ़ना जो मसनून तरीके से बड़ी हों रुकू व सज्दे में बहुत ज़्यादा देर तक रहना, नापसंदीदा होने की वजह से मकरूह है, बल्कि इमाम को चाहिए कि अपने मुक्तदियों की हाज़त (आवश्यकता, इच्छा) ज़रूरत और कमजोरी का ख़्याल रखे, बल्कि ज़्यादा ज़रूरत के वक़्त बताई हुई मिक्दार से भी कम क़िरअत (लय से पढ़ाई) करना बेहतर है ताकि लोगों का हर्ज (हानि) न हो जो जमाअत की कमी का सबब बन जाए।

मस'ला १०- अगर एक ही मुक्तदी हो और वह मर्द हो या नाबालिग लड़का तो उसे इमाम के दाहिनी तरफ़ या इमाम के बराबर या उससे कुछ पीछे हटकर खड़ा होना चाहिए। अगर वह बायें जानिब या इमाम के पीछे खड़ा हो तो मकरूह है।

मस'ला ११- अगर एक से ज़्यादा मुक्तदी हों तो उनको इमाम के पीछे सफ़ बांधकर खड़ा होना चाहिए। अगर इमाम के दायें बायें जानिब खड़े हों और दो हों तो इससे बचना चाहिए। अगर दो से ज़्यादा हों तो हराम होने की वजह से नापसंदीदा है। इसलिए कि जब दो से ज़्यादा मुक्तदी हों तो इमाम का आगे खड़ा होना वाजिब है।

मस'ला १२- अगर नमाज़ शुरू करते वक़्त एक ही मर्द मुक्तदी था और यह इमाम की 'दाई' जानिब खड़ा हुआ। उसके बाद और मुक्तदी आ गए तो पहले मुक्तदी को चाहिए कि पीछे हट जाए ताकि

सब मुक्तदी मिलकर इमाम के पीछे खड़े हों। अगर वह न हटे तो उन मुक्तदियों को चाहिए कि उसे खींच ले। अगर नाजानकारी से वे मुक्तदी पीछे खड़े हो गये तो इमाम को चाहिए कि वह आगे बढ़ जाए ताकि सब मुक्तदी मिल जायें और इमाम के पीछे हो जायें। इसी तरह अगर पीछे हटने की जगह से नावाक़िफ़ हो। जैसा कि अकसर देखा जाता है तो उसे हटाना मुरासिब नहीं क्योंकि हो सकता है वह कभी कोई ऐसी हरकत कर बैठे जिससे पूरी नमाज़ ख़राब हो जाये।

मस'ला १३— अगर मुक्तदी औरत हो या नाबालिग लड़की, तो उसे चाहिए इमाम के पीछे खड़ी हो, चाहे एक हो या एक से ज़्यादा।

मस'ला १४— अगर मुक्तदियों में हर तरह के लोग हों— कुछ मर्द, कुछ औरतें, कुछ नाबालिग— तो इमाम को चाहिए कि इस तरीक़ी से उनकी सफ़ें कायम करे। यानी पहले मर्दों की सफ़ें, फिर नाबालिग लड़कों की, फिर बालिग औरतों की और फिर नाबालिग लड़कियों की।

मस'ला १५— इमाम को चाहिए कि सफ़ें सीधी करे, यानी सफ़ में लोगों को आगे-पीछे होने से मना करे, सबको बराबर खड़े होने का हुक्म दे। सफ़ में एक-दूसरे से मिलकर खड़ा होना चाहिए यानी दर्मियान में जगह ख़ाली नहीं रखना चाहिए।

मस'ला १६— अकेले आदमी का सफ़ के पीछे खड़ा होना मकरूह है बल्कि ऐसी हालत में चाहिए कि अगली सफ़ से किसी आदमी को खींचकर अपने साथ खड़ा कर ले लेकिन अगर खींचने में यह डर हो कि अपनी नमाज़ ख़राब करेगा या बुरा मानेगा तो ऐसा न करे।

मस'ला १७— पहली सफ़ में जगह होते हुए दूसरी सफ़ में खड़ा होना मकरूह है। हाँ, जब सफ़ पूरी हो जाए तब दूसरी सफ़ में खड़ा होना चाहिए।

मस'ला १८— मर्द को सिर्फ़ औरतों की इमामत ऐसी जगह करनी ठीक नहीं जहां कोई मर्द न हो और न माँ या बहन-जैसी औरत हो।

अगर कोई मर्द या कोई जानकार औरत हो तो फिर मकरूह नहीं।

मस'ला १९— अगर कोई आदमी अकेले फज्र, गरिब या इशा के फर्ज आहिस्ता आवाज से पढ़ रहा हो और उसी बीच कोई आदमी उसके पीछे नमाज़ पढ़ने लगे तो इसमें दो सूरतें हैं— एक यह कि वह आदमी दिल में यह सोच ले कि अब वह इमाम बनता है ताकि नमाज़ जमाअत से हो जाए। दूसरी सूरत यह कि इरादा न करें, बल्कि पहले की तरह अपने को यह समझे कि अगर्चे वह आदमी उसके पीछे आ खड़ा हुआ लेकिन वह इमाम नहीं बनता बल्कि पहले की तरह अकेला ही नमाज़ पढ़ता है। अगर पहली सूरत है तो उस पर उसी जगह से ऊंची आवाज़ से किरअत करना वाजिब है। लेकिन अगर वह सूरः फातिहा (सूरः अल्हम्द) या कुछ दूसरी सूरः भी आहिस्ता आवाज़ से पढ़ चुका हो तो उसे चाहिए कि उस जगह से बाकी फातिहा या बकाया सूरः को जोर से पढ़े। क्योंकि इमाम को फज्र, गरिब और इशा के वक़्त बुलंद आवाज़ से किरअत करना वाजिब है और उस मुक़तदी की नमाज़ भी ठीक रहेगी क्योंकि नमाज़ के ठीक-ठीक अदा हो जाने के लिए इमामत की नीयत करना जरूरी है।

मस'ला २०— इमाम और अकेले आदमी को घर या मैदान में नमाज़ पढ़ना मुस्तहब है, मगर वह अपने सामने चाहे दायें या बायें, कोई ऐसी चीज़ खड़ी कर ले जो एक हाथ या उससे ज़्यादा ऊंची और एक उंगली के बराबर मोटी हो। अगर वह मस्जिद में नमाज़ पढ़ता हो या ऐसी जगह हो जहां लोगों को नमाज़ी के सामने से गुज़रना हो तो कोई चीज़ खड़ी करने की जरूरत नहीं है और इमाम का सुतरः (नमाज़ी के आगे जो आड़ या रुकावट बनाई जाए।) सब मुक़तदियों की तरफ से काफी है और सुतरः कायम हो जाने के बाद उसके आगे से निकल जाने में कुछ गुनाह नहीं लेकिन अगर सुतरे के अन्दर से कोई निकले तो गुनाहगार होगा।

मस'ला २१— जिस मुक़तदी की कुछ रकअत नमाज़ या सब रकअत जमाअत में शरीक होने के बाद सो जाने या किसी और वजह

से छूट जायें या वह ज्यादा लोगों की वजह से रुकू व सज्दे न कर सके या उसका बुजू टूट जाए और वह बुजू करने के लिए जाए और इस दर्मियान उसकी रकअत जाती रहे या एक जगह ठहरने वाले मुसाफिर की इकतदा करे और मुसाफिर कम नमाज़ पढ़े तो वह एक जगह ठहरने वाला, इमाम के नमाज़ खत्म करने के बाद लाहिक है। ऐसा भी हो सकता है कि वह इमाम से पहले किसी रकअत का रुकू व सज्दा अदा कर ले और इस वजह से वह रकअत उसकी गायब समझी जाये तो उस रकअत की वजह से वह लाहिक समझा जायेगा। ऐसे आदमी को चाहिए कि वह पहले अपनी उन रकअतों को अदा करे जो छूट गई हैं और उनके अदा करने के बाद अगर जमाअत बाकी हो तो उसमें शरीक हो जाए वरना बाकी नमाज़ पढ़ ले।

मस'ला २२— लाहिक अपनी छूटी नमाज़ में भी मुकतदी समझा जायेगा। जैसे मुकतदी किरअत नहीं पढ़ता, वैसे ही लाहिक भी किरअत न करके खामोश खड़ा रहे और जैसे मुकतदी को भूल हो जाने में भूल का सज्दा करने की ज़रूरत नहीं होती वैसे ही लाहिक का भी हाल है।

मस'ला २३— जिस आदमी की एक या दो रकअत रह गई हों तो उसे चाहिए कि पहले इमाम के साथ शरीक होकर जितनी नमाज़ बाकी हो जामअत से पढ़ ले और इमाम के नमाज़ खत्म करने के बाद खड़ा हो जाये और अपनी छूटी हुई रकअत पढ़े।

मस'ला २४— इमाम के साथ पूरी नमाज़ न पढ़ सकने वाले आदमी को अपनी छूटी हुई नमाज़ अकेले आदमी की तरह किरअत के साथ पढ़नी चाहिए और अगर उन रकअत में कोई भूल हो जाये तो उसे भूल का सज्दा करना भी ज़रूरी है।

मस'ला २५— इमाम के साथ पूरी नमाज़ न पढ़ने वाले आदमी को अपनी छूटी नमाज़ इस तरतीब से अदा करनी चाहिए कि पहले किरअत वाली, फिर बिना किरअत की और जो रकअत इमाम के साथ पढ़ चुका है, उसके हिसाब से काअती (दूसरी रकअत के बाद

बैठ जाना) करे और जो तीसरी रकअत हो और नमाज तीन रकअत वाली हो तो उसमें आखिर में कअदा करे, या जैसा भी मौका हो।

मिसाल— जुहर की नमाज में तीन रकअत हो जाने के बाद कोई आदमी जमाअत में शरीक हो तो उसे चाहिए कि इمام के सलाम फेर लेने के बाद खड़ा हो जाए और छूटी हुई तीन रकअत नमाज इस तरतीब से पढ़े : पहली रकअत में सूर : फातिहा के बाद कोई दूसरी सूरत मिलाकर रुकू व सज्दा करके पहला कअदा करे, क्योंकि यह रकअत उस मिली हुई रकअत के हिसाब से दूसरी है फिर दूसरी रकअत में भी सूर : फातिहा के साथ कोई सूरत मिलाये और उसके बाद कअदा न करे क्योंकि यह रकअत उस मिली हुई रकअत के हिसाब से तीसरी है। फिर तीसरी रकअत में सूर : फातिहा के साथ कोई सूरत न मिलाए क्योंकि वह रकअत किरअत की न थी और उसमें कअदा करे क्योंकि वह आखिरी कअदा है।

मस'ला २६— अगर कोई आदमी लाहिक भी हो और मस्बूक भी हो जैसे कुछ रकअत हो जाने के बाद वह जमाअत में शरीक हुआ हो और जमाअत में शरीक होने के बाद कुछ रकअत उसकी चली जायें तो उसे चाहिए कि पहले अपनी रकअत पढ़े जो जमाअत में शरीक होने के बाद गई हैं और जिनमें वह लाहिक है। मगर उन्हें पढ़ने में वह अपने आपको ऐसा समझे कि जैसे इمام के पीछे ही नमाज पढ़ रहा है, यानी किरअत न करे और इمام की तरतीब का लिहाज रखे। बाद में अगर जमाअत बाकी हो तो उसमें शरीक हो जाये वरना बाकी नमाज भी पढ़ ले। इसके बाद अपनी उन रकअत को अदा करे, जिनमें वह पूरी नमाज इمام के साथ नहीं पढ़ सका।

मिसाल — अन्न की नमाज में एक रकअत हो जाने के बाद कोई आदमी शरीक हो और शरीक होने के बाद उसका युजू टूट जाये। वह युजू करने गया और इस दर्मियान नमाज खत्म हो गयी तो उसे चाहिए कि पहले वह वे तीन रकअत पढ़े जो उसके जमाअत में शरीक होने के बाद जाती रहीं। फिर उस रकअत को पढ़े जो उसके

शरीक होने से पहले हो चुकी थीं और उन तीनों रकअत को मुकतदी की तरह अदा करे यानी किरअत न पड़े और उस तीन की पहली रकअत में कअदा करे, क्योंकि यह इमाम की दूसरी रकअत है और इमाम ने उसमें काअदा किया था। फिर दूसरी रकअत में काअदा न करे क्योंकि यह इमाम की तीसरी रकअत है। फिर तीसरी रकअत में कअदा करे क्योंकि यह इमाम की चौथी है और उसमें इमाम ने कअदा किया था। फिर वह उस रकअत को पढ़े, जो उसके शरीक होने से पहले हो चुकी थी और उसमें भी कअदा करे, क्योंकि वह उसकी चौथी रकअत है और उस रकअत में किरअत भी करनी होगी क्योंकि वह इस रकअत में मस्बूक है और मस्बूक अपनी छूटी हुई रकअत को अदा करने में अकेला आदमी-जैसा माना गया है।

मस'ला २७— मुकतदियों को नमाज में हर रकन (शर्त, आवश्यक कार्य) का इमाम के साथ ही देर किए बगैर अदा करना सुन्नत है। तहरीमा (नमाज में नीयत करने के बाद अल्लाहु अकबर कहना) भी इमाम के साथ करे। रुकू भी इमाम के रुकू के साथ, कीमा (रुकू से उठना) भी कीमे के साथ, सज्दा भी उसके सज्दे के साथ यहां तक कि हर काम इमाम के साथ-साथ हो। हाँ, अगर पहले कअदे में इमाम उससे पहले इस तरह खड़ा हो जाये कि 'मुकतदी अतहिय्यात' पूरी करे तो मुकतदियों को चाहिए कि अतहिय्यात पूरी कर, सलाम फेर द तो मुकतदियों को चाहिए कि अतहिय्यात पूरी करके सलाम फेर ले। हाँ, रुकू व सज्दे में अगर मुकतदियों ने तस्बीह न पढ़ी हो तो भी इमाम के साथ ही खड़ा होना चाहिए।

17. जमाअत में शामिल हो सकना

मस'ला १— अगर कोई आदमी अपने मुहल्ले या मकान के करीब मस्जिद में ऐसे दबत पहुंचा कि वहां जमाअत हो चुकी थी तो

उसे मुस्तहब है कि वह दूसरी मस्जिद में जमाअत के लिए जाए। उसे यह भी एख्तियार है कि अपने घर में वापस आकर घर के लोगों को जमा करके जमाअत करे।

मस'ला २— अगर कोई अपने घर में फर्ज नमाज़ अकेले पढ़ चुका हो और वह देखे कि वही फर्ज जमाअत से हो रही है, तो उसे चाहिए कि जमाअत में शरीक हो जाए मगर शर्त यह है कि वह जुहर और इशा का वक़्त हो। फज़ की नमाज़ों के बाद नफ़ल नमाज़ मकरूह है और मग़रिब के बाद इसलिए कि यह दूसरी नमाज़ नफ़ल होगी और नफ़ल में तीन रकआत नहीं बताई गई।

मस'ला ३— अगर कोई आदमी फर्ज नमाज़ शुरू कर चुका हो और उसी हालत में फर्ज जमाअत से होने लगे तो अगर वह फर्ज दो रकअत वाली है। जैसे: फज़ की नमाज़, तो उसका यह हुक्म है कि अगर पहली रकअत का सज्दा न किया हो तो उस नमाज़ को तोड़ दे और जमाअत में शामिल हो जाये। अगर पहली रकअत का सज्दा कर लिया हो और दूसरी रकअत का सज्दा न किया हो तब भी तोड़ दे और जमाअत में शामिल हो जाये। अगर दूसरी रकअत का सज्दा कर लिया हो तो दोनों रकअत पूरी कर ले। और अगर वह फर्ज तीन रकअत वाली है, जैसे मग़रिब तो उसका यह हुक्म है कि अगर दूसरी रकअत का सज्दा न किया हो तो छोड़ दे और अगर दूसरी रकअत का सज्दा कर लिया हो तो अपनी नमाज़ पूरी कर ले और बाद में जमाअत के अन्दर शरीक न हो, क्योंकि नफ़ल तीन रकअत के साथ जायज़ नहीं। अगर फर्ज चार रकअत वाली हो जैसे जुहर, अस्त्र, इशा तो अगर पहली रकअत का सज्दा न किया हो तो उसे तोड़ दे और अगर सज्दा कर लिया हो तो रकअत का अतहियात और दुरुद शरीफ़ पढ़कर सलाम फेर दे और जमाअत में मिल जाये। और अगर तीसरी रकअत शुरू कर दी और उसका सज्दा न किया हो तो तोड़ दे और अगर सज्दा कर लिया हो तो नमाज़ पूरी कर ले और जिन शायलों में नमाज़ पूरी कर ली जाये उन में से मग़रिब फज़ और अस्त्र में तो दोबारा जमाअत में शरीक न हो और जुहर और इशा में शरीक

हो जाये और जिन सूरतों में नमाज़ छोड़नी हो तो खड़े-खड़े एक सलाम फेर दे।

मस'ला ४— अगर कोई आदमी नफल नमाज़ शुरू कर चुका हो और फर्ज जमाअत से होने लगे तो नफल नमाज़ न तोड़े बल्कि उसे चाहिए कि दो रकअत पढ़कर सलाम फेर दे। अगर चार रकअत की नीयत हो।

मस'ला ५— जुहर और जुमे की ज़रूरी सुन्नतें अगर शुरू कर चुका हो और फर्ज जमाअत से होने लगे तो दो रकअत पर सलाम फेरकर जमाअत में शामिल हो जाये। बहुत से लोग यह कहते हैं कि चार रकअत पूरी कर ले और अगर तीसरी रकअत शुरू कर दी अब चार रकअत पूरी करना ज़रूरी है।

मस'ला ६— अगर फर्ज नमाज़ हो रही हो तो फिर सुन्नत शुरू न की जाये बशर्ते कि किसी रकअत के चले जाने का डर हो। हाँ, अगर यह डर या यकीन हो कि कोई रकअत न जायेगी तो पढ़ ले। जैसे: जुहर के वक़्त जब फर्ज शुरू हो जायें और डर हो कि सुन्नत पढ़ने से कोई रकअत जाती रहेगी तो फिर वे सुन्नतें जो फर्ज से पहले पढ़ी जाती हैं, छोड़ दे। फिर जुहर और जुमे में फर्ज के बाद। अच्छा यह है कि बाद वाली ज़रूरी सुन्नत पहले पढ़कर उन सुन्नतों को पढ़ ले। मगर फज़ की सुन्नतें चूँकि ज़रूरी होती हैं इसलिए उनके लिए यह हुक्म है कि अगर फर्ज शुरू हो चुका हो तब भी पढ़ ली जायें मगर शर्त यह है कि एक रकअत फर्ज मिल जाने की उम्मीद हो। अगर एक रकअत के भी मिल जाने की उम्मीद न हो तो फिर न पढ़ें। फिर अगर चाहे तो सूरज निकलने के बाद पढ़ें।

मस'ला ७— अगर यह डर हो कि फज़ की सुन्नत नमाज़ के सुनन (सुन्नतें) और मुस्तहब्बात पाबन्दी से अदा किये जायेंगे तो जमाअत न मिलेगी तो ऐसी हालत में चाहिए कि सिर्फ़ फर्ज और वाजिब नमाज़ें ही पढ़ें, सुन्नत छोड़ दे।

मस'ला ८— फर्ज शुरू होने की हालत में जो सुन्नतें पढ़ी जाये,

चाहे वे फर्ज की हों या किसी और वक़्त की, वे ऐसी जगह पढ़ी जाये जो मस्जिद से अलग हो। क्योंकि जहाँ फर्ज नमाज़ हुई हो फिर कोई दूसरी नमाज़ वहाँ पढ़ना हARAM होने की वजह से अच्छा नहीं है। और अगर ऐसी कोई जगह न मिले तो सब से अलग होकर मस्जिद के किसी भी कोने में नमाज़ पढ़ ले।

मस'ला ९— अगर जमाअत का काअ़्दा मिल जाये और रकअ़्त न मिले तब भी जमाअत का सवाब मिल जायेगा।

मस'ला १०— जिस रकअ़्त का रुकू इमाम के साथ मिल जाये तो समझना चाहिए कि वह रकअ़्त मिल गई। हाँ, अगर रुकू न मिले तो फिर उस रकअ़्त की गिनती न मिलने में होगी।

मस'ला ११— सब औरतें अपनी-अपनी नमाज़ अलग-अलग पढ़े, जमाअत से न पढ़ें और जमाअत के लिये मस्जिद में जाना और वहाँ जाकर मर्दों के साथ न पढ़ना चाहिए। अगर कोई औरत अपने शौहर या बाप के साथ जमाअत करके नमाज़ पढ़े तो किसी मर्द के बराबर खड़ी न हो, बिल्कुल पीछे रहे वरना उसकी नमाज़ ख़राब होगी, साथ ही उस मर्द की भी नमाज़ बरबाद हो जायेगी। वह इमाम के पीछे अलहम्द और कोई और सूर: वगैरा न पढ़े, बस ख़ामोश खड़ी रहे।

18. नीयत के मसायल

मस'ला १— मुक़्तदी को अपने इमाम की इक़तदा की नीयत करना भी शर्त है।

मस'ला २— इमाम को सिर्फ़ अपनी नमाज़ की नीयत करना शर्त है, इमामत की नीयत करना शर्त नहीं। हाँ, अगर कोई औरत उसके पीछे नमाज़ पढ़ना चाहे और मर्दों के बराबर खड़ी हो और नमाज़े जनाज़ा, नमाज़े जुमा और ईदैन भी न हो तो उसकी इक़तदा सही

होने के लिए उसकी इमामत की नीयत करना शर्त है और अगर मर्दों के बराबर न खड़ी हो या नमाज़ जनाज़ा या जुमा ईदैन की हो तो फिर शर्त नहीं।

मस'ला ३— मुक्तदी को इमाम के बारे में यह खोज नहीं करनी चाहिए कि वह ज़ैद है या उमर बल्कि सिर्फ़ इतनी नीयत काफी है— 'मैं इस इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ता हूँ।' हाँ अगर उसका नाम लेकर नीयत करेगा और फिर उसके खिलाफ़ होगा तो उसकी नमाज़ न होगी। जैसे किसी ने यह नीयत की कि वह ज़ैद के पीछे नमाज़ पढ़ता है, वह ख़ालिद है तो उसकी नमाज़ न होगी।

19. नमाज़ के ख़ास मसाइल

मस'ला १— कुछ नावाक़िफ़ लोग मस्जिद में आकर इमाम को रुकू में पाते हैं तो जल्दी के ख़्याल से आते ही झुक जाते हैं और उसी हालत में तकबीर तहरीमा कहते हैं। उनकी नमाज़ नहीं होती क्योंकि तकबीर तहरीमा के लिए कियाम खड़ा होना शर्त है। जब कियाम न किया वह ठीक न हुई और जब वह ठीक न हुई तो नमाज़ भी ठीक न होगी।

मस'ला २— 'आमीन' के शुरू के लफ़्ज़ 'आ' को बढ़ाकर पढ़ना चाहिये, फिर कुरआन मजीद की कोई सूरत पढ़े।

मस'ला ३— अगर सफ़र की हालत में हो या कोई ज़रूरत आ पड़े तो एख़्तियार है कि सुरः फ़ातिहा के बाद जो सूरत चाहे पढ़े। अगर सफ़र और ज़रूरत की हालत न हो तो फ़ज़्र और जुहर की नमाज़ में सुरः हुजुरात और सुरः बुरुज और उनके दर्मियान की सूरतों में से जिस सूरत को चाहे पढ़े। फ़ज़्र की पहली रकअत में दूसरी रकअत की निस्बत बड़ी सूरत होनी चाहिये। बाकी औकात में दोनों रकअत की सूरत बराबर होनी चाहिये। एक-दो आयत की कमी ज़्यादाती का एतबार नहीं अज़ा और इशा की नमाज़ में 'बरसमाई

वृत्तारिक' और 'तम यकुनित्सजीन' और इनके दर्मियान की सूरतों में से कोई सूरत पढ़नी चाहिए मगरिब की नमाज़ में सूरः ज़िलज़ाल से आखिर तक पढ़े।

मस'ला ४— जब रुकू से उठकर सीधा खड़ा हो तो इमाम सिर्फ़ समिअल्लाहु लिमन हमिदः अल्लाह ने उसकी सुन ली जिसने उसकी तारीफ़ की, वह इसके काबिल है) और मुक़तदी सिर्फ़ :—

رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ

(ऐं हमारे खुदा! तेरे ही लिए सब प्रशंसा है)

और अकेला दोनों कहे, फिर तकबीर कहता हुआ दोनों हाथों को घुटनों पर रखे हुए सज्दे में जाये। तकबीर की इन्तहा और सज्दे की इम्तिदा साथ ही हो यानी सज्दे में पहुंचते ही तकबीर ख़त्म हो जाये।

मस'ला ५— सज्दे में पहले घुटनों, फिर हाथों फिर नाक और फिर माथे को ज़मीन पर रखना चाहिए। मुंह दोनों हाथों के दर्मियान, उंगलियां मिली हुई और किबले की तरफ़ दोनों पैर और उंगलियों के बल खड़े हुए हों और उंगलियों का रुख़ किबले की तरफ़ हो। पेट जानू (घुटना, जांघ) से अलग और बाजू बग़ल से जुदा हों। पेट ज़मीन से इतना ऊंचा हो कि बकरी का बहुत छोटा बच्चा बीच से निकल सके।

मस'ला ६— फ़ज़्र, मगरिब और इशा, के वक़्त पहली दो रकअत में सूरः फ़ातिहा और कोई दूसरी सूरत, समिअल्लाहुलिमन हमिदः (जो अल्लाह की प्रशंसा करता है, अल्लाह उसकी सुनता है) और सब तकबीरें इमाम बुलन्द आवाज़ से कहे। अगर आदमी अकेला है तो चाहे जैसे करे मगर समि अल्लाहु लिमन हमिदः और तकबीरें जोर से कहे, जुहर और अस्त्र के वक़्त इमाम सिर्फ़ समी अल्लाहु लिमन हमिदह और सब तकबीरें जोर से कहे। अकेला आदमी आहिस्ता और इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ने वाला हर बार तकबीर वगैरा आहिस्ता कहे।

मस'ला ७— नमाज़ खत्म कर चुकने के बाद दोनों हाथ सीने तक उठाकर फैलाये और अल्लाह से अपने लिए दुआ मांगें अगर इमाम हो तो मुक्तदियों के लिए भी मांगे। दुआ मांगने के बाद दोनों हाथ मुंह पर फेर ले। मुक्तदी चाहे अपनी-अपनी दुआ मांगे या इमाम की दुआ उन्हें सुनाई दे, तब आमीन (खुदा ऐसा ही करे) कहते रहें।

मस'ला ८— जिन नमाज़ों के बाद सुन्नतें हैं जैसे जुहर, मग़िब व इशा इनके बाद बहुत देर तक दुआ न मांगे बल्कि थोड़ी दुआ मांग कर इन सुन्नतों को पढ़ने लगे, जिन नमाज़ों के बाद सुन्नत नहीं है जैसे फ़ज़ और अज़्र उनके बाद जितनी देर तक चाहे दुआ मांगे और इमाम हो तो मुक्तदियों की तरफ़ दायें या बायें रुख़ मुंह फेर कर बैठ जाए फिर दुआ मांगे बशर्त कि कोई मस्बूक इसके सामने नमाज़ न पढ़ रहा हो।

मस'ला ९— फ़ज़ नमाज़ों के बाद बशर्त कि उनके बाद सुन्नतें न हों वरना सुन्नत के बाद मुस्तहब है कि :—

أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ

अस्तग़्फ़िरुल्लाहल्लजी लाइला ह इल्ला हुवल हैय्युल् कय्यूम०

(मैं उस अल्लाह से मुक्ति मांगता हूँ कि वह ऐसी शक्ति है कि कोई और खुदा नहीं। वस वही खुदा है, वही ज़िन्दा है और हमेशा रहने वाला)

पढ़े। तीन बार आयतल कुर्सी, सूर: इख़लास, (११२) सूर: फलक (११३) और सूर: नास (११४) एक-एक बार पढ़कर तैंतीस-तैंतीस बार अल्हम्दु लिल्लाह सुब्हानल्लाह और चौंतीस बार अल्लाहु अकबर पढ़े।

20. फर्ज और वाजिब के मसाइल

मस'ला १— मुदरिक (जिसे जमाअत की पूरी नमाज मिल जाये) पर किरअत नहीं। इमाम की किरअत सब मुक्तदियों की तरफ से काफी है। इमाम अबू हनीफा की नज़र में मुक्तदियों को इमाम के पीछे किरअत करना मकरूह है।

मस'ला २— मस्बूक को अपनी छूटी हुई रकअत से एक या दो रकअत में किरअत करना फर्ज है।

मस'ला ३— इमाम के होते हुए मुक्तदी को किरअत नहीं करना चाहिए। हाँ मस्बूक के लिए चूँकि उसकी गई हुई रकअत में इमाम नहीं होता उसे इसलिए किरअत करना चाहिए।

मस'ला ४— सज्दे की जगह, पैरों की जगह से एक बालिशत से ज्यादा ऊँची न होनी चाहिए। अगर एक बालिशत से ज्यादा ऊँची पर सज्दा किया जाए तो ठीक नहीं। हाँ, अगर कोई मजबूरी ही आ जाए तो जायज़ है।

मस'ला ५— इमाम को फज़ की दोनों रकअत, मरिब व इशा की पहली दोनों रकअत, जुमा व ईदैन, तरावीह की नमाज़ और रमज़ान के वित्रों में बुलन्द आवाज़ से किरअत पढ़ना वाजिब है।

मस'ला ६— अकेले आदमी को फज़ की दोनों रकअत और मरिब व इशा दोनों की पहली दो रकअत में एख्तियार है, चाहे जोर से किरअत करे या धीरे से। आवाज़ सुनाई देने की लोगों ने यह हद बताई कि कोई दूसरा आदमी सुन सके। आहिस्ता आवाज़ की यह हद लिखी है कि खुद सुने, कोई दूसरा नहीं।

मस'ला ७— इमाम और अकेले आदमी को जुहर व अस्त्र की सब रकअत और मरिब व इशा की आखिरी रकअत में आहिस्ता आवाज़ से किरअत करना वाजिब है।

मस'ला ८— जो नफ़ल नमाज़ें दिन को पढ़ी जायें उनमें आहिस्ता आवाज़ से किरअत करना चाहिए और जो नफ़ल रात को पढ़ी जाएं उनमें जैसे चाहे किया जाए।

मस'ला ९— अकेला आदमी अगर फज़, मग़रिब और इशा की कज़ा दिन में पढ़े तो उनमें भी आहिस्ता आवाज़ से किरअत करना वाजिब है। अगर रात को कज़ा पढ़े तो उसे एख़्तियार है।

मस'ला १०— अगर कोई आदमी मग़रिब या इशा की पहली दूसरी रकअत में सूरः फ़ातिहा के बाद सूरत पढ़ना भूल जाए तो उसे तीसरी या चौथी रकअत में सूरः फ़ातिहा के बाद दूसरी सूरत पढ़नी चाहिए। इस रकअत में भी ऊंची आवाज़ से किरअत करना वाजिब है, और आख़िर में भूल का सज्दा करना भी वाजिब है।

21. नमाज़ की सुन्नतें

मस'ला १— तकबीरे तहरीमा कहने से पहले दोनों हाथों का उठाना मर्दों को कानों तक और औरतों को कन्धों तक सुन्नत है। अगर कोई मजबूरी है तो मर्द भी कन्धों तक उठा सकते हैं।

मस'ला २— तकबीर तहरीमा के पूरा होते ही मर्दों को नाफ़ के नीचे और औरतों को सीने पर हाथ बांध लेना सुन्नत है।

मस'ला ३— इमाम और अकेले आदमी को सूरः फ़ातिहा के ख़त्म होने के बाद धीमी आवाज़ से 'आमीन' कहना और किरअत बुलन्द आवाज़ से हो तो सब मुक्तदियों को भी धीमी आवाज़ से आमीन कहना सुन्नत है।

मस'ला ४— रुकू में मर्दों को दोनों हाथों का पहलू से अलग रखना सुन्नत है।

मस'ला ५— कअदे में दोनों हाथ जानुओं पर हों, उंगलियों के सिरे घुटनों के करीब रखना सुन्नत है।

22. नमाज़ टूट जाना

मस'ला १— जान कर या भूल से नमाज़ में बोल उठने से नमाज़ चली जाती है।

मस'ला २— नमाज़ में आह, ओह, उफ या हाय कहे या जोर से रोए तो नमाज़ जाती रहती है। लेकिन अगर जन्नत या दोज़ख को याद करने से दिल भर आया और जोर से आवाज़ भी निकल पड़ी तो नमाज़ नहीं टूटी।

मस'ला ३— बिना ज़रूरत खंखारने और गला साफ करने से जिससे कि दो हरुफ भी सुनाई दे जाएं तो नमाज़ टूट जाती है। लेकिन लाचारी और मजबूरी के वक़्त खंखारना दुरुस्त है और नमाज़ नहीं जाती।

मस'ला ४— नमाज़ में छींक आई और उस पर अलहम्दु लिल्लाह (सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है) कहा तो नमाज़ नहीं जाती लेकिन ऐसा कहना न चाहिए और अगर किसी और को छींक आई और उसके जवाब में यरहमुकल्लाह (अल्लाह तुम पर रहम करे) कहा तो नमाज़ जाती रही।

मस'ला ५— कुरआन शरीफ देखकर पढ़ने से नमाज़ टूट जाती है।

मस'ला ६— नमाज़ में इतना मुड़ जाने से कि सीना क़िबले की तरफ से फिर जाये तो नमाज़ जाती रही।

मस'ला ७— किसी के सलाम के जवाब में व अलैकुम अस्सलाम (तुम पर भी सलामती हो) कहा तो नमाज़ जाती रही।

मस'ला ८- किसी औरत ने नमाज़ में जूड़ा बांधा तो नमाज़ जाती रही।

मस'ला ९- नमाज़ में कोई अच्छी चीज़ खा-पी ली तो नमाज़ जाती रही। यहां तक कि एक तिल या छाली का टुकड़ा उठाकर खा ले तब भी नमाज़ टूट जायेगी लेकिन अगर छाली का टुकड़ा या कोई और चीज़ दांतों में अटकी हुई थी, उसे निगल लिया तो अगर वह चने के दाने से कम हो तब तो नमाज़ हो गई और अगर चने के बराबर या ज्यादा हो तो नमाज़ टूट गई।

मस'ला १०- अगर मुंह में पान दबा हुआ है और उसकी पीक हलक में जाती है तो नमाज़ नहीं होती।

मस'ला ११- कोई मीठी चीज़ खाई और कुल्ली करके नमाज़ पढ़ी जाने लगी लेकिन मुंह में उस चीज़ का मज़ा बाकी है और थूक के साथ हलक में जाता है तो नमाज़ ठीक है।

मस'ला १२- नमाज़ में कुछ खुशखबरी सुनी उस पर अलहम्दुलिल्लाह (सब तारीफें अल्लाह के लिए हैं) कहा या किसी की मौत की खबर सुनी उस पर-

إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ

इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन

(हम सब अल्लाह के हैं और अल्लाह की ही तरफ लौटने वाले हैं) पढ़ा तो नमाज़ जाती रही।

मस'ला १३- कोई लड़का वगैरा गिर पड़ा, उसके गिरते वक़्त बिस्मिल्लाह (शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से) कह दिया तो नमाज़ जाती रही।

मस'ला १४— नमाज़ में बच्चे ने आकर अपनी माँ का दूध पी लिया तो नमाज़ जाती रही, लेकिन अगर दूध नहीं निकला तो नमाज़ नहीं गई।

मस'ला १५— अल्लाहु अकबर कहते वक़्त 'अल्लाह' के पहले हरूफ़ (अलिफ़ अर्थात् 'अ') को बढ़ा दिया और अल्लाहु आकबर कहा तो नमाज़ जाती रही। इसी तरह अकबर की 'बे' यानी 'ब' को बढ़ा कर अल्लाहु अकबार कहा तब भी नमाज़ जाती रही।

मस'ला १६— किसी ख़त या किसी किताब पर नज़र पड़ी और उसे अपनी ज़बान से नहीं पढ़ा, लेकिन दिल ही दिल में मतलब समझ लिया तो नमाज़ नहीं टूटी लेकिन अगर ज़बान से पढ़ लिया तो नमाज़ जाती रहेगी।

मस'ला १७— नमाज़ी के सामने से अगर कोई घला जाए या कुत्ता, बिल्ली, बकरी जैसे जानवरों में से कोई निकल जाये तो नमाज़ नहीं टूटी लेकिन सामने से जाने वाले को बढ़ा गुनाह होगा, इसलिए ऐसी जगह नमाज़ पढ़ना चाहिए जहाँ आगे से कोई न निकले और चलने-फिरने में लोगों को तकलीफ़ न हो। अगर ऐसी कोई अलग जगह न हो तो अपने सामने कोई लकड़ी गाड़ ले जो कम-से-कम एक हाथ लम्बी और एक अंगुल मोटी हो और उस लकड़ी के पास ही खड़ा हो और उसे बिल्कुल नाक के सामने न रखे बल्कि दाएं या बाएं आंख के सामने रखे। अगर कोई लकड़ी न गाड़े तो उतनी ही ऊंची कोई और चीज़ सामने रख ले। जैसे: मोढ़ा (या कुर्सी) तो अब सामने से जाना दुरुस्त है, कुछ गुनाह नहीं होगा।

मस'ला १८— किसी ज़रूरत की वजह से अगर किबले की तरफ़ एक कदम आगे बढ़ा या पीछे हटा लेकिन सीधा किबले की तरफ़ से नहीं फिरा तो नमाज़ दुरुस्त हो गई लेकिन सज़्दे की जगह से आगे बढ़ गया तो नमाज़ न होगी।

23. नमाज़ का फासिद हो जाना

मस'ला १— नमाज़ की हालत में अपने इमाम के सिवा किसी को टोकना यानी कुरआन मजीद के ग़लत पढ़ने पर आगाह करना नमाज़ को ख़राब करना है।

मस'ला २— अच्छा यह है कि मुक़तदी अगर अपने इमाम को टोके तो नमाज़ ख़राब न होगी, चाहे इमाम ज़रूरी क़िरअत कर चुका हो या नहीं।

मस'ला ३— अगर इमाम ज़रूरी क़िरअत कर चुका हो तो उसे चाहिये कि रुकू कर ले। मुक़तदियों को टोकने पर मजबूर न करे (ऐसा करना मकरूह है) और मुक़तदियों को चाहिये कि जब तक ख़ास ज़रूरत न पड़े इमाम को न टोकें (यह भी मकरूह है)। ख़ास ज़रूरत से यह मतलब है इमाम ग़लत पढ़कर आगे बढ़ना चाहता हो या रुकू न करता हो या ख़ामोशी से खड़ा हो जाये। अगर ख़ास ज़रूरत के बग़ैर भी बता दिया तब भी नमाज़ फासिद न होगी।

मस'ला ४— अगर कोई नमाज़ पढ़ने वाला किसी ऐसे आदमी को टोके जो उसका इमाम नहीं, चाहे वह भी नमाज़ में हो या नहीं। हर हाल में उस टोकने वाले की नमाज़ फासिद हो जायेगी।

मस'ला ५— मुक़तदी अगर किसी दूसरे आदमी का पढ़ना सुनकर या कुरआन मजीद में देखकर इमाम को टोके तो उसकी नमाज़ फासिद हो जायेगी और अगर इमाम उसे मान ले तो उसकी नमाज़ भी और अगर मुक़तदी को कुरआन में देखकर या दूसरे से सुनकर खुद भी याद आ गया और फिर अपनी याद पर टोका तो नमाज़ फासिद न होगी।

मस'ला ६— इसी तरह नमाज़ की हालत में कुरआन मजीद देखकर एक आयत क़िरअत की जाये तब भी नमाज़ फासिद (बिगड़ी

हुई) हो जायेगी और अगर वह आयत जो देखकर पढ़ी है, उसे पहले से याद थी तो नमाज़ फ़ासिद न होगी। अगर एक आयत से कम देखकर पढ़ा हो तो नमाज़ फ़ासिद न होगी।

मस'ला ७- औरत का मर्द के साथ इस तरह खड़े हो जाना कि एक के बदन का कोई हिस्सा दूसरे के किसी हिस्से के सामने हो जाए यहां तक कि अगर सज्दे में जाने के वक़्त औरत का सर मर्द के पांव महाज़ी (नमाज़ में एक हिस्से का दूसरे हिस्से के सामने होना) हो जाये तब भी नमाज़ जाती रहेगी। बशर्ते कि (१) औरत बालिग़ हो चुकी हो या नाबालिग़ हो मगर उससे सोहबत की जा सके तो अगर कोई कमसिन या नाबालिग़ लड़की नमाज़ में बराबर खड़ी हो जाए तो नमाज़ फ़ासिद न होगी, (२) दोनों नमाज़ में हों, लेकिन अगर एक नमाज़ में हो और दूसरा न हो तो इस तरह नमाज़ फ़ासिद न होगी, (३) दर्मियान में कुछ आड़े आए। लेकिन अगर कोई पर्दा दर्मियान में हो या कोई आड़ या रुकावट आड़े न आए या बीच में इतनी जगह छूटी हुई हो जिसमें एक आदमी आसानी से खड़ा हो सके तब भी नमाज़ फ़ासिद न होगी, (४) औरत में नमाज़ के ठीक होने की शर्त पाई जाती हो, लेकिन अगर औरत पागल हो या हैज़ व निफ़ास में हो तो उसके बराबर खड़े होने से नमाज़ फ़ासिद न होगी क्योंकि इन सूरतों में वह खुद नमाज़ में नहीं समझी जाएगी, (५) जनाजे की नमाज़ न हो क्योंकि जनाजे की नमाज़ में बराबरी ख़राब नहीं है, (६) बराबरी की एक शर्त बराबर भी बाकी रहे। अगर इससे कम शर्त रहे तो ख़राब नहीं जैसे इतनी देर तक बराबरी रहे कि जिसमें रुकू वगैरा नहीं हो सकता, इसके बाद जाती रहे तो उस थोड़ी-सी बराबरी से नमाज़ में ख़राबी न आएगी, (७) तहरीमा दोनों की एक हो यानी वह औरत उस मर्द की मुक़तदी हो या दोनों, किसी तीसरे के मुक़तदी हों, इमाम ने उस औरत की इमामत की नीयत नमाज़ शुरू करते वक़्त या दर्मियान में जब वह आकर मिली, की हो। अगर इमाम ने उसकी इमामत की नीयत न की हो तो फिर उस बराबरी से नमाज़ फ़ासिद न होगी, बल्कि उस

औरत की नमाज़ ठीक न होगी।

मस'ला ८— अगर इमाम गन्धगी के बाद अपनी जगह किसी को खड़ा किए बगैर ही मस्जिद से बाहर निकल गया तो मुकतदियों की नमाज़ फासिद हो जाएगी।

मस'ला ९— इमाम ने किसी ऐसे आदमी को खलीफा (जानशी), अपनी जगह दूसरे को दे देना) कर दिया जिसमें इमामत की सलाहियत (योग्यता) नहीं जैसे कोई पागल, नाबालिग बच्चा या औरत, तो सबकी नमाज़ फासिद हो जाएगी।

मस'ला १०— अगर मर्द नमाज़ में हो और औरत उस मर्द का उसी हालत में बोसा (घुम्बन, प्यार) ले तो उस मर्द की नमाज़ फासिद न होगी। हां, अगर उस औरत के बोसा लेते वक़्त मर्द को शहवत (कामेच्छा, सम्भोग करने की आकांक्षा) हो गई तब जरूर नमाज़ फासिद हो जाएगी। अगर औरत नमाज़ में हो और कोई मर्द उसका बोसा ले ले तो औरत की नमाज़ जाती रहेगी चाहे मर्द ने शहवत से बोसा लिया हो या बिना शहवत और चाहे औरत को शहवत हुई हो या नहीं।

मस'ला ११— अगर कोई आदमी नमाज़ी के सामने से निकलना चाहे तो नमाज़ की हालत में उससे उलझना और उसे उस काम से रोके रखना जायज़ है, बशर्ते कि उसके रोकने में ज़्यादा काम न करना पड़े और अगर ज़्यादा काम करना पड़े तो नमाज़ फासिद हो गई।

24. नमाज़ मकरूह करने वाली बातें

नमाज़ में मकरूह चीज़ या बातें वे हैं जिनसे नमाज़ तो नहीं टूटती मगर उसका सवाब कम हो जाता है।

मस'ला १— अपने कपड़े, बदन या जेवर से खेलना, कंकरियों को उठाना मकरुह है। लेकिन अगर कंकरियों की वजह से सज्दा न कर सके तो एक बार हाथ से बराबर करना और हटाना ठीक है।

मस'ला २— नमाज़ में उंगलियां चटखाना, कूल्हे पर हाथ रखना और दायें बायें मुंह मोड़कर देखना— ये सह मकरुह बातें हैं।

मस'ला ३— नमाज़ में दोनों पैर खड़े रखकर बैठना या चारजानू (पालती मार कर बैठना) बैठना या कुत्ते की तरह बैठना मकरुह है। हाँ, दुःख और बीमारी की वजह से जिस तरह बैठ सके, कुछ मकरुह नहीं है।

मस'ला ४— सलाम के जवाब में हाथ उठाना और सलाम का जवाब हाथ से देना मकरुह है। अगर जुबान से जवाब दिया तो नमाज़ टूट गई।

मस'ला ५— नमाज़ में इधर-उधर से अपने कपड़े को समेटना और सम्भालना ताकि मिट्टी न लगे, मकरुह है।

मस'ला ६— अगर किसी जगह यह डर हो कि कोई नमाज़ में हँसा देगा या ख्याल बंट जाएगा और नमाज़ में भूल-चूक हो जाएगी तो ऐसी जगह नमाज़ पढ़ना मकरुह है।

मस'ला ७— अगर कोई आगे बैठा बातें कर रहा हो या किसी और काम में लगा हुआ हो तो उसके पीछे उसकी पीठ की तरफ मुंह करके नमाज़ पढ़ना मकरुह नहीं है। लेकिन अगर बैठने वाले को इससे तकलीफ हो और वह उस रुक जाने से घबराए तो ऐसी हालत में किसी के पीछे नमाज़ न पढ़े। अगर कोई आदमी इतनी जोर-जोर से बातें करता हो तो नमाज़ में भूल हो जाने का डर हो तो मकरुह है। वहाँ नमाज़ नहीं पढ़ना चाहिए, किसी की तरफ मुंह करके नमाज़ पढ़ना भी मकरुह है।

मस'ला ८— अगर नमाज़ी के सामने कुरआन शरीफ टंगा हो या तलवार लटकी हो तो कोई हरज नहीं है।

मस'ला ९— जिस फर्श पर तस्वीरें बनी हों उस पर नमाज़ हो जाती है लेकिन तस्वीर का सज्दा न करे। तस्वीर वाली जानमाज़ रखना मकरूह है। तस्वीर का घर में रखना बड़ा गुनाह है।

मस'ला १०— अगर तस्वीर सर के ऊपर हो यानी छत या छतगीरी में तस्वीर बनी हो या आगे, दाएं या बाएं तस्वीर हो तो नमाज़ मकरूह है। अगर वह पैर के नीचे है तो नमाज़ मकरूह नहीं लेकिन अगर बहुत छोटी तस्वीर हो कि वह खड़े होकर दिखाई न दे या पूरी तस्वीर न हो बल्कि सर कटा या मिटा हुआ हो तो उसका कुछ हर्ज नहीं है। ऐसी तस्वीर से किसी भी सूरत में नमाज़ मकरूह नहीं होती चाहे वह किसी भी तरफ बनी हो।

मस'ला ११— तस्वीर बने हुए कपड़े पहनकर नमाज़ पढ़ना मकरूह है।

मस'ला १२— पेड़ (आजकल यह मान लिया गया है कि पेड़ों में भी जान होती है मगर यहां वह दृष्टिकोण लागू नहीं होता।) या मकान जैसी किसी बेजान चीज़ का नक्शा बना हो तो मकरूह नहीं है।

मस'ला १३— नमाज़ के अन्दर आयतों या किसी और चीज़ का उंगलियों पर गिनना मकरूह है। हाँ, अगर उंगलियों को दबाकर गिनती याद रखी जाए तो कुछ हर्ज नहीं।

मस'ला १४— दूसरी रकअत में क़िरअत पहली रकअत से ज़्यादा लम्बी करना मकरूह है।

मस'ला १५— किसी नमाज़ में कुरआन की कोई सूरत तय कर लेना कि हमेशा वही पढ़ी जाए और दूसरी कोई और सूरत नहीं तो यह बात मकरूह है।

मस'ला १६— कन्धे पर रुमाल डालकर नमाज़ पढ़ना मकरूह है।

मस'ला १७— बहुत बुरे और मैले-कुचैले कपड़े पहनकर नमाज़ पढ़ना मकरूह है। लेकिन अगर कपड़े न हों तो जायज़ है।

मस'ला १८— पैसा या कौड़ी मुंह में लेकर नमाज़ पढ़ना मकरूह है। अगर कोई ऐसी चीज़ हो कि नमाज़ में कुरआन शरीफ वगैरा नहीं पढ़ सकता तो नमाज़ नहीं हुई, टूट गई।

मस'ला १९— पाखाना या पेशाब ज़ोर से लगा हो तो ऐसे वक़्त नमाज़ पढ़ना मकरूह है।

मस'ला २०— जब बहुत भूख लगी हो और खाना तैयार हो तो पहले खाना खा ले, तब नमाज़ पढ़े, बगैर खाना खाये नमाज़ पढ़ना मकरूह है। हाँ, अगर वक़्त तंग होने लगे तो पहले नमाज़ पढ़ ले।

मस'ला २१— आंखें बन्द कर के नमाज़ पढ़ना अच्छा नहीं है। लेकिन अगर आंखें बन्द करने से नमाज़ में दिल ख़ूब लगे तो बन्द करके पढ़ने में कोई बुराई नहीं है।

मस'ला २२— बिना ज़रूरत नमाज़ में थूकना और नाक साफ़ करना मकरूह है। अगर ज़रूरत पड़े तो ठीक है। जैसे: किसी को ख़ौसी उठी और मुंह में बलगम आ गया तो अपने बाएं तरफ़ थूक दे या कपड़े में लेकर मल डाले। दाहिनी तरफ़ और किबले की तरफ़ न थूके।

मस'ला २३— नमाज़ में खटमल ने काट खाया, तो उसे पकड़कर छोड़ दे, नमाज़ पढ़ने में उसे मारना अच्छा नहीं है। अगर खटमल ने अभी काटा नहीं है, तो उसे न पकड़े यानी पकड़ना भी मकरूह है।

मस'ला २४— अभी सूर: पूरी नहीं पढ़ी गई और दो-एक बोल रह गए थे कि जल्दी की वजह से रुकू कर लिया और सूर: रुकू में खत्म की तो नमाज़ मकरूह हो गई।

मस'ला २५— अगर सज्दे की जगह पैर से ऊंचे हों जैसे कोई दहलीज़ पर सज्दा करे तो यह देखना चाहिए कि वह कितनी ऊंची है। अगर वह एक बालिशत से ज़्यादा ऊंची है तो नमाज़ दुरुस्त नहीं। लेकिन अगर वह एक बालिशत या इससे कम है तो नमाज़ ठीक है। हाँ, बेज़रूरत ऐसा करना मकरूह है।

मस'ला २६— नमाज़ की हालत में दस्तूर के खिलाफ कपड़े पहनना यानी कपड़े पहनने का जो तरीका हो उससे हटाना नापसन्दीदा होने की वजह से मकरूह है। जैसे: कोई आदमी चादर ओढ़े और उसका किनारा कन्धे पर न डाले या कुर्ता पहने और आस्तीनों में हाथ न डाले तो इससे नमाज़ मकरूह हो जाती है।

मस'ला २७— अगर किसी की टोपी या अमामा (सर पर बांधने वाला कपड़ा, पगड़ी) नमाज़ पढ़ने में गिर जाए तो अच्छा यह है कि उसी हालत में उसे उठाकर पहन ले, लेकिन अगर उसके पहनने में ज्यादा काम करना पड़े तो न पहने।

मस'ला २८— नंगे सर नमाज़ पढ़ना मकरूह है। हाँ, अगर आजिजी और अपने आपको भूल जाने की नीयत से ऐसा करे तो बुराई नहीं।

मस'ला २९— मर्दों को अपने दोनों हाथों की कोहनियों का सज्दे की हालत में बिछा देना मकरूह तहरीमी है।

मस'ला ३०— इमाम का मेहराब में खड़ा होना मकरूह है। हाँ, अगर मेहराब से बाहर खड़ा, मगर सज्दा मेहराब में होता हो तो मकरूह नहीं।

मस'ला ३१— सब मुक्तदियों का इमाम से बिना ज़रूरत किसी ऊँची जगह पर खड़े होना मकरूह है। अगर कुछ मुक्तदी इमाम के बराबर हों और कुछ ऊँची जगह, तब जायज है।

मस'ला ३२— मुक्तदी को जब कि इमाम कियाम (नीयत बांधने की हालत में खड़े होना) में किरअत कर रहा हो या कुरआन मजीद का किरअत करना चाहे वह सूर: फातिहा हो या कोई और सूर: मकरूह तहरीमी है।

25. नमाज़ तोड़ देना

मस'ला १— अगर नमाज़ पढ़ने में रेल चल दे और उस में

सामान रखा हो या बीबी-बच्चे सवार हों तो नमाज़ तोड़कर बैठ जाना दुरुस्त है।

मस'ला २— सामने साँप आ गया तो उसके डर से नमाज़ तोड़ देना दुरुस्त है।

मस'ला ३— रात को मुर्गी खूली रह गई और बिल्ली उसके पास आ गई तो नमाज़ तोड़ देना ठीक है।

मस'ला ४— किसी ने जूता उठा लिया और यह डर है कि अगर नमाज़ न तोड़ी तो वह लेकर भाग जाएगा तो इसके लिए नीयत तोड़ देना ठीक है।

मस'ला ५— कोई औरत नमाज़ में है और हांडी उबलने लगी, जिसकी लागत पच्चीस-तीस पैसे है तो नमाज़ तोड़कर उसको दुरुस्त करना जायज़ है। कहने का मतलब यह है कि जब कभी कम कीमत वाली चीज़ के भी खराब हो जाने का डर हो तो उसे बचाने के लिए नीयत तोड़ देना ठीक है।

मस'ला ६— अगर नमाज़ में पेशाब या पाखाना जोर से लगे तो नमाज़ तोड़ दे और उससे छुट्टी पाकर फिर नमाज़ पढ़ ले।

मस'ला ७— कोई अन्धी औरत या मर्द जा रहा है और उसके आगे कुआ है जिसमें उसके गिर पड़ने का डर है तो उसे बचाने के लिए नमाज़ का तोड़ देना फर्ज़ है। अगर नहीं तोड़ी और वह गिर कर मर गया तो नमाज़ी गुनाहगार होगा।

मस'ला ८— किसी बच्चे के कपड़ों में आग लग गई और वह जलने लगा तो उसके लिए भी नमाज़ तोड़ देना फर्ज़ है।

मस'ला ९— मां-बाप, दादा-दादी, नाना-नानी किसी मुसीबत की वजह से पुकारें तो फर्ज़ को तोड़ देना वाजिब है। जैसे: किसी का बाप या मां बगैरा कोई बीमार है और पाखाना बगैरा किसी ज़रूरत से गए और आते-जाते पैर फिसल गया और गिर पड़े तो नमाज़

तोड़कर उसे उठा ले, लेकिन अगर कोई और उठाने वाला हो तो नमाज़ न तोड़े अगर कोई गिरा नहीं लेकिन गिरने का डर है और उसने नमाज़ी को पुकारा तो अगर कोई और पास न हो तब भी नमाज़ तोड़ी जा सकती है। लेकिन अगर उसने किसी ऐसी ज़रूरत के लिए न पुकार कर वैसे ही आवाज़ दी तो फर्ज़ नमाज़ का तोड़ देना ठीक नहीं है।

मस'ला १०— अगर नफ़ल या सुन्नतें पढ़नी हों और उस वक़्त मां-बाप, दादा-दादी, नाना-नानी पुकारें लेकिन यह उनको पता नहीं है कि वह कौन-सी नमाज़ पढ़ रहा है तो ऐसे वक़्त भी नमाज़ तोड़कर उनकी बात का जवाब देना वाजिब है, चाहे कोई किसी मुसीबत से पुकारे या बिना ज़रूरत, तो दोनों के लिए एक ही हुक्म है। अगर नमाज़ तोड़कर न बोला तो गुनाह होगा। अगर वे जानते हैं कि जिसे पुकारा जा रहा है, वह नमाज़ पढ़ता है तो नमाज़ न तोड़े, लेकिन अगर कोई ज़रूरत हो और उन्हें तकलीफ़ का डर हो तो नमाज़ तोड़ दे।

26. नमाज़ में गंदगी हो जाना

मस'ला १— अगर नमाज़ में कुछ गंदगी हो जाए अगर बड़ी गंदगी हो जिससे गुरल करना वाजिब हो जाए तो नमाज़ फासिद हो जाएगी। और अगर छोटी गंदगी हो यानी वुजू टूट जाए तो दो बातें होंगी यानी एख़्तियारी होगा या बे-एख़्तियारी यानी उसमें बन्दों के एख़्तियार (अधिकार) शामिल होंगे या नहीं। अगर एख़्तियारी (एख़्तिक) होगा तो नमाज़ फासिद हो जाएगी। जैसे: कोई आदमी नमाज़ में कहकहे के साथ हँसे या अपने बदन में कुछ मारकर खून निकाले या जान-बूझकर पेट की हवा निकाले या कोई आदमी छत के ऊपर चले और चलने से कोई पत्थर वगैरह छत से गिर कर किसी

नमाज़ी के सर में लग जाए और खून निकल आए तो इन सूरतों में नमाज़ फ़ासिद हो जाएगी, क्योंकि ये सब काम लोगों के इशारे और एख़्तियार से होते हैं।

अगर कोई ग़लत काम अपने आप कुदरती तौर पर हो गया इसकी भी दो सूरतें हैं, एक कभी-कभी होने वाली। जैसे: इमाम का पागल, बेहोश होना या मर जाना, दूसरे बहुत ज़्यादा होने वाली बातें। जैसे: पेट की हवा, पेशाब, पाख़ाना, एहतलाम। कभी-कभी होने वाली गंदगी में नमाज़ फ़ासिद हो जाएगी, वरना नहीं, बल्कि उस आदमी को इजाज़त है कि उस गंदगी को दूर करने के बाद उस नमाज़ को पूरा कर ले लेकिन अगर पूरी नमाज़ पढ़ ले तो अच्छा है।

मस'ला २— अगर अकेले आदमी को गंदगी आ जाए तो उसे चाहिए कि उसी वक़्त वुजू करे और वहीं अपनी बाकी नमाज़ पूरी कर ले और यही अच्छा है और चाहे जहाँ पहले था वहाँ जाकर पढ़े और बेहतर यह है कि जानकर पहली नमाज़ को सलाम फेरकर तोड़े और वुजू के बाद दोबारा नमाज़ पढ़े।

मस'ला ३— इमाम को अगर गंदगी आ जाए अगर नमाज़ ख़त्म करने के लिए आखिरी काअदे में हो तो उसे चाहिए कि उसी वक़्त वुजू करने चला जाए और बेहतर यह है कि अपने मुक़तदियों में जिसे इमाम के लायक समझता हो उसे अपनी जगह खड़ा कर दे। फिर जब खुद वुजू कर चुके और अगर जमाअत बाकी हो तो जमाअत में आकर अपने ख़लीफ़ा का मुक़तदी बन जाए। अगर जमाअत हो चुकी हो तो अपनी नमाज़ पूरी कर ले चाहे जहाँ भी वुजू किया है, वहीं या जहाँ पहले था वहाँ पर।

मस'ला ४— ख़लीफ़ा कर देने के बाद इमाम नहीं रहता बल्कि अपने ख़लीफ़ा का मुक़तदी हो जाता है। अगर इमाम किसी को ख़लीफ़ा न करे बल्कि खुद मुक़तदी आगे बढ़कर इमाम की जगह पर खड़ा हो जाए और इमाम होने की नीयत कर ले, तब भी दुरुस्त है। बशर्त कि उस वक़्त तक इमाम मस्जिद से बाहर न निकल चुका हो। अगर

नमाज़ मस्जिद में न होती हो तो सफ़ों या सुतरे से आगे न बढ़ा हो और अगर इन हदों से आगे बढ़ चुका हो तो नमाज़ फ़ासिद हो जाएगी, अब कोई दूसरा इमाम नहीं बन सकता।

मस'ला ५— अगर मुक्तदी को गंदगी हो जाए तो उसे उसी वक़्त पुजू करना चाहिए। पुजू करने के बाद अगर जमाअत बाकी हो तो जमाअत में शरीक हो जाए वरना अपनी नमाज़ पूरी कर ले।

मस'ला ६— बेहतर यह है कि छूटी हुई नमाज़ ही न पढ़े बल्कि यह नमाज़ सलाम के साथ तोड़ दे और फिर नए सिर से पढ़े।

27. वित्र नमाज़

मस'ला १— वित्र की नमाज़ वाजिब है और वाजिब का मर्तबा करीब-करीब फ़र्ज़ नमाज़ के बराबर है। इन्हें छोड़ देने से बड़ा गुनाह होता है। अगर कभी छूट जाए तो जब भी मौका मिले उसी वक़्त इसकी क़ज़ा पढ़नी चाहिए।

मस'ला २— वित्र की तीन रकअतें हैं। दो रकअत पढ़ने के बाद बैठ जाए और अतहीय्यात पढ़े। दुरुद शरीफ बिल्कुल न पढ़े बल्कि अतहीय्यात पढ़ चुकने के बाद ही उठ खड़ा हो और सूर: अलहमद और कोई सूरत पढ़ कर—

अल्लाहु अकबर

(अल्लाह बड़ा है)

कहे और कच्चे तक हाथ उठाए। फिर हाथ बांध ले और दुआए कुनूत पढ़कर रुकू करे और तीसरी रकअत पर बैठकर अतहीय्यात, दुरुद शरीफ और दुआ पढ़कर सलाम फेरे।

दुआए कुनूत यह है :

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْتَغِيْثُكَ وَنَسْتَغْفِرُكَ وَنُؤْمِنُ بِكَ وَنَتَوَكَّلُ عَلَیْكَ

وَنَشِئْ عَلَىكَ الْغَيْرَ وَنَشْكُرْ وَلَا نَكْفُرْ وَنَخْلَعُ وَنَتْرُكُ مَنْ
 يُفْجِرُكَ اللَّهُمَّ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَلَكَ نُصَلِّي وَنَسْجُدُ وَإِلَيْكَ
 نَسْتَعِي وَنَحْفِظُ وَنَرْجُو أَرْحَمَكَ وَنَخْشَى عَذَابَكَ إِنَّ
 عَذَابَكَ بِالْكَفَّارِ مُلْحِقٌ ط

अल्लाहुम्म इन्ना नस्तइनु क व नस्तफिरु क व नुअमिनु बि
 क व नतवसकलु अलै क व नुस्नी अलैकल् खैर व नरकु रु क व
 ला नकफुरु क व नखलउ व नतरकु मैयफजुरुक। अल्लाहुम्म
 इय्याक नअबुदु व ल क नुसल्ली व नसजुदु व इतै क नसजा व
 नहफिदु व नर्जू रहम-त-क व नखशा अजा ब-क इन्न अजा
 बक बिल कुफफारि मुल्हिक०

(ऐ अल्लाह ! हम तुझ से ही मदद मांगते हैं और तेरी ही बख्शीश
 चाहते हैं। तुझ पर ही ईमान लाते हैं और तुझ पर ही भरोसा करते
 हैं हम तेरी ही खूबियां ब्यान करते हैं और तेरा ही शुक्र अदा करते
 हैं। हम तेरी नाशुकी नहीं करते। हम अलग होते व साथ छोड़ते हैं
 उसे जो तेरे साथ किसी और को सम्मिलित करे। ऐ अल्लाह! हम तेरी
 उपासना करते हैं। हम तेरी तरफ दौड़ते हैं और तेरे ही लिए हम
 नमाज पढ़ते हैं। हम तेरी रहमत के इच्छुक हैं और तेरे प्रकोप से डरते
 हैं। निस्संदेह तेरा प्रकोप काफिरों पर आने वाला है।

मस'ला ३— वित्र की तीनों रकअत में अलहमद के साथ कोई
 सूर: मिलानी चाहिए।

मस'ला ४— अगर तीसरी रकअत मे दुआए कुनूत न पढ़े तो
 नमाज के खत्म पर भूल का सज्दा कर ले। अगर रुकू छोड़कर उठ
 खड़ा हो और दुआए कुनूत पढ़ ले तब भी खैर नमाज तो हो गई
 लेकिन ऐसा करना नहीं चाहिए और भूल का सज्दा इस सूरत में भी

करना याजिब है।

मस'ला ५- अगर भूल से पहली या दूसरी रकअत में दुआए कुनूत पढ़ ले तो इसका कुछ एतबार नहीं है। तीसरी रकअत में फिर पढ़ना चाहिए और भूल का सज्दा भी करना पड़ेगा।

मस'ला ६- जिसे दुआए कुनूत याद न हो तो यह पढ़ लिया करे :

رَبَّنَا إِنَّا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةٌ وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةٌ وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ

रखना आतिना फिद दुनिया हसनतौ बदाफिल आखिरति
ह-स-न-तौ व किना अज़ाबन्नार०

(ऐ हमारे खुदा, हमें दुनिया में अच्छाई दे और आखिरत में भी अच्छाई दे और आग के अज़ाब से बचा।)

या तीन बार यह कह ले :

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ

(ऐ अल्लाह! बख्शीश कर)

या तीन बार यह कह ले तो नमाज़ हो जाएगी : या रब! या रब!
या रब! (ऐ खुदा! ऐ खुदा! ऐ खुदा!)

28. सुन्नत और नफ़ल नमाज़ें

मस'ला १- फज़ के वक़्त फर्ज़ से पहले दो रकअत नमाज़ सुन्नत है। हदीस शरीफ़ में इसकी बड़ी ताकीद आई है। कभी इसे न छोड़े। अगर किसी दिन देर हो गई और नमाज़ का वक़्त बिल्कुल आखिर हो गया तो मजबूरी के वक़्त कुल दो रकअत नमाज़ पढ़ ले

लेकिन जब सूरज निकल आए और ऊंचा हो जाए तो सुन्नत की दो रकअत कज़ा पढ़ ले।

मस'ला २— जुहर के वक़्त पहले चार सुन्नतें पढ़े। फिर चार रकअत फर्ज़, फिर दो रकअत सुन्नत। जुहर के वक़्त ये छः रकअत भी ज़रूरी हैं। इनके पढ़ने की बहुत ताकीद है।

मस'ला ३— अस्त्र के वक़्त पहले चार सुन्नत पढ़े, फिर चार रकअत फर्ज़ पढ़े, लेकिन अस्त्र के वक़्त सुन्नतों की ताकीद नहीं है। अगर कोई पढ़े तो बहुत सवाब मिलता है।

मस'ला ४— मरिब के वक़्त पहले तीन रकअत फर्ज़ पढ़े फिर दो रकअत सुन्नत पढ़े। ये सुन्नतें भी ज़रूरी हैं। न पढ़ने से गुनाह होगा।

मस'ला ५— इशा के वक़्त बेहतर और मुस्तहब यह है कि पहले चार रकअत सुन्नत पढ़े फिर चार रकअत फर्ज़, फिर दो रकअत सुन्नत पढ़े। ये दो रकअत पढ़नी ज़रूरी हैं। न पढ़ेगा तो गुनाहगार होगा। फिर, अगर जी चाहे दो रकअत नफ़ल भी पढ़ ले। इस हिसाब से इशा की ६ सुन्नतें हुईं। अगर इतनी रकअत न पढ़े तो पहले चार रकअत फर्ज़, फिर दो रकअत सुन्नत पढ़े और फिर वित्र पढ़े।

मस'ला ६— रमज़ान के महीने में तरावीह की नमाज़ पढ़ना भी सुन्नत है।

फ़ायदा— जिन सुन्नतों का पढ़ना ज़रूरी है, वे सुन्नते मुअक़दा (हज़रत रसूलूले मक़बूल सल्ल० ने जिस बात का आदेश दिया, ताकीद वाली) कहलाती हैं। और रात-दिन में ऐसी बारह सुन्नतें हैं— दो फ़ज़ की, चार जुहर से पहले, दो जुहर के बाद, दो मरिब के बाद, दो इशा के बाद और रमज़ान में तरावीह। कुछ लोगों ने तहज्जद नमाज़ को भी इसी में गिना है।

मस'ला ७— इतनी नमाज़ें तो इस्लामी कानून से हैं। अगर इससे

ज़्यादा भी किसी का जी पढ़ने को चाहे तो जितना चाहे ज़्यादा पढ़े और जिस वक़्त भी चाहे पढ़े, बस इतना ख़याल रखे कि जिन औकात में नमाज़ पढ़ना मकरूह है उस वक़्त न पढ़े। फ़र्ज़ और सुन्नत के सिवा जो कुछ पढ़ेगा उसको नफ़ल कहते हैं। जितनी ज़्यादा नफ़लें पढ़ेगा उतना ही ज़्यादा सवाब मिलेगा। इस की कोई हद नहीं है।

मस'ला ८— कुछ नफ़लों का सवाब बहुत ज़्यादा होता है इसलिए और नफ़लों से इनका पढ़ना बेहतर है कि थोड़ी-सी मेहनत में बहुत सवाब मिलता है। वे ये हैं—तहीय्यतुल वुज़ू, (वुज़ू के बाद दो सुन्नतें पढ़ना) तहीय्यतुल मस्जिद, (मस्जिद में दाख़िल होकर दो सुन्नतें पढ़ना) इशाराक (सूर्योदय के दस मिनट बाद दो सुन्नतें पढ़ना) चारत (सूर्योदय के ढाई घन्टे के बाद चार सुन्नतें पढ़ना) अब्बाबीन, (मग़रब के बाद ६ सुन्नतें पढ़ना) तहज्जुद, (आधी रात के बाद की नमाज़) सलातुत्तस्बीह (चार रकअत में तीन सौ बार कलिमा पढ़ना)।

मस'ला ९— तहीय्यतुल वुज़ू उस नमाज़ को कहते हैं कि जब कभी वुज़ू करे तो वुज़ू के बाद दो रकअत नफ़ल पढ़ लिया करे। हदीस में इस की बहुत फज़ीलत (महत्त्व, श्रेष्ठता, बड़ाई) आई है।

मस'ला १०— तहीय्यतुल मस्जिद नमाज़ उस आदमी के लिए है जो मस्जिद में दाख़िल हो। इस नमाज़ का मतलब मस्जिद की ताज़ीम (आदर, सम्मान) है जो दर हकीकत खुदा की ही ताज़ीम है, क्योंकि मक़ान की इज़्ज़त मक़ान वाले के ख़याल से होती है। मस्जिद में आने के बाद बैठने से पहले दो रकअत नमाज़ पढ़ ले।

मस'ला ११— अगर मकरूह वक़्त हो तो सिर्फ़ चार बार इन कलिमों को कह ले:

سُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ

سُكْرَانُ لِّلَّاهِ وَلِلْهَمْدِ لِيَلِّتَ لِّاهِ وَ لَا إِسْلَاحَ لَهُ إِلَّا تَلَّاهُ
अकबर०

(सब प्रशंसा और प्रार्थना अल्ताह के लिए है। अल्ताह के अतिरिक्त कोई खुदा नहीं। अल्ताह बड़ा है)।

और इसके बाद कोई दुरुद शरीफ पढ़ ले। इस नमाज़ की नीयत यह है :

نَوَيْتُ أَنْ أَصَلِّيَ رَكْعَتَي تَعِيَةِ الْمَسْجِدِ

नवैतु अन् उसल्लिय रकअती तहिय्यतिल् मस्जिद०

(मैंने नीयत की है नमाज़ पढ़ने की दो रकअत, तहिय्यतुल मस्जिद के लिए)

या उर्दू में इस तरह कह ले — मैंने नीयत की कि दो रकअत नमाज़ तहिय्यतुल मस्जिद पढ़ूँ।

मस'ला १२— दो रकअत की कोई क़ैद नहीं। अगर चार रकअत पढ़ी जाए तब भी कुछ बुराई नहीं। अगर मस्जिद में आते ही कोई फर्ज नमाज़ पढ़ी जाए या और कोई सुन्नत अदा की जाए तो वही फर्ज या सुन्नत तहिय्यतुल मस्जिद के बराबर हो जाएगी, यानी इसके पढ़ने से तहिय्यतुल मस्जिद का सवाब मिल जायेगा। अगर चे तहिय्यतुल मस्जिद की नीयत नहीं की गई।

मस'ला १३— अगर मस्जिद में जाकर कोई आदमी बैठ जाए और उसके बाद तहिय्यतुल मस्जिद पढ़े, तब भी कुछ हरज नहीं। मगर अच्छा यही है कि बैठने से पहले पढ़ ले।

मस'ला १४— अगर मस्जिद में कई बार जाना पड़े तो बस एक ही बार तहिय्यतुल मस्जिद पढ़ लेना काफी है।

मस'ला १५— इशाराक़ की नमाज़ का तरीका यह है कि जब फर्ज

की नमाज़ पढ़ चुके तो जानमाज़ पर से न उठे और उसी जगह बैठे-बैठे दुरूद शरीफ या कलिमा :

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللَّهِ

ला इला ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह०

(अल्लाह के सिवा कोई इबादत के काबिल नहीं, मुहम्मद सल्ल० अल्लाह के रसूल हैं)

या कोई और वजीफा पढ़ता रहे, यानी अल्लाह की याद में लगा रहे और दुनिया की कोई भी बात न करे, न दुनिया को कोई काम करे। जब सूरज निकल आए और ऊंचा हो जाए, दो-चार रकअत नमाज़ पढ़ ले तो एक हज और एक उमरे का सवाब मिलता है। अगर फज्र की नमाज़ के बाद दुनिया के किसी धन्धे में फंस गया फिर सूरज ऊंचा होने के बाद इशराक की नमाज़ पढ़ी तब भी दुरुस्त है, लेकिन सवाब कम हो जाएगा।

मस'ला १६— जब सूरज खूब ऊंचा हो जाए और धूप तेज हो जाए तब कम-से-कम दो रकअत पढ़े या इससे ज़्यादा पढ़े यानी चार, आठ या बारह रकअत पढ़ ले उसको चाशत कहते हैं। इसका भी बहुत सवाब है।

मस'ला १७— मरिब के फर्ज और सुन्नतों के बाद कम-से-कम छः रकअत और ज़्यादा-से-ज़्यादा बीस रकअत पढ़े, इसे अक्वाबीन कहते हैं।

मस'ला १८— आधी रात के बाद उठकर नमाज़ पढ़ने का बड़ा ही सवाब है। इसे तहज्जुद कहते हैं। यह नमाज़ अल्लाह को बहुत पसन्द है और सबसे ज़्यादा इसका सवाब मिलता है। तहज्जुद की कम-से-कम चार रकअत और ज़्यादा-से-ज़्यादा बारह रकअतें ही पढ़ ली जाएं। अगर पिछली रात को हिम्मत न हो तो इशा के बाद ही पढ़

ले मगर वैसा सवाब न होगा।

मस'ला १९- सलातुसतस्बीह का हदीस शरीफ में बड़ा सवाब आया है। इसके पढ़ने से बहुत ज्यादा सवाब मिलता है। हज़रत सल्ल० ने अपने चचा हज़रत अब्बास रजि० को यह नमाज़ सिखाई थी और फरमाया था, इसके पढ़ने से तुम्हारे सब गुनाह अगले-पिछले, नए-पुराने और छोटे-बड़े भाफ हो जायेंगे। फिर फरमाया था - अगर हो सके तो रोजाना यह नमाज़ पढ़ लिया करो। अगर रोज न हो सके तो आठ दिन में एक बार पढ़ लो। अगर यह भी न हो सके तो हर महीने पढ़ लिया करो। अगर यह भी न हो सके तो साल में एक बार पढ़ लो। इस नमाज़ के पढ़ने की तरकीब यह है कि घार रकअत की नीयत बांधे और सुक़ान क ल्लाहुम्म और अलहम्दु और सूरः जब सब पढ़ चुके तो रुकू से पहले ही पन्द्रह बार यह दुआ पढ़े।

سُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ

सुक़ानल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाहि य ला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर

(अल्लाह पाक है और अल्लाह तारीफ के लायक है और अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और अल्लाह बहुत बड़ा है।)

फिर रुकू में जाए सुक़ा न रबिबिल अज़ीम (पाकी ध्यान करता हूँ अपने परवर्दिगार बुजुर्ग की) कहने के बाद दस बार फिर यह पढ़े। फिर रुकू से उठे और :

سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ

समिल्लाहु लिमन् हमिदः

(अल्लाह ने उसकी सुन ली जिसने उसकी पाकी ध्यान की)

कहने के बाद फिर दस बार यही पढ़े तब सज्दे में जाए और सुब्हा न रबिबयल आला (पाकी ध्यान करता हूँ अपने सब से अच्छे परवर्दिगार की) के बाद फिर दस बार ऊपर वाली दुआ पढ़े। सज्दे से उठकर दस बार फिर यही पढ़े फिर दूसरा सज्दा करे। उसमें भी दस बार यह पढ़े। फिर सज्दे से उठकर दस बार फिर यही पढ़े फिर सज्दे से उठकर बैठे और दस बार यही दुआ पढ़कर दूसरी रकअत के लिए खड़ा हो। इसी तरह दूसरी रकअत भी पढ़े। जब दूसरी रकअत में अत्तहीष्यात के लिए बैठे तो पहले वही दुआ दस बार पढ़े तब अत्तहीष्यात पढ़े। हर रकअत में ७५ बार और कुल तीन सौ बार यह दुआ पढ़े।

मस'ला २०— इन चार रकअत में जो सूरः चाहे पढ़े, कोई सूरत तय नहीं।

मस'ला २१— दिन को नफ़लें पढ़े तो चाहे दो-दो रकअत की नीयत बांधे और चाहे चार-चार रकअत की नीयत बांधे और दिन को चार रकअत से ज़्यादा की नीयत बांधना मकरूह है। रात को एकदम छः-छः या आठ-आठ रकअत की नीयत बांध ले तब भी ठीक है अगर इससे ज़्यादा की नीयत बांध ले तब भी ठीक है, मगर इससे ज़्यादा की नीयत बांधना रात को भी मकरूह है।

मस'ला २२— अगर चार रकअत की नीयत बांधे और चारों पढ़नी चाहे तो जब दो रकअत पढ़कर बैठे उस वक़्त एख़्तियार है अत्तहीष्यात के बाद दुरुद शरीफ़ और दुआ भी पढ़े फिर बिना सलाम फेरे उठ खड़ा हो। तीसरी रकअत पर सुब्हानकल्लाहुम्मा वा बिहम्दि क व तबाarakस्मु क व तआला जददुक व लाइलाह ऐरुक पढ़े फिर अऊजु व बिस्मिल्लाह के बाद अलहुम्द शुरू करे और चाहे बस अत्तहीष्यात पढ़कर खड़ा हो और तीसरी रकअत बिस्मिल्लाह और अलहुम्द से शुरू करे फिर चौथी रकअत पर बैठ कर अत्तहीयात वगैरा सब पढ़कर सलाम फेरे। अगर आठ रकअत की नीयत बांधी और आठों रकअत एक सलाम में पूरी करना चाहे तो इसी तरह दोनों बात अब

भी दुरुस्त हैं— चाहे अत्तहीय्यात दरुद शरीफ और दुआ पढ़कर खड़ा हो जाए और फिर सुब्हान क ल्लाहुम्म पढ़े और चाहे अत्तहीय्यात पढ़कर खड़ा हो जाए और फिर सुब्हानकल्लाहुम्मा पढ़े और चाहे अत्तहीय्यात पढ़कर खड़ा हो कर बिस्मिल्लाह (शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से) और अलहम्द से शुरू कर दे और आठवीं रकअत पर बैठ कर तब कुछ पढ़ कर सलाम फेरें। इसी तरह हर दो-दो रकअत पर दोनों बातों का एख्तियार है।

मस'ला २३— सुन्नत और नफ़ल की सब रकअतों में अलहम्द के साथ सूरः मिलाना वाजिब है। अगर जानकर सूरः न मिलाई तो गुनाह होगा और अगर भूल गया तो भूल का सज्दा करना होगा।

मस'ला २४— नफ़ल की नमाज़ की जब किसी ने नीयत बांध ली तो अब उसका पूरा करना वाजिब हो गया। अगर किसी ने नीयत तोड़ी तो गुनाह होगा और जो नमाज़ तोड़ी है उसकी कज़ा पढ़नी पड़ेगी। लेकिन नफ़ल की हर दो-दो रकअत अलग हो। अगर चार या छः रकअत की नीयत बांधी तो बस दो ही रकअत का पूरा करना वाजिब होगा, चारों रकअत वाजिब नहीं। इसलिए अगर किसी ने चार रकअत नफ़ल की नीयत की और दो रकअत पढ़कर सलाम फेर दिया तो कुछ गुनाह नहीं।

मस'ला २५— अगर किसी ने चार रकअत की नीयत बांधी और अभी दो रकअतें पूरी न हुई थीं कि नमाज़ तोड़ दी तो कुल दो रकअत की कज़ा पढ़े।

मस'ला २६— अगर चार रकअत की नीयत बांधी और दो रकअत पढ़ चुका, तीसरी या चौथी में नीयत तोड़ दी तो अगर दूसरी रकअत में बैठकर उसने अत्तहीय्यात पढ़ी है तो दो रकअत की कज़ा पढ़े और अगर दूसरी रकअत पर नहीं बैठा, बिना अत्तहीय्यात पढ़े भूल से या जान कर खड़ा हो गया तो पूरी चारों रकअत की कज़ा पढ़ेगा।

मस'ला २७— जुहर की चार रकअत सुन्नत की नीयत अगर टूट

जाए तो पूरी चार रकअत फिर से पढ़े चाहे दो रकअत पर बैठकर अतहीध्यात पढ़ी हो या न पढ़ी हो।

मस'ला २८— नफ़ल बैठकर पढ़ना भी दुरुस्त है लेकिन बैठकर पढ़ने से आधा सवाब मिलता है। इसलिए खड़े होकर पढ़ना अच्छा है। हाँ, बीमारी की वजह से खड़ा न हो सके तो पूरा सवाब मिलेगा और फर्ज़ नमाज़ और सुन्नत जब तक मजबूरी न हो, बैठकर पढ़ना दुरुस्त नहीं।

मस'ला २९— अगर नफ़ल नमाज़ बैठकर शुरू की या फिर कुछ बैठे-बैठे पढ़कर खड़ा हो गया तो यह भी ठीक है।

मस'ला ३०— नफ़ल नमाज़ खड़े होकर शुरू की और पहली या दूसरी रकअत में बैठ गया तो यह भी ठीक है।

मस'ला ३१— नफ़ल नमाज़ खड़े-खड़े पढ़ी लेकिन कमज़ोरी की वजह से थक गया तो किसी लाठी या दीवार की टेक लगा लेना और उसके सहारे खड़ा होना भी ठीक है, मकरुह नहीं है।

29. तरावीह की नमाज़

मस'ला १— रमज़ान के महीने में तरावीह की नमाज़ पढ़ना भी सुन्नत है। इसकी भी ताकीद आई है इसका छोड़ देना और न पढ़ना गुनाह है। इशा के फर्ज़ और सुन्नतों के बाद बीस रकअत तरावीह पढ़ें। नीयत चाहे दो-दो की बांधे या चार-चार की मगर दो-दो रकअत पढ़ना बहुत अच्छा है। जब बीस रकअत पढ़ चुके तो वित्र पढ़ें।

मस'ला २— वित्र को तरावीह की जमाअत से पढ़ना बेहतर है। अगर पहले पढ़ ले तब भी दुरुस्त है।

मस'ला ३— नमाज़ तरावीह में चार रकअत के बाद इतनी देर

तक बैठना जितनी देर में चार रकअतें पढ़ी गई, मुस्तहब है। हां, अगर इतनी देर तक बैठने से लोगों को तकलीफ हो और जमाअत के कम हो जाने का डर हो तो इससे कम बैठने में एख्तियार है—चाहे अकेले नफल पढ़े या तस्बीह पढ़े या चुप बैठा रहे।

मस'ला ४— अगर कोई आदमी इशा की नमाज के बाद तरावीह पढ़ चुका हो और पढ़ने के बाद यह मालूम हो कि इशा की नमाज में कोई ऐसी मजबूरी हो गई थी जिसकी वजह से इशा की नमाज नहीं हुई तो उसको इशा की नमाज लौटाने के बाद तरावीह दोबारा भी पढ़नी चाहिए।

मस'ला ५— अगर इशा की नमाज जमाअत से न पढ़ी हो तो तरावीह भी जमाअत से न पढ़ी जाए क्योंकि तरावीह इशा के बाद होती है। हाँ, जो लोग जमाअत से इशा की नमाज पढ़कर तरावीह जमाअत से पढ़ रहे हों तो उनके साथ शरीक होकर उस आदमी को तरावीह का जमाअत से पढ़ना दुरुस्त हो जाएगा जिसने इशा की नमाज बगैर जमाअत के पढ़ी है।

मस'ला ६— अगर कोई शख्स मस्जिद में ऐसे वक़्त पहुँचे कि इशा की नमाज हो चुकी हो तो चाहिए कि पहले इशा की नमाज पढ़ ले, फिर तरावीह में शरीक हो। अगर इस दर्मियान में तरावीह की कुछ रकअतें हो जाएं तो उन्हें वित्र के बाद पढ़े और वित्र जमाअत से पढ़ ले।

मस'ला ७— महीने में एक बार कुरआन मजीद का तरतीबवार (क्रमानुसार, विधिवत रूप से) तरावीह में पढ़ना सुन्नते मुअवक़दा है और लोगों को काहिली या सुस्ती से इसको छोड़ना नहीं चाहिए। हां अगर यह डर हो कि अगर पूरा कुरआन मजीद पढ़ा जाएगा तो लोग नमाज में न आएंगे और जमाअत टूट जाएगी या उनको बहुत नागवार होगा तो बेहतर है कि जितना लोगों को भारी न पड़े उतना ही पढ़ा जाए। सूर: फील (१०५) से आखिर तक दस सूरतें पढ़ ली जाएं यानी हर रकअत में एक सूर:। फिर जब दस रकअतें हो जाएं तो उन्हीं सूरतों

को दोबारा पढ़ दे या और जो सूरतें चाहे पढ़े।

मस'ला ८— रमज़ान में एक कुरआन मजीद से ज़्यादा न पढ़ें जब तक कि लोगों का शौक हो और उनको भारी न पड़े अगर नागवार हो तो मकरूह है।

मस'ला ९— तरावीह में किसी सूरः के शुरू पर एक बार जोर से बिस्मिल्ला हिर्रहमानिर्रहीम (शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा रहमान और रहीम है) पढ़ देना चाहिए क्योंकि बिस्मिल्लाह भी कुरआन मजीद की एक आयत है और किसी सूरत का टुकड़ा नहीं। इसलिए अगर बिस्मिल्लाह बिल्कुल न पढ़ी जाए तो कुरआन मजीद के पूरा होने में एक आयत की कमी रह जाएगी और अगर आहिस्ता आयाज़ से पढ़ी जाए तो भुक्तदियों का कुरआन मजीद पूरा न होगा।

मस'ला १०— तरावीह का रमज़ान के पूरे महीने में पढ़ना सुन्नत है, अगरचें कुरआन मजीद महीना होने से पहले खत्म हो जाए जैसे पन्द्रह दिन में तो बाकी दिनों में भी तरावीह का पढ़ना सुन्नत मुअक़द है।

मस'ला ११— सही यह है कि कुलहुवल्लाह का तरावीह में तीन बार पढ़ना मकरूह है।

30. भूल का सज्दा

मस'ला १— नमाज़ में जितनी बातें वाजिब हैं उनमें से एक या कई वाजिब भूल से रह जाएं तो भूल का सज्दा वाजिब है और उसके कर लेने से नमाज़ दुरुस्त हो जाती है। अगर भूल का सज्दा न किया तो नमाज़ फिर से पढ़े।

मस'ला २— भूल का सज्दा करने का तरीका यह है कि आखिर रकअत में अंतहीयात पढ़ने के बाद एक सलाम फेरकर दो सज्दे कर

ले फिर बैठ कर अतहीय्यात, दुरुद शरीफ और दुआ पढ़कर दोनों तरफ से सलाम फेर ले और नमाज़ खत्म करे।

मस'ला ३— किसी ने भूलकर सलाम फेरने से पहले ही भूल का सज्दा कर लिया तब भी वह पूरा हो गया और नमाज़ ठीक हो गई।

मस'ला ४— अगर भूल से दो रकूअ कर लिए या तीन सज्दे तो भूल का सज्दा वाजिब है।

मस'ला ५— नमाज़ में अलहम्द पढ़ना भूल गया, बस सूरः पढ़ी और फिर अलहम्द पढ़ी तो भूल का सज्दा करना वाजिब है।

मस'ला ६— फर्ज की पहली दो रकअत में सूरः मिलाना भूल गया तो पिछली दोनों रकअत में सूरः मिलाए और भूल का सज्दा करे। अगर पहली दो रकअत में से एक रकअत में सूरत नहीं मिलाई तो पिछली एक रकअत में सूरतः मिलाए और भूल का सज्दा करे। अगर पहली रकअत में भी सूरत मिलाना याद न रहा यानी न पहली रकअत में अतहीय्यात पढ़ते वक़्त याद आया कि दोनों रकअत या एक रकअत में सूरः नहीं मिलाई तब भी भूल का सज्दा करने से नमाज़ हो जाएगी।

मस'ला ७— सुन्नत और नफ़ल की सब रकआत में सूरः का मिलाना वाजिब है इसलिए अगर किसी रकअत में सूरः मिलाना भूल जाए तो सज्दा कर ले।

मस'ला ८— अलहम्द पढ़कर सोचने लगा कि कौन-सी सूरत पढ़ी जाए और इसी सोच-विचार में इतनी देर लग जाए कि जितनी देर में तीन बार सुल्हानत्लाह कह सकता है तब भी भूल का सज्दा करना वाजिब है।

मस'ला ९— अगर बिल्कुल आखिरी रकअत में अतहीय्यात और दुरुद शरीफ पढ़ने के बाद शक हुआ कि चार रकअत पढ़ी हुई है या तीन, और इसी सोच में सलाम फेरने में इतनी देर हो जितनी देर में तीन बार सुल्हानत्लाह कह सके फिर याद आ गया कि चार रकअतें

पढ़ लीं तो इस सूरात में भी भूल का सज्दा करना वाजिब है।

मस'ला १०— जब अलहम्द और सूरः पढ़ चुका और भूल से कुछ सोचने लगा और रुकू करने में इतनी देर हुई जितनी कि ऊपर ध्यान हुई तो भूल का सज्दा करना वाजिब है।

मस'ला ११— इसी तरह अगर पढ़ते-पढ़ते दर्मियान में रुक गया और कुछ सोचने लगा और सोचने में इतनी देर लग गई या जब दूसरी या चौथी रकअत पर अत्तहीय्यात के लिए बैठा तो फौरन अत्तहीय्यात शुरू नहीं की कुछ सोचने में इतनी देर लग गई या जब रुकू से उठा तो देर तक कुछ सोचा या दोनों सज्दों के बीच में जब बैठा तो कुछ सोचने में इतनी देर लगा दी तो इन सब सूरातों में भूल का सज्दा करना वाजिब है, गर्ज यह कि जब भूल से कोई बात करने में देर कर देगा या किसी बात के सोचने की वजह से देर लग जाएगी तो भूल का सज्दा वाजिब होगा।

मस'ला १२— तीन रकअत या चार रकअत वाली फर्ज नमाज़ में जब दो रकअत पर अत्तहीय्यात के लिए बैठा और दो बार अत्तहीय्यात पढ़ गया तो सज्दा वाजिब है। अगर अत्तहीय्यात के बाद इतना दुरुद शरीफ भी पढ़ गया : अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मद (ऐ अल्लाह ! हज़रत मुहम्मद सल्ल० पर रहमत कर) या इससे ज्यादा पढ़ गया तब याद आया और उठ खड़ा हुआ, तब भी भूल का सज्दा वाजिब है और अगर इससे कम पढ़ा तो सज्दा वाजिब नहीं।

मस'ला १३— नफ़ल नमाज़ में दो रकअत पर बैठकर अत्तहीय्यात के साथ दुरुद शरीफ भी पढ़ना वाजिब है क्योंकि नफ़ल में दुरुद शरीफ के पढ़ने से भूल का सज्दा नहीं होता, अलबत्ता अगर दो बार अत्तहीय्यात पढ़ लिया जाए तो नफ़ल में भी भूल का सज्दा वाजिब है।

मस'ला १४— अत्तहीय्यात पढ़ने बैठा मगर भूल से अत्तहीय्यात की जगह कुछ और पढ़ गया या अलहम्द पढ़ने लगा तब भी भूल का सज्दा वाजिब है।

मस'ला १५— नीयत बांधने के बाद सुब्हान कल्लाहुम्ब (ऐ अल्लाह! तेरी ज्ञात पाक है) की जगह दुआए कुनूत पढ़ने लगा तो भूल का सज्दा वाजिब नहीं। इसी तरह फर्ज की तीसरी या चौथी रकअत में अगर अलहम्द की जगह अत्तहीय्यात या कुछ और पढ़ने लगा तब भी भूल का सज्दा वाजिब नहीं है।

मस'ला १६— तीन या चार रकआत वाली नमाज़ में बीच में बैठना भूल गया और दो रकआत पढ़कर तीसरी रकअत के लिए खड़ा हो गया तो अगर नीचे का आधा धड़ अभी सीधा न हुआ हो तो बैठ जाए और अत्तहीय्यात पढ़ ले तब खड़ा हो और ऐसी हालत में सज्दा करना वाजिब नहीं है। अगर आधा धड़ सीधा हो गया तो न बैठे बल्कि खड़े होकर चारों रकआत पढ़ ले, बस आखिर में बैठे और सूर: में भूल का सज्दा वाजिब है। अगर सीधा खड़ा हो जाने के बाद फिर लौट आए और बैठ कर अत्तहीय्यात पढ़े तो गुनाहगार होगा और सज्दा करना अब भी वाजिब होगा।

मस'ला १७— अगर चौथी रकआत पर बैठना भूल गया और ऊपर का धड़ अभी सीधा नहीं तो बैठ जाए और अत्तहीय्यात और दुरुद शरीफ पढ़कर सलाम फेरे और भूल का सज्दा न करे और अगर सीधा खड़ा हो गया जब भी बैठ जाए और अत्तहीय्यात पढ़कर भूल का सज्दा कर ले अलबत्ता रुकू के बाद भी याद न आया और पांचवीं रकआत का सज्दा कर लिया तो फर्ज नमाज़ फिर से पढ़े। यह नमाज़ नफल हो गई। एक रकअत और मिलाकर पूरी छः रकआत पर सलाम फेर दिया तो चार रकआत नफल हो गई और एक रकअत अकारथ गई।

मस'ला १८— अगर चौथी रकअत पर बैठा और अत्तहीय्यात पढ़कर खड़ा हो गया तो सज्दा करने के पहले जब याद आए बैठ जाए और अत्तहीय्यात पढ़े बल्कि बैठ कर उसी वक़्त सलाम फेरकर सज्दा करे और अगर पांचवीं रकअत का सज्दा कर चुका तब याद आया तो एक रकअत और मिलाकर छः रकअत कर ले। चार फर्ज

हो गए और दो नफल और छठी रकअत पर सज्दा भी कर ले अगर पांचवीं रकअत पर सलाम फेर दिया और भूल का सज्दा कर लिया तो बुरा किया। चार फर्ज हुए और एक रकअत अकारथ गई।

मस'ला १९— अगर चार रकअत नफल नमाज़ पढ़ी और बीच में बैठना भूल गया तो जब तक तीसरी रकअत का सज्दा न किया हो तब तक याद आ जाने पर बैठ जाना चाहिए। अगर सज्दा कर लिया तो खैर, तब भी नमाज़ हो गई और भूल का सज्दा इन दोनों सूरतों में वाजिब है।

मस'ला २०— अगर नमाज़ में शक हो गया कि तीन रकअत पढ़ी है या चार रकअत, तो अगर यह शक अचानक हो गया, ऐसा धोखा लगने की उसकी आदत नहीं है तो फिर से नमाज़ पढ़े और यह शक करने की आदत है और अवसर ऐसा धोखा लग जाता है तो दिल में सोचकर देखे कि दिल ज़्यादा किधर जाता है। अगर ज़्यादा गुमान तीन रकअत पढ़ने का है तो एक और पढ़ ले और भूल का सज्दा करना वाजिब नहीं है अगर ज़्यादा गुमान यही हो कि चारों रकअतें पढ़ ली हैं तो और रकअत न पढ़े और भूल का सज्दा भी न करे। और अगर सोचने के बाद भी दोनों तरफ बराबर ख्याल न रहे, न तीन रकअत की तरफ ज़्यादा गुमान जाता है न चार रकअत की तरफ तो तीन ही रकअत समझे और एक रकअत और पढ़ ले। लेकिन इस सूरत में तीसरी रकअत पर भी अतहीय्यात पढ़े या तब खड़ा होकर चौथी रकअत पढ़े और भूल का सज्दा भी करे:

मस'ला २१— अगर यह शक हुआ कि पहली रकअत है या दूसरी रकअत तो इसका भी यही हुक्म है। लेकिन इसमें सब रकअत पर पहुंचकर अतहीय्यात पढ़े और भूल का सज्दा करके सलाम फेरे।

मस'ला २२— अगर नमाज़ पढ़ चुकने के बाद यह शक हुआ कि न मालूम तीन रकअतें पढ़ीं या चार तो इस शक का कुछ नहीं, नमाज़ हो गई। हां, अगर ठीक याद आ जाए कि तीन हो गईं तो फिर खड़े होकर एक और रकअत पढ़ ले और भूल का सज्दा कर ले। अगर

पढ़कर बोल पड़ा हो या कोई ऐसी बात हो जिससे नमाज़ टूट जाती है तो फिर से पढ़े। इसी तरह अगर अतहीय्यात पढ़ चुकने के बाद यह शक हुआ तो उसका भी यही हुक्म है कि जब तक ठीक याद न आए उसका भरोसा न करे लेकिन अगर कोई अतहीय्यात की वजह से नमाज़ फिर से पढ़ ले तो अक्का है कि दिल की खटक निकल जाए और शक बाकी न रहे।

मस'ला २३— अगर नमाज़ में कई बातें ऐसी हो गई जिनसे भूल का सज्दा वाजिब होता है तो एक ही सज्दा सब की तरफ से हो जाएगा। एक नमाज़ में दो बार भूल का सज्दा नहीं किया जाता।

मस'ला २४— भूल का सज्दा करने के बाद फिर से कोई ऐसी बात हो गई जिससे सज्दा वाजिब होता है तो वही पहला सज्दा काफी है, अब फिर भूल का सज्दा न करे।

मस'ला २५— नमाज़ में कुछ भूल हो गई थी जिससे भूल का सज्दा वाजिब था लेकिन उसे करना भूल गया और दोनों तरफ सलाम फेर दिया लेकिन अभी उसी जगह बैठा है और सीना कबले की तरफ से नहीं फेरा; न किसी से कुछ बोला न कोई और ऐसी बात हुई जिससे नमाज़ टूट जाती है तो अब भूल का सज्दा कर ले बल्कि अगर उसी तरह बैठे-बैठे कलिमा, दुल्द शरीफ वगैरा कोई वजीफा भी पढ़ने लगा हो तब भी कुछ हर्ज नहीं है। अब सज्दा कर ले तो नमाज़ हो जाएगी।

मस'ला २६— भूल का सज्दा वाजिब था और उसने जानते हुए दोनों तरफ सलाम फेर दिया और यह नीयत की : 'मैं भूल का सज्दा न करूंगा', तब तक जब तक कोई ऐसी बात न हो जिससे नमाज़ जाती रहती है तो भूल का सज्दा कर लेने का एख्तियार है।

मस'ला २७— चार रकअत वाली या तीन रकअत वाली नमाज़ में भूले से दो रकअत पर सलाम फेर दिया तो अब उठकर उस नमाज़ को पूरा कर ले और भूल का सज्दा कर ले। अलबत्ता अगर

सलाम फेरने के बाद कोई ऐसी बात हो गई जिससे नमाज़ जाती रहती है तो फिर नमाज़ पढ़े।

मस'ला २८— भूल से वित्र की पहली या दूसरी रकअत में दुआए कुनूत पढ़ गया तो इसका कुछ भरोसा नहीं, तीसरी रकअत में फिर से पढ़े और भूल का सज्दा करे।

मस'ला २९— वित्र की नमाज़ में शक हुआ कि न मालूम दूसरी रकअत है या तीसरी रकअत और किसी बात की तरफ़ ज्यादा गुमान नहीं है बल्कि दोनों तरफ़ बराबर दर्जे का गुमान है तो उसी रकअत में दुआए कुनूत पढ़े और बैठकर अतहीयात के बाद खड़ा होकर एक रकअत और पढ़े और उसमें भी दुआए कुनूत पढ़े और आखिर में भूल का सज्दा कर ले।

मस'ला ३०— वित्र में दुआए कुनूत की जगह 'सुब्हानकल्लाहुम्मा व बिहमिदिक व तबारकस्मु क व तअाला जददु क व ला इला ह गैरु क पढ़ गया फिर जब याद आया तो दुआए कुनूत पढ़ी तो भूल का सज्दा वाजिब नहीं।

मस'ला ३१— वित्र में दुआए कुनूत पढ़ना भूल गया सूरः पढ़कर रुकू में चला गया तो भूल का सज्दा वाजिब है।

मस'ला ३२— अलहमद पढ़कर दो या तीन सूरतें पढ़ गया तो कोई डर नहीं और भूल का सज्दा वाजिब नहीं।

मस'ला ३३— फर्ज नमाज़ में पिछली दोनों रकअत में या एक रकअत में सूरः मिला ली तो भूल का सज्दा वाजिब नहीं।

मस'ला ३४— नमाज़ के शुरू में 'सुब्हानकल्लाहुम्मा व बिहमिदिक व तबारकस्मु क व तअाला जददु क व ला इला ह गैरु क' पढ़ना भूल गया या रुकूज़ में सुब्हान रबिबयल अजीम (पाकी ब्यान करता हूँ अल्लाह की जो बुजुर्ग हैं) नहीं पढ़ा या सज्दे में :

सुझा न रमियल आला

(पाकी ध्यान करता हूँ अल्लाह की जो सबसे आला है) नहीं कहा
या रुकू से उठकर—

سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ

समि अल्लाहु लिमन हमिदः

(अल्लाह ने उसकी सुनी जिसने उसकी तारीफ की)

कहना याद न रहा या नीयत बांधते वक़्त कन्धों तक हाथ नहीं
उठाए या आखिरी रकअत में दरुद शरीफ या दुआ नहीं पढ़ी, यूँ ही
सलाम फेर दिया तो इन सब हालतों में भूल का सज्दा वाजिब नहीं।

मस'ला ३५— फर्ज की दोनों पिछली रकअत में या एक रकअत
में अलहमद पढ़ना भूल गया, चुपका खड़ा रहकर रुकू में चला गया
तब भी भूल का सज्दा वाजिब नहीं।

मस'ला ३६— जिन चीज़ों को भूलकर करने से भूल का सज्दा
वाजिब है अगर जानकर न करे तो भूल का सज्दा वाजिब नहीं होता
बल्कि नमाज़ फिर से पढ़े। अगर भूल का सज्दा कर भी लिया तब
भी नमाज़ नहीं हुई। जो चीज़ें नमाज़ में न फर्ज हैं, न वाजिब, उनके
भूलकर छूट जाने से नमाज़ हो जाती है और भूल का सज्दा वाजिब
नहीं होता।

मस'ला ३७— अगर धीमी आवाज़ की नमाज़ में कोई आदमी चाहे
इमाम हो या अकेला, बुलन्द आवाज़ से फिरअत कर जाए या बुलन्द
आवाज़ की नमाज़ में इमाम धीमी आवाज़ से फिरअत करे तो उसको
भूल का सज्दा करना चाहिए। हाँ, अगर धीमी आवाज़ की नमाज़ में
बहुत थोड़ी फिरअत ऊंची आवाज़ से की जाए जो नमाज़ सही होने
के लिए काफी न हो जैसे दो-तीन लफ़्ज़ ऊंची आवाज़ से निकल
जाए या हल्की आवाज़ की नमाज़ इमाम बहुत धीरे से पढ़ दे तो भूल

का सज्दा लाज़िम नहीं और यही ठीक है।

31. तिलावत का सज्दा

मस'ला १— कुरआन शरीफ में तिलावत के चौदह सज्दे हैं जहां-जहां कलाम मजीद के किनारे पर 'सज्दा' लिखा रहता है उस आयत को पढ़कर सज्दा करना वाजिब हो जाता है और इसी को तिलावत का सज्दा कहते हैं।

मस'ला २— इस सज्दे के करने का यह तरीका है कि अल्लाहु अकबर कहकर सज्दा करे और अल्लाहु अकबर कहते वक़्त हाथ न उठाये। सज्दे में कम-से-कम तीन बार (सुब्हा न रब्बियल आला) (पाक है मेरा खुदा जो बड़ा है।)

कहे। फिर 'अल्लाहु अकबर' कह कर सर उठा ले। बस तिलावत का सज्दा हो गया।

मस'ला ३— बेहतर यह है कि खड़ा होकर अल्लाहु अकबर कहकर सज्दे में जाए, फिर अल्लाहु अकबर कह कर खड़ा हो जाए और अगर बैठकर अल्लाहु अकबर कहकर सज्दे में जाए फिर अल्लाहु अकबर कह कर उठ बैठे— खड़ा न हो तब भी दुरुस्त है।

मस'ला ४— सज्दे की आयत को जो आदमी पढ़े उस पर भी सज्दा करना वाजिब है और जो सुने उस पर भी वाजिब हो जाता है चाहे कुरआन शरीफ सुनने के इरादे से बैठा हो या किसी और काम में लगा हो और बिना इरादे के सज्दे की आयत सुन ली हो, इसलिए बेहतर है कि सज्दे की आयत को आहिस्ता से पढ़े ताकि किसी और पर सज्दा वाजिब न हो।

मस'ला ५— जो चीज़ें नमाज़ के लिए शर्त हैं वही तिलावत के सज्दे के लिए भी शर्त हैं यानी वुजू का होना, जगह का पाक होना,

बदन और कपड़े का पाक होना, क़िबले की तरफ सज्दा करना।

मस'ला ६— जिस तरह नमाज़ का सज्दा किया जाता है उसी तरह तिलावत का सज्दा भी करना चाहिए। कुछ आदमी कुरआन शरीफ पर सज्दा कर लेते हैं इससे सज्दा पूरा नहीं होता और वह फिर करना पड़ेगा।

मस'ला ७— अगर किसी का बुजू उस वक़्त न हो तो फिर किसी वक़्त बुजू करके तिलावत का सज्दा करे। उसी वक़्त सज्दा करना ज़रूरी नहीं। लेकिन बेहतर यह है कि उसी वक़्त सज्दा कर ले क्योंकि हो सकता है बाद में याद न रहे।

मस'ला ८— अगर किसी के जिम्मे बहुत से सज्दे बाकी हों और अब तक अदा न किए हों तो अब अदा कर ले। ये सज्दे उम्र भर में कभी-न-कभी ज़रूर अदा कर लेने चाहिए। कभी अदा न करेगा तो गुनाहगार होगा।

मस'ला ९— अगर किसी औरत ने हैज़ या निफ़ास की हालत में किसी से सज्दे की आयत सुन ली तो उस पर सज्दा वाजिब नहीं हुआ और ऐसी हालत में सुना जब उस पर नहाना वाजिब था तो नहाने के बाद सज्दा करना वाजिब है।

मस'ला १०— अगर बीमारी की हालत में सुने और सज्दा करने की ताकत न हो तो जिस तरह नमाज़ का सज्दा इशारे से अदा करता हो उसी तरह इसका सज्दा भी इशारे से कर ले।

मस'ला ११— अगर नमाज़ में सज्दे की आयत पढ़े तो वह आयत पढ़ने के बाद उसी वक़्त नमाज़ में ही सज्दा कर ले, फिर बाकी सूरत पढ़कर रुकू में जाए। अगर उस आयत को पढ़कर उसी वक़्त सज्दा न किया, उसके बाद दो या तीन आयत पढ़ ली तब सज्दा किया तो यह भी ठीक है। अगर इससे भी ज्यादा पढ़ गया तो सज्दा किया तो अदा हो गया लेकिन गुनाहगार हुआ।

मस'ला १२— सज्दे की आयत पढ़कर अगर उसी वक़्त रुकू में

चला जाए और रुकू में यह नीयत कर ले 'मैं तिलावत के सज्दे की तरफ से भी यह रुकू करता हूँ तब भी सज्दा अदा हो जाएगा और रुकू में यह नीयत नहीं की तो रुकू के बाद जब सज्दा करेगा तो उसी सज्दे से तिलावत का सज्दा भी अदा हो जाएगा, चाहे कुछ नीयत करे या न करे।

मस'ला १३— नमाज़ पढ़ने में किसी और से सज्दे की आयत सुने तो नमाज़ में सज्दा न करे बल्कि नमाज़ के बाद कर ले। अगर नमाज़ में करेगा तो वह सज्दा अदा न होगा, उसे फिर करना पड़ेगा और गुनाह भी होगा।

मस'ला १४— एक ही जगह बैठे-बैठे सज्दे की आयत को कई बार दोहरा कर पढ़े तो एक ही सज्दा वाजिब है चाहे सब हर बार पढ़कर आखिर में सज्दा करे या पहली बार सज्दा कर ले। फिर उसी को बार-बार दोहराता रहे और अगर जगह बदल गई तब उस आयत को दोहराया, फिर तीसरी जगह जाकर वही आयत पढ़ी। इसी तरह बराबर जगह बदलता रहा तो जितनी बार दोहराए उतनी ही बार सज्दा करे।

मस'ला १५— अगर एक ही जगह बैठे-बैठे सज्दे की कई आयतें पढ़ीं तब भी जितनी आयतें पढ़े उतने ही सज्दे कर ले।

मस'ला १६— बैठे-बैठे सज्दे की कोई आयत पढ़ी, फिर उठ खड़ा हुआ लेकिन चला-फिरा नहीं— जहां बैठा था वहीं खड़े-खड़े वही आयत फिर दोहराई तो एक ही सज्दा वाजिब है।

मस'ला १७— एक ही जगह सज्दे की आयत पढ़ी और उठकर किसी काम को चला गया फिर उसी जगह आकर वही आयत पढ़ी तब भी दो सज्दे करे।

मस'ला १८— एक जगह बैठे-बैठे सज्दे की कोई आयत पढ़ी फिर जब कुरआन मजीद की तिलावत कर चुका तो उसी जगह बैठे-बैठे किसी और काम में लग गया जैसे किताबत करने लगा या कपड़ा सीने

लगा उसके बाद फिर वही आयत पढ़ी तब भी दो सज्दे वाजिब हुए यानी जब कोई और काम करने लगे तो ऐसा समझेंगे कि जगह बदल गई।

मस'ला १९— एक कोठरी या दालान के एक कोने में सज्दे की कोई आयत पढ़ी और फिर दूसरे कोने में जाकर वही आयत पढ़ी तब भी एक ही सज्दा काफी है चाहे जितनी बार पढ़े। अलबत्ता दूसरे काम में लग जाने के बाद वही आयत पढ़ेगा तो तीसरा सज्दा वाजिब हो जाएगा।

मस'ला २०— अगर बड़ा घर हो तो दूसरे कोने में जाकर दोहराने से दूसरा सज्दा वाजिब होगा और तीसरे कोने में तीसरा सज्दा।

मस'ला २१— मस्जिद का भी वही हुक्म है जो एक कोठरी का हुक्म है। अगर सज्दे की आयत कई बार पढ़े तो एक ही सज्दा वाजिब है चाहे एक ही जगह बैठे-बैठे दोहराया करे या मस्जिद में इधर-उधर टहलकर पढ़े।

मस'ला २२— अगर नमाज़ में सज्दे की एक ही आयत को कई बार पढ़े तब भी एक ही सज्दा वाजिब है चाहे सब दफा पढ़कर आखिर में सज्दा करे या एक बार पढ़कर सज्दा कर लिया फिर उसी रकअत या दूसरी रकअत में वही आयत पढ़े।

मस'ला २३— सज्दे की कोई आयत पढ़ी और सज्दा नहीं किया, फिर उसी जगह नीयत बांध ली और नमाज़ में फिर वही आयत पढ़ी और तिलावत का सज्दा कर लिया तो यही सज्दा काफी है। दोनों सज्दे उसी आयत में अदा हो जाएंगे अलबत्ता अगर जगह बदल गई तो दूसरा सज्दा भी वाजिब है।

मस'ला २४— अगर सज्दे की आयत पढ़कर सज्दा कर लिया, फिर उसी जगह नमाज़ की नीयत बांध ली और वही आयत नमाज़ में दोहराई तो अब नमाज़ में फिर सज्दा करे।

मस'ला २५— पढ़ने वाले की जगह नहीं बदली— एक ही जगह बैठे-बैठे एक ही आयत को बार-बार पढ़ता रहा लेकिन सुनने वाले की जगह बदल गई यानी पहली बार और जगह सुना था, दूसरी बार और जगह, तीसरी बार तीसरी जगह तो पढ़ने वाले पर एक ही सज्दा वाजिब है और सुनने वाले पर कई सज्दे वाजिब हैं। जितनी बार सुने उतने ही सज्दे करे।

मस'ला २६— अगर सुनने वाले की जगह नहीं बदली बल्कि पढ़ने वाले की जगह बदल गई तो पढ़ने वाले पर कई सज्दे वाजिब होंगे जबकि सुनने वाले पर एक ही सज्दा वाजिब है।

मस'ला २७— पूरी सूरत पढ़ना और सज्दे की आयत को छोड़ देना मकरुह और मना है। सज्दे से बचने के लिए वह आयत न छोड़े वरना यह समझा जाएगा कि उसे उस सज्दे से इन्कार है।

मस'ला २८— अगर कोई आदमी किसी इमाम से सज्दे की आयत सुने और उसके बाद उसकी इकतदा (अनुसरण) करे तो उसे इमाम के साथ वह सज्दा करना चाहिए। अगर इमाम सज्दा कर चुका हो तो इसमें दो सूरतें हैं— एक यह कि जिस रकअत में इमाम ने सज्दे की आयत की तिलावत की हो वही रकअत मिल जाए तो सज्दे की जरूरत नहीं। उस रकअत के मिल जाने से यह समझा जाएगा कि वह सज्दा भी मिल गया। दूसरे यह कि वह रकअत न मिले तो उसको नमाज़ पूरी करने के बाद अलग सज्दा करना वाजिब है।

मस'ला २९— मुकतदी से अगर आयत सज्दा सुनी तो सज्दा वाजिब न होगा— न उस पर, न उसके इमाम पर और न उन लोगों पर जो उस नमाज़ में शरीक हैं। हाँ, जो उस नमाज़ में शरीक नहीं, चाहे वे नमाज़ ही न पढ़ते हों या कोई दूसरी नमाज़ पढ़ रहे हों तो उन पर सज्दा वाजिब होगा।

मस'ला ३०— तिलावत के सज्दे में कहकहे से बुजू नहीं जाता लेकिन सज्दा झूठा हो जाता है।

मस'ला ३१— औरत के बराबर में खड़ी होने से सज्दा तिलावत फासिद नहीं होता।

मस'ला ३२— तिलावत का सज्दा अगर नमाज़ में वाजिब हुआ हो तो उसका अदा करना उसी वक़्त वाजिब है देर की इजाज़त नहीं।

मस'ला ३३— नमाज़ से बाहर का सज्दा नमाज़ में और नमाज़ का सज्दा नमाज़ के बाद बल्कि दूसरी नमाज़ में भी अदा नहीं किया जा सकता इसलिए अगर कोई आदमी नमाज़ में सज्दे की आयत पढ़े और सज्दा न करे तो उसका गुनाह उसके ज़िम्मे होगा और इस के सिवा कोई रास्ता नहीं कि तौबा करे और कहे—

يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ

या अर्हमर्राहिमीन (खुदा रहम करने वाला है)

मस'ला ३४— जुमा, ईदैन और धीमी आवाज़ की नमाज़ों में सज्दे की आयत नहीं पढ़नी चाहिए क्योंकि सज्दा करने में मुक़तदियों को शक में पड़ जाने का डर है।

32. बीमारी की नमाज़

मस'ला १— नमाज़ किसी भी हालत में न छोड़े। जब तक खड़ा होकर नमाज़ की ताक़त रहे खड़ा होकर नमाज़ पढ़ता रहे और जब खड़ा न हुआ जाए तो बैठ कर नमाज़ पढ़े। बैठे-बैठे रुकूअ कर ले और रुकू दोनों सज्दे करे और रुकूअ के लिए इतना झुके कि माथा घुटनों के सामने हो जाए।

मस'ला २— रुकू व सज्दा करने की ताक़त न हो तो रुकूअ व सज्दे को इशारों से अदा करे और सज्दे के लिए रुकूअ से ज़्यादा

झुक जाया करे।

मस'ला ३— सज्दा करने के लिए तकिया वगैरह कोई ऊंची चीज़ रख लेना और उस पर सज्दा करना ठीक नहीं। जब सज्दे की हालत न हो तो बस इशारा कर लिया करे।

मस'ला ४— खड़ा होने की हालत तो है लेकिन खड़ा होने से तकलीफ होती है या बीमारी बढ़ जाने का डर है तब भी बैठकर नमाज़ पढ़ना वरुस्त है।

मस'ला ५— खड़ा तो हो सके मगर रुकूअ व सज्दा न कर सके तो चाहे खड़ा होकर पड़े और रुकूअ व सज्दा इशारे से अदा करे और चाहे बैठकर नमाज़ पढ़े और रुकूअ व सज्दा इशारे से अदा करे लेकिन बैठकर पढ़ना बेहतर है।

मस'ला ६— अगर बैठने की ताकत न रही पीछे कोई गाव तकिया वगैरह लगाकर इस तरह लेट जाए कि सर खूब ऊंचा रहे बल्कि करीब-करीब बैठने के रहे और पांव किबले की तरफ फैला ले और कुछ ताकत हो तो किबले की तरफ पैर न फैलाए बल्कि घुटने खड़े रखे। फिर सर के इशारे से नमाज़ पढ़े और सज्दे का इशारा ज़्यादा नीचा करे। अगर गाव तकिये से टेक लगाकर भी इस तरह न लेट सके कि सर और सीना वगैरा ऊंचा रहे तो किबले की तरफ पैर करके बिल्कुल चित्त लेट जाए लेकिन सर के नीचे कोई ऊंचा तकिया रख लें कि मुंह किबले की तरफ हो जाये, आसमान की तरफ न रहे। फिर सर के इशारे से नमाज़ पढ़े। रुकूअ का इशारा कम करे और सज्दे का इशारा ज़्यादा करे।

मस'ला ७— अगर चित्त न लेटे बल्कि 'दाईं करवट पर किबले की तरफ मुंह करके लेटे और सर के इशारे से रुकू व सज्दा करे, यह भी जायज़ है लेकिन चित्त लेटकर पढ़ना ज़्यादा अच्छा है।

मस'ला ८— अगर सर का इशारा करने की भी ताकत नहीं तो नमाज़ बिल्कुल न पढ़े। फिर एक दिन रात से ज़्यादा यही हालत रहे

तो नमाज़ बिल्कुल माफ़ है। अच्छा होने के बाद कज़ा पढ़ना वाजिब नहीं है। अगर एक दिन रात से ज़्यादा यह हालत न रही बल्कि एक दिन रात में फिर इशारे से पढ़ने की ताकत आ गई तो इशारे से ही उनकी कज़ा पढ़े और इरादा न करे कि जब कि बिल्कुल अच्छा हो जाए तब पढ़ेगा क्योंकि अगर मर गया तो गुनाहगार मरेगा।

मस'ला ९— इसी तरह अच्छा-खासा आदमी बेहोश हो जाये तो अगर बेहोशी एक दिन-रात से ज़्यादा न हुई तो कज़ा पढ़ना वाजिब है और अगर एक दिन-रात से ज़्यादा हो गई तो कज़ा पढ़ना वाजिब नहीं।

मस'ला १०— जब नमाज़ शुरू की उस वक़्त भला-चंगा था मगर जब थोड़ी नमाज़ पढ़ चुका तो नमाज़ में ही कोई ऐसी रंग चढ़ गई कि खड़ा न हो सका तो बाकी नमाज़ बैठकर पढ़े। अगर रुकूअ व सज्दा कर सके तो करे, न कर सके तो रुकूअ व सज्दा सर के इशारे से अदा करे और अगर ऐसा हाल हो गया कि बैठने की भी ताकत नहीं तो उसी तरह लेटकर बाकी नमाज़ पूरी करे।

मस'ला ११— बीमारी की वजह से थोड़ी नमाज़ बैठकर पढ़ी और रुकूअ की जगह रुकूअ और सज्दे की जगह सज्दा किया फिर नमाज़ में ही अच्छा हो गया तो उसी नमाज़ को खड़ा होकर पूरा करे।

मस'ला १२— अगर बीमारी की वजह से रुकूअ व सज्दे की ताकत न थी इस लिए सर के इशारे से रुकू व सज्दा किया फिर जब कुछ नमाज़ पढ़ चुका तो ऐसा हो गया कि अब रुकूअ कर सकता है तो अब नमाज़ जाती रही, उसे पूरी करे बल्कि फिर से पढ़े।

मस'ला १३— फ़ालिज मिरा और ऐसा बीमार हो गया कि पानी से इस्तिंजा नहीं कर सकता तो कपड़े या ढेले से साफ़ कर ले और उसी तरह नमाज़ पढ़े अगर खुद तयम्मुन न कर सके तो दूसरा कर दे। अगर ढेले या कपड़े से भी साफ़ करने की ताकत नहीं है तब भी

नमाज़ कज़ा न करे— उसी तरह नमाज़ पढ़े। किसी और को उसके बदन को देखना और साफ करना दुरुस्त नहीं। न मां को, न लड़का-लड़की को। अलबत्ता बीवी को अपने शौहर और शौहर को अपनी बीवी का बदन देखना दुरुस्त है उसके सिवा किसी को दुरुस्त नहीं।

मस'ला १४— तन्दुरुस्ती के ज़माने में कुछ नमाज़ें कज़ा हो गई थीं, फिर बीमार हो गया तो बीमारी के ज़माने में जिस तरह नमाज़ पढ़ने की ताकत हो उनकी कज़ा पढ़े। यह इन्तज़ार न करे कि जब खड़ा होने की ताकत आए तब पढ़े या जब बैठने लगे और रुकू' व सज्दा करने की ताकत आए तब पढ़े बल्कि उसी वक़्त पढ़े, देर बिल्कुल न करे।

मस'ला १५— अगर बीमार का बिस्तर नापाक है और उसके बदलने में बहुत तकलीफ़ होगी तो उसी पर नमाज़ पढ़ लेना ठीक है।

मस'ला १६— हकीम ने किसी की आंख बनाई और हिलने-जुलने से मना कर दिया तो लेटे-लेटे नमाज़ पढ़ता रहे।

मस'ला १७— अगर कोई आदमी फिरअत के लम्बा होने की वजह से खड़े-खड़े थक जाये और तकलीफ़ होने लगे तो उसको किसी दीवार या पेड़ या लकड़ी वगैरा से तकिया लगा लेना मकरुह नहीं। तरावीह की नमाज़ में कमज़ोर और बूढ़े लोगों को अक्सर इसकी ज़रूरत पेश आती है।

33. सफ़र की हालत में नमाज़

मस'ला १— अगर कोई एक मंज़िल या दो मंज़िल का सफ़र करे तो उस सफ़र से शरीअत का कोई हुक्म नहीं बदलता और शरीअत के कायदे से उसे मुसाफ़िर नहीं कहते। उसे सब बातें उसी तरह

करनी चाहिए जैसे कि अपने घर करता था। चार रकअत वाली नमाज़ की चार रकअत पढ़े और मोज़ा पहने तो एक दिन-रात मसह करे, फिर उसके बाद मसह करना ठीक नहीं।

मस'ला २— जो कोई तीन मंज़िल सफर करने के इरादे से निकले वह शरीअत के कायदे से मुसाफिर है। अब अपने शहर की आबादी से बाहर हो गया तो शरीअत से मुसाफिर बन गया और जब तक आबादी के अन्दर-अन्दर चलता रहा तब तक मुसाफिर नहीं है और स्टेशन अगर आबादी के अन्दर है तो आबादी के हुक्म में है और अगर आबादी के बाहर हो तो वहां पहुंचकर मुसाफिर हो जाएगा।

मस'ला ३— तीन मंज़िल यह है कि अक्सर पैदल चलने वाले वहां तीन दिन में पहुंचा करते हैं। अन्दाज़ा इसका हमारे मुल्क में कि दरिया और पहाड़ में सफर नहीं करना पड़ता, अड़तालीस मील अंग्रेज़ी है।

मस'ला ४— अगर कोई जगह इतनी दूर है कि ऊंट और आदमी की चाल से तो तीन मंज़िल है लेकिन तेज़ इक्के और बहली पर सवार है इसलिए दो ही दिन में पहुंच जाएगा या रेल में सवार हो कर ज़रा-सी देर में पहुंच जाएगा तब भी वह शरीअत से मुसाफिर है।

मस'ला ५— जो कोई शरीअत से मुसाफिर हो वह जुहर, अस्त्र और इशा की फर्ज़ नमाज़ दो-दो रकअत पढ़े और सुन्नतों का यह हुक्म है कि अगर जल्दी हो तो फज़्र की सुन्नतों के सिवा और सुन्नतें छोड़ देना दुरुस्त है। इस तरह नमाज़ छोड़ देने से कुछ गुनाह न होगा और अगर कुछ जल्दी न हो, न अपने साथियों से बिछड़ जाने का डर हो तो न छोड़े और सुन्नतें सफर में पूरी-पूरी पढ़े, उनमें कमी नहीं है।

मस'ला ६— फज़्र, मरिब और धन्न की नमाज़ में कोई कमी नहीं है जैसे हमेशा पढ़ता रहा वैसे ही पढ़े।

मस'ला ७— जुहर, अस्त्र और इशा की नमाज़ दो रकअत से

ज़्यादा न पड़े। पूरी चार रकअत पढ़ना गुनाह है।

मस'ला ८— अगर भूल से चार रकअतें पढ़ लीं तो अगर दूसरी रकअत पर अतहीय्यात पड़ी है तो दो रकअतें फर्ज हो गई और दो रकअत नफल की हो जाएंगी और सज्दा (भूल का) करना पड़ेगा और अगर दो रकअत पर न बैठा तो चारों रकअतें नफल हो गईं। फर्ज नमाज़ फिर से पड़े।

मस'ला ९— अगर रास्ते में कहीं ठहर गया और पन्द्रह दिन से कम ठहरने की नीयत है तो वह आबमी लगातार मुसाफिर रहेगा। चार रकअत वाली फर्ज नमाज़ दो रकअत पढ़ता रहे और पन्द्रह दिन या इससे ज़्यादा ठहरने की नीयत कर ली है तो अब मुसाफिर नहीं रहा। फिर अगर नीयत बदल गई और पन्द्रह दिन से पहले चलने का इरादा हो गया तब भी मुसाफिर न बनेगा, नमाज़ें पूरी पढ़े फिर जब वहां से चले और वह जगह वहां से तीन मंज़िल हो जहां जाना है तो फिर मुसाफिर हो जाएगा और अगर इससे कम हो तो मुसाफिर नहीं हुआ।

मस'ला १०— अगर औरत चार मंज़िल जाने की नीयत से घली लेकिन पहली दो मंज़िल हैज़ की हालत में गुज़री तब भी मुसाफिर नहीं है। अब नहा-धोकर पूरी चार रकअतें पढ़े। अलबत्ता हैज़ से पाक होने के बाद वह जगह अगर तीन मंज़िल हो या चलते वय़त पाक थी मगर रास्ते में माहवारी हो गयी तो वह मुसाफिर है। हैज़ से पाक होकर नमाज़ मुसाफिरों की तरह पढ़े।

मस'ला ११— नमाज़ पढ़ते-पढ़ते नमाज़ के अन्दर ही पन्द्रह दिन ठहरने की नीयत हो गई तो मुसाफिर नहीं रहा। यह नमाज़ भी पूरी पढ़े।

मस'ला १२— दो-चार दिन के लिए रास्ते में कहीं ठहरना पड़ा लेकिन कुछ ऐसी बातें हो जाती हैं कि जाना नहीं होता। रोज़ नीयत होती है कि वह कल-परसों चला जाएगा लेकिन जाना नहीं होता। इसी तरह पन्द्रह-बीस दिन, एक महीना या इससे भी ज़्यादा रहना हो

गया, लेकिन पूरे पन्द्रह दिन की नीयत कभी नहीं हुई तब भी वह मुसाफिर रहेगा चाहे जितने दिन इसी तरह गुज़र जाएं।

मस'ला १३— तीन मंज़िल का इरादा करके चला फिर कुछ दूर जाकर इरादा किसी वजह से बदल गया और घर लौट आया और जब से लौटने का इरादा हुआ तब ही से मुसाफिर नहीं रहा।

मस'ला १४— कोई औरत अपने शौहर के साथ है। रास्ते में वह जितना ठहरेगा वह भी उतना ठहरेगी, उससे ज़्यादा नहीं। ऐसी हालत में शौहर की नीयत का भरोसा है। अगर शौहर का इरादा पन्द्रह दिन ठहरने का है तो औरत भी मुसाफिर नहीं रही, चाहे ठहरने की नीयत करे या न करे और मर्द का इरादा ठहरने का न हो तो औरत भी मुसाफिर है।

मस'ला १५— तीन मंज़िल चलकर कहीं पहुंचा तो अगर अपना घर है तो मुसाफिर नहीं रहा, चाहे वह कम रहे या ज़्यादा और अगर अपना घर नहीं है तो अगर पन्द्रह दिन ठहरने की नीयत हो तब भी मुसाफिर नहीं रहा। अगर नमाज़ें पूरी-पूरी पड़े और अगर न अपना घर है, न पन्द्रह दिन ठहरने की नीयत है तो वहां पहुंचकर भी मुसाफिर होगा।

मस'ला १६— रास्ते में कई जगह ठहरने का इरादा है। दस दिन यहां, पांच दिन वहां, लेकिन पूरे पन्द्रह दिन ठहरने का इरादा नहीं तब भी मुसाफिर रहेगा।

मस'ला १७— किसी ने अपना शहर बिल्कुल छोड़ दिया और किसी दूसरी जगह घर बना लिया और वहां रहने लगा। अब पहले शहर से और पहले घर से कुछ मतलब नहीं रहा तो अब वह शहर और परदेस दोनों बराबर हैं। अगर सफर करते वक़्त रास्ते में वह पहला शहर पड़े और दो-चार दिन वहां ठहरना हो तो मुसाफिर रहेगा।

मस'ला १८— अगर किसी की नमाज़ें सफर में रह गई तो घर

पहुँच कर भी जुहर, अस्त्र, इशा की दो ही रकअत पढ़े और अगर सफर से पहले जुहर की नमाज़ कज़ा हो गई तो सफर की हालत में चार रकअत उसकी कज़ा पढ़े।

मस'ला १९— ब्याह के बाद अगर औरत हमेशा के लिए ससुराल में रहने लगी उसका असली घर ससुराल है। अगर वह तीन मंज़िल चलकर मायके गई और पन्द्रह दिन ठहरने की नीयत नहीं है तो मुसाफिर रहेगी। मुसाफिर होने के कायदे से नमाज़ रोज़ा अदा करे और वहां का रहना हमेशा दिल में नहीं तो जो वतन पहले से असली था वह अब भी असली रहेगा।

मस'ला २०— दरिया में किशती चल रही है और नमाज़ का वक़्त आ गया तो उस किशती पर नमाज़ पढ़ ले। अगर खड़े होकर पढ़ने में सर घूमने लगे तो बैठकर पढ़े। रेल में नमाज़ पढ़ने का यही हुक्म है कि चलती रेल में नमाज़ पढ़ना दुरुस्त है और खड़े होकर पढ़ने से सर घूमे या गिरने का डर हो तो बैठकर पढ़े।

मस'ला २१— नमाज़ पढ़ते में रेल फिर गई और किबला दूसरी तरफ हो गया तो नमाज़ में ही घूम जाए और किबले की तरफ मुंह करे।

मस'ला २२— अगर किसी औरत को तीन मंज़िल जाना हो तो जब तक मर्दों में से कोई अपना महरम (ऐसा रिश्तेदार जिसके साथ औरत की शादी न हो सके जैसे सगा भाई, बापू, मामू, चचा, या शौहर) साथ न हो उस वक़्त तक सफर करना दुरुस्त नहीं है। नामहरम (ऐसा रिश्तेदार जिसमें दूसरा खून हो उसके साथ शादी जायज़ हो जैसे चचाज़ाद, मामूज़ाद, फूफीज़ाद भाई) के साथ सफर करना बड़ा गुनाह है और अगर एक या दो मंज़िल जाना हो तब भी ठीक नहीं।

मस'ला २३— जिस रिश्तेदार को खुदा और रसूल का डर न हो। शरीअत की पाबन्दी न करता हो, ऐसे आदमी के साथ भी सफर

करना वुरुस्त नहीं।

मस'ला २४— अगर कोई औरत बीमार है तो उसे बैठकर नमाज़ पढ़ना वुरुस्त है मगर बसते इसके पर नमाज़ पढ़ना वुरुस्त नहीं है जब तक घोड़ा खोलकर अलग न कर दिया जाये। यही हुक्म पालकी का भी है।

मस'ला २५— अगर ऊंट या बहली से उतरने में जान या माल का डर है तो बगैर उतरे भी नमाज़ वुरुस्त है।

मस'ला २६— ठहरे हुए आदमी की इकतदा (मुसाफिर) के पीछे हर हाल में वुरुस्त है चाहे (सूर्योदय, सूर्यास्त या निश्चित समय के अन्दर पड़ी जाए) नमाज़ हो या कज़ा (जो वक़्त निकल जाने के बाद पड़ी जाए) और मुसाफिर इमाम जब दो रकअत नमाज़ पढ़कर सलाम फेर दे तो मुकीम (एक जगह रहने वाला) मुकतदी को चाहिए कि नमाज़ पूरी करे और उसमें किरअत न करे बल्कि घुप खड़ा रहे क्योंकि वह (ताहिक) है और पहला काअदा उस मुकतदी पर भी इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ने की वजह से फर्ज होगा। मुसाफिर इमाम को मुस्तहब है कि अपने मुकतदियों को दोनों तरफ सलाम फेरने के बाद अपने मुसाफिर होने की बात बता दे। ज्यादा अच्छा यह है कि नमाज़ शुरू करने से पहले ही अपने मुसाफिर होने की बात कह दे।

मस'ला २७— मुसाफिर भी वक़्त के अन्दर इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ सकता है। अगर वक़्त जाता रहा तो फज़ और मग़िब में ऐसा कर सकता है और जुहर, अस्त्र और इशा में नहीं।

मस'ला २८— अगर कोई मुसाफिर नमाज़ में इकामत की नीयत कर ले, चाहे शुरू, बीच या अखिर में मगर भूल कर सज्दा या सलाम से पहले, तो उसे वह नमाज़ पूरी पढ़नी चाहिए उसमें कस्र (कमी, चार रकअत वाली नमाज़ का कम करके दो करना) जायज़ है।

मस'ला २९— जब कोई आदमी अपने यतन से सफ़र करने लगे तो उसके लिए मुस्तहब है कि वह दो रकअत घर में पढ़कर सफ़र

करे। और जब सफर से आए तो मुस्तहब है कि पहले मस्जिद में जाकर दो रकअत नमाज़ पढ़ ले, बाद में घर जाए। हदीसों में इसका बहुत सवाब आया है।

34. कज़ा नमाज़ें

मस'ला १— जिसकी कोई नमाज़ छूट गई तो उसे वह जब भी याद आए उसी वक़्त उसकी कज़ा पढ़े। बग़ैर किसी मजबूरी के कज़ा नमाज़ में देर लगाई और वह उसी हालत में भर गया तो दोहरा गुनाह हुआ— एक नमाज़ के कज़ा होने का और दूसरा, कज़ा नमाज़ के जल्दी न पढ़ने का।

मस'ला २— अगर किसी की कई नमाज़ें कज़ा हो गईं तो जहां तक हो सके सब की कज़ा पढ़ ले। अगर बहुत-सी नमाज़ें कई महीने या कई बरस की कज़ा हों तो उसकी कज़ा भी जहां तक हो सके जल्दी पढ़ ले कोई मजबूरी हो तो बात दूसरी है। एक वक़्त में दो-दो धार-चार नमाज़ें कज़ा पढ़ लिया करे। मजबूरी में एक वक़्त में एक ही नमाज़ की कज़ा सही है यह बहुत कम दर्जा बात है।

मस'ला ३— कज़ा पढ़ने का वक़्त बंधा हुआ नहीं है। जब भी फ़ुर्सत मिले, वुजू करके पढ़ ले मगर इतना याद रखे कि वक़्त मकरूह न हो।

मस'ला ४— जिसकी एक ही नमाज़ कज़ा हुई हो—उसके पहले उसकी कोई नमाज़ कज़ा नहीं हुई लेकिन सबकी कज़ा पढ़ चुका—बस उसी एक नमाज़ की कज़ा पढ़नी बाकी है पहले उसकी कज़ा पढ़ ले तब कोई और नमाज़ें पढ़े। अगर बग़ैर कज़ा नमाज़ पढ़े हुए अदा नमाज़ पढ़ी तो अदा दुरुस्त नहीं हुई। हाँ अगर कज़ा पढ़ना याद नहीं रहा तो अदा दुरुस्त हो गई। अब जब भी वह याद आए तो बस कज़ा पढ़ ले। अदा को न दोहराए।

मस'ला ५— अगर दो, तीन चार या पांचों नमाज़ें कज़ा हो गईं

और उनके सिवा उसके ज़िम्मे किसी और नमाज़ की कज़ा बाकी नहीं है यानी उम्र भर जब से वह जवान हुआ है कभी कोई नमाज़ कज़ा नहीं हुई है या कज़ा हो गई है लेकिन सबकी कज़ा पढ़ चुकी है तो जब तक पाँचों की कज़ा न पढ़ ले तब तक अदा नमाज़ पढ़ना दुरुस्त नहीं है। जब उन पाँचों की कज़ा पढ़े तो इस तरह वाली। इस तरह पढ़े कि जो नमाज़ सबसे पहले छूटी है पहले उसकी कज़ा पढ़े, फिर उसके बाद वाली। इस तरह तरतीब से पाँचों की कज़ा पढ़े अगर तरतीब के खिलाफ पढ़ी तो दुरुस्त नहीं हुई फिर से पढ़नी होगी।

मस'ला ६— अगर किसी की छः नमाज़ें कज़ा हो गईं तो अब उन की कज़ा पढ़े बिना भी अदा नमाज़ पढ़नी जायज़ है और जब इन छः नमाज़ों की कज़ा पढ़े तो जो नमाज़ सबसे पहले कज़ा हुई है पहले उसकी कज़ा पढ़ना वाजिब नहीं है बल्कि जो चाहे पहले पढ़े और चाहे पीछे पढ़े, सब जायज़ अब तरतीब से पढ़ना वाजिब नहीं है।

मस'ला ७— किसी के ज़िम्मे छः नमाज़ें कज़ा थीं इस वजह से तरतीब से पढ़नी उस पर वाजिब नहीं थीं लेकिन एक-एक, दो-दो करके सब की कज़ा पढ़ ली, अब किसी नमाज़ की कज़ा पढ़ना बाकी नहीं रहा तो अब फिर एक नमाज़ या पाँच नमाज़ें कज़ा हो जाएं तो तरतीब से कज़ा पढ़नी पड़ेगी और पाँच की कज़ा पढ़े बग़ैर अदा पढ़ना दुरुस्त नहीं अलबत्ता अब फिर छः नमाज़ें छूट जाएं तो फिर तरतीब हो जाएगी और इन छः नमाज़ों की कज़ा पढ़े बग़ैर भी अदा पढ़ना दुरुस्त होगा।

मस'ला ८— अगर वित्र की नमाज़ कज़ा हो गई और वित्र के सिवा और कोई नमाज़ उसके ज़िम्मे कज़ा नहीं रही तो फिर बग़ैर वित्र के कज़ा पढ़े हुए फज़ की नमाज़ पढ़ना दुरुस्त नहीं। अगर वित्र का कज़ा होना याद हो फिर भी पहले कज़ा पढ़े बल्कि फज़ की नमाज़ पढ़ ले तो अब कज़ा पढ़कर फज़ की नमाज़ फिर पढ़नी पड़ेगी।

मस'ला ९— बस इशा की नमाज़ पढ़कर सो रहा फिर तहज्जुद के वक़्त उठा और बुजू करके तहज्जुद और वित्र की नमाज़ पढ़ी फिर सुबह को याद आया कि इशा की नमाज़ भूल से बिना बुजू के पढ़ ली

तो अब सिर्फ इशा की कज़ा पढ़े और वित्र की कज़ा न पढ़े।

मस'ला १०— कज़ा सिर्फ फर्ज़ नमाज़ों और वित्र की पढ़ी जाती है। सुन्नतों की कज़ा नहीं अलबत्ता अगर फज़ की नमाज़ कज़ा हो जाए तो अगर दोपहर से पहले-पहले कज़ा पढ़े तो सुन्नत और फर्ज़ दोनों की कज़ा पढ़े और अगर दोपहर के बाद कज़ा पढ़े तो सिर्फ दो रकअत फर्ज़ की कज़ा पढ़े।

मस'ला ११— फज़ का वक़्त तंग हो गया इसीलिए सिर्फ दो रकअत फर्ज़ पढ़ ली। सुन्नत छोड़ दी तो बेहतर यह है कि सूरज ऊंचा होने के बाद सुन्नत की कज़ा पढ़ ले लेकिन दोपहर से पहले ही पढ़ ले।

मस'ला १२— किसी बे-नमाज़ी ने तौबा की तो जितनी नमाज़ें उम्र भर में कज़ा हुई सब की सब कज़ा वाजिब है। तौबा से नमाज़ माफ नहीं होती, अलबत्ता न पढ़ने से जो गुनाह हुआ था वह तौबा से माफ हो गया। अब उनकी कज़ा न पढ़ेगा तो फिर गुनाहगार होगा।

मस'ला १३— अगर किसी की कुछ नमाज़ें कज़ा हो गईं और उनकी कज़ा पढ़ने की अभी नौबत न आई तो मरते वक़्त नमाज़ों की तरफ से फ़िदया देने की वसीयत कर जाना वाजिब नहीं है वरना गुनाह होगा और नमाज़ का 'फ़िदया' देने का ब्यान रोज़े के फ़िदये के साथ आएगा।

मस'ला १४— अगर कुछ लोगों की नमाज़ किसी वक़्त की कज़ा हो गई तो उन्हें चाहिए कि उस नमाज़ को जमाअत से अदा करे। अगर बुलन्द आवाज़ की नमाज़ हो तो बुलन्द आवाज़ से फिरअत की जाए और आहिस्ता आवाज़ की हो तो आहिस्ता आवाज़ से।

मस'ला १५— अगर कोई नाबालिग लड़का 'इशा' की नमाज़ पढ़कर सोए और फज़ होने के बाद जागकर देखे कि उसे एहतलाम हो गया है तो उसे चाहिए कि इशा की नमाज़ फिर से पढ़े और फज़ से पहले बेदार होकर मनी का अंसर देखे तो बिल—इत्फ़ाक सभी के

नज़दीक इशा की नमाज़ कज़ा पड़े।

35. इस्तख़ारा

मस'ला १— जब कोई काम करने का इरादा करे तो अल्लाह से सलाह ले ले, इस सलाह लेने को इस्तख़ारा कहते हैं। हदीस शरीफ में इसकी बहुत तर्गीब (पसंदीदा, महत्व) आयी है। नबी करीम सल्ल० ने फरमाया है कि अल्लाह से सलाह न लेना और इस्तख़ारा न करना बदबख़्ती और कम नसीबी की बात है। कहीं मंगनी करे या विवाह करे या सफर करे या कोई और काम करे तो इस्तख़ारा किए बग़ैर न करे खुदा ने चाहा तो अपने किए पर शर्मिन्दा न होगा।

मस'ला २— इस्तख़ारा की नमाज़ का तरीका यह है कि पहले दो रकअत नफ़िल नमाज़ पढ़े, उसके बाद खूब दिल लगाकर यह दुआ पढ़े :—

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْتَخِيرُكَ بِعِلْمِكَ وَأَسْتَقْدِرُكَ بِقُدْرَتِكَ
وَأَسْأَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ الْعَظِيمِ فَإِنَّكَ تَقْدِرُ وَلَا أَقْدِرُ وَتَعْلَمُ
وَلَا أَعْلَمُ وَأَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ اللَّهُمَّ إِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنَّ
هَذَا الْأَمْرَ خَيْرٌ لِي فِي دِينِي وَمَعَاشِي وَعَاقِبَةِ أَمْرِي
فَاقْدِرْهُ لِي وَيَسِّرْهُ لِي ثُمَّ بَارِكْ لِي فِيهِ وَإِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ
أَنَّ هَذَا الْأَمْرَ شَرٌّ لِي فِي دِينِي وَمَعَاشِي وَعَاقِبَةِ أَمْرِي
فَاصْرِفْهُ عَنِّي وَاصْرِفْنِي عَنْهُ وَاقْدِرْ لِي الْخَيْرَ حَيْثُ
كَانَ ثُمَّ ارْضِنِي بِهِ

“अल्लाहुम्म इन्नी अस्तखीरु क बि इल्मि क व असतकविरु

क बि कुदरति क व असअनु क मिन फजलिकल अजीमि फ इन्
 क तकदिर वला उकदिर वतालमु व ला-आलमु व अन त अल्लामुल
 गुयुब। अल्लाहुम्म इन कुन त तालमु अन न हाज़ल अम्र ख़ैरुल्ली
 फी दीनी व मआ'री व आक़िबति अमरी फकदिरहु व वसिस्तर हु
 ली सुम्म बारिक ली फीहि व इन कुन त ता'लमु अन न हाज़ल
 अम्र शररुल्ली फी दीनी व मआ'री व आक़िबति अमरी फससिस्तरहु
 अन्नी वससिस्तरफ़ी अन्हु व वकदिर लियल हैसु का न सुम्म अर्ज़िनी
 बिह०"

(ऐ अल्लाह! मैं तेरे ज्ञान के अनुसार तुझ से भलाई चाहता हूँ और
 तेरी कुदरत में कुदरत चाहता हूँ। मैं तुझ से तेरा फज़ल चाहता हूँ
 क्योंकि तू कादिर है मैं कादिर नहीं हूँ। तू जानता है। मैं नहीं जानता।
 तू छिपी चीज़ों का बहुत जानने वाला है। ऐ अल्लाह अगर तुझे मालूम
 है कि यह काम मेरे लिए अच्छा है। मेरे दीन, मेरी ज़िन्दगी और मेरे
 काम के अन्जाम के लिए अच्छा है तो इसको मेरे लिए कर दे। मेरे
 वास्ते उसे आसान कर दे फिर मुझे इससे बरकत दे। अगर तुझे
 मालूम है कि यह काम मेरे लिए मेरे दीन, मेरी ज़िन्दगी और मेरे काम
 के अन्जाम के सिलसिले में बुरा है तो इसे मुझसे फेर दे और मुझको
 इससे फेर दे। मेरे लिए भलाई ही दे जहाँ भी हो मुझको इससे खुश
 कर दे।)

जब "हाज़ल अम्र" (इस काम के लिए) पर पहुँचे जिन लफ्ज़ों
 पर लकीरें बनी हैं तो उन्हें पढ़ते वक़्त उसी काम का ध्यान करे
 जिसके लिए इस्तख़ारा करना चाहता है। फिर पाक साफ बिछौने पर
 किबले की तरफ मुंह करके घुजू करके सो जाए। जब सोकर उठे उस
 वक़्त जो बात दिल में मजबूती से आए वही बेहतर है उसी को करना
 चाहिए।

मस'ला ३— अगर एक दिन में कुछ मालूम न हो और दिल की
 परेशानी और शक न जाए तो दूसरे दिन भी ऐसा ही करे। इस तरह
 सात दिन तक ऐसा ही करे। खुदा ने चाहा तो उसकी अच्छाई-बुराई

ज़रूर मालूम हो जाएगी।

मस'ला ४- अगर हज के लिए जाना हो तो इस्तस्नान न करे कि में जाऊं या न जाऊं बल्कि यूँ इस्तस्नान करे कि किस दिन जाऊं या न जाऊं।

36. डर की नमाज़

मस'ला १- जब दुश्मन का सामना हो चाहे दुश्मन इन्सान हो या कोई दरिन्दा या कोई अजड़हा तो ऐसी हालत में सब मुसलमान या कुछ लोग भी मिलकर जमाअत से नमाज़ पढ़ लें। अगर सवारियों से भी उतरने की मोहलत न हो तो सब लोगों को चाहिए कि सवारियों पर बैठे-बैठे इशारों से नमाज़ पढ़ लें। क़िबले की इज़्जत करना उस वक़्त शर्त नहीं है। हां, अगर इसका भी मौका न हो तो मजबूरी है, उस वक़्त नमाज़ न पढ़े। इत्मीनान से उसकी क़ज़ा पढ़ लें। और अगर यह मुमकिन हो कि कुछ लोग जमाअत से नमाज़ पढ़ सकेंगे (अगरचे सब आदमी न पढ़ सकते हों) तो ऐसी हालत में उनकी जमाअत न छोड़नी चाहिए। नमाज़ पढ़ने के लिए लोगों की दो टुकड़ियां बना दें-एक टुकड़ी इमाम के साथ पूरी नमाज़ पढ़ ले और दूसरी टुकड़ी दुश्मन से लड़ने के लिए चली जाए फिर दूसरी टुकड़ी दूसरे आदमी को इमाम बनाकर पूरी नमाज़ पढ़ ले।

37. क़त्ल और तौबा की नमाज़ें

मस'ला १- अगर कोई बात शरीअत के खिलाफ़ हो जाए तो दो रकअत नफ़ल पढ़कर अल्लाह के सामने ख़ूब गिड़गिड़ाकर तौबा करे और किए पर पछताए। अपनी उस ग़लती को अल्लाह से माफ़

कराए और आगे के लिए पक्का इरादा करे कि अब कभी वैसी गलती नहीं करेगा। इस तरह वह गुनाह माफ हो जाता है।

मस'ला २— जब कोई मुसलमान कत्ल किया जाता हो तो मुस्तहब यह है कि दो रकअत नमाज़ पढ़कर अपने गुनाहों की माफी के लिए अल्लाह से दुआ करे ताकि वही नमाज़ और तौबा दुनिया में उसका आखिरी अमल रहे।

हदीस — एक बार नबी करीम सल्ल० ने अपने सहाबियों में से कुछ लोगों को कुरआन मजीद की तालीम हासिल करने के लिए कहीं भेजा था। रास्ते में मक्का के काफिरों ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया और हज़रत खुबैब रज़ि० के सिवा सबको कत्ल कर दिया। फिर हज़रत खुबैब रज़ि० को बड़ी धूमधाम से मक्का ले जाकर शहीद कर दिया गया मगर उन्होंने कत्ल होने से पहले दो रकअत नमाज़ पढ़ी थी। उसी वक़्त से यह नमाज़ मुस्तहब हो गई।

38. इस्तिस्का की नमाज़

मस'ला १— पानी की ज़रूरत हो और वह न बरसे तो उस वक़्त पानी बरसने के लिए अल्लाह से दुआ करना मसनून है। इस्तिस्का (पानी तलब) के लिए दुआ करना इस तरीके से मुस्तहब है कि सब मुसलमान मिलकर अपने लड़कों, बूढ़ों, जानवरों के साथ पैदल साफ़दिली और आजिजी के साथ सादे कपड़े पहनकर जंगल की ओर जाएं और तौबा करें। जिन लोगों के हुकूक उनकी तरफ़ वाजिब हैं, उन्हें पूरा करें। अपने साथ किसी काफिर को न ले जाएं। फिर दो रकअत नमाज़ अज़ान व तकबीर के बग़ैर जमाअत से पढ़ें और जोर से किरअत करें : फिर खुत्बा पढ़ें जैसे ईदैन में होता है। फिर इमाम क़िबले (जिसकी तरफ़ मुंह करके नमाज़ पढ़ी जाए) की तरफ़ मुंह करके खड़ा हो जाए और दोनों हाथ उठाकर अल्लाह से पानी बरसने की दुआ करे और वहां मौजूद लोग भी दुआ करें। लगातार तीन दिन

तक ऐसा करें (तीन दिन के बाद हुक्म नहीं)। अगर घरों से निकलने से पहले या एक ही दिन नमाज़ पढ़ कर बारिश हो जाए तब भी दो दिन पूरे किए जाएं और तीनों दिन रोज़ा भी रखें तो मुस्तहब है और जाने से पहले सदका व ख़ैरात करना भी मुस्तहब है।

39. कुसूफ़ और ख़ुसूफ़ नमाज़ें

मस'ला १— कुसूफ़ के वक़्त दो रकअत मसनून हैं।

मस'ला २— कुसूफ़ नमाज़ जमाअत से अदा की जाए और उसमें जुमे को नमाज़ पढ़ने वाला इمام, हाकिमे वक़्त या उसका नायब इمامत करे। एक रिवायत में यह भी कहा गया है कि हर इمام अपनी मस्जिद में कुसूफ़ नमाज़ पढ़ सकता है।

मस'ला ३— कुसूफ़ नमाज़ के लिए अज़ान या तकबीर नहीं है। अगर लोगों को जमा करना हो तो "अस्सलातुजामिअतुन" (नमाज़ के लिए जमाअत) पुकार दिया जाए।

मस'ला ४— कुसूफ़ नमाज़ में बड़ी-बड़ी सूरतें जैसे सूरः बकरः पढ़ना और रुकू व सज्दों का बहुत देर तक अदा करना मसनून है मगर किरअत धीमी आवाज़ से पढ़ी जाए।

मस'ला ५— नमाज़ के बाद इمام को चाहिए कि वह दुआ मांगे और सब मुकतदी उस वक़्त तक 'आमीन' 'आमीन' कहते रहें जब तक ग्रहण न रुक जाए। अगर ऐसी हालत में सूरज छिप गया या किसी नमाज़ का वक़्त आ जाए तो दुआ रोक कर उसे नमाज़ पढ़ने लग जाना चाहिए।

मस'ला ६— ख़ुसूफ़ नमाज़ के वक़्त भी दो रकअत नमाज़ मसनून है मगर इसमें जमाअत मसनून नहीं। सब लोग अकेले अलग-अलग अपने घरों में नमाज़ पढ़ें।

मस'ला ७— इसी तरह जब कोई ख़तरा या मुसीबत आ पड़े तो

नमाज़ पढ़ना मसनून है जैसे तेज़ आधी चले, भूचाल आए, बिजली गिरे, सितारे टूटें, बर्फ गिरे, पानी बहुत जोर से बरसे, हैजा जैसी कोई बीमारी फैल जाए या किसी दुश्मन के चढ़ाई करने का डर हो। लेकिन इन औकात में जो नमाज़ें पढ़ी जाएं उनमें जमाअत न की जाए। हर आदमी अपने घर में अकेला पड़े। नबी करीम सल्ल० को जब कोई मुसीबत या रंज होता नमाज़ पढ़ने लगते थे।

40. जुमे की नमाज़

अल्लाह तआला को नमाज़ से ज्यादा कोई बात पसन्द नहीं है और इसीलिए किसी इबादत की इतनी सख्त ताकीद और फज़ीलत "शरीअते साबिका" में नहीं आई। शरीअत ने सात दिन में एक दिन ऐसा तय किया है जिसमें अलग-अलग मुहल्लों और गांवों के मुसलमान आपस में जमा होकर इस इबादत को अदा करें और चूँकि जुमा सब दिनों में अफज़ल व अशरफ था इसीलिए इस दिन एक नमाज़ खास कर दी गई।

नबी करीम सल्ल० फरमाते हैं :

१. जुमा सब दिनों से अच्छा दिन है।

२. जुमे के दिन एक घड़ी ऐसी है कि उस वक़्त कोई भी मुसलमान अल्लाह से जो दुआ मांगे, वह ज़रूर कुबूल होती है। शेख अब्दुल हक़ मुहद्दिस रह० ने अपनी किताब "सफरुससआदत" में दो बातों पर जोर दिया है: (एक) यह कि वह घड़ी जुमे का ख़ुत्बा होने के वक़्त से नमाज़ ख़त्म तक है : (दो) यह है कि वह घड़ी आख़िर दिन में है। दूसरी बात को काफी लोग मानते हैं और बहुत-सी हदीसों में भी ऐसा ही मिलता है। शेख देहलवी का कहना है कि यह बात ठीक है कि हज़रत फ़ातिमा रज़ि० जुमे के दिन किसी खादिमा को हुक्म देती थीं कि जब दिन ख़त्म होने लगे तो वह उनको ख़बर दे ताकि वह उसी वक़्त इबादत करने लगें।

३. जुमे के दिन ज्यादा-से-ज्यादा दुरुद शरीफ पढ़ा करो कि वह उसी दिन उनके पास पहुंच जाता है। सहाबियों ने अर्ज किया: 'या रसूलुल्लाह (सल्ल०) आप पर कैसे पहुंच जाता है जबकि वफ़ात (मृत्यु) के बाद हड्डियां भी नहीं रहती? हज़रत सल्ल० ने फरमाया, अल्साह ने हमेशा के लिए ज़मीन पर नबियों का बदन हराम कर दिया है।'

41. जुमे के दिन किए जाने वाले काम

१. हर मुसलमान को चाहिए कि जुमे की तैयारी एक दिन पहले से करे। पंचशम्बा (बृहस्पतिवार, जुमेरात) के दिन अन्न की नमाज़ के बाद इस्तग़फ़ार (तौबा) ज़्यादा करे और अपने पहनने के कपड़े साफ़ करके रखे। खुश्बू अगर घर में न हो और मुमकिन हो तो उसी दिन लाकर रखे ताकि जुमे के दिन इन कामों में लगना न पड़े।

२. जुमे के दिन गुस्ल करे। सर के बाल और बदन खूब साफ़ करे। इस दिन मिस्वाक करने से भी बहुत सवाब मिलता है।

३. जुमे के दिन गुस्ल के बाद अच्छे-से-अच्छे जो कपड़े मौजूद हों, पहने। मुमकिन हो तो खुश्बू लगाए और नाखून वगैरा कटवाए।

४. जामा मस्जिद में बहुत सवेरे जाए। जो शरूअ जितनी जल्दी जाएगा उतना ज़्यादा सवाब उसे मिलेगा।

५. जुमे के दिन पैदल चलने में हर कदम पर साल भर तक रोज़ा रखने का सवाब मिलता है।

६. जुमे के दिन चाहे नमाज़ से पहले या बाद में सूरः कहफ़ पढ़ने से बहुत सवाब मिलता है।

42. जुमे की नमाज़ का सवाब

जुमे की नमाज़ कुरआन मजीद और हदीसों से साबित है। इसका न मानने वाला काफिर है और इसको बिना किसी वजह के छोड़ने वाला गुनाहगार है। रसूलुल्लाह सल्ल० का इर्शाद है कि जिसने बिना किसी शरई मजबूरी के तीन जुमे की नमाज़ न पढ़ी, वह मुझ से नहीं है।

१. "जब जुमे के लिए अज़ान कही जाए तो तुम अल्लाह के जिक्र की तरफ़ दौड़ो और ख़रीद बिक्री छोड़ दो। यह तुम्हारे लिए बेहतर है, अगर तुम जानो।"

—कुरआन

यहाँ जिक्र से मुशद जुमे की नमाज़ और उसका खुल्वा है। दौड़ने से मतलब बहुत कायदे के साथ जाना है।

२. नबी सल्ल० ने फरमाया है कि जो शरूख़ सुस्ती की वजह से तीन जुमों की नमाज़ नहीं पढ़ता, अल्लाह उसके दिल पर मुहर लगा देता है।

43. जुमे की नमाज़ कब वाजिब होती है?

१. एक जगह रहना। मुसाफिर पर जुमे की नमाज़ वाजिब नहीं है।

२. स्वस्थ होना। मरीज़ पर नमाज़े जुमा वाजिब नहीं। जिसका मर्ज़ जामा मस्जिद तक या पैदल चलने में रुकावट डाले, वही मरीज़

है। बुढ़ापे की वजह से अगर कोई आदमी कमजोर हो गया कि मस्जिद तक न जा सके या अन्धा हो वह भी मरीज समझा जाएगा।

३ आजाद होना। गुलाम पर जुमे की नमाज वाजिब नहीं है।

४ मर्द होना, औरत पर यह वाजिब नहीं।

अगर कोई आदमी जिस पर जुमे की नमाज वाजिब नहीं नमाज पढ़ता है तो नमाज हो जाएगी यानी जुहर का फर्ज पूरा हो जाएगा, जैसे कोई मुसाफिर या औरत।

44. जुमे की नमाज की शर्तें

१ शहर या कस्बे में जुमे की नमाज हो सकती है, गांव में नहीं। लेकिन गांव की आबादी कस्बे के बराबर (जैसे तीन-चार हजार आदमी) हों तो वहां जुमा दुरुस्त है।

२ जुहर का वक़्त ही जुमे के लिए दुरुस्त है। इससे पहले या बाद में ठीक नहीं। वक़्त निकल जाने के बाद जुमे की नमाज दुरुस्त नहीं। यहां तक कि अगर जुमे की नमाज पढ़ने की हालत में वक़्त जाता रहे तो नमाज फासिद हो जाएगी। अगरचूं पूरी अतहीयात पढ़ने पर नमाज पूरी हो जाती है, लेकिन अभी नमाज से निकला नहीं और इस हालत में जुमे का वक़्त ख़त्म हो गया तो नमाज फासिद हो जाएगी और नमाज जुमा क़जा नहीं पड़ी जाती।

३ खुत्बा पढ़ना यानी लोगों के सामने अल्ताह का जिक्र करना।

४ खुत्बा नमाज से पहले होना। अगर नमाज के बाद खुत्बा पढ़ा जाए तो नमाज न होगी।

५ खुत्बा जुहर की नमाज के अन्दर होना। अगर वक़्त आने से पहले खुत्बा पढ़ लिया जाए तो नमाज न होगी।

६. खुले बन्दों और बिना रोक-टोक जुमे की नमाज़ पढ़ना—
 किसी खास जगह में घुसकर जुमे की नमाज़ पढ़ना दुरुस्त नहीं
 अगर किसी ऐसी जगह जुमे की नमाज़ पढ़ी जाए जहां आम आदमियों
 को पहुंचने की इजाज़त न हो या जुमे के दिन मस्जिद के दरवाजे बन्द
 कर लिए जाएं तो नमाज़ न होगी।

45. खुत्बे के मसाइल

मस'ला १— जब सब लोग मस्जिद में आ जाएं तो इमाम को
 चाहिए कि वह मिम्बर पर बैठ जाए और मुअज्जिन उसके सामने खड़ा
 होकर अज़ान दे। अज़ान के बाद ही इमाम खड़ा होकर खुत्बा पढ़ना
 शुरू कर दे।

मस'ला २— खुत्बे में बारह बातें मसनून हैं : १. खुत्बा पढ़ने
 की हालत में खुत्बा पढ़ने वाले का खड़ा रहना, २. दो खुत्बे पढ़ना,
 ३. दोनों खुत्बों के बीच में इतनी देर बैठना कि तीन बार 'सुल्हानल्लाह'
 कह सके, ४. हर तरह की गन्दगी से پاک हो, ५. खुत्बा पढ़ने की
 हालत में मुंह लोगों की तरफ करना, ६. खुत्बा शुरू करने से पहले
 अपने दिल में 'अऊज़ु बिल्लाहि मिनशैतानिर्रज़ीम' (अल्लाह की
 पनाह मांगता हूं शैतान मरदूद से) कहना, ७. खुत्बा इतने जोर से
 पढ़ना कि लोग सुन सकें, ८. खुत्बा ज्यादा लम्बा न पढ़ना, यानी
 जितनी देर में नमाज़ पढ़ी जाए, खुत्बा उससे कम बरत में पढ़ा जाना
 चाहिए, ९. खुत्बा मिम्बर पर पढ़ना। अगर मिम्बर न हो तो किसी
 लाठी या लकड़ी पर हाथ रख कर खड़ा होना (हाथ का हाथ पर
 रखना गलत है), १०. दोनों खुत्बों का अरबी ज़बान में पढ़ा जाना।
 किसी दूसरी ज़बान में खुत्बा पढ़ना या उसके साथ किसी और ज़बान
 के बोल मिला देना मकरूह है खुत्बा सुनने वालों का कब्जे की तरफ
 मुंह करके बैठना, ११. खुत्बे में आठ मज़ामीन (विषय) का होना—

(एक) अल्लाह तआला का शुक्र, (दो) उसकी तारीफ, (तीन) खुदावंद करीम की वहुदत, (चार) नबी सल्ल० की शहादत यानी गवाही, (पांच) नबी सल्ल० पर वरुद, (छः) वाज व नसीहत, (सात) कुरआन मजीद की आयत या किसी सूरत का पढ़ना, (आठ) दूसरे खुत्बे में फिर इन्हीं बातों का दोहराना और वाज व नसीहत न करके मुसलमानों के लिए दुआ करना।

दूसरे खुत्बे में नबी सल्ल० की औलाद, सहाबियों, बीवियों, खुलफाए राशिदीन और हज़रत हम्ज़ा व अब्बास रज़ि० के लिए खास तौर पर दुआ करना मुस्तहब है। मुसलमान बादशाह या हाकिम के लिए भी दुआ करना जायज़ है।

मस'ला ३— जब इमाम खुत्बे के लिए उठ खड़ा हो उस वक़्त से कोई नमाज़ पढ़ना या आपस में बातचीत करना मकरूह तहरीमी है। हाँ, कज़ा नमाज़ का पढ़ना नमाज़ी के लिए उस वक़्त भी जायज़ बल्कि वाजिब है।

मस'ला ४— जब खुत्बा शुरू हो जाए तो सब नमाज़ियों को उसका सुनना वाजिब है चाहे इमाम के करीब बैठे हों या दूर। और कोई ऐसा काम करना जो रुकावट डाले मकरूह तहरीमी है। खाना-पीना, बातचीत करना, चलना-फिरना, सलाम करना या सलाम का जवाब देना, तस्वीह पढ़ना या किसी को शरई मस'ला जैसा कि नमाज़ की हालत में मना है वैसा ही इस वक़्त भी मना है। हाँ! ख़तीब को जायज़ है कि खुत्बा पढ़ने की हालत में किसी को शरई मस'ला बता दे।

मस'ला ५— अगर सुन्नत, नफ़ल पढ़ने में खुत्बा शुरू हो जाए तो सुन्नतें मुअक़दा तो पूरी कर ले और नफ़ल में दो रकअत पर सलाम फेर दे।

मस'ला ६— दोनों खुत्बों के दर्मियानी बैठने की हालत में इमाम या मुक़तदियों को हाथ उठा कर दुआ मांगना मकरूह तहरीमी है।

रमजान के आखिरी जुमा अलविदा में विदाई व जुदाई के मज़ामीन पढ़ना नबी सल्ल० और उनके असहाब रज़ि० से ब्यान किए गए हैं

46. नबी सल्ल० का जुमे वाला खुत्बा

नबी करीम सल्ल० का खुत्बा नवल करने से यह मतलब नहीं कि लोग उसी खुत्बे पर इत्तिजाम (लाज़िम, अनुसरण) कर लें बल्कि कभी-कभी इसको तबरूक (बरकत) व इत्तबा (पैरवी, अनुसरण) के तौर पर पढ़ लिया जाए।

हुज़ूर सल्ल० की यह आदत थी कि जब लोग जमा हो जाते तब आप (सल्ल०) तश्रीफ लाते और मौजूद लोगों को सलाम करते। हज़रत बिलाल रज़ि० अज़ान कहते। जब अज़ान खत्म हो जाती तो नबी सल्ल० उठते और एकदम खुत्बा शुरू कर देते। जब तक मिम्बर न बना था, किसी लाठी या कमान से हाथ को सहारा दे लेते और कभी-कभी उस लकड़ी के सुतून से जो मेहराब के पास था खुत्बा पढ़ा करते थे, तकिया लगा लेते थे। मिम्बर बन जाने के बाद फिर किसी लाठी या सुतून से सहारा न लिया आप (सल्ल०) दो खुत्बे पढ़ते और दोनों के दर्मियान कुछ देर के लिए बैठ जाते। उस वक़्त न कुछ बात करते और न दुआ ही मांगते। जब दूसरा खुत्बा पढ़ चुकते तब हज़रत बिलाल रज़ि० इकामत कहते और हुज़ूर सल्ल० नमाज़ शुरू कर देते।

आप (सल्ल०) अवसर खुत्बे में फरमाते थे :

बुइस्तु अन वरसाअतु कहातैन०

(मैं और कियामत इस तरह साथ भेजे गए हैं जैसे दो उंगलियाँ) और बीच की उंगली और शहादत की उंगली को मिला देते, उसके बाद फरमाते :

أَمَّا بَعْدُ فَإِنَّ خَيْرَ الْحَدِيثِ كِتَابُ اللَّهِ وَخَيْرُ الْهَدْيِ هَدْيُ
مُحَمَّدٍ وَشَرُّ الْأُمُورِ مُحْدَثَاتُهَا وَكُلُّ بِدْعَةٍ ضَالَّةٌ أَنَا أَوَّلِي
بِكُلِّ مُؤْمِنٍ مِّنْ نَّفْسِهِ مَن تَرَكَ مَا لَا فَلَاحَ لَهُ وَمَن تَدَكَ
دِينًا أَوْضِيَاعًا فَعَلَىٰ

अम्मा बअदु फ़—इन्न खैरल हदीसि किताबुल्लाहि व खैरुल हदयि
हदयु मुहम्मदिन व शररल उमूरि मुहदिसातुहा व कुल्लु बिदअतिन
जलालतुन अन औला बिकुल्लि मुअमिनिभ मिन नफिसही मन
त-र-क मालन फला अहलिही व मन त-र-क दैनन औ ज़ियाअन
फअलय्या०

सबसे अच्छी बात किताबुल्लाह (कुरआन मजीद) और सबसे अच्छा
तरीका मुहम्मद सल्ल० का है। दीन में सबसे बुरा काम दीन में नई
बात पैदा करना है क्योंकि इससे लोग गुमराह होते हैं। मैं हर मोमिन
के साथ उसकी जात से ज्यादा करीब हूँ। मरते वक़्त आदमी जो माल
छोड़ेगा वह उसके घर वालों का है और जो कर्ज़ या औलाद छोड़ेगा
वह मेरे जिम्मे है।

कभी यह खुल्वा भी पढ़ते थे :

يَا أَيُّهَا النَّاسُ تَوَبُّوا قَبْلَ أَنْ تَمُوتُوا وَبَادِرُوا بِالْأَعْمَالِ
الصَّالِحَةِ وَصَلُّوا الَّذِي يَبْنِيكُمْ وَيَبْنِي رَبَّكُمْ بِكَثْرَةِ ذِكْرِكُمْ
لَهُ وَكَثْرَةِ الصَّدَقَةِ بِالسَّرِّ وَالْعَلَانِيَةِ تَوَجَّدُوا وَتَحَمَّدُوا
وَتَرَزَّقُوا وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ قَدْ فَرَضَ عَلَيْكُمُ الْجُمُعَةَ
مَكْتُوبَةً فِي مَقَامِي هَذَا فِي شَهْرِي هَذَا فِي غَايَةِ هَذَا

إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَنْ وَجَدَ إِلَيْهِ سَبِيلًا فَمَنْ تَرَكَهَا فِي
 حَيَاتِي أَوْ بَعْدِي فَخُودًا بِهَا وَاسْتَخَفًا بِهَا وَهُوَ إِمَامٌ
 جَائِدٌ أَوْ غَامِلٌ فَلَا جَمْعَ لِلَّهِ شَمْلَةٌ وَلَا بَارَكَ لَهُ فِي أَمْرِهِ
 الْآ وَلَا صَلَوةَ لَهُ الْآوَةُ صَوْمَ لَهُ الْآ وَلَا زَكَاةَ لَهُ وَلَا حَجَّ لَهُ
 الْآ وَلَا بَرَّ لَهُ حَتَّى يَتْرَبَ فَإِنْ تَابَ تَابَ اللَّهُ الْآ وَلَا يُؤْمِنُ
 امْرَأَةٌ رَجُلًا الْآ وَلَا يُؤْمِنُ أَغْرَابِيٌّ مُهَاجِرًا الْآ وَلَا يُؤْمِنُ
 فَاجِدٌ مُؤْمِنًا إِلَّا يَفْقَهُهُ سُلْطَانٌ يَخَافُ يَفْتُو سَوَطَهُ (ابن عساکر)

या ऐय्युहन्नासु तूवू कम्मल अन तमूतू व बादिकु विल
 आमालिस्सातिहाति व सिलुल्लजी बै नकुम व बैन रन्तिकुम
 बकस्सति जिक्किकुम लहू व कस्सरतिस्स-द-कति विस्सिर्णि वल
 अलानिय्यति तूजदू व तुहमदू व तुर्जकू व अलमू अन्नल्लाह कद
 फ-र-ज अलैकुमुल जुम्मेत मवतूबतन फी मकामी हाजा फी राहरि
 हाजा फी आमी हाजा इला यौमिल कियामति मैं व-ज-द इलैहि
 सबीला फमन त र कहा फी हयाती औ बअदी फहदम बिहा
 वस्तख फाफन बिहा व लहु इमामुन जाइदुन औ आमिलुन फला
 जमअल्लाहु शम्लहू वला बा र-क लहू फी अमरहू अला वला
 सलात लहू अला व ला सौ म लहू अला व ला जकात लहू
 व ला हज्ज लहू अला व ला बिर्र लहू हत्ता यतू व फइन्न ता व
 ताबल्लाहु अला व ला तुअमन्न न इम्रअतुन रजुलन अला व ला
 युअमन्न अअ-राबिय्युन मुहाजिरन अला वला युअमन्न न फाजिदुन
 मुअमिनन इल्ला यकहदुहू सुल्तानुय्युखाफु : बयफतू, सौतहऽ

ऐ लोगो, मरने से पहले तौबा करो और नेक कामों में जल्दी करो।
 अपने और खुदा के बीच कलाम पाक की पढ़ाई और पोरीदा व
 खुल्लम-खुल्ला सदके की कसरत (वृद्धि) पैदा करो। तुम्हें इसका फल
 मिलेगा और तुम्हारी तारीफ की जाएगी। तुमको रोजी दी जाएगी और

जान लो कि अल्लाह ने तुम्हारे ऊपर जुमा फर्ज किया है इस जगह पर इस महीने में, इस साल में कियामत तक जो आदमी रास्ता पाता है उस जुमे की तरफ। फिर जो मेरी ज़िन्दगी में या मेरे बाद जुमे का इन्कार करते हुए और उसे खास न समझ कर इसलिए छोड़ेगा कि उसका इमाम ज़ालिम है या आलिम तो अल्लाह उसके हाल को ठीक करे और उसके मामलात में बरकत दे। जुमा छोड़ने वाले की न नमाज़ होगी, न कोई रोज़ा, न ज़कात होगी और न उसका हज्ज, न उसकी कोई नेकी कुबूल होगी जब तक कि वह तौबा न करे। अगर फिर तौबा करेगा तो अल्लाह उसकी तौबा कबूल करेगा। खबरदार! कोई औरत किसी मर्द की इमामत न करे। न कोई अरबी किसी मुहाजिर की और न कोई झूठा किसी सच्चे की। लेकिन अगर किसी बादशाह या हाकिम का उर हो तो दूसरी बात है।

कभी आप यह ख़ुत्बा पढ़ते थे :

الْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ
 اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّاَتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يُّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ
 وَمَنْ يُضِلِّهُ فَلَا هَادِيَ لَهُ وَاشْهَدُ اَنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ
 لَا شَرِيْكَ لَهُ وَاشْهَدُ اَنْ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ اَرْسَلَهُ
 بِالْحَقِّ بَشِيْرًا وَنَذِيْرًا بَيْنَ يَدَيِ السَّاعَةِ مَنْ يُطِيعِ اللّٰهَ
 وَرَسُوْلَهُ فَقَدْ رَشَدَ وَاهْتَدٰى وَمَنْ يَعْصِهَا فَاِنَّهٗ لَا يَضُرُّ اِلَّا
 نَفْسَهُ وَلَا يَضُرُّ اللّٰهَ شَيْئًا (ابوداؤد ۵)

अलहम्दु लिल्लाहि नहम्दुहु व नस्तग़िफ़रुहु व नऊजु
 बिल्लाहि मिन शुरुुरि अन्फुसिना व मिन सैय्यिआति आ'मालिना
 मय्यहदिहिल्लाहु फला मुज़िल्ल लहु व मैयुज़लिलहु फला हादिय
 लहु वअशहदु अल्ला इलाह इल्लल्लाहु वहदहु ला शरीक लहु
 वअशहदु अन्न न मुहम्मदन अब्दुहु व रसूलुहु अर्सलहु बिल्हक़ि

बशीरें व नज़ीरन बैन य-द-विस्ताअः मैयुतिइल्ताह व रसूलहु
फकद रशद। वहतदा व मैकअसिहा फइन्नहु ता यजुरु इल्ता
नफसहु बला यजुरुल्ताह रीआ०

(अबूदाऊद)

सब तारीफें अल्ताह के लिए ही हैं जिसकी हम तारीफ करते हैं
और मुक्ति चाहते हैं। हम अल्ताह की पनाह मांगते हैं अपनी जातों
की बुराई और बुरे कामों से। जिसे अल्ताह हिदायत देता है उसे कोई
गुमराह करने वाला नहीं है। मैं गवाही देता हूँ कि एक अल्ताह के
सिवा कोई इबादत के काबिल नहीं और जिसका कोई साझी नहीं। मैं
गवाही देता हूँ कि मुहम्मद (सल्ल०) उसके बन्दे और रसूल हैं जिन्हें
अल्ताह ने हक के साथ भेजा है, जो मानने वालों को सुखसुबरी देने
वाले हैं और न मानने वालों को डराने वाले हैं कियामत के डर से जो
अल्ताह और उसके रसूल का हुक्म मानेगा वह सीधे रास्ते पर लग
गया और हिदायत पा गया और जो अल्ताह और उसके रसूल की
बात न मानेगा वह अपना ही नुकसान करेगा और अल्ताह को कुछ भी
तकलीफ नहीं देगा। (अबूदाऊद)

एक सहाबी फरमाते हैं : हज़रत सल्ल० सुल्हे में अक्सर सूरः
काफ पढ़ा करते थे। यहां तक कि मैंने सूरः काफ हज़रत सल्ल० से
ही सुनकर याद की। कभी-कभी आप सूरः अन्न और कभी :

لَا يَسْتَوِي أَصْحَبُ النَّارِ وَأَصْحَبُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَائِزُونَ

ता यस्तबी अस्हाबुन्नारि व अस्हाबुल जन्नः, अस्हाबुल जन्नति
हुमुल्फाइज़ून०

(दोज़ख की आग में जलने वाले और जन्नत में रहने वाले बराबर
नहीं हो सकते, जन्नती ही कामयाब हैं।)

और कभी

وَنَادَوْا يَا مَالِكُ لِيَقْضِ عَلَيْنَا
رَبُّكَ قَالَ إِنَّكُمْ مَا تُكَفِّرُونَ

बनादौ या मालिकु लियविज़ अलैना रब्बुक काल इन्नकुम
माकिसून०

(दोज़खी पुकारेंगे कि ऐ दोजख के मालिक ! तेरे पालनहार को चाहिए वह हमारे ऊपर मौत का फैसला कर देता कि हम इस अज़ाब से नजात पा लें। यह जवाब में कहेंगे—निस्सन्देह तुम इसी में रहने वाले हो।)

पढ़ा करते थे।

47. जुमा की नमाज़ के मसाइल

मस'ला १— अच्छा यह है कि जो आदमी खुत्बा पढ़े वही नमाज़ भी पढ़ाए। अगर दूसरा पढ़ाए तब भी जायज़ है।

मस'ला २— खुत्बा खत्म होते ही इकामत कहकर नमाज़ शुरू कर देना सुन्नत है। खुत्बा और नमाज़ के दर्मियान कोई दुनियावी काम मकरूह तहरीमी है। अगर वुजू न रहे और वुजू करने जाए या बाद खुत्बे के उसको मालूम हो कि उसे नहाने की ज़रूरत थी और नहाने जाए तो कुछ कराहियत नहीं, न खुत्बे को लौटाये।

मस'ला ३— नमाज़े जुमा इस नीयत के साथ पढ़ी जाए :-

नवैतु अन उसल्ली रक-अ-त-यिल फर्ज़ मिन सलातिल
जुमअतः०

(मैंने इरादा किया कि दो रकअत फर्ज़ नमाज़ जुमा पढ़ूँ)

मस'ला ४— अच्छा यह है कि जुमे की नमाज़ एक जगह, एक ही मस्जिद में सब लोग जमा होकर पढ़ें अगरचें एक जगह की बहुत-सी मस्जिदों में जुमे की नमाज़ जायज़ है।

मस'ला ५— अगर कोई मरदूक आखिरी क़ादा में अतहीय्यात पढ़ते वक़्त या भूल का सज़्दा करने के बाद आकर मिले तो उसका

शरीक हो जाना ठीक होगा और उसे जुमे की नमाज पढ़ लेनी चाहिए—जुहर नहीं पढ़नी पड़ेगी।

मस'ला ६— कुछ लोग जुमे के बाद जुहर पढ़ा करते हैं यह गलत है क्योंकि इससे और लोग भी पढ़ने लगे हैं। उन्हें इससे मना करना चाहिए। अगर कोई आलिम शक की वजह से पढ़ना चाहे तो अपनी उस नमाज के बारे में किसी को न बताए।

48. ईदैन की नमाजें

मस'ला १— शव्वाल महीने की पहली तारीख को ईदुल फित्र कहते हैं और ज़िलहिज्ज की दसवीं तारीख को ईदुल अज़हा। ये दोनों दिन इस्लाम में ईद और खुशी के दिन हैं। और दोनों दिनों में दो-दो रकअत नमाज बतौर शुक्राना पढ़ना वाजिब है। जुमे की नमाज ठीक तरह अदायगी के लिए जो शर्तें ध्यान की गई हैं वही ईदैन की नमाजों की भी हैं। खुत्बे के सिवा कि जुमे की नमाज में खुत्बा फर्ज और शर्त है और नमाज से पहले पढ़ा जाता है और ईदैन की नमाज में शर्त यानी फर्ज नहीं सुन्नत है और नमाज के बाद पढ़ा जाता है। मगर ईदैन के खुत्बे का सुनना जुमे के खुत्बे की तरह वाजिब है यानी उस वक़्त बोलना, चलना और नमाज पढ़ना सब हराम है :—

मस'ला २— ईदुल फित्र के दिन तेरह बातें मसनून हैं :

१. शरीअत के मुताबिक अपनी आराइश करना,
२. गुस्ल करना,
३. मिरवाक करना,
४. कपड़े पहनना,
५. खुशबू लगाना,
६. सुबह को बहुत सदेरे उठना,
७. ईदगाह में बहुत जल्दी जाना,
८. ईदगाह जाने से पहले कोई मीठी चीज़ जैसे छुहारा खाना,
९. ईदगाह जाने से पहले सदका-ए-फित्र दे देना,
१०. ईद की नमाज ईदगाह में जाकर पढ़ना (यानी शहर की मस्जिद में किसी मजबूरी के बग़ैर न पढ़ना),
११. जिस रास्ते से जाना उसके सिवा दूसरे रास्ते से वापस आना,
१२. पैदल जाना और
१३. रास्ते में :

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ

अल्लाहु अकबर! अल्लाहु अकबर! ला इलाह इल्लल्लाहु!
बल्लाहु अकबर! अल्लाहु अकबर! बलिल्लाहिल हम्द०

(अल्लाह बड़ा है। अल्लाह बड़ा है। अल्लाह के सिवा कोई खुदा नहीं। अल्लाह बड़ा है और उसी के लिए सब तारीफें हैं)

आहिस्ता आवाज़ से पढ़ते जाना चाहिए।

मस'ला ३- ईदुल फ़ित्र की नमाज़ पढ़ने का यह तरीका है कि नीयत करे कि :-

نَوَيْتُ أَنْ أُصَلِّيَ رَكْعَتَيْ الْوَجِبِ صَلَاةَ عِيدِ الْفِطْرِ مَعَ سِتَّةِ
تَكْبِيرَاتٍ وَاجِبَةٍ

नवैतु अन उसल्लिया रवअतिल वाजिबि सलातईदिलुफ़ित्र
मअसित्त त तक्बीरातिव वाजिबः०

(मैंने नीयत की कि दो रकअत वाजिब ईद की, छः वाजिब तकबीरों के साथ पढ़ूँ)

यह नीयत करके हाथ बांध ले और 'अल्ला हुम्म म' आखिर तक पढ़ कर तीन बार 'अल्लाहु अकबर' कहे और हर बार तकबीर तहरीमा की तरह दोनों कानों तक हाथ उठाए और तकबीर के बाद इतनी देर रुके कि तीन बार 'सुल्हानल्लाह' कह सके। तीसरी तकबीर के बाद हाथ न लटकाए बल्कि बांध ले और 'अ ऊ जु बिल्लाह' व 'बिस्मिल्लाह' पढ़ कर सूरहफातिहा और कोई दूसरी सूरत पढ़कर दस्तूर के मुवाफिक रुकू और सज्दे करके खड़ा हो जाए। दूसरी रकअत में सूरः फातिहा और कोई और सूरत पढ़ ले। उसके बाद फिर तीन तकबीरें उसी तरह कहे लेकिन अब तीसरी तकबीर के बाद हाथ न बांधे बल्कि लटकाए रखे और फिर तकबीर कहते हुए रुकू में जाए।

मस'ला ४- ईदैन की नमाज़ में अलावा मामूली तकबीरों के छः ज़ायद तकबीरें कहना वाज़िब है।

मस'ला ५- बाद नमाज़ के दो खुत्बे मिम्बर पर खड़े होकर पढ़े और दोनों खुत्बों के दर्मियान उतनी देर बैठे जितनी देर जुमे के खुत्बे में बैठा जाता है।

मस'ला ६- बाद नमाज़ ईदैन दुआ मांगना अगर्ब नबी करीम सल्ल० उनके सहाबा और उनके मानने वालों के बारे में कहीं पता नहीं चलता लेकिन चूंकि हर नमाज़ के बाद दुआ मांगना मसनून है इसलिए ईदैन की नमाज़ के बाद भी दुआ मांगना मसनून होगा।

मस'ला ७- ईदैन के खुत्बे को पहले तकबीर से शुरू करे। पहले खुत्बे में नौ बार 'अल्लाहु अकबर' कहे और दूसरे में सात बार।

मस'ला ८- ईदुल अज़हा की नमाज़ का भी यही तरीका है और इसमें भी वे सब बातें मसनून हैं जो ईदुल फ़ित्र में हैं। फर्क इतना है कि ईदुल अज़हा का लफ़्ज़ कह लें। ईदुल फ़ित्र में रास्ते में चलते वक़्त आहिस्ता तकबीर कहना मसनून है और ईदुल अज़हा में ज़ोर से। और यहां सदका फ़ित्र नहीं बल्कि बाद में कुर्बानी है और अज़ान व इक़ामत न यहां पर है न वहां पर।

मस'ला ९- जहां ईद की नमाज़ पढ़ाई जाए वहां उस दिन और कोई नमाज़ पढ़ना मकरूह है। नमाज़ से पहले भी और पीछे भी। हाँ, बाद नमाज़ घर में आकर नमाज़ पढ़ना मकरूह नहीं और नमाज़ से पहले भी मकरूह है।

मस'ला १०- औरतें और वे लोग जो किसी वजह से ईद की नमाज़ न पढ़ें उन्हें ईद की नमाज़ से पहले कोई नफल वगैरा पढ़ना मकरूह है।

मस'ला ११- ईदुल फ़ित्र के खुत्बे में सदका फ़ित्र के अहकाम और ईदुल अज़हा के खुत्बे में कुर्बानी के मसायल और तकबीर तशरीक यानी हर फर्ज़ नमाज़ के बाद एक बार 'अल्लाहु अकबर'

अल्ताहुअ अयबर लाइलाहा इल्लल्लाहु यल्ताहु अकबर अल्ताहु अकबर यलित्ताहित हम्द' के अहकाम ध्यान करने चाहिए जिसका कहना याजिब है बशर्त कि फर्ज जमाअत से पढ़ा गया और वह शहर हो। यह तकबीर औरत और मुसाफिर पर याजिब नहीं है। अगर आदमी किसी ऐसे शरूअ का मुकतदी हो जिस पर तकबीर याजिब है तो उन पर भी याजिब हो जायेगी। लेकिन अकेला आदमी और मुसाफिर भी कह ले तो अच्छा है क्योंकि साहिबैन की नज़र में उन सब पर याजिब है।

मस'ला १२— यह तकबीर अरफा यानी नवी तारीख की फज़ से तेरहवीं तारीख की अज़ तक कहना चाहिए। इस तरह सब २३ नमाज़ें हुई जिनके बाद तकबीर याजिब है।

मस'ला १३— इस तकबीर को बुलन्द आवाज़ से कहना याजिब है। हाँ, औरतें आहिस्ता आवाज़ से कहें।

मस'ला १४— नमाज़ के बाद ही तकबीर कहनी चाहिए।

मस'ला १५— अगर इमाम तकबीर कहना भूल जाए तो मुकतदियों को चाहिए कि उसी वक़्त तकबीर कह दे यानी यह इन्तज़ार न करे कि इमाम ही शुरु करे।

मस'ला १६— ईदुल अज़हा की नमाज़ के बाद भी तकबीर कह लेना कुछ लोग बताते हैं।

मस'ला १७— इदैन की नमाज़ कई मस्जिदों में पढ़ी जा सकती है।

मस'ला १८— अगर किसी को ईद की नमाज़ न मिली और सब लोग पढ़ चुके हैं तो वह अकेला ईद की नमाज़ नहीं पढ़ सकता क्योंकि ईद की नमाज़ में जमाअत शर्त है। इसी तरह अगर कोई आदमी नमाज़ में शरीक हुआ हो और किसी वजह से उसकी नमाज़ फासिद हो गई तो वह उसकी कज़ा नहीं पढ़ सकता। न उसकी उस पर कज़ा ही याजिब है। हाँ अगर कुछ लोग और भी उसके साथ शरीक हो जाएं तो पढ़ना याजिब है।

मस'ला १९— अगर किसी मजबूरी की वजह से पहले दिन

नमाज़ न पढ़ी जा सके तो ईदुल फ़ित्र की नमाज़ दूसरे दिन और ईदुल अज़हा की बारहवीं तारीख तक पढ़ी जा सकती है।

मस'ला २०— ईदुल अज़हा की नमाज़ में बिना मजबूरी १२वीं तारीख तक देर करने से नमाज़ हो जाएगी मगर मकरूह है और ईदुल फ़ित्र में बिना किसी मजबूरी के देर करने से बिल्कुल नमाज़ न होगी।

मस'ला २१— अगर कोई ईद की नमाज़ में ऐसे वक़्त शरीक हुआ कि इमाम तकबीरें पूरी कर चुका हो तो उसी वक़्त नीयत बांधने के बाद तकबीरें कह ले अपर्यं इमाम फिरअत शुरू कर चुका हो और अगर रुकू में आकर शरीक हुआ हो तो अगर यह ख्याल हो कि पढ़ने के बाद इमाम का रुकू मिल जायेगा तो नीयत बांधकर तकबीरें कह ले फिर रुकू में जाए और अगर रुकू न मिलने का डर हो तो रुकू में शरीक हा जाए और रुकू में जाकर तस्बीह के बजाए तकबीरें कह ले, मगर रुकू में तकबीरें कहते वक़्त हाथ न उठाए और इससे पहले कि पूरी तकबीरें कह चुके इमाम रुकू से सर उठा ले तो वह भी खड़ा हो जाए अब जितनी तकबीरें रह गयी हैं वे उससे माफ़ हैं।

मस'ला २२— अगर ईद की नमाज़ में किसी की एक रक़अत चली जाए तो जब वह उसे पढ़ने लगे तो पहले फिरअत करे, फिर तकबीरें कहे। अगर इमाम तकबीरें कहना भूल जाए और रुकू में उसे याद आए तो उसे चाहिए कि रुकू में जाकर तकबीर कह ले, फिर कयाम की तरफ न लौटे, अगर लौट जाए तब भी जायज़ है यानी नमाज़ फ़ासिद न होगी, लेकिन हर हालत में लोगों की मारी भीड़ के सबब भूल का सज़्दा न करे।

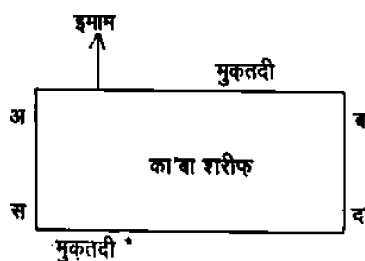
49. काअूबे में नमाज़ पढ़ना

मस'ला १— जैसे का'बा शरीफ के बाहर उसके रुख पर नमाज़ पढ़ना दुरुस्त है वैसा ही का'बे के अन्दर भी नमाज़ पढ़ना दुरुस्त है। इस्तक़बाल किबला हो जाएया चाहे जिस तरफ पड़े, क्योंकि वहां

चारों तरफ़ किबला है। जिस तरफ़ मुंह किया जाए का'बा ही का'बा है और जिस तरफ़ नफ़ल है उसी तरह फ़र्ज नमाज़ भी है।

मस'ला २— का'बे के अन्दर अकेले नमाज़ पढ़ना भी जायज़ है और जमाअत से भी और वहां यह भी शर्त नहीं कि इमाम और मुक्तदियों का मुंह एक तरफ़ हो क्योंकि वहां हर तरफ़ किबला है। मगर शर्त यह ज़रूर है कि मुक्तदी इमाम से आगे बढ़कर खड़े न हों। अगर मुक्तदी का मुंह इमाम के सामने हो तब भी ठीक है। मगर वहां उस सूरत में नमाज़ मकरूह होगी क्योंकि किसी आदमी की तरफ़ मुंह करके नमाज़ मकरूह है लेकिन अगर कोई चीज़ बीच में कर ली जाए तो फिर कराहियत न रहेगी।

मस'ला ३— अगर सब लोग का'बे के बाहर हों और एक तरफ़ इमाम हो, चारों तरफ़ मुक्तदी हलका बांधे हुए हों जैसा कि वहां आम तौर पर इसी तरह नमाज़ पढ़ी जाती है तब भी दुरुस्त है। लेकिन शर्त यह है कि जिस तरफ़ इमाम खड़ा है उस तरफ़ कोई मुक्तदी इमाम की निस्बत ख़ाना का'बा के करीब न हो क्योंकि इस सूरत में वह इमाम से आगे समझा जायेगा जो ठीक नहीं है। हाँ, अगर दूसरी तरफ़ के मुक्तदी ख़ाना का'बा से इमाम की निस्बत करीब भी हों तो कुछ बुराई नहीं और उसकी यह सूरत है।



अ, ब, स, द का'बा है और तीर का निशान इमाम है जो का'बे से दो गज़ के फासले पर खड़ा दिखाया गया है।

3. जनाज़ा (अन्त्येष्टि)

1. मर जाने पर क्या करें ?

मस'ला १— जब आदमी मरने लगे तो उसे चित्त लिटा दें। उसके पैर कबले की तरफ करके सर ऊंचा कर दें ताकि उसका मुंह कबले की तरफ हो जाये। उसके पास बैठकर कलिमा तैयबा

लाइलाह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह

(नहीं है कोई खुदा सिवा अल्लाह के, मुहम्मद सल्ल० अल्लाह के रसूल हैं)

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللَّهِ

जोर-जोर से पढ़ें ताकि आपको पढ़ते सुनकर वह खुद भी कलिमा पढ़ने लगे। उसे कलिमा पढ़ने का हुक्म न दिया जाये क्योंकि वह वयत बड़ा ही मुश्किल होता है और न मालूम उसके मुंह से क्या निकल जाये।

मस'ला २— जब वह एक बार कलिमा पढ़ ले तो आप चुप रहें। यह कोशिश न करें कि कलिमा बराबर पढ़ा जाता रहे और पढ़ते ही दम निकले क्योंकि मतलब तो बस इतना है कि सबसे आखिरी बात जो उसके मुंह से निकले वह कलिमा होना चाहिए। हां! अगर मरने वाला कलिमा पढ़ लेने के बाद कोई और बात करे तो आप फिर से कलिमा पढ़ने लगे। जब वह भी कलिमा पढ़ ले तो आप चुप हो जाएं।

मस'ला ३— जब मरने वाले का सांस उखड़ जाये यानी सांस की धौंकनी जल्दी-जल्दी चलने लगे। टांगें इतनी ढीली पड़ जाएं कि खड़ी न हो सकें। नाक टेढ़ी हो जाए कनपटियां बैठ जाएं। तो समझना चाहिए कि मौत आ गई। उस वक़्त आप कलिमा जोर से

पढ़ना शुरू कर दें।

मस'ला ४- सूर: यासीन (बाईसवां पारा कुरआन शरीफ) पढ़ने से मौत की सख्ती कम हो जाती है। यह उसके सरहाने या और कहीं उसके पास बैठकर पढ़ें या किसी से पढ़वायें।

मस'ला ५- उस वक़्त कोई ऐसी बात न करें कि मरने वाले का दिल दुनिया की तरफ़ मायल (आकृष्ट) हो जाये क्योंकि वह वक़्त दुनिया से जुदाई और अल्लाह तआला की बारगाह (समक्ष) में हाज़िरी (उपस्थिति) का है। उस वक़्त ऐसे काम और ऐसी बातें की जाएं ताकि उसका दिल दुनिया से फिर कर अल्लाह की तरफ़ हो जाए क्योंकि मुर्दे की ख़ैरख़ाही (भलाई) इसी में है। ऐसे वक़्त में बाल-बच्चों को सामने लाना और वह चीज़ जिससे उसको बहुत ज़्यादा रग़बत (मोह, लगाव, मुहब्बत) थी उसके सामने लाना ताकि उसका दिल उनकी तरफ़ लग जाये और उसका मोह उसके दिल में समा जाये-बड़ी बुरी बात है। अगर वह खुदा-न-खास्ता दुनिया की मुहब्बत अपने दिल में लेकर मरा तो यह मौत ठीक नहीं।

मस'ला ६- जब वह मर जाए तो सब आ'जा (अंग) ठीक कर दें। फिर किसी कपड़े से उसका मुंह इस तरह बांधे कि कपड़ा ठोड़ी के नीचे से निकाल कर उसके दोनों सिरों पर ले जाएं और गिरह दें ताकि मुंह न फैला सके। आंखें बन्द कर दें, पैर के दोनों अंगूठे मिलाकर बांध दें ताकि टांगें न फैल जाएं। फिर चादर उढ़ा दें और महलाने-धुलाने में जितनी भी जल्दी हो सके करें।

मस'ला ७- मुंह वगैरा बन्द करते वक़्त बिस्मिल्लाहि वअला मिल्लति रसूलिल्लाह ०

بِسْمِ اللَّهِ وَعَلَىٰ مِلَّةِ رَسُولِ اللَّهِ

(शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से और मुझे रसूलुल्लाह सल्ल० की मिल्लत के लिए कायम रख) पढ़ें।

मस'ला ८- मर जाने के बाद उसके पास लोबान या अगरबत्ती जैसी खुशबू सुलगा दी जाए और उसके पास हैज़ व निफास वाली

कोई औरत न रहे।

मस'ला १— मर जाने के बाद जब तक उसे नहला न दिया जाये उसके पास कुरआन शरीफ पढ़ना ठीक नहीं है।

2. नहलाना

मस'ला १— जब गोर व कफन (अन्त्येष्टि) का सामान हो जाए और नहलाया जाये पहले किसी तख्त या बड़े तख्त को लोबान या अगरबत्ती वगैरा खुशबूदार चीज़ की धुनी दी जाए। उस तख्त या तख्ते पर दो, तीन, पांच या सात बार चारों तरफ धुनी देकर मुर्दे को उस पर लिटा दें और उसके कपड़े उतार लें और कोई कपड़ा नाफ से लेकर घुटनों तक डाल दें कि उतना बदन घुपा रहे।

मस'ला २— अगर नहलाने की कोई जगह अलग है कि पानी अलग से बह जायेगा तो खैर, बरना तख्त या तख्ते के नीचे गढ़ा खुदवा लें कि सारा पानी उसी में जमा हो जाए।

मस'ला ३— नहलाने का तरीका यह है कि पहले मुर्दे को इस्तिजा (योनियों को गन्दगी से پاک करना) करा दें, लेकिन उसके घुटनों और इस्तिजे की जगह अपना हाथ न लगाएं और उसे देखें भी नहीं। यह काम अपने हाथ में कोई कपड़ा लपेट कर करना चाहिए और जो कपड़ा नाफ से घुटनों तक पड़ा है उसके अन्दर तक धुलाएं। फिर उसे बुजू कराएं लेकिन कुल्ली न कसायें और न नाक में पानी ही डालें और न पहुंचों तक हाथ धुलायें बल्कि पहले मुंह धुलाएं कोहनी समेत हाथ, फिर सर का मसह (फिर दोनों पैर) अगर तीन बार रुई पानी में भिगोकर दांतों और मसूढ़ों पर फेर दी जाए और नाक के दोनों सुराखों में फेर दी जाय तो भी जायज़ है। अगर मुर्दा नापाकी की हालत है ज या निफ़ास में मर जाए तो इस तरह से मुंह और नाक में पानी पहुंचाना जरूरी है और नाक, मुंह और कानों में रुई भर दें ताकि

बुझू कराते और नहलाते वक़्त पानी न जाने पाये। जब बुझू करा चुकें तो सर को गुलछैरू, बेसन या साबुन मलकर धोएं ताकि वह साफ हो जाये। मुर्दे को बायीं करवट लिटाकर बेरी के पत्ते डालकर पकाया हुआ हल्का गर्म पानी तीन बार सर से पैर तक डालें यहां तक कि बायीं करवट तक पहुंच जाए। फिर उसे दाहिनी करवट लिटायें और उसी तरह सर से पैर तक तीन बार इतना पानी डालें कि पानी दाहिनी करवट तक पहुंच जाए। उसके बाद मुर्दे को अपने बदन की टेक लगाकर ज़रा बिठायें और उसके पेट को आहिस्ता-आहिस्ता मलें और दबाएं। अगर पाख़ाना निकले तो साफ कर दें। उसके बाद उसे फिर बाईं करवट लिटा दें और काफ़ूर पड़ा हुआ पानी सर से पैर तक तीन बार डालें। फिर सारा बदन किसी कपड़े से साफ करके कफना दें।

मस'ला ४— अगर बेरी के पत्ते डालकर पकाया हुआ पानी न हो तो सादा हल्का गर्म पानी भी काफी है। उससे इसी तरह तीन बार नहला दें कभी भी मुर्दे को बहुत तेज़ गर्म पानी से नहलाना ठीक नहीं है। मुर्दे को इस तरह नहलाना सुन्नत है। अगर इस तरह तीन बार न नहला कर केवल एक बार ही सारे बदन को धो दिया सब भी फर्ज़ अदा हो जाएगा।

मस'ला ५— जब मुर्दे को कफन पर रखें तो उसके सर पर इत्र लगा दें। अगर मरने वाला मर्द है तो उसकी दाढ़ी पर भी इत्र लगाना चाहिए। फिर माथे, नाक, दोनों हथेलियों, घुटनों और दोनों पांव पर काफ़ूर मल दें। कफन में इत्र लगाना या कान में उसकी फुरैरियां रखना जायज़ नहीं है।

मस'ला ६— अगर मुर्दा मर्द है और कोई मर्द नहलाने वाला नहीं है तो जो औरत उसकी महरम है वही नहलाए। दूसरी को हाथ लगाना ठीक नहीं अगर कोई महरम औरत न हो तो मुर्दे को तयम्मुम करा दें लेकिन उसके बदन पर हाथ न लगाएं बल्कि वह औरत अपने हाथ में तयम्मुम करने से पहले दस्ताने पहन ले।

मस'ला ७— बालों की कंघी करें, न नाखुन काटें और न कहीं के

बाल ही काटें।

मस'ला ८— शौहर के मर जाने पर उसकी बीवी को उसे नहलाना और कफनाना दुरुस्त है। अगर बीवी मर जाये तो शौहर को उसका बदन छूना या हाथ लगाना दुरुस्त नहीं है। कपड़े के ऊपर से भी हाथ लगाना दुरुस्त नहीं। हाँ! देख सकता है।

मस'ला ९— हैज़ या निफास वाली औरत मुर्दे को न नहलाए कि यह मकरूह और मना है।

मस'ला १०— अच्छा यह है कि जिस औरत का रिश्ता मुर्दे से ज़्यादा करीब हो वही नहलाए और वह न नहला सके तो कोई दीन दार (ईमानदार, नेक) औरत नहला सकती है।

मस'ला ११— अगर नहलाने में कोई बुराई देखी जाये तो किसी से उसके बारे में न कहा जाये। हाँ, अगर कोई खुल्लम-खुल्ला कोई गुनाह करता हो। जैसे: शराबी या जानी (जिना करने वाला, भ्रष्ट) हो या औरत नाचती या गाने-बजाने का काम करती या रंडी (वेश्या) थी तो ऐसी बातें कह देना दुरुस्त है ताकि और लोग ऐसी बातों से बचें और तौबा करें।

मस'ला १२— अगर कोई आदमी दरिया में डूब कर मर गया हो तो जिस वक़्त उसे निकाला जाये उस वक़्त उसको गुस्त देना वाजिब है।

मस'ला १३— अगर किसी आदमी का सर ही कहीं देखा जाये तो उसे गुस्त न दिया जायेगा। वैसे-ही दफन कर दिया जाये। अगर किसी का आधा या उससे ज़्यादा बदन कहीं मिले तो उसे नहलाना ज़रूरी है। चाहे वह सर के साथ मिले या बिना सर के। और अगर आधे बदन से ज़्यादा न हो बल्कि आधा ही हो तो अगर सर के साथ मिले तो गुस्त नहीं कराया जायेगा—चाहे सर के साथ मिले या बिना सर के मिले।

मस'ला १४— अगर कोई अजीज़ काफ़िर हो और वह मर जाये

तो उसकी लाश उसके हम-मजहब (सहधर्मी) को दे दी जाये। अगर उसका कोई हममजहब न हो या हो मगर वह उसे लेना न चाहे तो मजबूरी में मुसलमान उस काफिर को नहलाये मगर मसनून तरीके से नहीं यानी उसे वुजू न कराये। सर साफ नहीं कराया जाये। बदन में काफूर वगैरा न मला जाये बल्कि जिस तरह किसी नापाक चीज को धोया जाता है, उसी तरह उसे भी धोया जाये क्योंकि काफिर धोने से पाक न होगा।

मस'ला १५— बागी लोग या डाकू अगर मारे जाएं तो उनकी लाशों को गुस्ल न दिया जाये, बशर्त कि वे ठीक लड़ाई के वक़्त मारे गये हों।

मस'ला १६— मुरतद (काफिर, वह जो मुसलमान होकर दूसरा धर्म अपना ले) अगर मर जाये तो भी गुस्ल न दिया जाये और अगर उसके हम-मजहब उसकी लाश मांगें तो उन्हें भी उसे न दिया जाए।

मस'ला १७— अगर पानी न होने की वजह से किसी मयित (लाश, मुर्दा) को तयम्मूम कराया गया हो और बाद में पानी मिल जाये तो उसे नहला देना चाहिए।

3. कफ़न

मस'ला १— मर्द का कफ़न तीन कपड़े हैं—एक चादर, एक इज़ार (तहमद, लुंगी, धोती) और एक कुर्ता।

मस'ला २— मर्द के कफ़न में अगर दो कपड़े—चादर और इज़ार ही हों, तब भी कुछ हर्ज नहीं है। मगर दो से कम कपड़े देना मकरूह है। लेकिन अगर कोई मजबूरी और लाचारी हो तो दूसरी बात है।

मस'ला ३— औरत का पांच कपड़ों में कफ़नाना सुन्नत है—एक कुर्ता, दूसरे इज़ार, तीसरे सीना बन्द, चौथे चादर, पांचवें सरबन्द।

इज़ार सर से लेकर पांच तक होना चाहिए और चादर उससे एक हाथ बड़ी हो, कुर्ता गले से पांच तक होना चाहिए। मगर उसमें कलियाँ और आस्तीनें न हों सरबन्द तीन हाथ लम्बा हो। सीना बन्द छातियों से रानों तक चौड़ा और इतना लम्बा हो कि बंध जाये।

मस'ला ४— अगर कोई पांच कपड़ों में न कफनाये बल्कि तीन कपड़ों—एक इज़ार, दूसरा चादर, तीसरे सरबन्द—में कफनाये तो यह भी दुरुस्त है। और इतना कफन भी काफी है मगर तीन कपड़ों से कम देना मकरूह है। हां अगर कोई मजबूरी य लाचारी हो तो कम भी दुरुस्त है।

मस'ला ५— सीना बन्द अगर छातियों से नाफ तक हो तब भी दुरुस्त है लेकिन जानुओं तक होना ज्यादा अच्छा है।

मस'ला ६— पहले कफन को तीन, पांच या सात बार लोबान की धुनी दी जाये तब इसमें मुर्दा कफनाया जाये।

मस'ला ७— कफनाने का तरीका यह है कि पहले चादर बिछाएं फिर इज़ार, उसके ऊपर कुर्ता। फिर मुर्दे को उसके ऊपर ले जाकर पहले कुर्ता पहनाएं और सर के बालों को दो हिस्से करके कुर्ते के ऊपर सीने पर डाल दें। एक हिस्सा दाहिनी तरफ और दूसरा बायीं तरफ। उसके बाद सरबन्द और बालों पर लपेट दें। मगर न उसे बांधें और न लपेटें। फिर इज़ार लपेट दें। पहले बायीं तरफ, फिर दायीं तरफ। फिर किसी धज्जी से पैर और सर की तरफ कफन बांधे और एक बन्द से कमर के पास भी बांध दें ताकि रास्ते में कहीं खुल न जाये।

मस'ला ८— सीनाबन्द को अगर सरबन्द के बाद इज़ार लपेटने से पहले ही बांध दिया तो यह भी जायज़ है और अगर सब कफनों के ऊपर से बांधे तब भी दुरुस्त है।

मस'ला ९— जब मुर्दे को कफना चुकें तो रुखसत करें ताकि मर्द नमाज़ पढ़कर दफना दें।

मस'ला १०— औरतें अगर जनाजे में नमाज़ पढ़ें तो जायज़ है।

मस'ला ११— कफ़न या कब्र में इकरारनामा, अपने पीर का शज़रा या कोई दुआ वगैरा रखना दुरुस्त नहीं। इसी तरह कफ़न या सीने पर काफ़ूर या रोशनाई से कलिमा लिखना भी दुरुस्त नहीं। अलबत्ता का'बा शरीफ़ का गिलाफ़ या अपने पीर का रुमाल वगैरा कोई कपड़ा तबरुक (बरकत, प्रसाद) के तौर पर रख देना दुरुस्त है।

मस'ला १२— जो बच्चा ज़िन्दा पैदा हुआ मगर थोड़ी ही देर के बाद मर गया या पैदा होने के बाद ही मर गया तो यह भी इस कायदे से नहलाया जाये और कफ़नाने के बाद नमाज़ पढ़ी जाये फिर दफ़न कर दिया जाये और उसका कुछ नाम भी रख दिया जाये।

मस'ला १३— मां के पेट से बच्चा (लड़का) मरा हुआ पैदा हुआ और पैदा होते वक़्त ज़िन्दगी की कोई अलामत नहीं पाई गई उसे भी इसी तरह नहलाओ लेकिन कायदे के मुताबिक़ कफ़न न दो बल्कि किसी एक कपड़े में लपेट कर दफ़न कर दो और नाम उसका ज़रूर रख देना चाहिए।

मस'ला १४— अगर छोटी लड़की जो अभी जवान नहीं हुई लेकिन जवानी के करीब पहुंच गई, मर जाए तो भी वही पांच कपड़े सुन्नत हैं जो जवान औरत के लिए हैं। अगर पांच कपड़े न दें तो तीन देने ही काफ़ी हैं। मतलब यह है कि जो हुक्म जवान औरत का है वही कुंवारी और छोटी लड़की का भी है। मगर जवान के लिए वह हुक्म ताकीदी है और कम उम्र के लिए बेहतर है।

मस'ला १५— जो लड़की बहुत छोटी हो और जवानी के करीब भी न हुई हो, उसके लिए अच्छा यही है कि पांच कपड़े—इज़ार और चादर देना भी दुरुस्त है।

मस'ला १६— जो चादर जनाजे के ऊपर यानी चारपाई पर डाली जाती है वह कफ़न में शामिल नहीं है। कफ़न बस इतना ही है

जो बताया गया है।

मस'ला १७— जिस शहर में कोई मरे वहीं उसे दफन किया जाये। दूसरी जगह ले जाना ठीक नहीं है। अलबत्ता कोई जगह ज्यादा दूर न हो तो वहां ले जाने में कोई हर्ज भी नहीं है।

मस'ला १८— अगर हमल गिर जाये तो बच्चे के हाथ, पांव, मुंह, नाक वगैरा कुछ न बनें हों तो न नहलाए और न कफनायें बल्कि किसी कपड़े में लपेट कर एक गद्दा खोद कर गाड़ दे अगर उस बच्चे के कुछ हिस्से बन गए हों तो उसका वही हुक्म है जो मुर्दा बच्चा होने का है यानी नाम रखा जाए और नहलाया जाये लेकिन कायदे के मुताबिक कफन न दिया जाये। और न नमाज़ ही पढ़ी जाये बल्कि कपड़े में लपेट कर दफन कर दिया जाये।

मस'ला १९— लड़के का सर बाहर निकला उस वक़्त वह जिन्दा था, फिर मर गया तो उसका वही हुक्म है जो मुर्दा पैदा होने का है। अलबत्ता अगर ज्यादा हिस्सा निकल आया फिर उसके बाद मरा तो यह समझा जाएगा कि जिन्दा पैदा हुआ। अगर सर की तरफ से पैदा हुआ तो सीने तक निकलने से समझेंगे कि ज्यादा हिस्सा निकल आया और अगर उल्टा पैदा हुआ तो नाक तक निकलना चाहिए।

मस'ला २०— अगर इन्सान का कोई हिस्सा या आधा जिस्म बगैर सर के पाया जाये तो उसको भी किसी-न-किसी कपड़े में लपेट देना काफी है। हां! अगर आधे जिस्म के साथ सर भी हो या आधे से ज्यादा हिस्सा जिस्म का हो अगरचे सर न हो, फिर मसनून कफन देना होगा।

मस'ला २१— किसी इन्सान की कब्र खुल जाये और किसी वजह से उसकी लाश बाहर निकल आये और उस पर कफन न हो तो उसे भी मसनून कफन देना चाहिए, बशर्त कि वह लाश फटी न हो और अगर फट गई हो तो सिर्फ कपड़े में लपेट देना काफी है।

4. जनाजे की नमाज़

मस'ला १— नमाजे जनाज़ा वाजिब होने की वही सब शर्तें हैं जो और सब नमाज़ों की ब्यान की जा चुकी हैं। हां! इसमें एक और शर्त और ज़्यादा है और वह यह है कि उस आदमी की मौत का पता भी हो। इसलिए जिसको यह खबर न होगी वह मजबूरी है। नमाजे जनाज़ा उस पर फर्ज नहीं है।

मस'ला २— नमाजे जनाज़ा के सही होने के लिए दो किस्म की शर्तें हैं—एक किस्म की वे शर्तें जो नमाज़ पढ़ने वालों से ताल्लुक रखती हैं। वे वही हैं जो और नमाज़ों के लिए ब्यान हो चुकी हैं। यानी पाकी, औरत का पर्दा, क़िबले की तरफ मुंह करना और नीयत। हां वक़्त उसके लिए शर्त नहीं और उसके लिए तयम्मुम नमाज़ न मिलने के ख़्याल से जायज़ है। जैसे: नमाजे जनाज़ा हो रही हो और बुजू करने में यह ख़्याल हो कि नमाज़ ख़त्म हो जायेगी तो तयम्मुम कर ले मगर और नमाज़ों में जिनमें वक़्त चले जाने का डर हो तो तयम्मुम जायज़ नहीं।

मस'ला ३— आजकल कुछ आदमी जनाजे की नमाज़ जूता पहने हुए पढ़ते हैं। उनके लिए यह बात ज़रूरी है कि वे जहां खड़े हों और दोनों जूते पाक हों और जूता पैर से निकाल दिया जाये और उस पर खड़े हों तो सिर्फ़ जूतों का पाक होना ज़रूरी है। दूसरी किस्म की शर्तें वे हैं जिनका मैयत से ताल्लुक है, वे यह हैं—

शर्त नं०-१ मैयत का मुसलमान होना। काफ़िर और मुरतद की नमाज़ ठीक नहीं। मुसलमान अगरचे फ़ासिफ़ और बिदअती हो उसकी नमाज़ पढ़ना दुरुस्त है।

मस'ला ४— जिस लड़के का बाप या माँ मुसलमान हो वह लड़का मुसलमान समझा जायेगा और उसकी नमाज़ पढ़ी जाएगी।

मस'ला ५— मैयत से मुराद वह शख्स है जो ज़िन्दा पैदा होकर मर गया हो और अगर मरा हुआ लड़का पैदा हुआ हो तो उसकी नमाज़ दुरुस्त नहीं।

शर्त नं०—२ मैयत का बदन हर तरह की नापाकी से پاک होना। हां! अगर हकीकी नापाकी (पाखाना, पेशाब या मनी) उसके बदन से निकली और इससे उसका बदन नापाक हो जाये तो कुछ बुराई नहीं, नमाज़ दुरुस्त है।

मस'ला ६— अगर कोई मुसलमान बगैर नमाज़ पढ़ाये हुए दफन कर दिया गया हो तो उसकी नमाज़ उसके कब्र पर पढ़ी जायेगी जब तक उसकी लाश के फट जाने का अदेशा न हो। यह ख्याल हो कि अब लाश फट गयी होगी तो फिर नमाज़ न पढ़ी जाये। लाश फटने की मुद्त हर जगह के लिए अलग-अलग है। कुछ लोगों ने इसे तीन दिन और कुछ ने एक महीना बताया है।

मस'ला ७— जहाँ मैयत रखी हो उस जगह का पाक होना शर्त नहीं। अगर मैयत पाक पलंग या तख्त पर हो तो ठीक है। अगर पलंग या तख्त भी नापाक हो या पलंग या तख्त के बजाए नापाक ज़मीन पर रख दी जाये तो इस सूरत में एक राय नहीं है। कुछ कहते हैं कि जगह की पाकी शर्त है इसलिए नमाज़ वहीं होगी और कुछ के लिए यह शर्त नहीं इसलिए नमाज़ सही हो जायेगी।

शर्त नं०—३ मैयत के जिस्म पर ज़रूरी कपड़ों का होना। अगर मैयत बिल्कुल नंगी हो तो उसकी नमाज़ दुरुस्त न होगी।

शर्त नं०—४ मैयत को नमाज़ पढ़ने वाले के आगे होना। अगर मैयत नमाज़ी के पीछे हो तो दुरुस्त नहीं है।

शर्त नं०—५ मैयत या जिस चीज़ पर मैयत हो—उसका ज़मीन पर रखा हुआ होना। अगर मैयत को लोग अपने हाथों पर उठाये हुए हों या वह किसी गाड़ी या जानवर पर हो और इसी हालत में उसकी नमाज़ पढ़ी जाये तो सही न होगी।

शर्त नं०-६ मैयत का वहां मौजूद होना। अगर मैयत नमाज़ के वक़्त मौजूद नहीं तो नमाज़ सही न होगी।

मस'ला ७- नमाज़ जनाज़ा में दो बातें फर्ज़ हैं : १- चार बार अल्लाहु अकबर कहना। हर तकबीर एक रकअत के बराबर समझी जायेगी। २-क़याम यानी खड़े होकर नमाज़ जनाज़ा पढ़ना। जिस तरह फर्ज़ और वाजिब नमाज़ों में खड़ा होना फर्ज़ है और बिना किसी मजबूरी या उज़्र के इसका छोड़ देना जायज़ नहीं।

मस'ला ८- रुकू, सज्दा, क़ीयाम वगैरा इस नमाज़ में नहीं होता।

मस'ला ९- नमाज़ जनाज़ा में तीन बातें मसनून हैं १- अल्लाह तआला की हम्द करना। २- नबी सल्ल० पर दुरुद पढ़ना। ३- मैयत के लिए दुआ करना। जमाअत इसमें शर्त नहीं है। इसलिए अगर एक आदमी भी जनाज़े की नमाज़ अदा करे तो फर्ज़ अदा हो जाएगा। चाहे वह मर्द हो या औरत, बालिग हो या नाबालिग।

मस'ला १०- यहां जमाअत की ज़्यादा ज़रूरत है इसलिए कि यह मैयत के लिए दुआ है और कुछ मुसलमानों का जमा होकर बारगाहे इलाही में किसी बात के लिए दुआ करना बहुत खूबियां रखता है-मकबूल होने और रहमत के नाज़िल होने के लिए।

मस'ला ११- नमाज़ जनाज़ा का मसनून व मुस्तहब तरीका यह है कि मैयत को आगे रखकर इमाम उसके सीने के सामने खड़ा हो जाये और सब लोग यह नीयत करें-

نَوَيْتُ أَنْ أَصَلِّيَ صَلَاةَ الْجَنَازَةِ لِلَّهِ تَعَالَى وَدُعَاءَ لِمَيِّتٍ

नवैतु अन् उसल्लिय सलातिल जना-ज़-ति लिल्लाहि तआला व दुअतलिलमय्यिति

यह नीयत करके दोनों हाथ, तकबीर तहरीमा की तरह कानों तक उठाकर एक बार 'अल्लाहु अकबर' कहकर दोनों हाथ नमाज़

की तरह बांध ले। फिर 'सुल्हानकल्ला' आखिर तक पढ़ें। इसके बाद फिर एक बार अल्लाहु अकबर कहें। मगर इस बार हाथ न उठाये। बाद इसके दुरुद शरीफ पढ़ा जाये जो नमाज़ में पढ़ा जाता है। फिर एक बार 'अल्लाहु अकबर' कहें। अगर वह बालिग हो, चाहे वह मर्द हो या औरत, यह दुआ पढ़े :

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِحَيِّنَا وَمَيِّتِنَا وَشَاهِدِنَا وَغَائِبِنَا
وَصَغِيرِنَا وَكَبِيرِنَا وَانَّا اَللّٰهُمَّ مِنْ اَحْيَيْتُهُ مِثْلَ فَاخِيهِ عَلٰى
الْاِسْلَامِ وَمَنْ تَوَقَّيْتُهُ مِثْلًا وَمَنْ تَوَقَّيْتُهُ عَلٰى الْاِيْمَانِ

अल्लाहुम्मग़िफ़र लिहयिना व मैयतिना व शाहिदिना व गाइबिना
व सगीरिना व कबीरिना व उन्साना। अल्लाहुम्मम मन अह्यैतहु
मिन्ना फअह्यिही अलल इस्लामि व मन तवफकैतहु मिन्ना
फत-वफफहु अलल ईमानि०

(ऐ अल्लाह ! हमारे जिन्दों, मुर्दों, उपस्थित, अनुपस्थित, छोटों-बड़ों
तथा मर्दों औरतों को बख्श दे। ऐ अल्लाह ! हम में से जिसे तू ज़िन्दा
रखे, उसे इस्लाम पर ज़िन्दा रख और हम में से जिसे मौत दे उसे
ईमान पर मौत दे)।

और अगर मैयत नाबालिग हो तो यह दुआ पढ़े।

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ لَنَا فَرَطًا وَاجْعَلْهُ لَنَا اَجْدًا وَذَخْرًا وَاجْعَلْهُ
لَنَا شَافِعًا وَمُشَفَّعًا

अल्लाहुम्मजअल्हु लना फरतों व जअलहु लना अज्रें व जुखरें
वजअल्हु लना शाफिऔ वमुशफफअः।

(ऐ अल्लाह ! इस बच्चे को हमारी मुक्ति के लिए आगे जाने वाला
बना और इसकी जुदाई की मुसीबत को सवाब का हेतु बना, इसे
हमारी मुक्ति कराने वाला बना और इसको मुक्ति प्रदान कर)

और अगर नाबालिग लड़की हो तो भी यही दुआ है। बस फर्क इतना है कि—

إِجْلَاهَا

(बना दे) की जगह :

‘अज्जलहा’ (बना दे) और

‘शाफिअें व मुशफिअः’

(बख्शा हुआ और बख्शाने वाला)

की जगह :

‘शाफिअतों व मुशफिअः’ شَافِعًا وَمُشَفِّعًا

पढ़े। जब यह दुआ पढ़ चुके तो फिर एक बार अल्लाहु अकबर कहे और इस बार भी हाथ न उठाये। फिर इस तकबीर के बाद सलाम फेर दे। जिस तरह नमाज़ में सलाम फेरते हैं। इस नमाज़ में अतहीय्यात और कुरआन मजीद की फिरअत बगैरा नहीं है।

मस'ला १३— नमाज़े जनाज़ा इमाम और मुक्तदी दोनों के लिए बराबर है। सिर्फ इतना फर्क है कि इमाम तकबीरें और सलाम ऊंची आवाज़ से कहेगा और मुक्तदी आहिस्ता आवाज़ से पढ़ेगा।

मस'ला १४— जनाज़े की नमाज़ में मुस्तहब है कि हाज़िरीन की तीन सफें कर दी जाएं। यहां तक कि अगर सिर्फ सात आदमी हों तो एक आदमी उन में से इमाम बना दिया जाये और पहली सफ में दो और तीसरी में एक।

मस'ला १५— जनाज़े की नमाज़ भी उन चीज़ों से फासिद हो जाती है जिनमें दूसरी नमाज़ों में खराबी आ जाती है। बस इतना फर्क है कि जनाज़े की नमाज़ में कहकहे से वुजू नहीं जाता औरत के बराबर में खड़े होने से भी खराबी नहीं पड़ती।

मस'ला १६— जनाजे की नमाज़ उस मस्जिद में पढ़ना मकरूह तहरीमी है जो पांच वक़्त नमाज़ों, जुमा या ईदैन की नमाज़ों के लिए बनाई गई हो। चाहे जनाजा मस्जिद के अन्दर हो या मस्जिद से बाहर हो और नमाज़ पढ़ने वाले अन्दर हों।

मस'ला १७— मैयत की नमाज़ में इस वजह से देर करना, ताकि जमाअत ज्यादा हो जाये मकरूह है।

मस'ला १८— जनाजे की नमाज़ बैठकर या सवारी की हालत में पढ़ना जायज़ नहीं जबकि कोई मजबूरी न हो।

मस'ला १९— अगर एक ही वक़्त में कई जनाजें जमा हो जाएं तो बेहतर यह है कि हर जनाजे की नमाज़ अलग पढ़ी जाए और अगर सब जनाजों की एक ही नमाज़ पढ़ी जाए तब भी जायज़ है और उस वक़्त चाहिए कि सब जनाजों की सफ़ कायम कर दी जाये जिसकी बेहतर सूरत यह है कि एक जनाजे के आगे दूसरा जनाजा रख दिया जाये कि सबके पैर और सर एक तरफ़ हों और यह सूरत इसलिए बेहतर है कि इसमें सबका सीना इमाम के सामने हो जाये तो मसनून है।

मस'ला २०— अगर जनाजे मर्द, लड़के और औरत के हों तो इस तरतीब से उन की सफ़ कायम कर दी जाये कि इमाम के करीब मर्दों के जनाजे, उनके बाद लड़कों के और उनके बाद बालिग औरतों के और उसके बाद नाबालिग लड़कियों के।

मस'ला २१— अगर कोई आदमी जनाजे की नमाज़ में ऐसे वक़्त पहुंचे कि कुछ तकबीरें उसके आने से पहले हो चुकी हों तो जितनी तकबीरें हो चुकी हों उनके हिसाब से वह आदमी मसबूक समझ जायेगा। उसे चाहिए कि आते ही और नमाज़ों की तरह तकबीरें तहरीमा कहकर शरीक हो जाये बल्कि इमाम की तकबीर का इन्तज़ार करे। जब इमाम तकबीर कहे तो यह भी उसके साथ तकबीर कहे। यह तकबीर उसके लिए तकबीरें तहरीमा होगी। फिर जब इमाम सलाम फेर दे तो यह आदमी अपनी गई हुई तकबीरों को अदा कर

ले और उसमें कुछ पढ़ने की ज़रूरत नहीं। अगर कोई आदमी ऐसे वक़्त पहुँचे कि इमाम चौथी तकबीर कह चुका हो तो वह आदमी उस तकबीर के लिए मस्बूक न समझा जायेगा उसे चाहिए कि उसी वक़्त तकबीर कहकर इमाम के सलाम से पहले शरीक हो जाए और नमाज़ ख़त्म करने के बाद अपनी गई हुई तकबीरों को फिर से दोहरा ले।

मस'ला २२— अगर कोई आदमी पहली तकबीर या किसी और तकबीर के वक़्त मौजूद था और नमाज़ में शरीक होने के लिए तैयार था मगर सुस्ती की वजह से शरीक न हो सका तो उसको फ़ौरन तकबीर कह कर नमाज़ में शरीक होना चाहिए। इमाम की दूसरी तकबीर का उसे इन्तज़ार न करना चाहिए।

मस'ला २३— जनाज़े की नमाज़ का मस्बूक जब अपनी छुटी हुई तकबीरों को करे और डर हो कि अगर दुआ पढ़ेगा तो देर हो जायेगी और जनाज़ा उसके सामने से उठा लिया जायेगा, तो दुआ न पढ़े।

मस'ला २४— जनाज़े की नमाज़ में इमामत का हक़ सबसे ज़्यादा बादशाह को है अगरचें परहेज़गारी में उससे बेहतर लोग भी वहाँ मौजूद हों। अगर बादशाह वहाँ मौजूद न हो तो उसका नायब यानी जो आदमी उसकी तरफ़ से हाकिमे शहर हो वह इमामत करने का हक़दार है। अगर वह भी न हो तो काज़ी-ए-शहर। वह भी न हो तो उसका नायब इन लोगों के होते हुए दूसरे को इमाम बनाए बिना उनके हुक्म से जायज़ नहीं। इन्हीं का इमाम बनाना वाजिब है। अगर इनमें से कोई वहाँ मौजूद न हो तो उस मुहल्ले का इमाम हक़ रखता है। बशर्त कि मैयत के रिश्तेदारों में से कोई आदमी उससे बड़ा न हो वरना मैयत के रिश्तेदार जो उसके वली होने का हक़ रखते हों, इमामत का हक़ रखते हैं या वह जिसे वे इज़ाज़त दे। अगर बिना इज़ाज़त मैयत के वली के किसी ऐसे आदमी ने नमाज़ पढ़ा दी हो जिसे इमामत का हक़ नहीं है तो वली को एख़्तियार है कि फिर दोबारा नमाज़ पढ़े। यहाँ तक कि अगर मैयत दफ़न हो चुकी हो तो उसकी कब्र पर नमाज़ पढ़ सकता है जब कि लाश फट जाने का ख़याल न हो।

5. मैयत का दफनाना

मस'ला १— मैयत का दफन इसी तरह फर्ज कियाया है जिस तरह उसका गुस्ल और नमाज़ है।

मस'ला २— जब मैयत की नमाज़ से फारिग हो जाए तो उसी वक़्त उसे दफन करने ले जाए, जहाँ कब्र खुदी हुई है।

मस'ला ३— अगर मैयत कोई दूध पीता बच्चा या उससे कुछ बड़ा हो तो लोगों को चाहिए कि उसको हाथों में ले जाए यानी एक उसे अपने दोनों हाथों पर उठा ले फिर उसे दूसरा आदमी ले ले इसी तरह बदलते हुए ले जाएं। अगर मैयत कोई बड़ा आदमी हो तो उसको किसी चारपाई वगैरा पर रखकर ले जाएं और उसके चारों पायों को एक-एक आदमी उठाये। मैयत की चारपाई हाथों से उठा कर कन्धों पर रखना चाहिए। माल असबाब की तरह कन्धों पर लादना मकरूह है। इसी तरह बिना मजबूरी के उसका किसी जानवर या गाड़ी वगैरा पर रखकर ले जाना मकरूह है और मजबूरी हो तो कराहियत के साथ जायज़ है जैसे कब्रिस्तान बहुत दूर हो।

मस'ला ४— मैयत को उठाने का मुस्तहब तरीका यह है कि पहले उसका अगला दाहिना पाया अपने दाहिने कन्धे पर रखकर कम-से-कम दस कदम चले। उसके बाद पिछला दाहिना पाया दाहिने कन्धे पर रख कर कम-से-कम दस कदम चले। बाद इसके अगला बायां पाया बायें कन्धे पर रखकर कम से कम दस कदम घले, फिर पिछला बायां पाया बायें कन्धे पर रखकर कम-से-कम दस कदम चले ताकि चारों पायों को मिलाकर चालीस कदम हो जाएं।

मस'ला ५— जनाजे का तेज़ कदम ले जाना मसनून है। मगर इतना तेज़ नहीं कि लाश हिल जाये।

मस'ला ६— जो लोग जनाजे से साथ जाएं उनको इससे पहले

कि जनाज़ा कन्धों से उतारा जाये बैठना मकरुह है। हां, अगर कोई ज़रूरत बैठने की हो तो कोई हर्ज भी नहीं है।

मस'ला ७— जो लोग जनाज़े के साथ हों उनको जनाज़े के पीछे चलना मुस्तहब है, अगर जनाज़े के आगे चलना भी जायज़ है। हां! अगर सब लोग जनाज़े के आगे हो जाएं तो मकरुह है। इसी तरह जनाज़े के आगे किसी सवारी पर चलना भी मकरुह है।

मस'ला ८— जनाज़े के साथ पैदल चलना मुस्तहब है और अगर किसी सवारी पर हो तो जनाज़े के पीछे चले।

मस'ला ९— जनाज़े के साथ जो लोग हों उनको कोई दुआ या ज़िक्र जोर से पढ़ना मकरुह है।

मस'ला १०— मैयत की कब्र कम-से-कम उसके आधे कद के बराबर गहरी खोदी जाये और कद से ज्यादा न होनी चाहिए और उसके कद के मुताबिक लम्बी हो। बगली कब्र संदूकी के बराबर होनी चाहिए। हां, अगर ज़मीन बहुत नर्म हो कि बगली खोदने में कब्र के बैठ जाने का डर हो तो बगली न खोदी जाए।

मस'ला ११— जब कब्र तैयार हो चुके तो मैयत को कबले की तरफ से कब्र में उतारे। इसकी यह सूरत है कि जनाज़ा कब्र में एक तरफ रखा जाये और उतारने वाले कबले की तरफ मुंह करके खड़े होकर मैयत को उठा कर कब्र में रख दे।

मस'ला १२— कब्र में उतारने वालों का अकेला या दो होना मसनून नहीं। नबी करीम सल्ल० को आपकी कब्र मुकद्दस में चार आदमियों ने उतारा था।

मस'ला १३— मैयत को कब्र में रखते वक़्त :

بِسْمِ اللَّهِ وَعَلَى مِلَّةِ رَسُولِ اللَّهِ

‘बिस्मिल्लाहि व अला मिल्लति रसूलिल्लाह’

(शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से और मुझे रसूल सल्ल० की उम्मत के लिए कायम रख)

कहना मुस्तहब है।

मस'ला १४— कब्र में रख देने के बाद कफन की वह गिरह जो कफन के खुल जाने के डर से दी गई थी खोल दी जाए।

मस'ला १५— बाद इसके कच्ची ईंटों या नरकुल से बन्द कर दे। पक्की ईंटों या लकड़ी के तख्तों से बन्द करना मकरुह है। हां! जहाँ ज़मीन बहुत नर्म हो कब्र के बैठ जाने का डर हो तो पक्की ईंटों या लकड़ी के तख्तों रख देना या सन्दूक में रखना भी जायज़ है।

मस'ला १६— औरत को कब्र में रखते वक़्त पर्दा करके रखना मुस्तहब है और मैयत के बदन के ज़ाहिर हो जाने का डर हो तो पर्दा करना वाजिब है।

मस'ला १७— जब मैयत को रख चुके तो जितनी मिट्टी उसकी कब्र से निकली हो वह सब उस पर डाल दें। उससे ज़्यादा मिट्टी डालना मकरुह है।

मस'ला १८— कब्र में मिट्टी डालते वक़्त मुस्तहब है कि सरहाने की तरफ़ से शुरुआत की जाए और हर आदमी अपने दोनों हाथों से भर-भरकर कब्र में डाल दे। पहली बार मिट्टी डालते वक़्त पढ़ें :

مِنْهَا خَلَقَكُمْ मिन्हा खलक्नाकुम

(हमने इसमें अर्थात् ज़मीन में तुम्हें पैदा किया)

दूसरी बार :

وَفِيهَا نُعِيدُكُمْ 'वफीहा नुईदुकुम'

(और इसमें तुमको लौटा देंगे)

और तीसरी बार :

وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً أُخْرَى
तारतन 'उखरा

(और इसमें से फिर तमको निकालेंगे)

मस'ला १९— दफ़न के बाद थोड़ी देर तक कब्र पर ठहरना और मैयत के लिए बख़्शो जाने की दुआ करना या कुरआन मजीद पढ़कर उसका सवाब पहुंचाना मुस्तहब है।

मस'ला २०— मिट्टी डालने के बाद कब्र पर पानी छिड़कना मुस्तहब है।

मस'ला २१— किसी मैयत को—छोटी हो या बड़ी—मकान के अन्दर दफ़न नहीं करना चाहिए क्योंकि यह बात अम्बिया अलैहि० के साथ ख़ास है।

मस'ला २२— कब्र का चार मुरब्बा (वर्गाकार, चार बराबर भागों में बांटना) बनाना मकरुह है। मुस्तहब यह है कि कब्र ऊंट के कुहान की तरह उठी हुई बनाई जाए। उसकी ऊंचाई एक बालिशत या इससे ज़्यादा होनी चाहिए।

मस'ला २३— कब्र का एक बालिशत से ज़्यादा ऊंचा करना मकरुहे तहरीमी है। कब्र पर गव (घूना) करना मकरुह है।

मस'ला २४— कफ़न कर चुकने के बाद कब्र पर गुम्बद की तरह कोई इमारत सजावट के लिए बनाना हaram और मजबूरी की नीयत से मकरुह है। कब्र पर कोई चीज़ बतौर याददाश्त रखना जायज़ है बशर्ते कि कोई ज़रूरत हो करना जायज़ नहीं। लेकिन इस ज़माने में चूँकि लोगों ने अपने अकायद और आमाल को बहुत ख़राब कर लिया है और इन ख़राबियों से जायज़ भी नाजायज़ हो जाता है। इसलिए ऐसे काम बिल्कुल नाजायज़ होंगे।

मस'ला २५— अगर मैयत को कब्र में कबले की तरफ़ लिटाना

याद नहीं रहा और बाव दफन या मिट्टी डाल देने के बाद ख्याल आऊ तो उसे कबलाक करने के लिए उसकी कब्र खोलना जायज़ नहीं। हा अगर सिर्फ़ तख्ते रखे गए हों मिट्टी न डाली गई हो तो तख्ते हटाकर उसको कबलाक कर देना चाहिये।

मस'ला २६— रोने वाली औरत और बैन करने वालियों का जनाजे के साथ जाना मना है।

मस'ला २७— मैयत को कब्र में रखते वक़्त अज़ान कहना बिदअत है।

मस'ला २८— अगर इमाम जनाजे की नमाज़ में चार तकबीरों से ज़्यादा कहे तो हनफी मुक़्तदियों को चाहिए कि उन ज़ायद तकबीरों में इमाम का साथ न दें बल्कि ख़ामोशी से खड़े रहें। जब इमाम सलाम फेरे तो खुद भी सलाम फेर दें।

मस'ला २९— अगर कोई आदमी किरती या जहाज़ पर जाए और वहां से ज़मीन इतनी दूर हो कि लाश के ख़राब होने का डर हो तो उस वक़्त चाहिए कि गुस्ल तदफ़ीन और नमाज़ के बाद उसे दरिया में डाल दे। लेकिन अगर किनारा इतनी दूर न हो और वहां जल्दी उतरने की उम्मीद हो तो लाश को रख छोड़ें और ज़मीन में ही दफन कर दें।

मस'ला ३०— अगर किसी शख्स को नमाजे जनाज़ा की ख़ास दुआ याद न हो तो उसे सिर्फ़

اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ

“अल्लाहुम्म ग़फ़िर तिल्मुअमिनीन वलमुअमिनाति”

(ऐ अल्लाह! मुझे बख्शा दे और मोमिन मर्दों और औरतों को बख्शा दे)

कह देना काफी है।

मस'ला ३१— जब कब्र पर मिट्टी पड़ चुके तो उसके बाद मैयत का कब्र से निकालना जायज नहीं है। हां, अगर किसी आदमी के पूरे हुक्क अदा न किए गए हों तो जायज है।

मस'ला १ जिस ज़मीन में उसे दफन किया हो वह किसी दूसरे की जायदाद है और वह उसके दफन कर देने पर तैयार न हो।

मस'ला २ किसी शख्स का माल कब्र में गिर गया हो।

मस'ला ३२— अगर कोई औरत मर जाए और उसके पेट में जिन्दा बच्चा हो तो उसका पेट चाक करके बच्चा निकाल लिया जाये। इसी तरह अगर कोई आदमी का माल निगलकर मर जाए और माल वाला मांगे तो वह माल उसका पेट चाक करके निकाल लिया जाये। लेकिन अगर मुर्दा माल छोड़कर मरा है तो उसके तर्कों में से वह माल अदा कर दिया जाए और पेट चाक न किया जाये।

मस'ला ३३— दफन से पहले लाश का एक जगह से दूसरी जगह दफन करने के लिये ले जाना गलत है जबकि वह दूसरी जगह एक या दो मील से ज्यादा न हो। अगर इससे ज्यादा हो तो जायज नहीं और कफन के बाद लाश को खोदकर ले जाना तो हर हालत में नाजायज है।

मस'ला ३४— मैयत की तारीफ, नज़्म या नस्र (गद्य या पद्य) में करना जायज है बशर्ते कि तारीफ में किसी तरह झूठ न हो। ये तारीफ बयान न की जाए जो मरने वाले में न हो।

मस'ला ३५— मैयत के रिश्तेदारों को तसल्ली व दिलासा देना और सब के फज़ायल और उसका सवाब उनको सुनाकर सन्न करने की सीख देना और उनके व मैयत के लिये दुआ करना जायज है, यही मातमपुर्सी है, तीन दिन के बाद ऐसा करना मकरूह तन्ज़ीही है लेकिन अगर मातमपुर्सी करने वाला उस वक़्त पहुंचे जबकि मैयत के रिश्तेदार सफर में हों और तीन दिन के बाद आएँ तो इस सूरत में तीन दिन के बाद मातमपुर्सी मकरूह नहीं। जो आदमी एक बार

मातमपुर्सी कर घुका हो उसे दोबारा ऐसा करना मकरुह है।

मस'ला ३६— अपने लिये कफन तैयार रखना मकरुह नहीं। मगर कब्र का तैयार रखना मकरुह है।

मस'ला ३७— मयत के कफन पर बगैर रोशनाई के वैसे ही उंगली की हरकत से कोई दुआ लिखना या सीने पर बिस्मिल्लाह और माथे पर कलिमा

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللَّهِ

“ला इलाह इल्लल्लाहु मुहम्मदुररसूलुल्लाहु०

(अल्लाह के सिवा कोई खुदा नहीं। मुहम्मद सल्ल० अल्लाह के रसूल हैं)

लिखना जायज है। मगर किसी सही हदीस से इसका सबूत नहीं है इसलिये इसके मसनून या मुस्तहब होने का ख्याल न रखना चाहिये।

मस'ला ३८— कब्र पर कोई हरी शाख रख देना मुस्तहब है और इसके करीब कोई पेड़ वगैरा निकल आया हो तो उसका काट डालना मकरुह है।

मस'ला ३९— एक कब्र में एक-से ज्यादा लाशों को दफन नहीं करना चाहिए मगर जरूरत के वक़्त जायज है। फिर अगर सब मुर्दे मर्द ही हों तो जो उन सबमें सबसे अफ़ज़ल हो उसे आगे रखें। बाकी सबको उसके पीछे दर्जा बदर्जा रख दें और कुछ मर्द हों और कुछ औरतें तो मर्दों को आगे रखें और उनके पीछे औरतों को।

मस'ला ४०— कब्रों की ज़ियारत करना यानी उनको जाकर देखना मर्दों के लिए मुस्तहब है। बेहतर यह है कि हर जुमे को कब्रों की ज़ियारत की जाये। बुजुर्गों की ज़ियारत के लिए सफ़र करके जाना भी जायज है जब कि कोई अक़ीदा और अमल शरीअत के खिलाफ़ न हो जैसा कि आजकल उर्सों में बुराइयां पाई जाती हैं।

6. शहीद की मौत

ऊपरी तौर से शहीद भी मैयत है मगर आम मौत के सब अहकाम इसमें जारी नहीं हो सकते और इसके फज़ायल भी बहुत हैं, इसलिए इसके अहकाम अलग ही ब्यान किए जाते हैं।

शहीद होने के लिए ये शर्तें होनी चाहिए :

मस'ला १— मुसलमान होना— ग़ैर इस्लाम के लिए किसी तरह की शहादत साबित नहीं हो सकती।

मस'ला २— 'आकिल बालिग' होना— जो आदमी पागलपन में मारा जाए या नाबालिग हो तो उसके लिए शहादत के अहकाम साबित नहीं होंगे।

मस'ला ३— बड़ी नापाकी से پاک होना— अगर कोई जनाबत (सम्भोग की नापाकी) या कोई औरत हैज़ या निफ़ास में शहीद हो जाए तो उसके लिए भी शहीद के अहकाम साबित न होंगे।

मस'ला ४— बेगुनाह मकतूल होना— अगर कोई आदमी बेगुनाह मकतूल नहीं हुआ बल्कि शरई जुर्म की सज़ा में मारा गया तो उस के लिए शहीद के अहकाम साबित न होंगे।

मस'ला ५— अगर किसी मुसलमान या कोढ़ी के हाथ से मारा गया हो तो यह भी शर्त है कि किसी सख्त आले से मारा गया हो। जैसे किसी पत्थर वगैरा से मारा जाए तो उस पर शहीद के अहकाम जारी न होंगे लेकिन लोहा पूरी तरह सख्त आले के हुक्म में है अगर उसमें धार न हो। अगर कोई आदमी लड़ाकू काफ़िरों, बागियों या डाकुओं के हाथ से मारा गया हो या उन की लड़ाई के मारके में मकतूल मिले तो उसमें सख्त आले से मकतूल होने की शर्त नहीं। यहां तक कि किसी पत्थर वगैरा से भी वे लोग मारे और वह मर जाए तो शहीद के अहकाम उस पर जारी हो जाएंगे।

मस'ला ६- कत्ल की सज़ा में शुरु में शरीअत की तरफ से कोई माली बदला ठहरा हो बल्कि खून बहाने का बदला वाजिब हो, इसलिए अगर माली बदला ठहर जाएगा तब भी जैसे मकतूल पर शहीद के अहकाम जारी न होंगे, अगर वह जुल्म से मारा जाये।

मिसाल नं० १- कोई मुसलमान किसी मुसलमान को सख्त आले से कत्ल कर दे।

मिसाल नं० २- कोई मुसलमान किसी मुसलमान को सख्त आले से कत्ल करे, मगर किसी कुसूर पर जैसे वह किसी जानवर या निशाने पर हमला कर रहा हो और वह किसी इन्सान के लग जाए।

मिसाल नं० ३- कोई शख्स किसी जगह जंगी मार के अलावा किसी जगह मकतूल पाया जाए और उसका कातिल मालूम न हो।

इस सब सूरतों में चूँकि उस कत्ल के बदले में माल वाजिब होता है खून का बदला वाजिब नहीं होता इसलिए यहां शहीद के अहकाम जारी न होंगे।

मस'ला ७- ज़ख्म लगने के बाद फिर कोई काम जैसे खाना-पीना, सोना, दवा और बिक्री व खरीद न हो सके और एक वक़्त नमाज़ भी पढ़ने के काबिल न रहे और न उसको होश की हालत में लड़ाई की जगह से उठाकर लाये। हां! अगर जानवरों के पामाल करने के डर से उठा लायें तो कुछ हर्ज न होगा। अगर कोई आदमी ज़ख्म लगने के बाद ज़्यादा बातें करे तो वह भी शहीद के अहकाम में दाखिल न होगा। इसलिए कि ज़्यादा कलाम करना ज़िन्दों की शान है। इसी तरह अगर कोई शख्स वसीयत करे तो वह वसीयत अगर किसी दुनियावी मामले में हो तो शहीद के हुक्म से खारिज न होगा। अगर कोई शख्स किसी लड़ाई में शहीद हुआ हो और उस में ये बातें पाई जायें तो शहीद के अहकाम से खारिज हो जाएगा वरना नहीं, लेकिन अगर यह शख्स लड़ाई में शहीद हुआ और लड़ाई अभी खत्म नहीं हुई तो वह भी शहीद है।

मस'ला ८— जिस शहीद में ये सब बातें हों उसके लिए एक हुक्म यह है कि उसको गुस्ल न दिया जाये और उसका खून उसके जिस्म से न निकाला जाये उसे वैसे ही दफन कर दिया जाये। दूसरा हुक्म यह है कि वह जो कपड़े पहने हुए हो, उन्हें भी उसके जिस्म से न उतारा जाए। हां! अगर उसके कपड़े मसनून तादाद से कम हों तो इन्हें पूरा करने के लिए और ज्यादा हों तो उन्हें उतार लिया जाये। और उसके जिस्म पर ऐसे कपड़े हों जिनमें कफन होने की सलाहियत न हो जैसे पोस्तीन (बनियान नीचे पहनने की जगह) तो उसे उतार लिया जाये। टोपी, जूता, हथियार, वगैरा, वे सब इनके लिए भी जारी होंगी। अगर किसी शहीद में इन शरायत में से कोई शर्त न पाई जाए तो उसे गुस्ल भी दिया जाएगा और दूसरे मुर्दों की तरह उसे कफन भी पहनाया जाएगा।

7. मस्जिद के अहकाम

मस'ला १— मस्जिद के दरवाजे का बन्द करना मकरूह तहरीमी है। हां अगर नमाज़ का वक़्त न हो और माल व असबाब की हिफाज़त के लिए दरवाज़ा बन्द कराया जाए तो जायज़ है।

मस'ला २— जिस घर में मस्जिद हो वह पूरा घर मस्जिद नहीं हो सकता। उसी तरह उस जगह भी मस्जिद नहीं हो सकती जहां ईदैन व जनाज़े की नमाज़ होती है।

मस'ला ३— मस्जिद के दर व दीवार की अपने खास माल से नक्काली कराने में कुछ बुराई नहीं है, मगर मेहराब और मेहराब वाली दीवार पर मकरूह है और अगर मस्जिद की आमदनी से हो तो नाजायज़ है।

मस'ला ४— मस्जिद के दर व दीवार पर कुरआन मजीद की आयतों या सूरतों का लिखना अच्छा नहीं।

मस'ला ५— मस्जिद के अन्दर या मस्जिद की दीवारों पर थूकना या नाक साफ करना बहुत बुरी बात है। और अगर बहुत ज़रूरत पड़े तो अपने रुमाल या कुर्ते वगैरा में थूक ले और नाक साफ कर ले।

मस'ला ६— मस्जिद के अन्दर पुजू या कुल्ली करना मकरूह तहरीमी है।

मस'ला ७— नापाक आदमी और हैज वाली औरत को मस्जिद के अन्दर जाना गुनाह है।

मस'ला ८— मस्जिद के अन्दर खरीद व बिक्री करना मकरूह तहरीमी है। हां एतकाफ (गोशा नशीन होना जैसा कि रमज़ान के महीने में लोग मस्जिद के एक कोने में बैठ कर इबादत करते हैं) की हालत में ज़रूरत के मुताबिक मस्जिद के अन्दर खरीद व बिक्री करना जायज़ है, ज़रूरत से ज़्यादा उस वक़्त भी जायज़ नहीं मगर वह घीज़ मस्जिद के अन्दर मौजूद न होनी चाहिए।

मस'ला ९— अगर किसी के पैर में मिट्टी वगैरा भर जाए तो उसको मस्जिद की दीवार या सतून से साफ करना मकरूह है।

मस'ला १०— मस्जिद के अन्दर पेड़ों का लाना मकरूह है, क्योंकि यह अहले किताब (उन उसूलों के मानने वाले जिन पर कोई ईश्वरीय ग्रन्थ अवतरित हुए हों जैसे यहूदी, ईसाई आदि) का दस्तूर है।

मस'ला ११— मस्जिद का रास्ता बना लेना जायज़ नहीं। हां अगर सख़्त ज़रूरत पड़े तो कभी-कभी ऐसी हालत में मस्जिद से हो कर निकल जाना जायज़ है।

मस'ला १२— मस्जिद में किसी पेशेवर को अपना पेशा करना जायज़ नहीं इस लिए कि मस्जिद दीन के कामों खास तौर से नमाज़ के लिए बनाई जाती है। उसमें दुनिया के काम न होने चाहिए यहां तक कि जो आदमी कुरआन वगैरा तनखाह लेकर पढ़ाता हो वह भी

पेशे वालों में दाखिल है। उसको मस्जिद से अलग बैठकर पढ़ाना चाहिए।

हदीस १— नबी करीम सल्ल० ने फरमाया कि जो शख्स अल्लाह तआला के लिए मस्जिद बनाता है तो उसका घर जन्नत में होगा।

हदीस २— नबी करीम सल्ल० ने फरमाया कि मस्जिद में झाड़ू देना, मस्जिद को पाक साफ रखना, मस्जिद का कूड़ा-करकट फेंक देना, उसमें खुरबू सुलगाना, खास तौर से जुमे के दिन मस्जिद में खुरबू सुलगाना ये सब काम जन्नत में ले जाने वाले हैं।

हदीस ३— नबी करीम सल्ल० ने फरमाया कि मस्जिद बनाने वाले के लिए मस्जिद की तरह जन्नत में घर बना दिया जाता है।

हदीस ४— नबी करीम सल्ल० ने फरमाया कि मस्जिद बनाना सदा बाकी रहने वाला नेक अमल है।

हदीस ५— नबी करीम सल्ल० ने फरमाया कि दुनिया में जमीन का सबसे अच्छा टुकड़ा अल्लाह की नज़र में वह है जिस पर मस्जिद बनाई जाये और सबसे बुरा ज़ीन का वह हिस्सा है जिस पर बाज़ार बनाया जाये।

किताबुस्सौम

रोज़ा का बयान

हदीस शरीफ में रोज़ा का बड़ा सवाब आया है और अल्लाह तआला के नज़दीक रोज़ादार का बड़ा रूत्बा है। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि जिस शख्स ने रमज़ान के रोज़े महज़ अल्लाह के वास्ते सवाब समझ कर रखे तो उस के सब अगले गुनाह बख़्शा दिए जाएंगे और ये भी फ़रमाया है की रोज़ेदार के मुंह की बू अल्लाह तआला के नज़दीक मुश्क की खुशबू से ज़ियादा प्यारी है। क़ियामत के दिन रोज़े का बेहद सवाब मिलेगा।

मस'ला - रमज़ान शरीफ़ के रोज़े हर मुसलमान पर 'मज्नून और नाबालिग़ न हो फ़र्ज़ है जब तक कोई उज़्र न हो रोज़ा छोड़ना दुरुस्त नहीं और अगर कोई रोज़े की नज़र करे तो नज़र कर लेने से रोज़ा फ़र्ज़ हो जाता है, और कज़ा और कफ़ारे के रोज़े भी फ़र्ज़ हैं और इसके सिवा और रोज़े नफ़ल हैं रखे तो सवाब है और न रखे तो कोई गुनाह नहीं अलबत्ता ईद और बकरईद के दिन से तीन दिन बाद तक रोज़ा रखना हराम है।

मस'ला - जब से फ़ज्र का वक़्त आता है, उस वक़्त से लेकर सूरज डूबने तक रोज़ा की नीयत से सबकुछ खाना पीना छोड़ देना और जमअ न करना शरीयत में उस रोज़ा कहते हैं।

मस'ला - ज़बान से नीयत करना और कुछ कहना जरूरी नहीं है बल्कि जब दिल में यह ध्यान है कि आज मेरा

रोज़ा है और दिन भर न कुछ खाया न पीया न जमअ किया तो उसका रोज़ा हो गया और अगर कोई ज़बान से भी यह कह दे या अल्लाह मैं कल तेरा रोज़ा रखूंगा या अरबी में ये कह दे कि 'बिसौमि ग़दिन नवैतु' तो भी कुछ हरज नहीं यह भी बेहतर है।

मस'ला - अगर किसी ने न दिन भर कुछ खाया न पीया, सुबह से शाम तक भूखा पियासा रहा लेकिन दिल में रोज़े का इरादा न था बल्कि भूख नहीं लगी या किसी वजह से कुछ खाने पीने की नौबत न आई तो उसका रोज़ा नहीं हुआ अगर दिल में रोज़े का इरादा कर लेता तो रोज़ा हो जाता।

मस'ला - शरीअत में रोज़े का वक्त सुबह सादिक से शुरू होता है इसलिए जब तक सुबह सादिक न हो खाना, पीना वगैरह सब कुछ जाइज है। कुछ औरतें पिछले पहर ही को सेहरी खाकर रोज़ा की नीयत की दुआ पढ़कर लेट रहती हैं और यह समझती हैं कि अब नीयत कर लेने के बाद कुछ खाना पीना न चाहिए, ये ख़्याल ग़लत है जबतक सुबह न हो बराबर खाती पीती रहें चाहे नीयत कर चुकी हो या अभी न की हो।

रमज़ान शरीफ़ के रोज़े का बयान

मस'ला - रमज़ान शरीफ़ के रोज़े की अगर रात से नीयत करले तो भी फ़र्ज अदा हो जाएगा और रात को रोज़ा रखने का इरादा न था बल्कि सुबह हो गई तबभी यही ख़्याल रहा कि मैं आज का रोज़ा न रखूंगा फिर दिन चढ़े ख़्याल आया कि फ़र्ज छोड़ देना बुरी बात है इसलिए अब रोज़े की नीयत कर ली तब भी रोज़ा हो गया लेकिन अगर सुबह को कुछ खा पी लिया हो तो अब नीयत नहीं कर सकता

मस'ला २- अगर कुछ खाया-पीया न हो तो दिन को ठीक दोपहर से एक घंटा पहले-पहले रमज़ान के रोज़े की नीयत कर लेना दुरुस्त है।

मस'ला ३- रमज़ान शरीफ़ के रोज़े में इतनी नीयत कर लेना काफी है कि आज मेरा रोज़ा है या रात को इतना सोच ले कि कल मेरा रोज़ा है। बस इतनी ही नीयत से रमज़ान का रोज़ा अदा हो जाएगा।

मस'ला ४- किसी ने नज़र मानी थी कि उसका कोई काम हो जाये तो वह अल्लाह के लिए एक या दो रोज़े रखेगा। फिर जब रमज़ान आया तो उसने इसी नज़र के रोज़े रखने की नीयत की रमज़ान के रोज़े की नहीं, तब भी रमज़ान का ही रोज़ा हुआ नज़र का रोज़ा अदा नहीं हुआ। नज़र के रोज़े रमज़ान के बाद फिर रखे। मतलब यह कि रमज़ान के महीने में जब किसी रोज़े की नीयत की जाएगी तो रमज़ान का ही रोज़ा होगा कोई और रोज़ा सही न होगा।

मस'ला ५- शबा'न की २९वीं तारीख़ को रमज़ान शरीफ़ का चांद निकल आए तो सुबह को रोज़ा रखे और अगर चांद न दिखाई दे तो सुबह को रोज़ा न रखे। हदीस शरीफ़ में इसके लिए मना फरमाया गया है बल्कि शबा'न के तीस दिन पूरे करके रमज़ान शरीफ़ के रोज़े शुरू करें।

मस'ला ६- २९वीं तारीख़ को अन्न की वजह से रमज़ान शरीफ़ का चांद नहीं दिखाई दिया तो सुबह को नफ़ली रोज़ा भी न रखे। हाँ, अगर ऐसा हुआ कि हमेशा पीर और जुमेरात या किसी और दिन का रोज़ा रखा करते और अगले दिन वही दिन है तो नफ़ल की नीयत से सुबह का रोज़ा रख लेना बेहतर है। अगर कहीं से चांद की ख़बर आ गई तो उसी नफ़ली रोज़े से रमज़ान का फ़र्ज़ अदा हो गया। अब उसकी क़ज़ा न रखें।

मस'ला ७- बदली की वजह से २९ का चांद नहीं दिखाई दिया

तो दोपहर से एक घंटे पहले कुछ खाये न पीये। अगर कहीं से खबर आ जाए तो अब रोजे की नीयत कर ले और अगर खबर न आए तो खाये-पीये।

मस'ला ८— २९ तारीख को चांद नहीं हुआ तो यह इयाल न करें कि कल का दिन रमज़ान का तो नहीं, लाओ मेरे जिस्मे पार साल का एक रोज़ा कज़ा है, उसकी कज़ा कफ़फ़ारे और नज़र का रोज़ा भी मकरूह है। कोई भी रोज़ा नहीं रखना चाहिए। अगर कज़ा या नज़र का रोज़ा रख लिया तो फिर चांद की खबर कहीं से आ गई तब भी रमज़ान का ही रोज़ा अदा हो गया। कज़ा और नज़र का रोज़ा फिर रखें और अगर खबर नहीं आई तो जिस रोज़े की नीयत की थी वही अदा हो गया।

3. चाँद देखना

मस'ला १— अगर आसमान पर गुबार या बादल है और रमज़ान का चांद नज़र नहीं आया लेकिन एक दीनदार और परहेज़गार सच्चे आदमी ने गवाही दी कि उसने रमज़ान का चांद देखा है तो चांद का सुबूत हो गया चाहे वह मर्द हो या औरत।

मस'ला २— अगर बदली की वजह से ईद का चांद दिखाई न दिया तो एक आदमी की गवाही का एतबार नहीं है। चाहे जितना बड़ा भरोसे का आदमी हो बल्कि जब दो भरोसे वाले और परहेज़गार या एक दीनदार मर्द और दो दीनदार औरतें अपने चांद देखने की गवाही दें तब चांद का सबूत होगा और यदि चार औरतें गवाही दें तब भी कुबूल नहीं।

मस'ला ३— जो आदमी दीन का पाबन्द नहीं और बराबर गुनाह करनता रहता है। जैसे: नमाज़ नहीं पढ़ता, रोज़ा नहीं रखता, झूठ

बोला करता है या कोई और गुनाह करता है शरीअत की पाबन्दी नहीं करता तो शरअ में उसकी बात का कुछ ऐतबार नहीं है। चाहे वह जितनी कस्में खाकर बयान करे बल्कि अगर दो, तीन आदमी हों तो उनका भी कोई ऐतबार नहीं।

मस'ला ४— अगर आसमान बिल्कुल साफ हो तो दो-चार आदमियों के कहने और गवाही देने से चाँद साबित न होगा, चाहे रमजान का चाँद हो या ईद का। अलबत्ता इतने ज़्यादा लोग अपना चाँद देखना ब्यान करें कि दिल गवाही देने लगे कि वे सब बात बनाकर नहीं आये तो उतने लोगों का झूठा होना किसी भी तरह नहीं हो सकता तब चाँद साबित होगा।

मस'ला ५— शहर भीर में यह खबर मशहूर हो कि कल चाँद हुआ और बहुत से लोगों ने देखा, लेकिन दूँदा तलाश किया फिर भी कोई ऐसा आदमी नहीं मिलता जिसने खुद चाँद देखा हो तो ऐसी खबर का कुछ ऐतबार नहीं है।

मस'ला ६— एक शहर वालों का चाँद देखना दूसरे शहर वालों पर भी गवाही है। उन दोनों शहर वालों में कितना ही फासला क्यों न हो, यहां तक कि शुरु मगरिब (पश्चिम वासी) में चाँद देखा जाए और इसकी खबर यकीन के साथ मशरिफ़ (पूर्व वासी) के आखिर में रहने वालों को पहुँच जाए तो उन पर उस दिन का रोज़ा ज़रूरी होगा।

मस'ला ७— अगर दो भरोसे वाले आदमियों की शहादत से चाँद का देखा जाना साबित हो जाए और उसी हिसाब से लोग रोज़ा रखें। तीस रोज़े पूरे हो जाने के बाद ईदुल फ़ित्र का चाँद न देखा जाए—चाहे आसमान साफ़ हो या न हो तो ३५वें दिन इफ़तार कर लिया जाए और वह दिन शब्याल की पहली तारीख़ समझी जाये।

मस'ला ८— अगर तीस तारीख़ को दिन के वक़्त चाँद दिखाई दे तो वह अगली रात का समझा जाएगा चाहे चाँद ज़वाल से पहले दिखाई दे या बाद में।

मस'ला ९— जो आदमी रमज़ान या ईद का चांद देखे और किसी वजह से उसकी शहादत शरई तौर पर भरोसे वाली न हो तो उस पर उन दोनों दिनों का रोज़ा रखना वाजिब है।

4. सहरी और इफ्तार

मस'ला १— सहरी खाना सुन्नत है अगर भूख न हो और खाना न खाये तो कम-से-कम तीन छुहारे ही खा ले या कोई और थोड़ी-बहुत चीज़ खा ले। अगर कुछ नहीं तो थोड़ा-सा पानी ही पी ले।

मस'ला २— अगर किसी ने सहरी न खाई और उठकर पान खा लिया तब भी सहरी खाने का सवाब मिल गया।

मस'ला ३— सहरी में जहां तक हो सके, देर करके खाना अच्छा है लेकिन इतनी देर न हो कि सुबह होने लगे और रोज़े में शक पड़ जाए।

मस'ला ४— अगर सहरी बड़ी जल्दी खा ली मगर उसके बाद पान, तम्बाकू, चाय या पानी देर तक खाता रहा। जब सुबह होने में थोड़ी देर रह गई तब कुत्ली कर खाली, तब भी देर करके खाने का सवाब मिल गया और उसके लिए भी वही हुक्म है जो देर करके खाने का है।

मस'ला ५— अगर रात को सहरी खाने के लिए आंख न खुली और सब सोते रहे तो सुबह को बिना सहरी का रोज़ा रखे। सहरी छूट जाने से रोज़ा छोड़ देना बड़ी कम-हिम्मती की बात है और बड़ा गुनाह है।

मस'ला ६— किसी की आंख देर में खुली और यह स्थिति हुआ कि अभी रात बाकी है। इस गुमान पर सहरी खा ली। फिर मालूम हुआ कि सुबह हो जाने के बाद सहरी खाई थी तो रोज़ा नहीं हुआ।

कच्चा रोज़ा रखे और कफ़ारा बाज़िब नहीं। लेकिन फिर भी कुछ खाए-पीए नहीं। रोज़ेदारों की तरह रहे। इसी तरह अगर सूरज सूबने के गुमान से रोज़ा खोल लिया, फिर सूरज निकल आया तो रोज़ा छाता रहा, उसकी कच्चा करे। कफ़ारा बाज़िब नहीं और जब तक सूरज सूब न जाए कुछ खाना-पीना दुरुस्त नहीं।

मस'ला ७— अगर इतनी देर हो गई कि सुबह हो जाने का शक पड़ गया तो अब कुछ खाना-पीना मकरूह है, अगर ऐसे वक़्त कुछ खा-पी लिया तो बुरा किया और गुनाह हुआ। फिर अगर मालूम हुआ कि उस वक़्त सुबह हो गई थी तो उस रोज़े की कच्चा रखे। अगर कुछ न मालूम हो और शक ही शक रह जाए तो कच्चा रखना बाज़िब नहीं है, लेकिन एहतियात की बात यह है कि उसकी कच्चा रख ले।

मस'ला ८— मुस्तहब यह है कि सूरज बाक़ई सूब जाए तो उसी वक़्त रोज़ा खोल ले। देर करके रोज़ा खोलना मकरूह है।

मस'ला ९— बदली के दिन थोड़ी देर करके रोज़ा खोल ले, जब सूब यकीन हो जाए कि सूरज सूब गया होगा तब इफ़तार करें और सिर्फ़ घड़ी घंटे पर कुछ यकीन न करे जब तक दिल गवाही न दे क्योंकि घड़ी शायद कुछ ग़लत हो गई हो बल्कि अगर कोई अज़ान भी कह दे, लेकिन अभी वक़्त होने में कुछ शक है तब भी रोज़ा खोलना दुरुस्त नहीं।

मस'ला १०— छुआरे से रोज़ा खोलना बेहतर है या और कोई मीठी चीज़ हो उससे खोले। वह भी न हो तो पानी से इफ़तार कर ले। कुछ औरतें और कुछ मर्द नमक की कंकरी से इफ़तार करते हैं और इसमें सवाब समझते हैं, यह सोचना ग़लत है।

मस'ला ११— जब तक सूरज सूबने में शक रहे, तब तक इफ़तार जायज़ नहीं है।

5. कज़ा रोज़े रखना

मस'ला १— जो रोज़े किसी वजह से जाते रहे हों, रमज़ान के बाद जहाँ तक जल्दी हो सके उनकी कज़ा रख ले, देर न करे। बेवजह कज़ा रखने में देर लगाना गुनाह है।

मस'ला २— रोज़े की कज़ा में दिन तारीख़ ठहरा कर कज़ा की नीयत करना कि फ़लां तारीख़ के रोज़े की कज़ा रखता हूँ, यह ज़रूरी नहीं है, बल्कि जितने भी रोज़े कज़ा हों उतने ही रख लेना चाहिए। अलबत्ता दो रमज़ानों के कुछ रोज़े कज़ा हो गए, इसलिए दोनों साल के रोज़ों की कज़ा रखना है तो साल का ठहराना ज़रूरी है, यानी इस तरह नीयत करे कि फ़लां साल के रोज़ों की कज़ा रखता हूँ।

मस'ला ३— कज़ा रोज़े में रात से नीयत करना ज़रूरी है। अगर सुबह हो जाने के बाद नीयत की तो कज़ा सही नहीं हुई बल्कि वह रोज़ा नफ़ल हो गया। कज़ा का रोज़ा फिर से रखे।

मस'ला ४— कफ़ारे के रोज़े का भी यही हुक्म है कि रात से नीयत करना चाहिए। अगर सुबह होने के बाद नीयत की तो कफ़ारे का रोज़ा सही नहीं हुआ।

मस'ला ५— जितने रोज़े कज़ा हो गए हों उन सबके चाहे एक दम रखे या थोड़े-थोड़े करके रखे, दोनों बातें ठीक हैं।

मस'ला ६— अगर रमज़ान के रोज़े अभी कज़ा नहीं रखे और दूसरा रमज़ान आ गया तो अब रमज़ान के अदा रोज़े रखे और ईद के बाद कज़ा रोज़े रखे, लेकिन इतनी देर करना बुरी बात है।

मस'ला ७— रमज़ान के महीने में दिन को बेहोश हो गया और तीन दिन तक बराबर बेहोश रहा तो कुल दो दिन रोज़े कज़ा रखे। जिस दिन बेहोश हुआ उस एक दिन की कज़ा वाज़िब नहीं, क्योंकि उस दिन का रोज़ा नीयत की वजह से दुरुस्त हो गया। हाँ अगर उस

दिन रोज़े से था या उस दिन हलक में कोई दवा डाली और वह हलक से उतर गई तो उस दिन की कज़ा भी बाजिब है।

मस'ला ८— अगर रात को बेहोश हुआ तो तब भी जिस रात को बेहोश हुआ उस एक दिन की कज़ा बाजिब नहीं है, बाकी और जितने दिन बेहोश रहा सबकी कज़ा बाजिब है। हों, अगर उस रात को सुबह का रोज़ा रखने की नीयत न थी या सुबह को कोई दवा हलक में डाली गई तो उस दिन का रोज़ा भी कज़ा रखें।

मस'ला ९— अगर पूरे रमज़ान बेहोश रहे तब भी कज़ा रखना चाहिए। यह न समझे कि सब रोज़े माफ़ हो गये। अलबत्ता अगर पागलपन हो गया और पूरे रमज़ान दीवाना रहा तो उस रमज़ान के किसी रोज़े की कज़ा बाजिब नहीं और अगर रमज़ान शरीफ़ के महीने में किसी दिन पागलपन जाता रहा और अक़ल ठिकाने हो गई तो तब ही रोज़े रखना शुरू करे और जितने दिन पागलपन में गए उनकी कज़ा भी रखे।

6. नज़र का रोज़ा

मस'ला १— जब कोई नज़र माने तो उसका पूरा करना बाजिब है, अगर पूरा न करेगा तो गुनाहगार होगा।

मस'ला २— नज़र दो तरह की होती है— एक तो यह कि दिन तारीख़ तय करे नज़र मानी कि या अल्लाह! आज अगर फलां काम हो जाये तो कल ही तेरा रोज़ा रखूंगा या यूँ कहा कि या अल्लाह! मेरी फलां मुराद पूरी हो जाये तो परसों जुमे के दिन रोज़ा रखूंगा। ऐसी नज़र में अगर रात से नीयत कर लें तब भी दुरुस्त है और अगर रात से रोज़े की नीयत न की तो दोपहर से एक घंटा पहले नीयत कर ले तो यह भी दुरुस्त है। नज़र अदा हो जायेगी।

मस'ला ३— जुमे के दिन रोज़ा रखने की नज़र मानी और जब जुमा आया तो बस इतनी नीयत कर ली कि आज भेरा रोज़ा है। यह तब नहीं किया कि यह नज़र का रोज़ा है या नफ़ल मगर नीयत कर ली कि आज भेरा रोज़ा है, तब भी नज़र का रोज़ा अबा हो गया अलबत्ता उस जुमे को कफ़ा रोज़ा रख लिया और नज़र का रोज़ा याब न रहा या याब था मगर जानकर कफ़ा का रोज़ा रखा तो नज़र का रोज़ा अबा न होगा बल्कि कफ़ा का रोज़ा हो जाएगा। नज़र का रोज़ा फिर रखें।

मस'ला ४— दूराही नज़र यह है कि दिन तारीख़ तय करके नज़र नहीं मानी बस इतना ही कह दिया कि अल्वाह भेरा फ़लां काम हो जाये तो एक रोज़ा रखूंगा या किसी काम का नाम नहीं लिया वैसे ही कह दिया कि पांच रोज़े रखूंगा। ऐसी नज़र में रात से नीयत करना शर्त है। अगर शुबह हो जाने के बाद नीयत की तो नज़र का रोज़ा नहीं हुआ बल्कि रोज़ा नफ़ल हो गया।

7. नफ़ली रोज़ा

मस'ला १— नफ़ली रोज़े की नीयत अगर यह करके करे कि मैं नफ़ल का रोज़ा रखता हूँ तब भी ठीक है अगर इतनी ही नीयत कर ले कि मैं रोज़ा रखता हूँ तब भी ठीक है।

मस'ला २— दोपहर से एक घंटा पहले तक नफ़ली रोज़े की नीयत कर लेना दुरुस्त है। जैसे अगर दस बजे दिन तक रोज़ा रखने का इरादा न था लेकिन अभी तक कूठ खाया-पीया नहीं और जी में आ गया और रोज़ा रख लिया तो भी दुरुस्त है।

मस'ला ३— रमज़ान शरीफ़ के महीने के शिवा जिस दिन चाहे नफ़ल का रोज़ा रखे। जितने रोज़े रखे जायेंगे उतना ही सवाब पायेगा।

अलबत्ता ईद के दिन और बकरईद की दसवीं, ग्यारहवीं, बारहवीं और तेरहवीं तारीख के यानी साल भर में कुल पांच रोजे हराम हैं। इसके सिवा बाकी सब रोजे दुरुस्त हैं।

मस'ला ४— अगर कोई आदमी ईद के दिन रोज़ा रखने की भिन्नत माने तब भी उस दिन का रोज़ा दुरुस्त नहीं, इसके बदले किसी और दिन रख ले।

मस'ला ५— नफ़ल का रोज़ा नीयत करने से बाजिब हो जाता है तो अगर सुबह को यह नीयत की कि आज मेरा रोज़ा है। फिर उसके बाद तोड़ दिया तो अब उसकी कज़ा रखे।

मस'ला ६— शौहर की बग़ैर इजाज़त के औरत का नफ़ली रोज़ा रखना दुरुस्त नहीं। अगर बग़ैर उसकी इजाज़त लिए रोज़ा रख लिया तो उसके गुड़वाने से तोड़ देना दुरुस्त है। फिर जब वह कहे तो उसकी कज़ा रखे।

मस'ला ७— किसी के यहां मेहमान गया या किसी ने दावत कर दी और खाना न खाने से उसका दिल बुरा होगा, कि दिल शिक्नी होगी तो उसकी ख़ातिर नफ़ली रोज़ा तोड़ देना दुरुस्त है।

मस'ला ८— किसी ने ईद को दिन नफ़ली रोज़ा रख लिया और नीयत कर ली तब भी तोड़ देना चाहिए और उसकी कज़ा भी रखना बाजिब नहीं।

मस'ला ९— मुहर्रम की दसवीं तारीख को रोज़ा रखना मुस्तहब है। हदीस शरीफ में आया है कि जो कोई यह रोज़ा रखे उसके गुज़रे हुए एक साल के गुनाह माफ हो जाते हैं।

मस'ला १०— इसी तरह बकरईद की नवीं तारीख को रखने का भी बड़ा सवाब है। इससे एक साल के अगले और एक साल के पिछले गुनाह माफ हो जाते हैं और अगर शुरु चांद से ९वीं तक बराबर रोजे रखे तो बहुत ही बेहतर है।

मस'ला ११— शा'बान की पन्द्रहवीं और ईद के महीने में छः

दिन नफली रोजे रखने का भी बहुत ज़्यादा सवाब है।

मस'ला १२— अगर हर महीने की तेरवहीं, पन्द्रहवीं तारीख को तीन दिन रोजे रख लिया करे तो यह ऐसा है जैसे साल भर बराबर रोजे रखे। हुजूर अक़दस सल्ल० तीनों दिन रोजे रखा करते थे। ऐसे ही हर दोशम्बा (पीर, सोमवार) व जुमेरात के दिन भी रोज़ा रखा करते थे अगर कोई हिम्मत करे तो इनका भी बहुत सवाब है।

8. रोजे की क़ज़ा और कफ़ारा

मस'ला १— अगर रोज़ादार भूलकर कुछ खा पी ले, मूल से सोहबत कर ले तो रोज़ा नहीं जाता, चाहे पेट भर कर हो खाए।

मस'ला २— एक आदमी को भूल कर कुछ खाते-पीते देखा तो वह अगर इतना ताक़तवर है कि रोज़े से ज़्यादा तकलीफ़ नहीं होगी तो रोज़ा याद दिलाना बाज़िब है और अगर कोई कमज़ोर है कि रोज़े से तकलीफ़ होगी तो उसको याद न दिलाए, खाने दे।

मस'ला ३— दिन को सो जाने पर ऐसा ख़्याब देखा जिससे नहाने की ज़रूरत हो गई। तो रोज़ा नहीं टूटा।

मस'ला ४— दिन को सुर्मा लगाना, तेल लगाना या खुशबू सूंघना दुरुस्त है इससे रोज़े में कुछ नुक़सान नहीं होता, चाहे जिस वक़्त भी हो। बल्कि अगर सुर्मा लगाने के बाद थूक या नाक रेंट में सुर्मे का रंग दिखाई दे तो भी रोज़ा नहीं गया और न मकरूह हुआ।

मस'ला ५— मर्द औरत का साथ लेटना, हाथ लगाना, प्यार करना, ये सब दुरुस्त है, लेकिन अगर जवानी का जोश इतना हो कि बातों से सोहबत करने का डर हो तो ऐसा नहीं करना चाहिए। यह मकरूह है।

मस'ला ६— हलक के अन्दर मक्खी चली गई या आप ही आप धुआं, गर्द व मिट्टी चली गई तो रोज़ा नहीं गया अलबत्ता अगर जानकर ऐसा किया तो रोज़ा जाता रहा।

मस'ला ७— लोबान वगैरा की कोई धुनी सुलगाई। फिर उसको अपने पास रखकर सूँघा तो रोज़ा जाता रहा। इसी तरह हुक्का पीने से भी रोज़ा जाता रहता है। अलबत्ता उस धुएँ के सिवा इत्र, केवड़ा, गुलाब, फूल या खुरबू सूँघना जिसमें धुआं न हो, दुरुस्त है।

मस'ला ८— दांतों में गोश्त का रेशा अटका हुआ था या छाली का टुकड़ा वगैरा कोई और चीज़ थी उसको खिलाल से निकालकर खा लिया, लेकिन मुंह से बाहर नहीं निकला, आप ही आप हलक में चला गया। अगर वह चने से कम है तब रोज़ा नहीं गया लेकिन अगर चने के बराबर या उससे ज़्यादा है तो रोज़ा जाता रहा। हां, अगर मुंह से बाहर निकाल लिया था और फिर उसे निगला तो हर हालत में रोज़ा दूट जायेगा चाहे वह चने के बराबर हो या उस से कम—दोनों के लिए एक ही हुक्म है।

मस'ला ९— अगर पान खाकर कुल्ली की और गरारे करके अपना मुंह साफ कर लिया लेकिन थूक की सुखी नहीं गई तो इसका कुछ हर्ज नहीं, रोज़ा हो गया।

मस'ला १०— रोज़े में थूक निगलने से रोज़ा नहीं जाता चाहे जितना हो।

मस'ला ११— रात को नहाने की ज़रूरत हुई मगर गुस्ल न किया और दिन को नहा लिया था तब रोज़ा हो गया बल्कि अगर दिन भर न नहाए तब भी रोज़ा नहीं जाता अलबत्ता उसका गुनाह अलग होगा।

मस'ला १२— नाक को इस जोर से सुड़का कि वह हलक में चली गई तो रोज़ा नहीं दूटा। इसी तरह मुंह की राल सुड़क कर निगल जाने से भी रोज़ा नहीं जाता।

मस'ला १३— मुंह में पान दबाकर सोए और सुबह हो जाने के

बाद आंख खुली, रोज़ा नहीं रहा। इसकी कज़ा रखें, कफ़फ़ारा वाजिब नहीं।

मस'ला १४— आप ही आप क़य हो गई तो रोज़ा नहीं गया। चाहे थोड़ी-सी हुई हो या ज्यादा। हां! जानकर की हो और मुंह भरकर हुई हो तो रोज़ा जाता रहा। और अगर इससे कम हो तो स्त्रुद करने से भी रोज़ा नहीं गया।

मस'ला १५— थोड़ी-सी क़य आई। फिर आप ही आप हलक में गई तब भी रोज़ा नहीं टूटा अलबत्ता अगर जानकर उसे लौटा लिया तो टूट जायेगा।

मस'ला १६— किसी ने कंकरी या लोहे का टुकड़ा बग़ैर कोई ऐसी चीज़ खा ली जिसको नहीं खाया जाता और न उसे कोई दवा के तौर पर ही खाता है तो उसका रोज़ा जाता रहा लेकिन उस पर कफ़फ़ारा वाजिब नहीं। अगर ऐसी चीज़ा खाई या पी जिसको लोग खाते-पीते हैं या बतौर दवा इस्तेमाल करते हैं तब भी रोज़ा जाता रहा। इस हालत में कज़ा और कफ़फ़ारा दोनों वाजिब हैं।

मस'ला १७— अगर मर्द ने सोहबत की तब भी रोज़ा जाता रहा। उसकी कज़ा भी रखें और कफ़फ़ारा भी दें। जब कि पेशाब की जगह वाली सुपारी औरत की पेशाबगाह के अन्दर चली गई तो रोज़ा टूट गया। तब कज़ा व कफ़फ़ारा दोनों वाजिब हो गये—चाहे मनी निकली या नहीं निकली।

मस'ला १८— अगर मर्द ने औरत के पाख़ाने की जगह अपने पेशाब वाला हिस्सा कर दिया और सुपारी अन्दर चली गई तब भी औरत और मर्द दोनों का रोज़ा जाता रहा। कज़ा व कफ़फ़ारा दोनों वाजिब हैं।

मस'ला १९— रोज़े तोड़ने से कफ़फ़ारा तब ही लाज़िम है जबकि रमज़ान शरीफ़ में रोज़ा तोड़ डाले और रमज़ान शरीफ़ के अलावा और किसी रोज़े के तोड़ने से कफ़फ़ारा वाजिब नहीं होता। चाहे जिस

तरह तोड़े अगरचे वह रमज़ान की कज़ा ही क्यों न हो।

मस'ला २०— औरत को रोज़े में पेशाब की जगह कोई दवा रखना या तेल वगैरा कोई चीज़ डालना दुरुस्त नहीं। अगर किसी ने दवा रख ली तो रोज़ा जाता रहा। उसकी कज़ा बाजिब है, कफ़ारा बाजिब नहीं।

मस'ला २१— अगर किसी ज़रूरत से दाई ने पेशाब की जगह उंगली डाली खुद उसने अपनी उंगली डाली फिर पूरी उंगली या धोड़ी-सी उंगली निकालने के बाद अन्दर कर दी तो रोज़ा जाता रहा। लेकिन कफ़ारा बाजिब नहीं। अगर निकाल लेने के बाद फिर नहीं की तो रोज़ा नहीं गया हां, अगर पहले से पानी वगैरा किसी चीज़ में उंगली भीगी हुई हो तो पहली बार करने से भी रोज़ा जाता रहा।

मस'ला २२— मुंह से खून निकलता है, उसे थूक के साथ निगल लिया तो रोज़ा टूट गया अलबत्ता अगर खून थूक से कम हो और खून का मज़ा हलक में हो तो रोज़ा नहीं टूटा।

मस'ला २३— अगर ज़बा से कोई चीज़ चखकर थूक दी तो रोज़ा नहीं टूटा लेकिन बिना ज़रूरत ऐसा करना मकरूह है। हां, अगर किसी औरत का शौहर बड़ा ही बदमिज़ाज है और उसे यह डर हो कि सालन में नमक पानी दुरुस्त न हो तो नाक में दम कर देगा तो उसे नमक चख लेना दुरुस्त है और मकरूह नहीं है।

मस'ला २४— अपने मुंह से चबाकर छोटे बच्चे को कोई चीज़ खिलाना मकरूह है। अलबत्ता अगर इसकी ज़रूरत पड़े और मजबूरी व लाचारी हो जाए तो मकरूह नहीं।

मस'ला २५— कौयला चबाकर दांत साफ करना और मंजन से उन्हें साफ करना मकरूह है और इसमें से कुछ हलक में उतर जाएगा तो रोज़ा जाता रहेगा। मिस्वाक से दांत साफ करना दुरुस्त है चाहे सूखी मिस्वाक हो या तर हो—उसी वक़्त की तोड़ी हुई हो। अगर नीम की है और उसका कड़वापन मुंह में मालूम होता है तब भी मकरूह नहीं।

मस'ला २६— कोई औरत बेखबर सो रही थी या बेहोश थी और उसके शौहर ने उससे जबरदस्ती सोहबत की तो रोज़ा जाता रहा। बस कज़ा वाजिब है। कफ़फारा वाजिब नहीं और मर्द पर कफ़फारा भी वाजिब है।

मस'ला २७— किसी ने भूले से कुछ खा लिया और यों समझा कि मेरा रोज़ा टूट गया इस वजह से जान-बूझकर कुछ खा लिया, तो अब रोज़ा जाता रहा, सिर्फ़ कज़ा वाजिब है, कफ़फारा वाजिब नहीं और अगर मस'ला जानता हो और फिर भूलकर ऐसा करने के बाद जानकर इफ़तार कर दे, तो सोहबत की सूरत में कफ़फारा भी होगा और खाने की सूरत में उस वक़्त भी सिर्फ़ कज़ा ही है।

मस'ला २८— अगर किसी को एकदम क़य़ हुई या एहतलाम हो गया और वह यह समझा कि उसका रोज़ा टूट गया। इस गुमान पर फिर जानकर खा लिया और रोज़ा तोड़ दिया तब भी कज़ा वाजिब है, कफ़फारा वाजिब नहीं और अगर मस'ला मालूम हो कि इससे रोज़ा नहीं जाता और जानकर इफ़तार कर लिया तो कफ़फारा भी लाज़िम हुआ।

मस'ला २९— अगर सुर्मा लगाया, फ़स्द ली या तेल डाला और समझा कि रोज़ा टूट गया फिर जानकर खा लिया तो कज़ा व कफ़फारा दोनों लाज़िम है।

मस'ला ३०— मर्द अगर अपने ख़ास हिस्से के सुराख में कोई चीज़ डाले तो वह पेट तक नहीं पहुँचती इसलिए रोज़ा फ़ासिद न होगा।

मस'ला ३१— किसी मुर्दा औरत या किसी ऐसी कमसिन लड़की के साथ जिससे सोहबत करने की ख़्वाहिश नहीं होती या किसी जानवर से सोहबत की, उसे लिपटाया या बोसा लिया या हाथ से मनी निकाली और इन सब सूरतों में मनी निकली तो रोज़ा फ़ासिद हो जाएगा और कफ़फारा वाजिब न होगा।

मस'ला ३२- वह आदमी जिसमें रोजे वाजिब होने की सब शर्तें पाई जाती हैं रमज़ान के उस रोजे में जिसकी नीयत सुबह सादिक से पहले कर चुका हो जानकर मुंह के रास्ते से पेट में कोई ऐसी चीज़ पहुँच जाए जो इन्सान की दवा या गिज़ा में इस्तेमाल की जाती है अगरचे वह बहुत-ही थोड़ी हो, यहां तक कि एक तिल के बराबर ही हो या सोहबत करे या कराए। नर बाज़ी भी इसी हुक्म में है। सोहबत में खास हिस्से के सर का दाखिल हो जाना काफी है मनी का खारिज होना भी शर्त नहीं। इन सब सूरतों में कज़ा और कफ़ारा दोनों ही वाजिब होंगे।

मस'ला ३३- जो लोग हुक्का पीने के आदी हों या किसी फायदे की वजह से पीयें तो रोजे की हालत में उन पर भी कफ़ारा और कज़ा दोनों वाजिब होंगे।

मस'ला ३४- अगर कोई औरत किसी नाबालिग बच्चे या मजनूँ से सोहबत कराए तब भी उसको कज़ा व कफ़ारा दोनों लाज़िम होंगे।

मस'ला ३५- सोहबत करने में औरत और मर्द दोनों का आकिल होना शर्त नहीं। यहां तक कि अगर एक मजनूँ और दूसरा आकिल तो आकिल पर कफ़ारा लाज़िम होगा।

मस'ला ३६- सोने की हालत में मनी खारिज होने से जिसको एहतलाम कहते हैं अगरचे बग़ैर नहाए हुए रोज़ा रखे तो रोज़ा फ़ासिद न होगा। इसी तरह अगर किसी औरत को देखने या उसका खास हिस्सा देखने या सिर्फ किसी बात का ख़याल दिल में करने से मनी खारिज हो जाए तब भी रोज़ा फ़ासिद न होगा।

मस'ला ३७- औरत का बोसा लेना और उससे चिपटना मकरूह है जब कि मनी निकलने का ख़ौफ़ हो या अपने नपस के बेकाबू हो जाने का और उस हालत में सोहबत कर लेने का डर हो। अगर यह डर न हो तो फिर मकरूह नहीं।

मस'ला ३८— किसी औरत के होंठ का मुंह में लेना और खास बदन का नंगा मिलाना, खास हिस्से को अन्दर दाखिल करने के सिवा हर हाल में मकरूह है चाहे मनी खारिज होने और सोहबत करने का खौफ हो।

मस'ला ३९— अगर कोई मुकीम रोजे की नीयत करने के बाद मुसाफिर बन जाए और थोड़ी दूर जाकर किसी मूली हुई चीज़ लेने के लिए अपने मकान वापस आए और वहां पहुंच कर रोजे को फासिद कर दे तो उसको कफ़ारा देना होगा क्योंकि वह उस वक़्त मुसाफिर न था अगरचे वह ठहरने की नीयत से न गया था और न वहां ठहरा।

मस'ला ४०— सोहबत के सिवा और किसी वजह से अगर कफ़ारा वाजिब हुआ हो और एक कफ़ारा अदा न करने पाया हो कि दूसरा वाजिब हो जाये तो उन दोनों के लिए एक ही कफ़ारा काफी है। अगरचे दोनों कफ़ारे दो रमज़ानों के हों। हां सोहबत की जवह से जितने रोजे फासिद हुए हों तो अगर वे एक ही रमज़ान के रोजे हैं तो एक ही कफ़ारा काफी है और दो रमज़ानों के हैं तो हर एक रमज़ान का कफ़ारा अलग देना होगा अगरचे पहला कफ़ारा न अदा किया हो।

मस'ला ४१— रमज़ान के महीने में अगर किसी का रोज़ा अचानक ही टूट गया तो रोज़ा टूटने के बाद भी दिन में कुछ खाना-पीना दुरुस्त नहीं। सारे दिन रोज़ेदार की तरह रहना वाजिब है।

मस'ला ४२— किसी ने रमज़ान के रोजे की नीयत ही नहीं ही इसलिए खाता-पीता रहा उस पर कफ़ारा उसी वक़्त वाजिब होता है जब नीयत करके तोड़े।

मस'ला ४३— रमज़ान शरीफ के रोजे तोड़ डालने का कफ़ारा यह है कि दो महीने तक बराबर रोजे रखे। थोड़े-थोड़े करके रोजे रखना दुरुस्त नहीं। अगर किसी वजह से बीच में दो-एक रोजे नहीं रखे तो अब फिर से दो महीने के रोजे रखे। हां जितने राजे औरत

के हैज की वजह से जाते रहें, वे माफ हैं। उनके दूट जाने से कफ़फारे में कुछ नुकसान नहीं आया लेकिन पाक होते ही फिर रोज़े रखना शुरू करें और साठ रोज़े पूरा कर लें।

मस'ला ४४— अगर बीद्य में रमज़ान का महीना आ गया तब भी कफ़फारा सही नहीं हुआ।

मस'ला ४५— अगर किसी को रोज़े रखने की ताकत न हो तो साठ मिस्कीनों को सुबह व शाम पेट भरकर खाना खिलाए यानी जितनी उनके पेट में आये खूब तनकर खाएं।

मस'ला ४६— उन मिस्कीनों में अगर कुछ बिल्कुल छोटे बच्चे हों तो जायज़ नहीं। उन बच्चों के बदले और मिस्कीनों को फिर खिलाएं।

मस'ला ४७— अगर गेहूं की रोटी हो तो यह रूखी रोटी खिलाना भी दुरुस्त है। और जौ, बाजरा, जुआर वगैरा की रोटी हो तो उसके साथ कुछ दाल वगैरा देना चाहिए जिसके साथ रोटी खाएं।

मस'ला ४८— अगर खाना ना खिलाए बल्कि साठ मिस्कीनों को कच्चा अनाज दे दे तो भी जायज़ है। हरेक मिस्कीन को इतना दे दे कि जितना सदका फ़ित्र दिया जाता है।

मस'ला ४९— अगर उतने अनाज की कीमत दे दे तो भी जायज़ है।

मस'ला ५०— अगर किसी और से कह दिया कि तुम मेरी तरफ से कफ़फारा अदा कर दो और साठ मिस्कीनों को खाना खिला दो और उसने उस की तरफ से खिला दिया या कच्चा अनाज दे दिया तब भी कफ़फारा अदा हो गया और उसके कहे बगैर किसी ने उस की तरफ से दे दिया तो कफ़फारा सही अदा नहीं हुआ।

मस'ला ५१— अगर एक ही मिस्कीन को साठ दिन तक सुबह-शाम खाना खिला दिया या साठ दिन तक कच्चा अनाज या कीमत देता रहा तब भी कफ़फारा सही हो गया।

मस'ला ५२— अगर साठ दिन तक लगातार खाना नहीं खिलाया बल्कि बीच में कुछ दिन नागा हो गए तो कुछ हर्ज नहीं। यह दुरुस्त है।

मस'ला ५३— अगर साठ दिन का अनाज हिसाब करके एक फकीर को एक ही दिन दे दिया तो दुरुस्त नहीं। इसी तरह एक ही फकीर को एक ही दिन अगर साठ बार करके दे दिया तब भी एक ही दिन का अदा हुआ। एक कम साठ मিস्कीनों को फिर देना चाहिए इसी तरह कीमत देने का भी हुक्म है। यानी एक दिन में एक मिस्कीन को एक रोज़े के बबले से ज्यादा देना दुरुस्त नहीं।

मस'ला ५४— अगर किसी फकीर को सदका -ए-फित्र की मिक्दार से कम दिया तो कफ़ारा सही नहीं हुआ।

मस'ला ५५— अगर एक ही रमज़ान के दो या तीन रोज़े तोड़ डाले तो एक ही कफ़ारा वाजिब है अलबत्ता अगर ये दोनों रोज़े एक रमज़ान में न हों तो अलग-अलग कफ़ारा देना पड़ेगा।

९. रोज़ा तोड़ना

मस'ला १— अचानक ऐसा बीमार पड़ गया कि अगर रोज़ा न तोड़ा तो जान पर बन आएगी या बीमारी बहुत बढ़ जाएगी तो रोज़ा तोड़ देना दुरुस्त है। जैसे: अचानक पेट में ऐसा दर्द उठा कि बताव हो गया या सांप ने काट लिया तो दवा पी ले और रोज़ा तोड़ डालना दुरुस्त है। ऐसे ही अगर ऐसी प्यास लगी कि मरने का डर है तो भी रोज़ा तोड़ डालना दुरुस्त है।

मस'ला २— हामला औरत को कोई ऐसी बात हो गई जिससे उसे अपनी या बच्चे की जान का डर है तो रोज़ा तोड़ डालना दुरुस्त है।

मस'ला ३— खाना पकाने की वजह से बहुत-ही ज़्यादा प्यास लग आई और इतनी ज़्यादा बेचैनी हुई कि अब जान का ख़ौफ़ है तो रोज़ा खोल डालना दुरुस्त है लेकिन अगर खुद उसने जानकर इतना काम किया जिससे ऐसी हालत हो गई तो गुनाहगार होगी।

मस'ला ४— अगर ऐसा बीमार है कि रोज़ा नुकसान करता है और यह डर है कि अगर रोज़ा रखा तो बीमारी बढ़ जाएगी या देर में अच्छा होगा या जान जाती रहेगी तो रोज़ा न रखें। जब अच्छा हो जाये तो उस की कज़ा रख ले। लेकिन अपने दिल से ही ऐसा ख़्याल कर लेने से रोज़ा तोड़ देना दुरुस्त नहीं है बल्कि जब कोई भुसलमान दीनदार हकीम तबीब (डॉक्टर) कह दे कि रोज़ा तुमको नुकसान करेगा तब छोड़ देना चाहिए।

मस'ला ५— अगर हकीम या डॉक्टर काफ़िर है या शरअ का पाबंद नहीं है तो उसकी बात का यकीन नहीं है। उसके कहने से रोज़ा न छोड़ें।

मस'ला ६— अगर हकीम ने कुछ नहीं कहा लेकिन खुद अपना तजुर्बा है और कुछ ऐसी निशानियां मालूम हैं जिनकी वजह से दिल गवाही देता है कि रोज़ा नुकसान करेगा तब भी रोज़ा न रखें और खुद तजुर्बेकार न हों और उस बीमारी का कुछ मालूम न हो तो ख़्याल का एतबार नहीं। अगर दीनदार हकीम के बग़ैर बताए और बिना तजुर्बे के अपने ख़्याल से ही रमज़ान का रोज़ा तोड़ा तो कफ़ारा देना पड़ेगा और अगर रोज़ा न रखा तो गुनाह होगा।

मस'ला ७— अगर बीमारी दूर हो गई लेकिन कमज़ोरी बाकी है और पूरा यकीन है कि अगर रोज़ा रखा तो बीमारी फिर आ दबोचेगी तब भी रोज़ा न रखना जायज़ है।

मस'ला ८— अगर कोई मुसाफ़िरत में हो तो उसको भी दुरुस्त है कि रोज़ा न रखे। फिर कभी उसकी कज़ा रख ले।

मस'ला ९— मुसाफ़िरत में अगर रोज़े से कोई तकलीफ़ न हो

जैसे रेल पर सवार है और यह ख्याल है कि शाम तक घर पहुँच जाना होगा या अपने साथ राहत व आराम का सामान मौजूद है तो ऐसे वक़्त में सफ़र में भी रोज़ा रख लेना बेहतर है और अगर रोज़ा न रखें बल्कि कज़ा रख ले तब भी कोई गुनाह नहीं। हाँ रमज़ान शरीफ़ के रोज़े की जो फज़ीलत है वह न मिल सकेगी और अगर रास्ते में रोज़े की वजह से तकलीफ़ और परेशानी हो तो ऐसे वक़्त रोज़ा न रखना बेहतर है।

मस'ला १०— अगर बीमारी न गई और उसी में मौत हो गई या अभी घर नहीं आया और मुसाफ़िरत में मौत हो गई तो जितने रोज़े बीमारी या सफ़र की वजह से छूटे हैं आख़िरत में उनकी पूछगुछ न होगी क्योंकि कज़ा रखने की अभी मोहलत नहीं मिल सकी थी।

मस'ला ११— अगर बीमारी में दस रोज़े गए, फिर पाँच दिन ठीक हालत रही लेकिन कज़ा रोज़े नहीं रखे तो पाँच रोज़े माफ़ हैं। सिर्फ़ पाँच रोज़ों की कज़ा न रखने पर पकड़ होगी इसलिए ज़रूरी है कि जितने रोज़ों की पकड़ होने वाले हैं उतने रोज़ों का फ़िदया देने के लिए कह मरे जब कि पास माल हो।

मस'ला १२— अगर रास्ते में पन्द्रह दिन रहने की नीयत से तहराव हो गया तो अब रोज़ा छोड़ देना दुरुस्त नहीं है। अलबत्ता पन्द्रह दिन से कम तहरने की नीयत हो तो रोज़ा न रखना दुरुस्त है।

मस'ला १३— हामला और दूध पिलाने वाली औरत को जब अपनी या बच्चे की जान का कुछ डर हो तो रोज़ा न रखे। फिर कभी रोज़ा रख ले लेकिन अगर अपना शौहर मालदार है कि कोई अन्ना रख कर दूध पिलवा सकता है तो दूध पिलाने की वजह से माँ को रोज़ा छोड़ देना दुरुस्त नहीं है। अलबत्ता अगर वह ऐसा लड़का है कि सिवाए अपनी माँ के किसी और का दूध नहीं पीता तो ऐसे वक़्त माँ का रोज़ा न रखना दुरुस्त है।

मस'ला १४— किसी अन्ना ने दूध पिलाने की नौकरी की फिर रमज़ान शरीफ़ के रोज़े से बच्चे की जान जाने का डर है, तो अन्ना

को भी रोज़ा न रखना दुरुस्त है।

मस'ला १५— अगर किसी औरत को हैज़ आ गया या बच्चा पैदा हुआ और निफ़ास हो गया तो हैज़ व निफ़ास रहने तक रोज़ा रखना दुरुस्त नहीं।

मस'ला १६— अगर कोई औरत रात को पाक हो गई तो अब सुबह रोज़ा न छोड़े। अगर रात को न नहाई हो तब भी रोज़ा रख ले और अगर सुबह होने के बाद पाक हुई तो अब पाक होने के बाद रोज़े की नीयत करना दुरुस्त नहीं। लेकिन कुछ खाना-पीना भी दुरुस्त नहीं है। अब दिन भर रोज़ेदार की तरह रहना चाहिए।

मस'ला १७— अगर कोई दिन को मुसलमान हुआ या दिन को जवान हुआ तो अब दिन भर कुछ खाना-पीना दुरुस्त नहीं है और अगर कुछ खा पी लिया तो उस रोज़े की कज़ा भी नये मुसलमान और नये जवान के ज़िम्मे वाजिब नहीं है।

10. फिदया

मस'ला १— किसी कैदी के बदले कुछ माल देकर उसे सरकार से खरीद लिया जाता है। ऐसे माल को फिदया कहते हैं। इसी तरह जिसको इतना बुढ़ापा हो गया कि रोज़ा रखने की ताकत नहीं रही या ऐसा बीमार है कि अब अच्छा होने की उम्मीद नहीं। न रोज़ा रखने की ताकत है तो वह रोज़ा न रखे और हर रोज़े के बदले एक मिस्कीन को सद्का-फित्र के बराबर गल्ला दे दे या सुबह व शाम पेट भर के उनको खाना खिला दे। शरअ में यही चीज़ फिदया है। अगर वह गल्ले के बदले में उतने ही गल्ले की कीमत दे दे, तब भी दुरुस्त है।

मस'ला २— वह गल्ला अगर थोड़ा-थोड़ा करके कई मिस्कीनों

को बांट दे तब भी ठीक है।

मस'ला ३— फिर अगर कभी ताकत आ गई या बीमारी से अच्छा हो गया तो सब रोज़े रखने पड़ेंगे और जो फिदया दिया है उसका सबाब अलग मिलेगा।

मस'ला ४— किसी के ज़िम्मे कई रोज़े क़ज़ा थे और वह मरते वक़्त यह वसीयत कर गया कि उसके रोज़ों के बदले फिदया दे दिया जाए तो उसके माल में से उसका वली यह फिदया दे दे और कफ़न वफ़न और कर्ज़ अदा करके जितना माल बचे उसकी तिहाई में से अगर सब फिदया निकल आए तो दे देना वाजिब है।

मस'ला ५— अगर उसने वसीयत नहीं की मगर वली ने अपने माल में से फिदया दे दिया तब खुदा से उम्मीद रखे कि शायद कुबूल कर ले और अब रोज़ों की पकड़ न होगी। बग़ैर वसीयत किए खुद मुर्दे के माल में से फिदया देना जायज़ नहीं है। इसी तरह अगर तिहाई माल से ज़्यादा हो जाए तो बावजूद वसीयत के भी ज़्यादा दे देना सब वारिसों की रज़ामन्दी के बग़ैर जायज़ नहीं। हां अगर सब वारिस खुशी से राज़ी हो जाएं तो दोनों सूरतों में फिदया देना दुरुस्त है। लेकिन नाबालिग वारिस की इज़ाज़त का शरअ में कुछ एतबार नहीं है। बालिग वारिस अपना हिस्सा अलग करके उसमें से दे दे तो दुरुस्त है।

मस'ला ६— अगर किसी की नमाज़ें क़ज़ा हो गई हों और वह यह वसीयत कर के मर गया कि उसकी नमाज़ों के बदले वह फिदया दे दिया जाए तो उसका भी यही हुक्म है।

मस'ला ७— हर वक़्त की नमाज़ों का उतना ही फिदया है जितना एक रोज़े का फिदया है। इस हिसाब से दिन-रात की पांच फ़र्ज़ और एक वित्र, छः नमाज़ों की तरफ़ से एक छटाक कम घीने ग्यारह सेर गेहूँ ८० रुपए के सेर से दे, मगर एहतियात के लिए पूरे बारह सेर दे।

मस'ला ८— किसी के ज़िम्मे ज़कात बाकी है और अभी अदा

नहीं की, तो वसीयत कर जाने से उसका भी अदा कर देना वारिसों पर वाजिब है। अगर वसीयत नहीं की और वारिसों ने अपनी खुशी से दे दी तो जकात अदा नहीं हुई।

मस'ला ९— अगर वली मुर्दे की तरफ से कज़ा रख ले या उसकी तरफ से कज़ा नमाज़ें पढ़ ले तो यह दुरुस्त नहीं यानी उसके जिम्मे से न उतरेगी।

मस'ला १०— बे-वजह रमज़ान का रोज़ा छोड़ देना दुरुस्त नहीं और बड़ा ही गुनाह है। यह न समझे कि उसके बदले एक रोज़ा रख लिया जायेगा क्योंकि हदीस शरीफ में आया है कि रमज़ान के एक रोज़े के बदले में अगर साल भर बराबर रोज़ा रखता रहे तब भी उतना सवाब न मिलेगा जितना कि रमज़ान में एक रोज़े का सवाब मिलता है।

मस'ला ११— अगर किसी ने अपने बुरे कामों की वजह से रोज़ा नहीं रखा और लोगों के सामने कुछ न खाए पीए और न जाहिर करे कि उस दिन उसका रोज़ा नहीं है, क्योंकि गुनाह करके उसे जाहिर करना भी गुनाह है। अगर सबसे कह दिया तो दोहरा गुनाह होगा एक तो रोज़ा न रखने का, दूसरे जाहिर करने का।

मस'ला १२— जब लड़का या लड़की रोज़ा रखने के लायक हो जाये और जब दस बरस की उम्र हो जाये तो मार कर रोज़ा रखवाया जाये। और सब रोज़े न रखे जा सकें तो जितने भी रख सकें तो ठीक है।

मस'ला १३— अगर नागालिग लड़का लड़की रोज़ा रख कर तोड़ डाले तो उसको कज़ा न रखाए अलबत्ता अगर नमाज़ की नीयत करके तोड़ दे तो उसे दोहराए।

11. ए'तकाफ़

रमज़ान शरीफ की बीसवीं तारीख (२०वीं) को दिन छुपने से ज़रा

पहले से रमज़ान की २९ या ३० तारीख़ यानी जिस दिन ईद का चांद नज़र आए उस तारीख़ तक सूरज छुपने तक मस्जिद में बैठने को ऐतकाफ़ कहते हैं। इसका बड़ा सवाब है।

ऐतकाफ़ के लिए ज़रूरी है कि ये चीज़ें होनी चाहिए :-

(१) जमाअत वाली मस्जिद में ठहरना।

(२) ऐतिकाफ़ की नीयत से ठहरना। क्योंकि बिना ऐसा किये ठहर जाने को ऐतिकाफ़ नहीं कहते। नीयत के सही होने के लिए नीयत करने वाले का मुसलमान और आकिल होना शर्त है। इसलिए अक़ल और इस्लाम का शर्त होना भी नीयत के साथ आ गया।

(३) जबनात, हैज़ व निफ़ास और हर तरह की गन्दगी से پاک होना।

मस'ला १- सबसे अच्छा वह ऐतिकाफ़ है जो मस्जिदे हराम यानी काबा मुकर्रमा में किया जाये। इसके बाद मस्जिद नबी का, बाद में मस्जिद बैतुल मुक़द्दस का और सबके बाद उस 'जामा मस्जिद' का जिसमें जमाअत का इतज़ाम हो। अगर जामा मस्जिद में जमाअत का इतज़ाम न हो तो मुहल्ले की मस्जिद। उसके बाद वह मस्जिद जिसमें ज़्यादा जमाअत होती हो।

मस'ला २- ऐतिकाफ़ की तीन किस्में हैं- वाजिब, सुन्नते मुअवक़दा, और मुस्तहब। वाजिब ऐतिकाफ़ वह है जो नज़र की जाये। नज़र चाहे ग़ैर मुअल्लक (बिना किसी खास बात के लटका हुआ न हो)। जैसे: कोई आदमी बिना शर्त के ऐतिकाफ़ की नज़र करे या मुअल्लक बिना (किसी खास वजह से) जैसे कोई यह शर्त कर ले कि अगर उसका वह काम हो गया तो ऐतिकाफ़ करेगा। सुन्नते मुअवक़दा वाला ऐतिकाफ़ वह है कि जब रमज़ान शरीफ़ के आज़िज़ीरी दस दिनों में नबी करीम सल्ल० से लाज़िम भानकर ऐतिकाफ़ करना जैसा कि सही हदीस में है। अगर वह सुन्नते मुअवक़दा ऐतिकाफ़ कुछ के करने से सब के ज़िम्मे से उतर जायेगा। मुतहब ऐतिकाफ़ वह है जिसमें

रमज़ान शरीफ के आखिरी दस दिनों के सिवा और किसी वक़्त जैसे रमज़ान के पहले दूसरे दस-दस दिन हों या कोई और महीना हो।

मस'ला ३—एतकाफ़ वाजिब के लिए रोज़ा शर्त है। जब कोई शख्स एतिकाफ़ करे तो उसको रोज़ा रखना भी ज़रूरी होगा बल्कि अगर यह भी नीयत करे कि मैं रोज़ा न रखूंगा, तब भी उसको रोज़ा रखना लाज़िम होगा। इसी वजह से अगर कोई शख्स रात के एतिकाफ़ की नीयत करे तो वह लगव समझी जाएगी। क्योंकि रात रोज़े का मक़ल नहीं। हां अगर रात दिन दोनों की नीयत करे या सिर्फ़ कई दिनों की, तो फिर रात ज़मनन दाख़िल हो जाएगी और रात को भी एतिकाफ़ करना ज़रूरी होगा। रोज़ा का खास एतिकाफ़ के लिए रखना ज़रूरी नहीं। ख़्वाह किसी ग़रज़ से रोज़ा रखा जाए। एतिकाफ़ के लिए काफी हैं। मसलन कोई शख्स रमज़ान में एतिकाफ़ की नज़ करे तो रमज़ान का रोज़ा उस एतिकाफ़ के लिए भी काफी है। हां उस रोज़ा का वाजिब होना ज़रूरी है। नफ़िल रोज़ा इसके लिए काफी नहीं। मसलन कोई शख्स नफ़िल रोज़ा रखे और बाद उसके इसी दिन एतिकाफ़ की नज़ करे तो सहीह नहीं। अगर कोई शख्स पूरे रमज़ान के एतिकाफ़ की नज़ करे और इत्तिफ़ाक़ से रमज़ान में न कर सके तो किसी और महीने में उसके बदले कर लेने से उसकी नज़ पूरी हो जाएगी मगर अलल इसताल रोज़ा रखना और उनमें एतिकाफ़ करना ज़रूरी होगा।

मस'ला ४— मसनून एतकाफ़ में रोज़ा भी होता ही है, इसके वास्ते शर्त नहीं करनी चाहिए।

मस'ला ५— मुस्तहब एतकाफ़ में भी एहतियात यही है कि रोज़ा शर्त है और यकीनी बात यह है कि शर्त नहीं।

मस'ला ६— मुस्तहब एतकाफ़ कम-से-कम एक दिन हो सकता है और ज़्यादा जितनी नीयत की जाये। मसनून एतकाफ़ दस दिन इसलिए कि मसनून एतकाफ़ रमज़ान के आखिरी दस दिनों में होता है और मुस्तहब एतकाफ़ के लिए कोई मिक़दार मुद्त तय नहीं है। यह एक मिनट या इससे भी कम हो सकता है।

मस'ला ७— एतकाफ की हालत में दो काम हराम हैं। यानी उनके करने से अगर वाजिब या मसनून एतकाफ है तो फासिद हो जायेगा और उसकी कच्चा करनी पड़ेगी और अगर मुस्तहब एतकाफ है तो ख़त्म हो जायेगा।

पहला काम एतकाफ की जगह से बिना ज़रूरत बाहर निकलना ज़रूरत आम है चाहे तबई (प्राकृतिक) हो या शरई। कुदरती ज़रूरत जैसे। पाखाना, पेशाब, सोहबत का गुस्ला। खाना खाना भी इसी में आता है जबकि खाना लाने वाला कोई न हो और शरई ज़रूरत जैसे जुमे की नमाज़ पढ़ना।

मस'ला ८— जिस ज़रूरत के लिए अपने एतकाफ की मस्जिद से जाये तो उससे फारिग होने के बाद वहां न रुके। और जहां तक हो ऐसी जगह पाखाना पेशाब को जाये जो उस मस्जिद से ज़्यादा करीब हो।

हदीस १— नबी करीम सल्ल० का इर्शाद है कि जिस किसी ने अल्लाह तआला के लिये एक दिन का भी एतकाफ किया तो अल्लाह तआला उसको जहन्नम से तीन खंदकों के बराबर दूर कर देगा।

—तबरानी

हदीस २— नबी करीम सल्ल० ने फरमाया किसी मुसलमान भाई की ज़रूरत पूरी करना या उसमें कोशिश करना दस साल के एतिकाफ से भी ज़्यादा सवाब वाला है।

— तबरानी

हदीस ३— नबी करीम सल्ल० ने फरमाया कि रमज़ान के दिनों में एतिकाफ करने का सवाब दो हज़ और दो उमरा के बराबर है

—बैहकी

मस'ला ९— अगर जुमे की नमाज़ पढ़ने के लिए किसी मस्जिद में जाये और नमाज़ के बाद वहीं ठहर जाये और वहीं एतकाफ पूरा करे तब भी जायज़ है अगर यह मकरूह है।

मस'ला १०— भूले से भी अपने एतकाफ की मस्जिद को एक मिनट बल्कि उस से भी कम छोड़ देना जायज़ नहीं।

मस'ला ११— जो काम ज्यादा न होने वाला हो उसके लिए अपनी मस्जिद को छोड़ देना एतकाफ के खिलाफ है जैसे किसी मरीज को देखने के लिए जाना, डूबते हुए को बचाना, आग बुझाना या मस्जिद के गिर जाने का डर होना। अगरचे इन सूरतों में मस्जिद से निकल जाना गुनाह नहीं बल्कि जान बचाने के लिए जरूरी है मगर एतकाफ टूट जायेगा। अगर किसी शरई या कुदरती जरूरत के लिए निकले और दर्मियान में चाहे जरूरत पूरी हो जाने से पहले या बाद में किसी मरीज को देखे या नमाज़ जनाज़ा में शरीक हो जाये तो कुछ बुराई नहीं।

मस'ला १२— जुमे की नमाज़ के लिए जाये और इतना वक़्त मिल जाए कि मस्जिद की नमाज़ और जुमे की नमाज़ और सुन्नतें वहां पढ़ सके और बाद नमाज़ के भी सुन्नतें पढ़ने के लिए ठहरना जायज है। इस वक़्त का अन्दाज़ा एतकाफ करने वाले पर छोड़ा गया है। अगर अन्दाज़ा ग़लत हो जाए यानी कुछ पहले भी पहुंच जाए तो कुछ बुराई नहीं है।

मस'ला १३— अगर कोई आदमी ज़बरदस्ती मस्जिद से बाहर निकाल दिया जाए तब भी उसका एतकाफ रहेगा। जैसे: किसी जुर्म में सरकार की तरफ से वारंट जारी हुआ और सिपाही उसे गिरफ्तार करे ले जाएं या किसी का कर्ज़ हो वह उसको बाहर निकालें।

मस'ला १४— इसी तरह अगर किसी शरई या कुदरती जरूरत से निकले और रास्ते में रोक ले या बीमार हो जाए और मस्जिद तक पहुंचने में देर हो जाए तब भी एतकाफ काफी रहेगा।

दूसरा काम— ये वे काम हैं जो एतकाफ की हालत में नाजायज हैं। जैसे सोहबत करना चाहे जानकर या भूल से यानी एतकाफ का ख्याल न रहने की वजह से मस्जिद में हो या मस्जिद से बाहर हर हाल में एतकाफ झूठा पड़ जायेगा। इसी तरह जो काम सोहबत करने के लिए उकसाते हैं। जैसे बोसा लेना, धिपटाना—ये भी एतकाफ में नाजायज हैं मगर इनसे एतकाफ झूठा नहीं होता जब तक कि मनी

खारिज न हो। हाँ! सिर्फ ख्याल और फिक्र से अगर मनी खारिज हो तो एतिकाफ फासिद न होगा।

मस'ला १५— एतकाफ की हालत में बिना जरूरत किसी दुनियावी काम में लग जाना मकरुह तहरीमी है। जैसे: जरूरत बगैर खरीद-बिक्री या तिजारत का कोई काम करना। मगर जो काम बहुत ही जरूरी हो जैसे घर में खाने को कुछ न हो ऐसी हालत में खरीद-फरोख्त करना जायज है। मगर उन चीजों का मस्जिद में लाना किसी भी हाल में जायज नहीं है। बशर्ते कि उनके मस्जिद में लाने से मस्जिद खराब हो जाने या जगह हो जाने का डर न हो तो कुछ लोग इसे जायज बताते हैं।

मस'ला १६— एतकाफ की हालत में बिल्कुल घुप बैठना भी मकरुह तहरीमी है। हाँ बुरी बातें ज़बान से न निकाले। झूठ न बोले। बुराई न करे बल्कि कुरआन मजीद की तिलावत या कोई वजीफा पढ़े या किसी और इबादत में अपना वक़्त लगाये।

मस'ला १७— अगर कोई औरत एतकाफ करे अपने घर में जहाँ नमाज़ पढ़ने के लिए जगह तय कर रखी है वहाँ पाबन्दी से जाकर बैठे। बस पेशाब पाखाने की मजबूरी से वहाँ से उठना दुरुस्त है। अगर कोई खाना- पानी देने वाला हो तो खाने के लिए भी न उठे। हर वक़्त उसी जगह बैठी रहे और वहीं पर सोये।

मस'ला १८— अगर औरत को एतकाफ की हालत में हैज़ या निफास आ जाए तो एतकाफ छोड़ दे क्योंकि इस हालत में एतकाफ दुरुस्त नहीं।

मस'ला १९— एतकाफ में मर्द के साथ सोना, लिपटना या चिपटना भी ठीक नहीं।

5. ज़कात

1. ज़कात क्या है ?

जिसके पास माल हो और वह उसकी ज़कात न निकालता हो वह अल्लाह तआला के नज़दीक बड़ा गुनाहगार है। क़ियामत के दिन उस पर बड़ा अज़ाब होगा।

मस'ला १— जिसके पास साढ़े बायन तोला चांदी या साढ़े सात तोला सोना हो और एक साल तक बाकी रहे तो साल गुज़र जाने पर उसकी ज़कात देना वाजिब है और अगर इससे कम हो तो उस पर ज़कात देना वाजिब नहीं।

मस'ला २— किसी के पास आठ तोला सोना चार छः महीने तक रहा फिर वह गुम हो गया और तीन महीने बाद फिर मिल गया तब भी ज़कात देना वाजिब है। मतलब यह कि जब साल के शुरू और आख़िर में मालदार हो जाये और साल के बीच में थोड़े दिन कम हो जाने से ज़कात माफ़ नहीं होती।

मस'ला ३— किसी के पास आठ-नौ तोला सोना था लेकिन साल गुज़रने से पहले जाता रहा। पूरा साल नहीं गुज़रने पाया तो ज़कात वाजिब नहीं।

मस'ला ४— अगर दो सौ रुपया पास है और एक सौ रुपये का कर्ज़दार है तो एक सौ रुपए की ज़कात वाजिब है।

मस'ला ५— चांदी के ज़ेयर, बर्तन और सच्चा गोटा, ठप्पा, सब पर ज़कात वाजिब है चाहे पहनती रहती हो या बन्द रखे हो या कभी-कभी पहनता हो। मतलब यह कि चांदी सोने की हर चीज़ पर

जकात वाजिब है अलबत्ता अगर इस वजन से कम हो जो ऊपर ब्यान हुई है तो जकात वाजिब न होगी।

मस'ला ६— सोना चांदी अगर खरा न हो बल्कि उसमें कुछ मैल हो जैसे चांदी में रांग मिला हुआ है तो देखें चांदी ज्यादा है या रांग। अगर चांदी ज्यादा हो तो उसका वही हुक्म है और अगर रांग ज्यादा है तो उसको चांदी न समझेंगे। इसलिए जो हुक्म पीतल, तांबे, लोहे, रांग वगैरा असबाब का वही हुक्म है।

मस'ला ७— किसी के पास न तो पूरी मिक्कदार सोने की है, न पूरी मिक्कदार चांदी की बल्कि थोड़ा सोना है और थोड़ी चांदी तो अगर दोनों की कीमत मिलाकर साढ़े बावन तोले चांदी के बराबर हो जाए या साढ़े सात तोले सोने के बराबर हो जाए तो जकात वाजिब है और अगर दोनों चीजें इतनी थोड़ी हैं कि दोनों की कीमत उतनी चांदी के बराबर है, न उतने सोने के बराबर तो जकात वाजिब नहीं और सोने चांदी दोनों की पूरी-पूरी मिक्कदार हो तो कीमत लगाने की कोई जरूरत नहीं।

मस'ला ८— किसी के पास सौ रुपये जरूरत से ज्यादा रखे थे फिर पूरा साल होने से पहले पचास रुपए और मिल गए तो उन पचास रुपयों का हिसाब अलग न करेंगे बल्कि उसी सौ रुपये के साथ उसको मिला देंगे और जब उन सौ रुपयों का साल पूरा होगा तो पूरे डेढ़ सौ की जकात वाजिब होगी और ऐसा समझेंगे कि पूरे डेढ़ सौ रुपये को साल गुजर गया।

मस'ला ९— किसी के पास सौ तोले चांदी रखी थी। फिर साल गुजरने से पहले दो-चार तोले सोना आ गया या दस तोले सोना मिल गया तब भी उसका हिसाब अलग न होगा बल्कि उसे चांदी के साथ मिलाकर जकात का हिसाब होगा। इसीलिए उस चांदी का हिसाब पूरा हो जाएगा तो उस सब माल की जकात वाजिब होगी।

मस'ला १०— सोने चांदी के सिवा और चीजें जितनी हैं जैसे लोहा, पीतल, तांबा, गिल्ट, रांग वगैरा और कपड़े, जूते और

उसके सिवा जो असबाब हो उसका हुक्म यह है कि अगर उसको बेचता और सौदागरी करता है तो देखें वह असबाब कितना है। अगर इतना है कि उसकी कीमत साढ़े बावन तोले चांदी या साढ़े सात तोले सोने के बराबर है तो जब साल गुजर जाये तो उस सौदागरी के असबाब में ज़कात वाजिब है और इतना न हो तो उसमें ज़कात वाजिब नहीं है चाहे जितना माल हो अगर हजारों रुपये का माल हो

तब भी ज़कात वाजिब नहीं।

मस'ला ११— घर के असबाब जैसे पतीली, देगचा, बड़ी देग, सेनी, लगन, खाने-पीने के बर्तन, रहने-सहने का मकान, पहनने के कपड़े, सच्चे मोतियों के हार वगैरा इन चीजों पर ज़कात वाजिब नहीं। मतलब यह कि सोने चांदी के सिवा और जितना माल असबाब हो अगर वह सौदागरी का है तो ज़कात वाजिब है नहीं तो उस पर ज़कात वाजिब नहीं।

मस'ला १२— किसी के पास पांच या दस घर हैं उन्हें किराये पर चलाता है तो उन मकानों पर भी ज़कात नहीं है चाहे जितनी कीमत के हों। ऐसे ही अगर किसी ने दो चार सौ रुपये के बर्तन खरीद लिए और उनको किराए पर चलाता रहता है तो उस पर भी ज़कात वाजिब नहीं होती।

मस'ला १३— औरत के पहनने के घरेलू जोड़े चाहे जितनी कीमत के हों उन पर ज़कात वाजिब नहीं। लेकिन अगर उनमें सच्चा काम है और इतना काम है कि अगर चांदी छुड़ाई जाए तो साढ़े बावन तोले या इससे ज्यादा निकलेगी तो इस चांदी पर ज़कात वाजिब है और अगर इतना न हो तो ज़कात वाजिब नहीं।

मस'ला १४— किसी के पास कुछ सोना चांदी है और सौदागरी का माल है तो सब को मिलाकर अगर उसकी कीमत साढ़े बावन तोले चांदी या साढ़े सात तोले सोने के बराबर हो जाए तो ज़कात वाजिब है और अगर इतना न हो तो वाजिब नहीं।

मस'ला १५— सौदागरी का माल वह कहलाएगा जिसको इसी इरादे से लिया हो कि उसकी सौदागरी की जाएगी। अगर किसी ने अपने घर खर्च के लिए या शादी वगैरा से खर्च के लिए चावल माल लिए फिर इरादा हो गया कि उसकी सौदागरी की जाए तो वह माल सौदागरी का नहीं है और इस पर जकात भी वाजिब नहीं है।

मस'ला १६— अगर किसी पर आपका कर्ज आता है तो उस कर्ज पर भी जकात वाजिब है लेकिन कर्ज की तीन किस्में हैं— एक यह कि नक़द रुपया या सोना, या चांदी किसी को कर्ज दिया या सौदागरी का असबाब बेचा उसकी कीमत बाकी है और एक साल के बाद या दो तीन साल के बाद वसूल हुआ तो अगर इतनी मिकदार हो कि जिस पर जकात वाजिब होती है तो उन सब बरसों की जकात देना वाजिब है और अगर एकमुश्त न वसूल हो तो जब उसमें से ग्यारह रुपये मिलें तब उतने की जकात वाजिब है और अगर इससे कम मिले तो वाजिब नहीं। फिर जब ग्यारह रुपये मिलें तो उसकी जकात दे और उसी तरह देता रहे और जब वे तो सब बरसों की दे और अगर कर्ज इससे कम हो तो जकात वाजिब न होगी। हां अगर उसके पास कुछ और माल भी हो और दोनों को मिलाकर मिकदार पूरी हो जाए तो जकात वाजिब होगी।

मस'ला १७— अगर नक़द नहीं दिया और न सौदागरी का माल बेचा बल्कि कोई और चीज़ बेची थी जो सौदागरी की न थी। जैसे पहनने के कपड़े बेच डाले या घर का असबाब बेच डाला। उसकी कीमत बाकी और इतनी है जितनी जकात वाजिब होती है। फिर वह कीमत कई बरस बाद वसूल हो तो सब बरसों की जकात देना वाजिब है और अगर सब एक बार करके वसूल न हों बल्कि थोड़ा-थोड़ा करके मिले जब तक चौवन रुपये बारह आने मिल जाएं तो सब बरसों की जकात देना वाजिब है।

मस'ला १८— शौहर के ज़िम्मे महर है। वह कई बरस के बाद मिला तो उस की जकात का हिसाब मिलने के दिन से है। पिछले

बरसों की ज़कात वाजिब नहीं बल्कि अगर उसके पास रखा रहे और उस पर साल गुज़र जाए तो ज़कात वाजिब होगी, नहीं तो नहीं।

मस'ला १९— अगर कोई मालदार आदमी जिस पर ज़कात वाजिब है साल गुज़रने से पहले ही ज़कात दे दे और साल के पूरा होने का इन्तज़ार न करे तो यह भी जायज़ है और ज़कात अदा हो जाती है।

मस'ला २०— किसी के माल पर पूरा साल गुज़र गया लेकिन अभी ज़कात नहीं निकाली थी कि माल चोरी हो गया या और किसी तरह जाता रहा तो ज़कात भी माफ हो गई। अगर खुद अपना माल किसी को दे दिया या किसी तरह अपने इख्तियार से हलाक कर डाला तो जितनी ज़कात वाजिब हुई थी वह माफ नहीं हुई बल्कि देनी पड़ेगी।

मस'ला २१— साल पूरा होने के बाद किसी ने अपना सारा माल ख़ैरात कर दिया तब भी ज़कात माफ हो गई।

मस'ला २२— किसी के पास दो सौ रुपये थे। एक साल के बाद उसमें से एक सौ रुपये चोरी हो गए या एक सौ रुपये ख़ैरात कर दिए तो एक सौ की ज़कात माफ हो गई बस एक सौ की ज़कात देनी पड़ेगी।

मस'ला २३— जब माल पर पूरा साल गुज़र जाए, फौरन ज़कात अदा कर दे। नेक काम में देर लगाना अच्छा नहीं कि शायद अघानक मौत आ जाए और उसका देना गर्दन पर रह जाए। अगर साल गुज़रने पर ज़कात अदा नहीं की यहां तक कि दूसरा साल भी गुज़र गया तो गुनाहगार हुआ। अब भी तौबा करके दोनों साल की ज़कात दे दे।

मतलब यह है कि उम्र में कभी-न-कभी ज़रूर दे दे बाकी न रखे।

मस'ला २४— जितना माल है उसका चालीसवां हिस्सा ज़कात में देना वाजिब है यानी सौ रुपये पर द्वादस रुपये।

मस'ला २५— एक ही फकीर को इतना माल दे देना जितने माल के होने से ज़कात बाजिब होती है मकरुह है। अगर दे दिया तो ज़कात अदा हो गई उससे कम देना जायज़ है, मकरुह भी नहीं।

मस'ला २६— कोई कर्ज़ मांगने आया और यह मालूम है कि वह इतना तंगदस्त और मुफ़िलस है कि कभी अदा न कर सकेगा तो ऐसा नादहन्द है कि कर्ज़ लेकर कभी अदा नहीं करता। उसे कर्ज़ के नाम से ज़कात का रुपया दिया और अपने दिल में सोच लिया कि ज़कात दी, तो ज़कात अदा हो गई अगरचे वह अपने दिल में यही समझे कि मुझे कर्ज़ दिया है।

मस'ला २७— किसी गरीब आदमी पर आपके १० रुपये कर्ज़ हैं और आपके माल की ज़कात भी १० रुपए या १० से ज़्यादा है उसने अपना कर्ज़ ज़कात की नीयत से माफ़ कर दिया तो ज़कात अदा नहीं हुई। अलबत्ता उसको १० रुपए ज़कात की नीयत से दे दें तो ज़कात अदा हो गई अब यही रुपये अपने कर्ज़ में उससे ले लेना दुरुस्त नहीं।

मस'ला २८— ज़कात का रुपया खुद नहीं दिया बल्कि किसी और को दे दिया कि किसी को दे दे, यह भी जायज़ है। अब वह आदमी देते वक़्त ज़कात की नीयत भी न करे तब भी ज़कात अदा हो जायेगी।

मस'ला २९— अगर आपने किसी को इतना कह दिया कि वह आपकी तरफ़ से ज़कात दे दे, इसलिए उसकी तरफ़ से ज़कात दे दी तो ज़कात अदा हो गई और जितना उसने आपकी तरफ़ से दे दिया है, आप से ले ले।

२. पैदावार की ज़कात

मस'ला १— कोई शहर काफ़िरों के कब्ज़े में था वही लोग वहां रहते थे। फिर मुसलमानों ने लड़कर वह शहर उनसे छीन लिया और

यहां इस्लाम फैला दिया और मुसलमान बादशाह ने काफिरों से लेकर शहर की सारी जमीन उन्हीं मुसलमानों को बांट दी, ऐसी जमीन को शरअ (शरीअत) में उशरी कहते हैं। इस तरह अरब मुल्क की सारी जमीन उशरी है।

मस'ला २— अगर किसी के बाप-दादा से यही उशरी जमीन बराबर घटा आ रही हो या किसी ऐसे मुसलमान से खरीदी जिसके पास उसी तरह चली आती हो तो ऐसी जमीन में जो कुछ पैदा हो उसमें भी जकात वाजिब है। और इसका तरीका यह है कि अगर खेत सींचना न पड़े और बारिश के पानी से पैदावार हो गई या नदी या दरिया के किनारे पर तराई में कोई चीज बोई गई और बिना सींचे पैदा हो गई तो ऐसे खेत में जितना पैदा हुआ है उसका दसवां हिस्सा खैरात कर देना वाजिब है यानी दस मन में एक मन और अगर खेत चरस या रहट या किसी और तरीके से सींचा है तो पैदावार का बीसवां हिस्सा खैरात कर दे यानी बीस मन में एक मन और यही हुक्म है बाग का। ऐसी जमीन में चाहे कितनी ही थोड़ी चीज पैदा हुई हो बहरहाल यह सदका खैरात करना वाजिब है। कम और ज्यादा होने में कोई फर्क नहीं है।

मस'ला ३— अनाज, साग, तरकारी, मेवा, फल-फूल वगैरा जो कुछ पैदा हो सब का यही हुक्म है।

मस'ला ४— उशरी जमीन, पहाड़ या जंगल से अगर राहद निकाला जाए तो उसमें भी यह सदका वाजिब है।

मस'ला ५— अगर उशरी जमीन कोई काफिर खरीद ले तो वह उशरी नहीं रहती। फिर अगर उसे मुसलमान भी खरीद ले या और तरीके से उसको मिल जाए तब भी उशरी न होगी।

मस'ला ६— यह दसवां या बीसवां हिस्सा पैदावार वाले के जिम्मे है सो अगर खेत बटाई पर हो तो जमींदार और किसान अपने-अपने हिस्से का दें।

3. ज़कात किस पर जायज़ है ?

मस'ला १— जिसके पास साढ़े बावन तोले चांदी या साढ़े सात तोले सोना या इतनी ही कीमत की सौदागरी का माल हो, उसे शरीअत में मालदार कहते हैं। ऐसे आदमी को ज़कात का पैसा लेना और खाना हलाल नहीं। इसी तरह जिसके पास उतनी ही कीमत का कोई माल हो जो सौदागरी का तो नहीं लेकिन ज़रूरत से ज्यादा है तो वह भी मालदार है। ऐसे शख्स को भी ज़कात का पैसा लेना और खाना हलाल नहीं है।

मस'ला २— जिसके पास इतना माल नहीं बल्कि थोड़ा माल है या कुछ भी नहीं यानी एक दिन के गुज़ारे के लिए भी नहीं उसे गरीब कहते हैं। ऐसे लोगों को ज़कात का पैसा देना दुरुस्त है और इन लोगों को लेना भी दुरुस्त है।

मस'ला ३— बड़ी-बड़ी देगों और बड़े-बड़े फरूश व शामियाने जिनकी बरसों में एक दो बार कहीं शादी (विवाह) में ज़रूरत पड़ती है, रोज़ाना नहीं, वह ज़रूरी सामान नहीं है।

मस'ला ४— रहने का घर, पहनने के कपड़े, काम-काज के लिए नीकर-चाकर और घर का सामान जो अक्सर काम में रहता है, सब ज़रूरी असबाब में दाखिल है। इनके होने से मालदार नहीं होगा। चाहे जितनी कीमत का हो इसलिए इसको ज़कात का पैसा देना दुरुस्त है। इसी तरह पढ़े-लिखे आदमी के पास उसकी समझ और बर्ताव की किताबें ज़रूरी असबाब में दाखिल हैं।

मस'ला ५— किसी के पांच-दस मकान हैं, जिनको किराये पर चलाता है और उसकी आमदनी से गुज़र करता है या एक-दो गांव हैं जिनकी आमदनी आती है, लेकिन बाल-बच्चे और घर में खाने-पीने वाले लोग इतने ज्यादा हैं कि अच्छी तरह बसर नहीं हो सकती और तंगी रहती है और उसके पास कोई ऐसा माल भी नहीं जिसमें ज़कात

वाजिब हो तो ऐसे शख्स को भी ज़कात का पैसा देना दुरुस्त है।

मस'ला ६— किसी के पास हजार रुपये मौजूद हैं, लेकिन वह पूरे हजार रुपये या इससे भी ज़्यादा का कर्ज़दार है तो उसको भी ज़कात का पैसा देना दुरुस्त है और अगर कर्ज़ा हजार रुपये से कम हो तो यह देखा जाए कि कर्ज़ दे कर कितने रुपये बचते हैं। अगर इतने बचें जितने में ज़कात वाजिब होती है तो उस को ज़कात का पैसा देना दुरुस्त नहीं और अगर इससे कम बचें तो देना दुरुस्त है।

मस'ला ७— एक शख्स अपने घर का बड़ा मालदार है, लेकिन कहीं सफर में ऐसा मौका हुआ कि उस के पास कुछ खर्च नहीं रहा। सारा माल चोरी हो गया या और कोई वजह ऐसी हुई कि अब घर तक पहुंचने का भी खर्च नहीं है, ऐसे शख्स को भी ज़कात का पैसा देना ठीक है। ऐसे ही अगर हाजी के पास रास्ते में पैसा खत्म हो गया और उस के घर में बहुत माल व दौलत है, उसको भी ज़कात देना ठीक है।

मस'ला ८— ज़कात का पैसा किसी काफिर को देना ठीक नहीं। मुसलमान को ही दे और ज़कात, सद्का, फिज़, नज़र और कफ़ारे के सिवा और ख़ैर ख़ैरात को काफिर को भी देना ठीक है।

मस'ला ९— ज़कात के पैसे से मस्जिद बनवाना या किसी लावारिस मुर्दे का गोर व कफ़न कर देना या मुर्दे की तरफ से उनका कर्ज़ा अदा कर देना या किसी और नेक काम में लगा देना ठीक नहीं है। जब तक किसी मुस्तहिक को न दिया जाए ज़कात अदा न होगी।

मस'ला १०— अपनी ज़कात का पैसा अपने माँ, बाप, दादा, दादी, नाना, नानी, परदादा वगैरा जिन लोगों से वह पैदा हुआ है, उनको देना ठीक नहीं है। हाँ! भाई, बहन, भतीजी, भांजी, चचा, फूफी, खाला, मामू, सौतेली माँ, सौतेला बाप, दादा, सास, सुसर वगैरा सबको देना ठीक है।

मस'ला ११— अगर नाबालिग लड़के का बाप मालदार हो तो

उसको ज़कात देना ठीक नहीं और अगर लड़का, लड़की बालिग हो गए और खुद वह मालदार नहीं लेकिन उनका बाप मालदार है तो उनको ज़कात का पैसा देना ठीक है।

मस'ला १२— अगर छोटे बच्चे का बाप तो मालदार नहीं लेकिन माँ मालदार है तो उस बच्चे को ज़कात का पैसा देना ठीक है।

मस'ला १३— सैयदों और अल्वियों को, इसी तरह जो हज़रत अब्बास रज़ि०, हज़रत जाफ़र रज़ि०, हज़रत अकील रज़ि०, या हज़रत हरिस रज़ि०, बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ि० की औलाद में हों, उनको ज़कात का पैसा देना ठीक नहीं। जैसे: नज़र, कफ़ारा, उश्र, सदका, फ़ित्र और किसी सदका, ख़ैरात का देना ठीक है।

मस'ला १४— घर के नौकर-चाकर, खिदमतगार, मामा, दाई वगैरा को ज़कात का पैसा देना ठीक है, लेकिन उनकी तनख़्वाह में हिसाब न करे बल्कि तनख़्वाह से ज्यादा बतौर इनाम इकराम दे दे और बिल में ज़कात देने की नीयत रखे तो ठीक है।

मस'ला १५— किसी औरत ने जिस लड़के को दूध पिलाया उस को और जिस औरत ने बच्चापन में आपको दूध पिलाया है, उसको भी ज़कात का पैसा देना ठीक है।

मस'ला १६— एक औरत की महर एक हजार रुपये है लेकिन उस औरत का शौहर बहुत ग़रीब है कि अदा नहीं कर सकता तो ऐसी औरत को भी ज़कात का पैसा देना ठीक है और अगर उसका शौहर अमीर है लेकिन महर नहीं देता या उसने अपना महर माफ़ कर दिया तो भी ज़कात का पैसा देना ठीक है और अगर उम्मीद है कि जब मांगेगी वह अदा कर देगा, कुछ देर न करेगा तो ऐसी औरत को ज़कात का पैसा देना ठीक नहीं।

मस'ला १७— एक आधमी को मुस्तहिक़ समझकर ज़कात दे दी। फिर मालूम हुआ कि वह तो मालदार है या सैयद है या अंधेरी रात में किसी को दे दी। फिर मालूम हुआ कि वह तो ऐसा रिश्तेदार है

जिसको ज़कात देना ठीक नहीं तो इन सब सूरतों में ज़कात अदा हो गई दोबारा अदा करना वाजिब नहीं लेकिन अगर लेने वाले को मालूम हो जाये कि यह ज़कात का पैसा है और यह ज़कात लेने का मुस्तहिक नहीं है तो न ले और फेर दे। और अगर देने के बाद मालूम हुआ कि जिसको दिया है वह काफिर है तो ज़कात अदा नहीं हुई फिर अदा करे।

मस'ला १८— अगर किसी पर शक हो कि मालूम नहीं मालदार है या मोहताज तो जब तक यह मालूम न हो जाए उसको ज़कात न दे और अगर बिना मालूम किए दी तो देखे दिल ज़्यादा किधर जाता है। अगर दिल यह गवाही देता है कि वह फकीर है तो ज़कात अदा हो गई और अगर दिल यह कहे कि यह मालदार है तो ज़कात अदा नहीं हुई, फिर दे, लेकिन देने के बाद मालूम हो कि वह गरीब ही है तो फिर न दे। ज़कात अदा हो गई।

मस'ला १९— ज़कात के देने में और ज़कात के सिवा और सदका, ख़ैरात में सबसे ज़्यादा अपने रिश्ते-नाते के लोगों का स्थाल रखें कि पहले उन्हीं लोगों को दें, लेकिन उन्हें यह न बताएं कि यह सदका व ख़ैरात की चीज़ है ताकि वे बुरा न मानें। हदीस शरीफ में आया है कि रिश्तेदारों को ख़ैरात देने से दोहरा सवाब मिलता है। एक तो ख़ैरात का, दूसरे अपने अजीजों के साथ सुलूक व एहसान करने का। फिर जो कुछ उनसे बचे वह और लोगों को दे दें।

मस'ला २०— एक शहर की ज़कात दूसरे शहर में भेजना मकरूह है। लेकिन दूसरे शहर में रिश्तेदार रहते हैं, उनको भेज दिया या यहाँ वालों को हिसाब से वहाँ के लोग ज़्यादा मोहताज हैं या वे लोग दीन के काम में लगे हुए हैं, उनको भेज दिया तो मकरूह नहीं क्योंकि पढ़ने वालों और दीनी आलिमों को देना बड़ा ही सवाब है।

4. जानवरों की ज़कात

मस'ला १— जानवरों की एक किस्म जिसमें ज़कात फर्ज़ है—साइमा है। साइमा वे जानवर हैं, जिनमें ये बातें पाई जाएं—

१ साल के अवसर हिस्से में अपने मुंह से घरकर पेट भरते हैं और घर में उनको खड़ा करके नहीं खिलाया जाता। अगर आधे साल अपने मुंह से घरते हों और आधा साल उनको घर में खड़े होकर खिलाया जाता हो तो फिर ये साइमा हैं। २. दूध, नस्ल के ज्यादा होने या फर्बा करने के लिए रखे गए हों। अगर सिर्फ़ गोश्त खाने या सवारी के लिए पाले गए हों तो ये साइमा न कहलाएंगे।

मस'ला २— साइमा जानवरों की ज़कात में यह शर्त है कि वह ऊँट, ऊँटनी, गाय, भैंस, भैंसा, बकरी, बकरा, भेड़, दुग्धा हो। जंगली जानवरों जैसे हिरन वगैरा पर ज़कात फर्ज़ नहीं। हाँ, अगर तिजारत की नीयत से खरीद कर रखे जाएं तो उन पर तिजारत की ज़कात फर्ज़ होगी। जो जानवर किसी देसी और जंगली जानवर से मिल कर पैदा हो तो अगर उसकी माँ देसी है तो वह भी देसी समझा जाएगा।

मिसाल :- बकरी और हिरन से कोई जानवर पैदा हो तो वह बकरी के हुक्म में है और नील गाय और गाय से कोई जानवर पैदा हो तो वह गाय के हुक्म में है।

मस'ला ३— जानवरों और बच्चों में, अगर वे अकेले हों तो ज़कात फर्ज़ नहीं। हाँ, अगर उनके साथ बड़ा जानवर भी है तो फिर उस पर भी ज़कात फर्ज़ हो जाएगी और ज़कात में वही बड़ा जानवर दिया जाएगा और साल पूरा होने के बाद अगर वह जानवर मर जाए तो ज़कात दूट जाएगी।

मस'ला ४— बक़फ़ के जानवरों पर ज़कात फर्ज़ नहीं।

मस'ला ५— घोड़ों पर जब वे साइमा हों और नर व मादा

मिले-जुले हों तो जकात है। या तो एक घोड़े के हिसाब से १ दीनार यानी पौने तीन रुपए दे दे या सब की कीमत लगाकर उसकी कीमत का चालीसवां हिस्सा दे दे।

मस'ला ६— गधे और खच्चर पर जबकि वे तिजारत के लिए न हों, जकात फर्ज नहीं है।

5. ऊंट की जकात

मस'ला १— पांचों ऊंटों में जकात फर्ज है, इससे कम पर नहीं। पांच ऊंटों में एक बकरी, दस में दो, पन्द्रह में चार बकरियां देना फर्ज है चाहे वह नर हो या मादा एक साल से कम उम्र न हो।

मस'ला २— ऊंट की जकात में अगर ऊंट दिया जाए तो मादा होना चाहिए। अलबत्ता अगर नर कीमत में मादा के बराबर हो तो ठीक है।

6. गाय और भैंस का हिसाब

मस'ला १— गाय और भैंस दोनों एक ही किस्म में हैं। दोनों का हिसाब भी एक है और अगर दोनों के मिलाने से हिसाब पूरा होता हो तो दोनों को मिला लें। जैसे: बीस गायें हों और दस भैंसें तो दोनों को मिला कर तीस का हिसाब पूरा कर लें। मगर जकात में वही जानवर दिया जाएगा जिसकी तादाद ज्यादा हो। अगर गायें ज्यादा हों तो जकात में गाय दी जाएगी और अगर भैंसें हों तो जकात में भैंस दी जाएगी।

मस'ला २— अगर दोनों बराबर-बराबर हों तो अच्छी किस्म में जो जानवर कम कीमत का हो या घटिया किस्म में जो जानवर ज्यादा कीमत का हो, वही दिया जाएगा, अगर तीस गायों या भैंसों में गाय या भैंस का १ बच्चा जो पूरे एक बरस का हो नर हो या मादा, तीस

से कम में कुछ नहीं होगा। चालीस गायों या भैंस में पूरे दो बरस का नर हो या मादा जब साठ हो जाएं तो एक-एक बरस के दो बच्चे दिए जाएंगे। फिर जब साठ से ज्यादा हो जाएं तो हर बीस में एक बरस का बच्चा और हर चालीस में दो बरस का बच्चा।

7. बकरी और भेड़ की जकात

मस'ला १— जकात के मामले में भेड़-बकरी बराबर हैं चाहे भेड़ दुमदार हो जिसको दुम्बा कहते हैं या मामूली हो। अगर दोनों की जकात अलग-अलग पूरी हो तो दोनों की जकात साथ दी जाएगी और जोड़ एक जकात होगी। अगर हर एक जकात का हिसाब पूरा न हो मगर दोनों को मिलाने से पूरा हो जाता है तब भी दोनों को मिला लेंगे और जो ज्यादा होगा, जकात में वही दिया जाएगा। अगर दोनों बराबर हों तो इख्तियार है। चालीस बकरियों या भेड़ों में एक बकरी या भेड़ फिर एक सौ इक्कीस में दो भेड़ें या बकरियाँ। फिर दो सौ एक में तीन भेड़ें या बकरियाँ और अगर सौ में चार भेड़ें या बकरियाँ और अगर चार सौ से ज्यादा हैं तो हर सौ में एक बकरी के हिसाब से जकात देनी होगी।

मस'ला २— भेड़, या बकरी की जकात में नर या मादा की कैद नहीं। हां १ साल से कम का बच्चा नहीं होना चाहिए चाहे भेड़ हो या बकरी।

8. जकात के ख़ास मसाइल

मस'ला १— साल गुज़रना सब में शर्त है।

मस'ला २— अगर कोई आदमी हARAM माल को हलाल के साथ मिला दे तो उसे सबकी जकात देनी होगी।

मस'ला ३— अगर कोई आदमी जकात वाजिब होने के बाद मर जाए तो उसके माल की जकात ली जाएगी। हां, अगर वसीयत कर गया हो तो उसका तिहाई माल जकात में लिया जाएगा। अगर यह तिहाई पूरी जकात को काफी न हो और उसके वारिस तिहाई से ज्यादा देने पर राजी हों तो जितना ये अपनी खुशी से दे दें, ले लिया जाए।

मस'ला ४— फर्ज व वाजिब सदकों के अलावा सदका देना उसी वक़्त मुस्तहब है जबकि माल अपनी जरूरतों और अपने रिश्तेदारों की जरूरतों से ज्यादा हो वरना मकरुह है। इसी तरह अपने कुल माल का सदके में देना भी मकरुह है। हां, अगर वह नफ़स में तबबकुल और सन्न रखता है और अपने रिश्तेदारों को भी तकलीफ़ होने का डर न हो तो मकरुह नहीं बल्कि बेहतर है।

9. सदक-ए-फ़ित्र क्या है ?

मस'ला १— जो मुसलमान इतना मालदार हो कि उस पर जकात वाजिब हो या उस पर जकात तो वाजिब नहीं लेकिन जरूरी असबाब से ज्यादा इतनी कीमत का माल असबाब है जितनी कीमत पर जकात वाजिब हो उस पर ईद के दिन सदका देना वाजिब है। चाहे वह सौदागरी का माल हो या न हो और चाहे साल पूरा गुज़र चुका हो या नहीं। इस सदके को शरअ में सदक-ए-फ़ित्र कहते हैं।

मस'ला २— किसी के दो घर हैं। एक में खुद रहता है एक खाली पड़ा है या किराए पर दे दिया है तो दूसरा मकान जरूरत से ज्यादा है। अगर उसकी कीमत इतनी हो कि जिस पर जकात वाजिब होती हो तो उस पर सदक-ए-फ़ित्र वाजिब है और ऐसे को जकात का पैसा देना भी जायज़ नहीं अलबत्ता अगर इसी पर उसका गुज़ारा हो तो यह मकान भी जरूरी असबाब में दाखिल हो जाएगा और उस पर

सदक -ए-फित्र वाजिब न होगा। और ज़कात का पैसा देना और लेना भी ठीक होगा। इसका मतलब यह हुआ कि जिसको ज़कात व सदके का पैसा लेना ठीक है उस पर सदका और फित्र वाजिब नहीं और जिसको सदका और ज़कात लेना भी ठीक नहीं उस पर सदका फित्र वाजिब है।

मस'ला ३— किसी के पास ज़रूरी असबाब से ज्यादा माल व असबाब है लेकिन वह कर्जदार भी है तो कर्जा मुजरा करके देखें, क्या बचता है? अगर इतनी कीमत का सामान बचा रहे जितने में ज़कात वाजिब होती है तो सदक -ए-फित्र वाजिब है और अगर इससे कम बचे तो वाजिब नहीं।

मस'ला ४— ईद के दिन जिस वक़्त फज़्र का वक़्त आता है उसी वक़्त यह सदका वाजिब होता है। अगर कोई फज़्र का वक़्त आने से पहले ही मर गया, उसपर सदका फित्र वाजिब नहीं। उसके माल में से नहीं दिया जाएगा।

मस'ला ५— बेहतर यह है कि नमाज़ के लिए ईदगाह जाने से पहले ही सदक -ए-फित्र दे दे। अगर पहले न दिया हो तो बाद में दे देना चाहिए।

मस'ला ६— अगर किसी ने सदक -ए-फित्र ईद के दिन से पहले ही रमज़ान में दे दिया तब भी अदा हो गया। अब दोबारा देना वाजिब नहीं।

मस'ला ७— अगर किसी ने ईद के दिन सदक -ए-फित्र न दिया तो माफ़ न हुआ। अब किसी दिन दे देना चाहिए।

मस'ला ८— सदक -ए-फित्र अपनी तरफ़ से देना वाजिब है और नाबालिग़ औलाद की तरफ़ से भी वाजिब है मगर बालिग़ औलाद की तरफ़ से देना वाजिब नहीं।

अलबत्ता अगर कोई लड़का मजनु हो तो उसकी तरफ़ से भी दे दे।

मस'ला ९— जिसने किसी वजह से रोजे नहीं रखे उस पर भी यह सदका वाजिब है और जिसने रोजे रखे उस पर भी वाजिब है।

मस'ला १०— सदक -ए-फित्र में गेहूँ या गेहूँ का सतू बे तो अस्सी रुपए के सेर यानी अंग्रेजी तौल से आधी छटांक ऊपर पौने दो सेर बल्कि एहतियात के लिए पूरे दो सेर या कुछ और ज्यादा दे देना चाहिए क्योंकि ज्यादा होने में कुछ हरज नहीं है बल्कि बेहतर है और अगर जौ का आटा दे तो उसका दूना देना चाहिए।

मस'ला ११— अगर गेहूँ और जौ के सिवा कोई और अनाज दिया जैसे घना, ज्वार तो इतना कि उसकी कीमत उतने गेहूँ या उतने जौ के बराबर हो जाये जितने ऊपर ब्यान हुए हैं।

मस'ला १२— अगर गेहूँ और जौ नहीं दिए बल्कि इतने गेहूँ और जौ की कीमत दे दे तो बेहतर है।

मस'ला १३— एक आदमी का सदक -ए-फित्र एक ही फकीर को दे दे या थोड़ा-थोड़ा करके कई फकीरों को दे दे, दोनों बातें जायज हैं।

मस'ला १४— अगर कई आदमियों का फितरा एक ही फकीर को दे दिया तो यह दुरुस्त है।

10. कुर्बानी

कुर्बानी करने का बड़ा सवाब है। रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया है कि कुर्बानी के दिनों से ज्यादा कोई चीज अल्लाह तआला को पसन्द नहीं। इन दिनों में यह नेक काम सब नेकियों में बढ़-चढ़कर है। कुर्बानी करते वक़्त यानी जिब्र करते वक़्त खून का जो कतरा ज़मीन पर गिरता है तो ज़मीन तक पहुँचने से पहले ही अल्लाह तआला के पास मकबूल हो जाता है। हज़रत सल्ल० ने फरमाया है कि कुर्बानी

के जानवर के बदन पर जितने बाल होते हैं हर बाल के बदले में एक नेकी लिखी जाती है। इसलिए अगर किसी पर कुर्बानी करना वाजिब भी न हो तब भी इतने बे-हिसाब सवाब के लालच में कुर्बानी कर देना चाहिए और अगर अल्लाह तज़ाला ने मालदार और अमीर बनाया हो तो मुनासिब है कि जहां अपनी तरफ से कुर्बानी करे तो जो रिश्तेदार मर गए हों जैसे माँ बाप वगैरा उनकी तरफ से भी कुर्बानी कर दे कि उनकी रूह को इतना बड़ा सवाब पहुंच जाए। हज़रत रसूले खुदा सल्ल० की तरफ से, आपकी बीवियों की तरफ से कर दे, नहीं तो कम से कम इतना ज़रूर कर दे कि अपनी तरफ से कुर्बानी करे क्योंकि मालदार पर तो यह वाजिब है। अगर उसने कुर्बानी नहीं की तो उससे बढ़कर बदनसीब और महरूम कौन होगा और गुनाह रहा सो अलग।

जब कुर्बानी का जानवर क़बला रुख़ लिटा दें तो पहले यह दुआ पढ़ें :-

إِنِّي وَجْهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِي فَطَرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ
خَائِفًا وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي
وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ لَا شَرِيكَ لَهُ وَبِذَلِكَ
أُمِرْتُ وَأَنَا أَوَّلُ الْمُسْلِمِينَ اللَّهُمَّ مِنْكَ وَلَكَ

इन्नी वज्जहतु वजिहय़ लिल्लज़ी फ-त-रस्समावाति बल अज़्र हनीफ़ौ व मा अन भिनल मुशिरकीन० इ न न सलाती वनुसुकी व मह्याय व ममाती लिलाहि रबिबल आलमीन० ला शरीक लहु व बिज़ालि क उर्मितु व अन अक़्तुल मुस्लिमीन० अल्ला हुम्म भिन क व लक०

(मैंने अपना ध्यान सब तरफ से हटाकर सिर्फ उसी ज़ात के लिए

कर दिया है जिसने आसमान और जमीन को बनाया है और मेरा शिर्क करने वालों से कोई संबंध नहीं। बेशक मेरी नमाज़, मेरी कुर्बानी, मेरी जिन्दगी और मौत केवल अल्लाह ही के लिए है। वह सारे जहानों का पालने वाला है, जिसका कोई साझी नहीं। मुझको उसी का आदेश दिया गया है और मैं आज्ञाकारियों में से पहला आज्ञाकारी हूँ। ऐ अल्लाह! यह कुर्बानी आपकी ही तरफ से है और आपके ही लिए है।)

بِسْمِ اللَّهِ اللَّهُ أَكْبَرُ

फिर बिस्मिल्लाह अल्लाहु अकबर कह कर जिह्म करे और जिह्म करके यह दुआ पढ़े :-

اَللّٰهُمَّ تَقَبَّلْهُ مِنِّيْ كَمَا تَقَبَّلْتَ مِنْ حَبِيْبِكَ مُحَمَّدٍ

وَخَلِيْلِكَ اِبْرٰهِيْمَ عَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ

अल्लाहुम् त कबूलहु मिन्नी कमा त कबूल त भिन हबीबि क मुहम्मदिन् व खलीलि क इब्राही म अलैहिमस्सलातु वस्सलामु०

(ऐ अल्लाह! इस कुर्बानी को मेरी तरफ से उसी तरह कबूल कर जिस तरह तूने अपने प्रिय हजरत मुहम्मद सल्ल० और अपने अंतरंग हजरत इब्राहीम अलैहि० से कबूल की थी)

मस'ला १- जिस पर सदक़ाएफित्र वाजिब है, उसी पर बकरईद के दिनों में कुर्बानी करना भी वाजिब है और अगर इतना माल न हो जितने के होने से सदका वाजिब होता है तो उस पर कुर्बानी वाजिब नहीं है। फिर भी अगर कर दे तो बहुत सवाब होगा।

मस'ला २- मुसाफिर पर कुर्बानी करना वाजिब नहीं।

मस'ला ३- बकरईद की दसवीं तारीख से बारहवीं तारीख की शाम तक कुर्बानी करने का वक़्त है चाहे जिस दिन कुर्बानी करे लेकिन कुर्बानी करने का सबसे बेहतर दिन बकरईद का दिन है, फिर ग्यारवीं तारीख।

मस'ला ४- बकरईव की नमाज़ होने से पहले कुर्बानी करना ठीक नहीं है। जब लोग नमाज़ पढ़ चुकें तब करे अलबत्ता अगर कोई किसी गांव में रहता हो वहां फ़ज़ की नमाज़ के बाद भी कुर्बानी करना ठीक है। शहर और कस्बे के रहने वाले नमाज़ के बाद कुर्बानी करें।

मस'ला ५- अगर कोई शहर का रहने वाला अपनी कुर्बानी का जानवर किसी गांव में भेज दे तो उसकी कुर्बानी नमाज़ से पहले भी दुरुस्त है अगर वह खुद शहर में मौजूद हो लेकिन जब कुर्बानी देहात में भेज दी तो नमाज़ से पहले कुर्बानी करना दुरुस्त हो गया। ज़िबह हो जाने के बाद उसको मंगवा ले और गोश्त खाए।

मस'ला ६- बारहवीं तारीख के सूरज डूबने से पहले-पहले कुर्बानी करना दुरुस्त है अगर सूरज डूब गया तो अब कुर्बानी करना दुरुस्त नहीं।

मस'ला ७- दसवीं बारहवीं तक जब भी चाहे कुर्बानी करे चाहे दिन में चाहे रात में, लेकिन रात को ज़िबह करना बेहतर नहीं है। शायद कोई रंग कट जाए और कुर्बानी ठीक न हो।

मस'ला ८- दसवीं ग्यारहवीं तारीख को सफ़र में था बारहवीं तारीख में सूरज डूबने से पहले घर पहुंच गया या पन्द्रह दिन ठहरने की नीयत कर ली तो अब कुर्बानी करना वाजिब हो गया। इसी तरह पहले इतना माल न था इसलिए कुर्बानी वाजिब न थी। फिर बारहवीं तारीख के सूरज डूबने से पहले कहीं से माल मिल गया तो कुर्बानी करना वाजिब है।

मस'ला ९- अपनी कुर्बानी को अपने हाथ से ज़िबह करना बेहतर है। अगर कोई औरत ज़िबह करना न जानती हो तो किसी और से ज़िबह करा ले और ज़िबह के वक़्त वहां जानवर के सामने खड़े हो जाना बेहतर है और अगर ऐसी जगह है कि परदे की वजह से सामने नहीं खड़ी हो सकती तो न खड़ी हो इस में कुछ हरज नहीं।

मस'ला १०- कुर्बानी करते वक़्त ज़बान से नीयत पढ़ना और

दुआ पढ़ना जरूरी नहीं है। अगर दिल में ख्याल कर लिया कि मैं कुर्बानी करता हूँ और ज़बान से कुछ नहीं पढ़ा बस बिस्मिल्लाह अल्लाहु अकबर कहकर जिंक कर दिया तो भी कुर्बानी दुरुस्त हो गई लेकिन अगर याद हो तो कुर्बानी की दुआ पढ़ लेना बेहतर है।

मस'ला ११— कुर्बानी अपनी तरफ से करना वाजिब है। औलाद की तरफ से वाजिब नहीं। बल्कि अगर नाबालिग औलाद मालदार हो तब भी उसकी तरफ से करना वाजिब नहीं न तो अपने माल में से, न उसके माल में से।

मस'ला १२— बकरी, बकरा, भेड़, दुम्बा, गाय, बैल, भैंस, भैंसा, ऊँट, ऊँटनी—इतने जानवरों की कुर्बानी दुरुस्त है। इसके अलावा किसी जानवर की कुर्बानी करना दुरुस्त नहीं।

मस'ला १३— गाय, भैंस, ऊँट में अगर सात आदमी शरीक होकर कुर्बानी करें तो भी दुरुस्त है लेकिन शर्त यह है कि किसी का हिस्सा सातवें हिस्से से कम न हो। अगर किसी का हिस्सा सातवें हिस्से से कम होगा तो किसी की भी कुर्बानी दुरुस्त न होगी।

मस'ला १४— कुर्बानी के लिए किसी ने भैंस खरीदी और खरीदते वक़्त वह नीयत की कि अगर कोई और मिल गया तो उसको भी उस भैंस में शरीक कर लेंगे और कुर्बानी करेंगे। इसके बाद कुछ और लोग भैंस में शरीक हो गए तो यह दुरुस्त है और अगर खरीदते वक़्त उसकी नीयत शरीक करने की न थी बल्कि पूरी भैंस अपनी तरफ से कुर्बानी करने का इरादा था तो अब उसमें किसी को भी शरीक करना बेहतर तो नहीं है लेकिन अगर किसी को शरीक कर लिया तो देखना चाहिए कि जिसको शरीक किया है वह अमीर है कि उस पर कुर्बानी वाजिब है या ग़रीब है कि जिस पर कुर्बानी वाजिब नहीं। अगर अमीर है तो दुरुस्त है और अगर ग़रीब है तो कुर्बानी दुरुस्त नहीं।

मस'ला १५— अगर कुर्बानी का जानवर कहीं गुम हो गया और दूसरा खरीद लिया, फिर वह पहला मिल गया तो अगर ग़रीब आदमी को ऐसा इत्तिफ़ाक पड़ा तो एक ही जानवर की कुर्बानी उस पर

वाजिब है और अगर अमीर आदमी को ऐसा इतिफाक हुआ तो दोनों जानवरों की कुर्बानी वाजिब होगी।

मस'ला १६— सात आदमी भैंस में शरीक हुए तो गोश्त बांटते वक़्त अटकल से न बांटे बल्कि खूब ठीक-ठीक तौल कर बांटे। यदि कोई हिस्सा कम ज़्यादा रहेगा तो सूब हो जाएगा और गुनाह होगा।

मस'ला १७— बकरी साल भर से कम की दुरुस्त नहीं। जब पूरे साल भर की हो तब कुर्बानी दुरुस्त है और गाय भैंस दो बरस से कम की दुरुस्त नहीं। पूरे दो बरस की हो चुकें तब कुर्बानी दुरुस्त है। ऊंट पाँच बरस से कम का दुरुस्त नहीं और दुम्बा या भेड़ अगर इतना मोटा-ताज़ा हो कि साल भर का मालूम होता हो तो साल भर से कम के दुम्बे या भेड़ की कुर्बानी भी दुरुस्त है और अगर ऐसा न हो तो साल भर का होना चाहिए।

मस'ला १८— जो जानवर अंधा या काना हो। एक आँख की तिहाई रोशनी या उससे ज़्यादा जाती रही हो या एक कान का तिहाई या तिहाई से ज़्यादा हिस्सा कट गया हो या तिहाई से ज़्यादा दुम कट गयी हो तो उस जानवर की कुर्बानी ठीक नहीं।

मस'ला १९— जो जानवर इतना लंगड़ा है कि बस तीन पाँव से चलता है चौथा पाँव रखा ही नहीं जाता या चौथा पाँव रखता तो है लेकिन उससे चल नहीं सकता उसकी भी कुर्बानी ठीक नहीं और अगर चलते वक़्त पाँव ज़मीन पर टेक कर चलता हो और चलने में उससे सहारा लेता है लेकिन लंगड़ा कर चलता है तो उसकी कुर्बानी ठीक है।

मस'ला २०— इतना दुबला, बिल्कुल मरियल जानवर जिसकी हड्डियों में बिल्कुल गूदा न हो उसकी कुर्बानी ठीक नहीं है और इतना दुबला न हो तो दुबला होने से कुछ कम नहीं। उसकी कुर्बानी ठीक है। लेकिन मोटे जानवर की कुर्बानी करना ज़्यादा बेहतर है।

मस'ला २१— जिस जानवर के दांत बिल्कुल न हों उसकी कुर्बानी

भी ठीक नहीं और अगर कुछ दांत गिर गए लेकिन जितने गिर गए हैं उन से ज्यादा बाकी हैं तो उसकी कुर्बानी दुरुस्त है।

मस'ला २२— जिस जानवर के पैदाइश से ही कान नहीं हैं उसकी भी कुर्बानी ठीक नहीं है और अगर कान तो हैं लेकिन बिल्कुल ज़रा-ज़रा से छोटे-छोटे हैं तो उसकी कुर्बानी ठीक है।

मस'ला २३— जिस जानवर के पैदाइश से ही सींग नहीं या सींग तो थे लेकिन टूट गए उसकी कुर्बानी ठीक है अलबत्ता अगर बिल्कुल जड़ से टूट गए हों तो कुर्बानी ठीक नहीं।

मस'ला २४— खस्सी यानी बधिया बकरे और भेड़ों की कुर्बानी ठीक है।

मस'ला २५— अगर जानवर कुर्बानी के लिए खरीद लिया तब कोई ऐसा ऐब पैदा हो गया जिससे कुर्बानी ठीक नहीं तो उसके बदले दूसरा जानवर खरीद कर कुर्बानी करे। हां! अगर गरीब आदमी हो जिस पर कुर्बानी बाजिब नहीं तो उसके वास्ते ठीक है कि उसी जानवर की कुर्बानी कर दे।

मस'ला २६— कुर्बानी का गोश्त आप खाएं अपने रिश्ते-नाते के लोगों को दें और फकीरों और मुहताजों को ख़ैरात करे बल्कि बेहतर यह है कि कम से कम तिहाई हिस्सा ख़ैरात करे। ख़ैरात में तिहाई से कम न करे लेकिन अगर किसी ने थोड़ा ही गोश्त ख़ैरात किया तो भी कोई गुनाह नहीं है।

मस'ला २७— कुर्बानी की खाल या तो यूँ ही ख़ैरात कर दें या बेच कर उसकी कीमत ख़ैरात कर दें। वह कीमत ऐसे लोगों को दें जिनको ज़कात का पैसा देना ठीक है और कीमत में जो पैसे मिले हैं बिल्कुल वही पैसे ख़ैरात करना चाहिए। अगर वह पैसे किसी काम में खर्च कर डाले और उतने ही पैसे और अपने पास से दे दिए तो बुरी बात है मगर अदा हो जाएंगे।

मस'ला २८— उस खाल की कीमत को मस्जिद की मरम्मत और

किसी नेक काम में लगाना ठीक नहीं। खैरात ही करना चाहिए।

मस'ला २९— अगर खाल को अपने काम में लाये जैसे किसी ने उसकी मशक या डोल या जानमाज़ बनवा ली यह भी ठीक है।

मस'ला ३०— गोश्त, चर्बी या छिछड़े कसाई को मजदूरी में न दें बल्कि मजदूरी अलग से अपने पास से दें।

मस'ला ३१— कुर्बानी की रस्सी, झूल वगैरा सब चीज़ें खैरात कर दें।

मस'ला ३२— किसी पर कुर्बानी वाजिब नहीं थी लेकिन उसने कुर्बानी की नीयत से जानवर खरीद लिया तो अब उस जानवर की कुर्बानी वाजिब होगी।

मस'ला ३३— किसी पर कुर्बानी वाजिब थी लेकिन कुर्बानी के तीनों दिन गुज़र गए और उसने कुर्बानी न की तो एक बकरी या भेड़ की कीमत खैरात कर दे। और जानवर खरीद लिया तो जानवर खैरात कर दे।

मस'ला ३४— जिसने कुर्बानी करने की मन्नत मानी और वह काम हो गया जिसके लिए मन्नत मानी थी तो अब कुर्बानी करना वाजिब है चाहे मालदार हो या न हो और मन्नत की कुर्बानी का सारा गोश्त फकीरों में खैरात कर दे। न आप खाए, न अमीरों को दे। जितना आपने खाया हो, अमीरों को दिया हो, उतना खैरात करना पड़ेगा।

मस'ला ३५— अपनी खुशी से किसी मुर्दे को सवाब पहुंचाने के लिए कुर्बानी करे तो उसके गोश्त में से खुद खाना, खिलाना, बांटना सब इसी तरह ठीक है जिस तरह अपनी कुर्बानी का हुक्म है।

मस'ला ३६— अगर कोई मुर्दा वसीयत कर गया हो कि उसके तर्कों में से उसकी तरफ से कुर्बानी की जाए और उसकी वसीयत पर उसी के माल से कुर्बानी की गई तो उस कुर्बानी के सब गोश्त वगैरा को खैरात करना वाजिब है।

मस'ला ३७— अगर कोई आदमी वहां मौजूद नहीं और एक दूसरे आदमी ने उसकी तरफ से बगैर उसके कहे कुर्बानी कर दी तो यह कुर्बानी सही नहीं हुई अगर किसी जानवर में किसी गायब आदमी का हिस्सा बगैर उसके कहे डाल लिया तो हिस्सेदारों की कुर्बानी भी सही नहीं होगी।

मस'ला ३८— अगर एक जानवर में कई आदमी शरीक हैं। और वे सब गोश्त को आपस में तक्सीम नहीं बल्कि एक ही जगह फकीरों व जानकारों को तक्सीम करना या पकाकर खाना चाहें तो यह भी जायज़ है, अगर तक्सीम करें तो उसमें बराबरी ज़रूरी है।

मस'ला ३९— कुर्बानी की खाल की कीमत किसी को उजरत में देना जायज़ नहीं क्योंकि उसको ख़ैरात करना ज़रूरी है।

मस'ला ४०— कुर्बानी का गोश्त काफ़िर को भी देना जायज़ है बशर्ते कि उजरत में न दिया जाए।

मस'ला ४१— अगर कोई जानवर ग़ाबिन हो तो उसकी कुर्बानी जायज़ है। अगर बच्चा ज़िन्दा निकले तो उसको भी ज़बह कर दें।

11. अकीका

मस'ला १— जिसके कोई लड़का या लड़की पैदा हो तो बेहतर है कि सातवें दिन उसका नाम रख दे और अकीका कर दे। अकीका कर देने से बच्चे की सब अला-बला दूर हो जाती है, और आफ़तों से हिफाज़त रहती है।

मस'ला २— अकीके का कायदा यह है कि अगर लड़का हो तो दो बकरियां या दो भेड़ और लड़की हो तो एक बकरी या एक भेड़ ज़िबह करें या कुर्बानी के जानवर में लड़के के वास्ते दो हिस्से और लड़की के लिए एक हिस्सा लें और सर के बाल मुंडवा दें और बालों

के बराबर चांदी या सोना तौलकर ख़ैरात कर दें और सर में जाफ़रान लगा दें।

मस'ला ३— अगर सातवें दिन अकीका न करें तो जब भी करें सातवें दिन होने का ख़्याल करना बेहतर है। तरीका यह है कि जिस दिन बच्चा पैदा हुआ हो उससे एक दिन पहले अकीका कर दें। यानी अगर जुमे को पैदा हुआ तो जुमेरात को अकीका कर दें या जब चाहें करें यह हिसाब से सातवां दिन पड़ेगा।

मस'ला ४— यह दस्तूर कि जिस वक़्त बच्चे के सर पर उस्तरा रखा जाए और नाई सर मूंडना शुरू करे उसी वक़्त बकरी ज़िबह हो, एक ग़लत रस्म है। शरीअत से सब जायज़ है— चाहे सर मूंडने के बाद ज़िबह करे या पहले ज़िबह करे।

मस'ला ५— जिस जानवर की कुर्बानी जायज़ नहीं, उसका अकीका भी दुरुस्त नहीं और जिस जानवर की कुर्बानी दुरुस्त है उसका अकीका भी दुरुस्त है।

मस'ला ६— अकीका का गोशत चाहे कच्चा तबसीम करें पकाकर बांटे या दावत करके खिलाए सब दुरुस्त है।

मस'ला ७— अकीका का गोशत मां, बाप, दादा, दादी, नाना, नानी सब को खाना ठीक है।

मस'ला ८— किसी में ज्यादा गुंजाइश नहीं इसलिए उसने लड़के की तरफ से एक बकरी का अकीका किया तब भी कुछ हर्ज नहीं। यह जायज़ है और अगर बिल्कुल अकीका ही न करे तो भी हर्ज नहीं।

मस'ला ९— जब अकीके का जानवर ज़िबह करना चाहे तो पहले यह हुआ पड़े :-

اللَّهُمَّ هَذِهِ عَقِيقَةُ بَنِي فَلَانٍ دَمُهَا بِدَمِهِ وَلَحْمُهَا بِلَحْمِهِ
وَعَظْمُهَا بِعَظْمِهِ وَجِلْدُهَا بِجِلْدِهِ وَشَعْرُهَا بِشَعْرِهَا اللَّهُمَّ

اَجْعَلْهَا لِدَاءَ لَابِئِي مِنَ النَّارِ اِنِّي وَجَّهْتُ وَجْهِي
 لِلدِّينِ فَطَرِ السَّمَوَاتِ وَالْاَرْضَ حَنِيفًا وَاَنَا مِنَ
 الْمُشْرِكِينَ اِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ
 رَبِّ الْعَالَمِينَ لَا شَرِيكَ لَهُ وَبِذَلِكَ اُمِرْتُ وَاَنَا مِنَ
 التَّائِبِينَ

अल्लाहुम्म हाजिही अकीकतुब्नी फुलानि दमुहा बिदमिही व
 लहमुहा बिलहमिही व अज़मुहा बिअज़िमीही व जिल्दुहा बिजिल्दिही
 व शअरुहा बिशअरिही। अल्लाहुम्म-जअलहा फिदामिमबिही इबनि
 मिनन्नार०

इन्नी वज्जहतु वजहिय लिल्लजी फ-त-रस्समावाति बलअर्जा
 हनीफीं वमा अन मिनलमुशिरकीन इन्ना सलाती वनुसुकी व महयाय
 व ममाति लिल्लाहि रब्बिल आलमीन। ला शरीक लहु वबिजालिक
 उमिर्तु व अन मिनल मुस्लिमीन। अल्लाहुम्मम मिनक बलक०

(ऐ अल्लाह! मैं अपने इस बच्चे के सदैव में यह जानवर तेरे नाम
 जिन्ह करता हूँ जिस का खून इस बच्चे के खून के बदले में, इसका
 गोश्त इस बच्चे के गोश्त के बदले में, इस जानवर की हड्डियाँ इस
 बच्चे की हड्डियों के बदले में, इसकी खाल इस बच्चे की खाल के बदले
 में और इसके बाल इस बच्चे के बालों के बदले में हैं। ऐ अल्लाह! इस
 जानवर को मेरे बेटे के लिए दोख की आंच से बचने के लिए फिदया
 बना। मैंने अपना पूरा ध्यान सब तरफ से हटाकर सिर्फ उसी ज़ात के
 लिए कर दिया है जिसने धरती और आकाश को बनाया है। अल्लाह
 के साथ उसका सिलसिला मानने वालों के साथ मेरा कुछ सम्बन्ध
 नहीं है। निस्संदेह मेरी नमाज़, मेरी कुर्बानी, मेरी जिन्दगी और मेरी
 मौत सब अल्लाह के लिए है। वह सारे जहानों का पालने वाला है।
 उसका कोई साझी नहीं है। मुझको उसी का हुक्म दिया गया है। मैं
 हुक्म मानने वालों में पहला आदमी हूँ। ऐ अल्लाह! यह कुर्बानी तेरी ही
 तरफ से है और तेरे ही लिए है।)

6. हज

1. हज क्या है?

जिस आदमी के पास ज़रूरत से ज़्यादा इतना खर्च हो कि सवारी पर औसत गुज़रान से खाता-पीता चला जाए और हज करके वापस आ जाए, उसके ज़िम्मे हज फ़र्ज़ हो जाता है। हज की बड़ी बुजुर्गी ब्यान की गई है। मुनाचे हुज़ूर रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया है कि हज और उमरा दोनों गुनाहों को इस तरह दूर करते हैं जैसे कि भट्टी लोहे के मैल को दूर कर देती है।

जिसके ज़िम्मे हज फ़र्ज़ हो गया और वह हज न करे उसके लिए बड़ी सख्त सज़ा बताई गई है। मुनाचे रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया है कि जिस शख्स के पास खाने-पीने और सवारी का इतना इन्तज़ाम हो जिससे वह बैतुल्लाह शरीफ तक जा सके और फिर वह हज न करे तो कुछ अजीब नहीं कि वह यहूदी या नसरानी होकर मरे और यह भी फ़रमाया कि हज को छोड़ना इस्लाम का तरीका नहीं है।

हज के मसाइल समझने से पहले कुछ खास लफ्ज़ों का जानना ज़रूरी है।

मीकात— वह जगह जहाँ से हज करने वाले को बिना एहराम के जाने की रुकावट है।

एहराम— मीकात से गुज़रते वक़्त नहाने के बाद एक-एक चादर बांधना, दूसरी ओढ़ना और हज की नीयत करना।

तल्बीह— एक खास दुआ।

हरम— खाना का'बा के चारों तरफ ज़मीन का एक हदबंद

हिस्सा यहां शिकार करना, पेड़ व हरी घास काटना हराम है।

हज़े असवद—ख़ाना का'बा के पूर्वी कोने पर लगा एक काला पत्थर।

रुकने यमानी— ख़ाना का'बा के पश्चिमी कोने पर लगा सफ़ेद पत्थर।

मुलतज़िम— ख़ाना का'बा के दरवाज़े और संगे असवद के बीच का हिस्सा।

हतीम— ख़ाना का'बा के शुमाल (उत्तर) में चारों तरफ़ से दीवार से घिरी हुई ज़मीन।

मीज़ाबे रहमत— ख़ाना का'बा का परनाला।

मकामे इब्राहीम— बैतुल्लाह के दरवाज़े के सामने बना एक कुब्बा जिसके नीचे तीन-चार आदमी नमाज़ पढ़ सकते हैं।

इस्तलाम— संगे असवद पर दोनों हाथ रख कर बीच में संगे असवद को चूमना।

तवाफ़— ख़ाना का'बा के गिर्द सात बार घूमना और मकामे इब्राहीम में दो रक'अत नफ़ल नमाज़ पढ़ना।

शौत— ख़ाना का'बा के गिर्द घबकर लगाना।

मस्जिदे हराम— ख़ाना का'बा के चारों तरफ़ बनी एक बड़ी इमारत।

ज़मज़म— मकामे इब्राहीम के करीब एक कुंआ।

सफ़ा व मर्वा— मस्जिदे हराम के बाहर वाली दो पहाड़ियों पर सात बार आना-जाना।

मिना— मक्का से तीन मील दूर एक जगह जहां आठवीं ज़िलहिज्जा को मक्का से सुबह की नमाज़ पढ़कर ठहरा जाता है। यहां से नदी तारीख़ की सुबह की नमाज़ के बाद अरफ़ात की तरफ़ जाया जाता है।

मस्जिदे खैफ— मिना की एक मस्जिद जहां सत्तर नवियों ने नमाज़ें पढ़ीं।

जब— मस्जिदे खैफ के पास वाली पहाड़ी जिससे अरफात जाया जाता है।

अरफात— मिना से आठ मील दूर एक बड़ा मैदान जहां नबी जिलहिज्जः को ठहरा जाता है।

मस्जिदे नमरा— अरफात के मैदान की मस्जिद जहां जुहर और अस्त्र की नमाज़ें एक साथ पढ़ी जाएं। अजान एक और तकबीरें दो हों। इसे मस्जिदे इब्राहीम भी कहा जाता है।

जबले रहमत— अरफात के मैदान का पहाड़ जिस पर खड़े होकर इमाम एक खुत्बा पढ़ता, हज के मसायल बताता और तस्बीह कहता है। यहां खड़े होकर दुआ मांगी जाती है।

मुजदल्फा— मिना और अरफात के दरमियान एक जगह जहां मरिब और इशा की नमाज़ें एक अजान और एक तकबीर से पढ़ी जाती हैं।

जबले क़ज़ह— मुजदल्फा की एक पहाड़ी।

जमरा उक़बा— मिना के किनारे पर एक लम्बा पत्थर। इसे बड़ा शैतान भी कहा जाता है। दसवीं तारीख को मिना पहुंचते ही पहले इसी जमरे पर कंकरियाँ मारी जाती हैं।

रमी— कंकरियाँ फेंकना

नहर— कुर्बानी करना

हलक— सर मुंडाना

महस्सब— मयका के पास का मैदान जहां तेरहवीं तारीख को मिना से लौटते वक़्त दुआ की जाती है और थोड़ी देर आराम किया जाता है।

तवाफ़े सदर— जब हाजी घरों को वापस होते हैं तो उल्टे पांव बैतुल्लाह का चक्कर लगाते हैं।

उमरा— मीकात से एहराम बांधकर बैतुल्लाह में तवाफ़ करना

अशहरे हज— जिन महीनों में हज किया जाता है। शव्वाल
जीकअद और ज़िल्हि के दस दिन।

हदी— हरम में कुर्बानी किया जाने वाला जानवर जैसे बकरी,
भेड़ या गाय।

आफ़ाकी— मीकात की हद से बाहर रहने वाला

अय्यामे तशरीक— नबी, दसवीं, ग्यारहवीं ज़िल्हिज्जा की तारीख

जज़ा— हज या उमरा में हुई भूल का कफ़ारा

जनायत— हज में न करने वाले कामों को कर लेना

हिल्ली— मीकात और हरम के अन्दर वाली हद में रहने वाला

हलाल— सर मुंडवाकर एहराम से बाहर आना

दम— जनायत की कज़ा में की जाने वाली कुर्बानी

मो तमिर— उमरा करने वाला

मुताफ़— खाना का 'बा के गिर्द लगे संगेमरमर के फर्श पर घूमना

मुअल्लिम— हज कराने वाला

यलम्लम— कामरान और जद्दा के बीच समुद्र के पूर्वी किनारे
पर तहामा की एक पहाड़ी

जन्नतुल मुअल्ला— मक्का का कब्रिस्तान

का 'बा— मस्जिदे हराम के बीच चौकोर शवल का मकाम जिसे
सबसे पहले हजरत आदम अलैहि० ने हजरत जिब्राईल अलैहि० की
पहचान के लिए बनाया था।

मस'ला १- उम्र भर में एक बार हज करना फर्ज है। अगर फर्ज कई हज किए तो एक फर्ज हुआ और सब नफल है। उसका भी बड़ा सवाब है।

मस'ला २- जवानी से पहले लड़कपन में अगर कोई हज किया है, उसका कुछ एतबार नहीं है। अगर मालदार है तो फिर जवान होने के बाद हज करना फर्ज है और जो हज लड़कपन में किया वह नफल है।

मस'ला ३- अंधे पर हज फर्ज नहीं चाहे जितना मालदार हो।

मस'ला ४- जब किसी पर हज फर्ज हो गया तो उसे उसी साल हज करना बाजिब है। बिना किसी वजह से देर करना और यह ख्याल करना कि अभी उम्र पड़ी है फिर किसी साल हज कर लेंगे दुरुस्त नहीं है। फिर दो-चार बरसों के बाद भी अगर हज कर लिया तो अदा हो गया लेकिन गुनाहगार हुआ।

मस'ला ५- अगर कोई औरत हज करने जाए तो रास्ते में उसके शौहर या किसी महरम का साथ होना भी जरूरी है। बगैर उसके हज के लिए जाना दुरुस्त नहीं है।

मस'ला ६- अगर वह महरम नाबालिग हो या ऐसा गलत आदमी हो कि माँ, बहन वगैरा से भी उस पर इत्मीनान नहीं तो उसके साथ जाना दुरुस्त नहीं।

मस'ला ७- जब कोई भरोसे वाला महरम साथ जाने के लिए मिल जाए तो अब हज को जाने से शौहर का रोकना ठीक नहीं है और अगर शौहर रोके भी तो औरत उसकी बात न माने और चली जाए।

मस'ला ८- जो लड़की अभी जवान नहीं हुई लेकिन जवानी के करीब हो चुकी है उसको भी बिना शरई महरम के जाना ठीक नहीं और नामहरम के साथ जाना ठीक नहीं है।

मस'ला ९- जो महरम उसको हज कराने के लिए जाए उसका

सारा खर्च उसी पर वाजिब है कि कुछ भी खर्च हो ले जाने वाला दे।

मस'ला १०— अगर सारी उम्र ऐसा महरम नहीं मिला जिसके साथ सफर करे तो हज करने का गुनाह न होगा। लेकिन मरते वक़्त यह वसीयत कर जाना वाजिब है कि उसकी तरफ से हज करा दिया जाए। उसके मर जाने के बाद उसके वारिस उसके माल में से किसी आदमी को खर्च देकर भेजें कि वह जाकर मुर्दे की तरफ से हज कर आए। इससे उसके ज़िम्मे हज उतर जाएगा। उस हज को जो दूसरे की तरफ से किया जाता है हज्जे बदल कहते हैं।

मस'ला ११— अगर किसी के ज़िम्मे हज फर्ज था और उसने सुस्ती से देर कर दी, फिर वह अंधा हो गया या ऐसा बीमार पड़ा कि सफर करने के काबिल न रहा तो उसको भी हज्जे बदल की वसीयत करनी चाहिए।

मस'ला १२— अगर वह इतना माल छोड़कर मरा कि खर्च बगैरा देकर तिहाई माल से हज्जे बदल करा सकता है तब तो वारिस का पूरा करना वाजिब है और अगर माल थोड़ा है कि एक-तिहाई में से हज्जे बदल नहीं हो सकता है तो उसका बली हज न कराए।

मस'ला १३— अगर वह हज्जे बदल की वसीयत करके मर गया। लेकिन माल कम है इसलिए तिहाई माल में हज्जे बदल न हो सका और तिहाई से ज्यादा लगाने को वारिस ने खुशी से मंजूर नहीं किया इसलिए हज नहीं कराया गया तो उस बेचारे पर कोई गुनाह नहीं।

मस'ला १४— बगैर वसीयत किए उसके माल में से हज्जे बदल कराना ठीक नहीं है। हां, अगर सब वारिस खुशी से मंजूर कर लें तो जायज़ है। मगर, नाबालिग की इजाज़त का कोई एतबार नहीं है।

मस'ला १५— अगर कोई औरत इदत में हो तो इदत छोड़कर हज को जाना ठीक नहीं।

मस'ला १६— जिसके पास मक्का के आने-जाने के लायक खर्च हो और मदीना का खर्च न हो तो उसके ज़िम्मे हज फर्ज होगा। कुछ

लोग समझते हैं कि जब तक मदीने का भी खर्च न हो जाना फर्ज नहीं है, बिल्कुल गलत ख्याल है।

2. हज करने का तरीका

उमरा— खाना का बा की जियारत और सफा मरवा के दर्मियान दौड़ना जो एहराम बांधकर हो।

हज— अरफात व मौकूफ करना और तवाफे जियारत करना जो एहराम के साथ हो, ठीक एक वक़्त पर हो।

किरान— उमरा और हज का जोड़ जो एक ही एहराम से लगातार अदा किया जाए।

तमतुअ— उमरा और हज का जोड़ जो दो एहरामों से अलग-अलग अदा किया जाए। इमाम आजम रह० के नज़दीक सबसे अफ़ज़ल किरान है फिर तमतुअ और फिर इफ़राद।

हज की शर्तें—

(१) एहराम यानी एहराम बांधे बग़ैर हज का कोई काम दुरुस्त नहीं

(२) ज़मान— हज के सब काम हज के दौरान अदा हों

(३) मकान— मस्जिदे हराम, सफा व मरवा, अरफात

हज के फ़रायज़—

(१) मौक़ात से एहराम का बांधना

(२) सफा व मरवा के दर्मियान दौड़ लगाना

(३) ज़वाल के सूरज डूबने के थोड़ी देर बाद अरफात में ठहरना

- (४) मुजदल्फा में ठहरना
- (५) सर मुंडवाना
- (६) रमी जिमार करना (तीन शैतानों को कंकरियां मारना)
- (७) विदा का चक्कर लगाना
- (८) ज़ियारत का तवाफ करना
- (९) रमी जमार जिब्र से पहले करना
- (१०) हदी (काबे में ले जाने वाला कुर्बानी का जानवर) के जिब्र को हलफ (बाल मूडना) पर मुकद्दम करना
- (११) हुदी (ऊंट) को नहर के दिनों (दसवीं, ग्यारहवीं, बारहवीं, ज़िल्हिज्जा) में जिब्र करना

हज की सुन्नतें—

- (१) तयाफे कदूम
 - (२) इमाम का खुत्बा पढ़ना, सातवीं तारीख को मक्का में, नवीं को ज़वाल के बाद अरफात में, ग्यारहवीं को मस्जिद नमरा में
 - (३) मक्का से मिना की तरफ आठवीं तारीख को बाद फज्र निकलना
 - (४) पांच नमाज़ें मिना में पढ़ना
 - (५) अरफा की रात में मिना में रहना
 - (६) अरफा के दिन सूरज निकलने के बाद मिना से अरफात जाना
 - (७) मिना से मक्का वापस होते हुए मुहस्तब में ज़रा ठहरना
- मुस्तहब्बात—
- (१) एक हज की एक कुर्बानी करना

(२) सबका में दाखिल होने के वक़्त गुस्ल करना

(३) मुज़बल्फा में जाने के वक़्त गुस्ल करना

एहराम बांधना— जब मीकात पर पहुंचे तो एहराम बांध ले यानी नहा-धोकर एक चादर और एक तहमद पहनकर दो रकअत नपला पड़े। जानमाज़ पर बैठें, सर खोले और हज बैतुल्लाह की नीयत कर लें। फिर तलबीह कहे—

لَيْكَ اللَّهُمَّ لَيْكَ لَيْكَ لَا شَرِيكَ لَكَ لَيْكَ إِنَّ الْحَمْدَ
وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكَ لَا شَرِيكَ لَكَ

तबैक अल्लाहुम्म तबैक ला शरीक ल क तबैक। इन्नलहम्द वन्निअम त ल क व स क मुल्क ला शरी क ल क।

(उपस्थित हूं ऐ अल्लाह! उपस्थित हूं! उपस्थित हूं। तेरा कोई शरीक नहीं उपस्थित हूं तेरे लिए सारी प्रशंसा है और तेरी ही सब नेमते हैं और तेरा कोई शरीक नहीं)

बस एहराम बंध गया।

मस'ला १— घर से एहराम बांधकर चलना अफज़ल है, हिन्दुस्तानियों के लिए मीकात यत्तमलम (कामरान और जिहा के बर्मियान समुद्र के पूर्वी छोर पर स्थित का'बा की पहाड़ियों में से एक पहाड़ी) है।

मस'ला २— अगर कोई आदमी बेहोश हो तो दूसरा उसकी तरफ से एहराम बांध सकता है।

मस'ला ३— तलबीह के अल्फाज़ पूरी तरह वैसे ही अदा होने चाहिए। उनमें कमी व'ज्यादती न की जाए। तलबीह के औकात ये हैं :

(१) हर नमाज़ के बाद

- (२) जब एक-दूसरे से मुलाकात करें
- (३) जब ऊपर घढ़ें या नीचे उतरें
- (४) जब ऊंट सवारों को आते-जाते देखें
- (५) जब सवारी पर घढ़ें या उतरें
- (६) हर दिन सुबह के वक़्त

मस'ला ४— एहराम बांधने के बाद :—

- (१) रफस, फुसूक और जिदाल से बचे
- (२) जानवर का शिकार न करे
- (३) कुर्ता, पाजामा, कबा (एक कपड़ा जो और कपड़ों पर पहना जाता है) अमामा (पगड़ी, कपड़े का वह हिस्सा जो सर के बराबर टोपी के ऊपर पहना जाता है) टोपी और मौजे न पहने।
- (४) कोई कपड़ा जो जाफरान-जैसी किसी खुशबूदार चीज़ से रंगा हुआ हो, न पहने
- (५) मर्द सर और मुंह को न ढांपे। लेकिन औरतें सिर्फ़ मुंह न ढकें
- (६) खुशबूदार तेल न लगाएं
- (७) बदन के बाल साफ़ न करें और नाखून न कुतरें

मस'ला ५— अगर मुफ्फिन हो तो हरम की ज़मीन में पैदल चलें और बहुत आजिज़ी से कदम उठाए। इस तरह चले कि जैसे कोई आजिज़ और मिसकीन आदमी बादशाह के दरबार में हाज़िर होता है।

मस'ला ६— मस्जिद हराम में बाबुस्सलाम से दाखिल होना बेहतर है। बहुत आजिज़ी से लव्बैक कहते हुए दाखिल हो और उस जगह की अज़मत और जलाल दिल में कायम कर लें। अगर कोई रोके तो उससे बहुत नमी से पेश आए। बेहतर यह है कि नंगे पैर दाखिल हो।

मस'ला ७— जब खाना का'बा देखे तो दुआ मांगे और फिर

तवाफ़ करे

मस'ला ८— जब हज़रे असवद की तरफ़ जाए तो दोनों हाथ कानों तक उठाए और तहलील कहे। फिर हाथ छोड़ दे, जिस तरह नमाज़ में तकबीर तहरीमा करते हैं।

मस'ला ९— हज़रे असवद को इस तरह बोसा दे कि दोनों हाथ हज़रे असवद पर रखकर दोनों होंठों को हज़रे असवद पर लगाए।

मस'ला १०— अगर भीड़ ज़्यादा हो तो औरत के वास्ते हज़रे असवद को बोसा देना ज़रूरी नहीं।

मस'ला ११— ख़ाना का 'बा के गिर्द घबकर करने को तवाफ़ कहते हैं। पहले नीयत करे। हर घबकर हज़रे असवद से शुरू करके हज़रे असवद पर ही ख़त्म करे।

मस'ला १२— अपने सीधे हाथ की तरफ़ से तवाफ़ शुरू करे कि हतीम (ख़ाना का 'बा के पूर्व में एक भू-भाग है, इसके चारों ओर दीवार खिंची हुई है) और ख़ाना का 'बा के बीच में रहे।

मस'ला १३— तवाफ़ के पहले तीन घबकरो में इज़्तबा (एहराम की चादर को दोनों हाथों की बगल के नीचे से निकाल कर बायें हाथ से मुंह पर डालना।) और रमल (दोनों कंधे मिलाकर दौड़ते हुए चलना) करें।

मस'ला १४— तवाफ़ से फ़ारिग होकर मक़ामे इब्राहीम पर दो रकअत नमाज़ पढ़कर दुआ मांगे।

मस'ला १५— सफ़ा जाने से पहले ज़मज़म के पास जाए और उसका पानी पेट भर कर पियें। बाकी पानी कुएं में डाल दें और दुआ मांगे। फिर मुत्तज़िम (ख़ाना का 'बा और संगे-असवद (काला पत्थर) के बीच वाला भाग) के पास जाएं और उसे बोसा दें। उसके बाद सफ़ा व मरवा की दौड़ लगायें।

मस'ला १६— सफ़ा पहाड़ पर चढ़ें तो दौड़ने की नीयत कर लें।

सफा पर इतना ऊंचा चढ़ें कि खाना का 'बा दिखाई देने लगे।

मस'ला १७— सफा पहाड़ पर मुंह क़िबले की तरफ कर लें और तकबीर व तहलील कहें फिर हज़रत सल्ल० पर दुरुद शरीफ भेजे और दोनों हाथ उठाकर खुदा से अपनी हाज़त चाहें।

मस'ला १८— दौड़ना सफा से शुरू करे ताकि सात फेरों के बाद दौड़ मरवा पर ख़त्म हो।

मस'ला १९— मीलीन और अख़ज़बीन के दर्मियान दौड़कर चलें।

मस'ला २०— मरवा पर भी इतना ऊंचा चढ़ें कि खाना का 'बा को देख सकें और खाना का 'बा की तरफ मुंह करें। दौड़ में तल्बीह कहते रहें।

मस'ला २१— दौड़ के बाद चाहिए कि मस्जिद में जाएँ और दो रकअत नमाज़ पढ़ें।

मस'ला २२— मक्का में ठहरने के दौरान जितनी नेकी हो सके करें। क्योंकि वहाँ एक नेकी का सवाब एक लाख गुना होता है और गुनाहों से बचें।

मस'ला २३— मक्का के क़ियाम में मस्जिदे हराम में बैठकर कम -से-कम एक कुरआन शरीफ ख़त्म करें।

मस'ला २४— आठवीं तारीख को हज़ के लिए एहराम बांधें। सुबह की नमाज़ मक्का मुअज़्ज़मा में पढ़कर सूरज निकलने के बाद मिना की तरफ चलें।

मस'ला २५— नवीं तारीख को बाद नमाज़े फ़ज़्र सब हाजी मिना से अरफ़ात को जायें।

मस'ला २६— मस्जिदे नमरा में इमाम मिम्बर पर आ जाएँ और अज़ान के बाद खड़े होकर दो ख़ुत्बे पढ़ें। उस ख़ुत्बे में लोगों को वकूफ़, रमी ज़मार, कुर्बानी, हलक़, और तवाफ़ के अहक़ाम सुनाएँ।

मस'ला २७— जब इमाम ख़ुत्बे से फ़ारिग हो तो मुअज़्ज़िन इशामत कहे और जुहर और अस्त्र की नमाज़ मिलाकर जुहर के वक़्त

में पड़े।

मस'ला २८— इन दोनों नमाजों में फासला न देना चाहिए।
दर्मियान में नफ़ल भी न पड़े। इन दोनों नमाजों को जमा करना सुन्नत
है।

मस'ला २९— नमाज़ अस्त्र के बाद सब मौक़िफ़ की तरफ़ रवाना
हो। जबले रहमत के पास वकूफ़ करना बेहतर है। मौक़िफ़ में तस्बीह
बराबर कहते रहे।

मस'ला ३०— इमाम को चाहिए कि जबले रहमत के करीब
किबले की तरफ़ मुंह करके ऊंट पर खड़ा हो और दुआ मांगे और सब
आदमी भी अपने लिए और अपने अज़ीज़ों और करीब वालों के लिए
दुआ मांगे और दिल में तय करें कि आइन्दा गुनाह न करेंगे।

मस'ला ३१— गुरुब आफ़ताब के बाद इमाम सब आदमियों को
लेकर मुज्दलफ़ा की तरफ़ चले। मुज्दलफ़ा में जबले कज़ह के पास
उतरना अफ़ज़ल है। वादिए हहरम में न ठहरें।

मस'ला ३२— इशा के वक़्त अज़ान व इक़ामत के बाद इमाम
दोनों नमाज़ें मग़ि़ब और इशा की जमा करके पढ़ाए। इन दोनों
नमाज़ों के दर्मियान में न नफ़ल पढ़े और न फासला ही करे।

मस'ला ३३— इशा के बाद पूरी रात जागते रहे। नमाज़ और
तिलावत क़ुरआन और दुआ में वक़्त लगाते रहे क्योंकि वह रात
शबे-क़द्र से भी अफ़ज़ल है।

मस'ला ३४— इमाम को चाहिए कि ईद के दिन मुज्दलफ़ा से
सुबह के वक़्त सूरजनिकलनेसे पहले हाजियों के साथ मिना की तरफ़
कूच करे।

मस'ला ३५— मिना में उस दिन पहले रमी ज़मार अक़बा करें।
उसके बाद कुर्बानी करे। कुर्बानी के बाद सर मुंडवाए या बाल कटवाए
लेकिन सर मुंडवाना ही बेहतर है। औरत को सिर्फ़ उंगली के एक पोर
के बराबर बाल कुतरवाने चाहिए।

मस'ला ४- गैर की तरफ से हज करने वाले को उस आदमी की जानिब से इतना खर्च मिलना चाहिए कि मक्का तक जाने और वापस आने तक को काफी हो।

मस'ला ५- मैयत के तिहाई माल से हज कराया जाए।

4. औरतें हज में क्या करें ?

मस'ला १- अगर औरत को एहराम की हालत में हैज हो जाए तो गुस्ल कर ले और फिर एहराम बांधे। वह तवाफ के सिवा सब काम करे।

मस'ला २- वकूफ अरफात से पहले अगर औरत को हैज हो जाए तो चाहिए कि नहा कर हज का एहराम बांधे और हज के सब काम करे मगर तवाफ नहीं। वह नहाने के बाद करे।

मस'ला ३- जियारत के तवाफ के मौके पर अगर हैज या निफास हो जाए या बीमार हो जाए तो पाक होने के बाद तवाफ करे।

मस'ला ४- तवाफे विदा के मौके पर अगर औरत को हैज हो जाए और घर वापस जाना जरूरी हो तो तवाफे-विदा करने की जरूरत नहीं।

मस'ला ५- औरत को एहराम में सिला और रंगा हुआ लिबास पहनना जायज है मगर वह खुशबू से रंगा हुआ न हो। भोजे, दस्ताने, कमीज, ओढ़नी, हरीर, कपड़े और जेवर पहनना भी जायज है।

मस'ला ६- औरत एहराम में सर ढांके और मुंह खुला रखे।

मस'ला ७- सफा य मरवा के बीच औरत न दौड़े। अगर भीड़ ज्यादा हो तो वह सफा और मरवा पर भी न चढ़े।

मस'ला ८- औरत के वास्ते सर मुंडवाना हराम है कस्र कराए।

5. हज करने से रुक जाना

मस'ला १— महरम अगर बीमार हो जाए या दुश्मन का खौफ हो, औरत का शौहर रास्ते में मर जाए, रास्ते में खर्च जाता रहे या किराए का जानवर मर जाए तो वह आदमी मुह्रस्सर है।

मस'ला २— मुह्रस्सर एहराम से इस तरह बाहर हो कि एक हदी का जानवर किसी शास्त्र के हाथ भेज दे कि हरम में जिब्र करे या कीमत भेज दे ताकि वहां हदी खरीद कर जिब्र की जाए। जिब्र का दिन और वयत तय करे ताकि उसके बाद घर बैठे ही एहराम उतार दे। हलक या कस्त्र की जरूरत नहीं।

मस'ला ३— आइन्दा साल मुह्रस्सर को उसके बदले एक हज और एक उमरा करना चाहिए।

मस'ला ४— अगर महरम ईद की सुबह तक वकूफ अरफात न कर सके तो हज फौत हो जाता है।

मस'ला ५— जब हज फौत हो जाए तो लाज़िम है कि तवाफ़ खाना काबा व सफा व मरबा की दौड़ लगाकर एहराम उतार दे और वह हज अगले साल करे मगर कुर्बानी बाजिब नहीं।

मस'ला ६— हदी के तीन जानवर हैं। सबसे अपज़ल ऊंट है। फिर गाय, बैल, फिर भेड़, बकरी है।

मस'ला ७— हदी पर सवारी न करनी चाहिए, न उसकी कोई चीज़ काम में लाई जाए।

मस'ला ८— हदी का दूध न निकालना चाहिए। अगर निकाले तो उस को ख़ैरात कर दे।

मस'ला ९— हदी के अगर बच्चा पैदा हो तो उसको खैरात कर दे या साथ ही ज़िबह कर दे।

मस'ला १०— ऊंट को नहर करना अफ़ज़ल है और गाय, बकरी को ज़िबह करना अफ़ज़ल।

मस'ला ११— हज की कुर्बानी बकरई की कुर्बानी से न करे।

मस'ला १२— हदी का गोशत खाना मालिक को दुरुस्त है। हदी के गोशत को मिस्कीनों में ऐसे ही बांटनी चाहिए जैसे कुर्बानी का बांटते हैं।

6. जज़ा और कफ़ारा

मस'ला १— एहराम या हज में जो काम नहीं करने चाहिए, मगर कोई अचानक हो जाए तो जज़ा लाज़िम होगी और शरई मजबूरी में किया जाए तो कफ़ारा लाज़िम होगा।

मस'ला २— जज़ा में तय किया हुआ सदका दिया जाएगा। कुर्बानी और कफ़ारे में तय की हुई कुर्बानी, सदका या रोज़ा—जो चाहे पसन्द करे।

मस'ला ३— जो जानवर शिकार किया है उसके बदले हदी ख़रीदकर खैरात करे वरना उसकी कीमत खैरात करे।

मस'ला ४— जो जानवर शिकार किया है उसकी जज़ा में रोज़ा रखे।

मस'ला ५— जू या टिड्डी मारने की जज़ा में सदका दे चाहे थोड़ी ही हो जैसे एक हाथ यानी मुट्ठी भर खाना।

मस'ला ६— एहराम वाला अगर बिना एहराम किसी महरम का

सर मूंडे तो मूंडने वाले को सदका देना होगा और मुंडवाने वाले को कुर्बानी करनी होगी।

मस'ला ७— बाल उखाड़ने या काटने या किसी चादर से साफ करने का हुक्म मूंडने के बराबर है।

मस'ला ८— अगर हाथ पैर के नाखून काटे तो कुर्बानी करनी होगी।

मस'ला ९— अगर सिले हुए कपड़े बिना किसी मजबूरी एक दिन पहने तो कुर्बानी देनी होगी।

मस'ला १०— अगर सिला हुआ या खुश्बू में रंगा हुआ कपड़ा मर्द पहने तो दो कुर्बानियां देनी होंगी। लेकिन अगर औरत पहने तो एक, क्योंकि वह सिला हुआ कपड़ा पहन सकती है।

मस'ला ११— अगर खुश्बू लगाई या खुश्बूदार तेल, तो कफ़ारा लाज़िम होगा चाहे वह दवा के तौर पर ही हो।

मस'ला १२— खुश्बू लगाने से जो जज़ा लाज़िम हुई है अगर वह दे दी गई तो उस खुश्बू की चीज़ को अलग कर देना चाहिए।

मस'ला १३— फूल जैसे खुश्बू की चीज़ें सूंघने से कुछ जज़ा नहीं पड़ती लेकिन उसका सूंघना मकरुह है।

मस'ला १४— अगर एहराम बांधने के बाद से वकूफ अरफ़ात तक किसी वक़्त सोहबत की तो उमरा फ़ासिद हो गया। अगर उस के बाद किया तो फ़ासिद न होगा।

मस'ला १५— अगर किसी को एहराम की हालत में एहतलाम हो जाए तो गुस्ल कर ले।

मस'ला १६— अगर औरत का बोसा लिया या उसको शहवत से हाथ लगाया तो कुर्बानी लाज़िम आएगी।

मस'ला १७— मुहरिम (एहराम बांधने वाला) हरम की हद में या हरम से बाहर शिकार करे तो जज़ा देनी होगी और बगैर एहराम सिर्फ हरम की हद में शिकार करे तो तावान लाज़िम है।

मस'ला १८— खुश्की के जानवरों का शिकार हराम है, दरियाई जानवरों का हलाल है।

मस'ला १९— अगर मुहरिम खुद शिकार करे चाहे जानकर या भूलकर तो उस की जज़ा देनी होगी।

मस'ला २०— अगर मुहरिम भूख की वजह से शिकार करने पर मजबूर हो जाए और शिकार कर ले तब भी उसको जज़ा देनी होगी।

मस'ला २१— दरिन्दा जानवर के शिकार में एक बकरी जज़ा में दी जाती है।

मस'ला २२— अगर कोई दरिन्दा जानवर मुहरिम पर हमला करे और बचाव में मुहरिम उसको मार डाले तो कुछ जज़ा लाज़िम नहीं।

मस'ला २३— अगर हरम के जानवर का दूध निकाले तो उसकी कीमत के हिसाब से जज़ा देनी होगी।

मस'ला २४— अगर शिकारी किसी जानवर के अंडे को तोड़े तो उसकी कीमत भी देनी लाज़िम होगी।

मस'ला २५— अगर मुहरिम शिकार खरीदे या बेचे तो यह खरीद बातिल (झूठी) है।

7. मदीने की जियारत

मस'ला १- अगर गुंजाइश हो तो हज से पहले या हज के बाद मदीना मुनव्वरा हाजिर होकर हजरत रसूल मकबूल सल्ल० के मुबारक शौजे और मस्जिद नबवी की जियारत से बरकत हासिल करें। इसकी बाबत रसूल मकबूल सल्ल० ने फरमाया है कि जिस आदमी ने आपकी वफात के बाद आपकी जियारत की उसको वही बरकत मिलेगी जैसे आपकी ज़िन्दगी में किसी ने आपका दीदार किया। और यह भी फरमाया है कि जो आदमी खाली हज करे और आपकी जियारत को न जाए तो उसने रसूल मकबूल सल्ल० के साथ बड़ी बेवफाई की। मस्जिद नबवी के लिए रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया कि जो शख्स उसमें नमाज़ पढ़े उसको पचास हजार नमाज़ों के बराबर सवाब मिलेगा।

हदीस १. हुजूर अकरम सल्ल० ने फरमाया, जिस शख्स ने मेरी मस्जिद में चालीस नमाज़ें पढ़ीं और कोई नमाज़ क़ज़ा न की तो वह निफाक (फूट) और दोज़ख के अज़ाब से बरी कर दिया गया।

हदीस २. रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया है: मस्जिदों में सिर्फ़ तीन मस्जिदें ही ऐसी हैं जिनकी जियारत के लिए सफ़र किया जा सकता है: एक मस्जिद हराम, दूसरी मेरी मस्जिद यानी मस्जिद नबवी और तीसरी मस्जिद अक्सा यानी बैतुल मुक़द्दस की मस्जिद।

हदीस ३. हुजूर अकरम सल्ल० ने फरमाया, अगर कोई मदीने में मर सकता है तो उसे मदीने में ही मरना चाहिए। कियामत के दिन मैं मदीने में मरने वालों को बरखावाऊंगा।

7. निकाह

1. निकाह का मतलब

मस'ला १— निकाह अल्लाह तआला की बड़ी नेमत है। दीन और दुनिया दोनों के काम इससे दुरुस्त हो जाते हैं। आदमी गुनाह से बचता है। उसका दिल ठिकाने हो जाता है और नीयत खराब व डायांडोल नहीं हो पाती।

मस'ला २— निकाह सिर्फ दो लफ्जों से बंध जाता है जैसे किसी ने गवाहों के रु-ब-रु कहा: मैंने अपनी लड़की का निकाह तुम्हारे साथ किया। उसने कहा, मैंने कुबूल किया। बस निकाह बंध गया और दोनों मियां-बीवी हो गए।

मस'ला ३— किसी ने कहा—अपनी फलां लड़की का निकाह मेरे साथ कर दो। उसने कहा, मैंने अपनी लड़की का निकाह तुम्हारे साथ कर दिया तो निकाह हो गया। चाहे फिर वह यूँ कहे कि उसने कुबूल किया या कुछ न कहे, बहरहाल निकाह हो गया।

मस'ला ४— अगर खुद औरत वहां मौजूद हो और इशारा कर के यूँ कह दे कि मैंने उसका निकाह तुम्हारे साथ कर दिया। वह कहे कि मैंने कुबूल किया तब भी निकाह हो गया। नाम लेने की ज़रूरत नहीं। और अगर वह खुद मौजूद न हो तो उस का भी नाम ले और उस के बाप का नाम भी इतने जोर से ले कि गवाह सुन लें।

मस'ला ५— निकाह होने के लिए यह भी शर्त है कि यह कम-से-कम दो मर्दों या एक मर्द और दो औरतों के सामने किया जाए और वे लोग अपने कानों से निकाह होने और ईजाब व कुबूल के दोनों

लफ्ज़ कहते सुनें, तब निकाह होगा। साथ ही वे मर्द और औरत दोनों मुसलमान हों और बालिग़ भी हों।

मस'ला ६— अगर कोई मर्द न हो, सिर्फ औरतें ही औरतें हैं तब भी निकाह दुरुस्त नहीं है चाहे दस-बारह औरतें क्यों न हों। दो औरतों के साथ एक मर्द होना ही चाहिए।

मस'ला ७— बेहतर यह है कि बड़े मजमे में निकाह किया जाए। जैसे: नमाज़ जुमा के बाद जामा मरिजद में या और कहीं ताकि निकाह की खूब शोहरत हो जाए। छुपछुपाकर निकाह न करे। लेकिन अगर कोई ऐसी ज़रूरत पड़ गई कि बहुत-से आदमी जमा न हो सके तो कम-से-कम दो या एक मर्द और दो औरतें ज़रूर ही मौजूद हों जो अपने कानों से निकाह होते सुनें।

मस'ला ८— अगर मर्द भी जवान है और औरत भी जवान है तो वे दोनों अपना निकाह खुद कर सकते हैं। दो गवाहों के सामने एक कह दे कि मैंने अपना निकाह तेरे साथ किया। दूसरा कहे मैंने कुबूल किया। बस निकाह हो गया।

मस'ला ९— अगर किसी ने अपना निकाह खुद नहीं किया बल्कि किसी से कह दिया कि तुम मेरा निकाह किसी से कर दो या यूँ कहा कि मेरा निकाह फलों से कर दो और उसने दो गवाहों के सामने कर दिया तब भी निकाह हो गया। अब अगर वह इन्कार करे तब भी कुछ नहीं हो सकता।

2. जिन लोगों से निकाह हराम है

मस'ला १— अपनी औलाद, पोती, पड़पोती और नवासी वगैरा के साथ निकाह दुरुस्त नहीं और बाप, दादा, परदादा वगैरा से दुरुस्त नहीं।

मस'ला २— अपने भाई, मामू, चचा, भतीजे और भांजे के साथ निकाह दुरुस्त नहीं। शरअ में भाई वह है जो एक मां-बाप से हो या दोनों का बाप एक और मां दो हैं या दोनों की मां एक हो और बाप दो हों। जिसका बाप भी अलग हो और मां भी अलग हो, वह भाई नहीं, उससे निकाह दुरुस्त है।

मस'ला ३— दामाद के साथ भी निकाह दुरुस्त नहीं है चाहे लड़की की रुख्साती हो चुकी हो और दोनों मियां बीबी एक साथ रह रहे हों या अभी रुख्साती न हुई हो, हर तरह हराम है।

मस'ला ४— किसी का बाप मर गया और मां ने दूसरा निकाह किया लेकिन अभी औरत उसके घर न रहने पाई थी कि मर गई या आदमी ने उसे तलाक दे दी तो उस सौतेले बाप से निकाह करना दुरुस्त है। हां, अगर माँ उसके पास रह चुकी हो तो उससे निकाह दुरुस्त नहीं।

मस'ला ५— सौतेली औलाद से निकाह करना दुरुस्त नहीं। यानी एक मर्द की कई बीवियां हों तो सौत की औलाद से निकाह दुरुस्त नहीं। चाहे अपने मियां के पास रह चुकी हो या न रही हो— हर तरह निकाह हराम है।

मस'ला ६— सुसर और सुसर के बाप व दादा के साथ भी निकाह दुरुस्त नहीं।

मस'ला ७— जब अपनी बहन निकाह में रहे तब तक बहनोई से निकाह दुरुस्त नहीं अलबत्ता अगर बहन मर गई या उस ने छोड़ दिया और इहत पूरी हो चुकी तो अब बहनोई से निकाह दुरुस्त है मगर तलाक की इहत पूरी होने से पहले निकाह दुरुस्त नहीं।

मस'ला ८— एक मर्द का निकाह एक औरत से हुआ तो अब जब तक वह औरत उसके निकाह में रहे उसकी फूफी और उसकी खाला और भतीजी का निकाह उस मर्द से नहीं हो सकता।

मस'ला ९— जिन दो औरतों में ऐसा रिश्ता हो कि अगर उन दोनों औरतों में से कोई मर्द होती तो आपस में दोनों का निकाह न हो सकता ऐसी दो औरतें एक साथ एक मर्द के निकाह में नहीं रह सकतीं। जब एक मर जाए या तलाक मिल जाए तो इहत गुजर जाए तब दूसरी औरत उस मर्द से निकाह करे।

मस'ला १०— एक औरत है और उसकी सौतेली लड़की है, ये दोनों एक साथ किसी मर्द से निकाह कर लें तो दुरुस्त है।

मस'ला ११— सगा मामू न होकर रिश्ते के मामू से निकाह दुरुस्त है। इसी तरह अगर किसी दूर के रिश्ते से चाचा, भांजा या भतीजा होता है उससे भी निकाह दुरुस्त है। ऐसे ही अगर भाई नहीं है बल्कि चचाज़ाद या खालाज़ाद भाई है उससे भी निकाह दुरुस्त है।

मस'ला १२— लयपालक का शरअ में कुछ एतबार नहीं, लड़का बनाने से सचमुच वह लड़का नहीं हो जाता इसलिए बनाए हुए बेटे से निकाह दुरुस्त है।

मस'ला १३— दो बहनें अगर सगी न हों, मामूज़ाद, चचा ज़ाद, फूफी या खालाज़ाद बहनें हों तो वे दोनों एक साथ ही एक मर्द से निकाह कर सकती हैं, ऐसी बहन के रहते हुए भी बहनोई से निकाह दुरुस्त है। यही हाल फूफी और खाला वगैरा का है। अगर कोई दूर का रिश्ता निकलता हो तो फूफी, भतीजा और खाला, भांजी का एक साथ ही एक मर्द से निकाह दुरुस्त है।

मस'ला १४— जितने लोग खानदानी रिश्ते के एतबार से हराम हैं। वे रिश्ते दूध पीने के एतबार से भी हराम हैं। दूध पिलाने वाली माँ के शौहर से निकाह दुरुस्त नहीं क्योंकि वह उसका बाप हुआ और दूध शरीक भाई से निकाह दुरुस्त नहीं जिसको उसने दूध पिलाया है उससे उसकी औलाद से निकाह दुरुस्त नहीं क्योंकि वह उसकी औलाद हुई। दूध के हिसाब से मामू, भांजा, चाचा, भतीजा सबसे निकाह हराम है।

मस'ला १५— दूध शरीक दो बहनें हों तो वे दोनों बहनें एक साथ एक मर्द के निकाह में नहीं रह सकतीं। मतलब यह है कि जो हुक्म ऊपर ब्यान हो चुका, दूध के रिश्तों में भी वही हुक्म है।

मस'ला १६— मुसलमान औरत का निकाह मुसलमान के सिवा और मजहब वाले मर्द से दुरुस्त नहीं।

मस'ला १७— किसी औरत के मियां ने तलाक दे दिया या मर गया तो जब तक तलाक की इद्त या मरने की इद्त पूरी न हो चुके तब तक दूसरे मर्द से निकाह करना दुरुस्त नहीं।

मस'ला १८— जिस औरत का निकाह दूसरे किसी मर्द से हो चुका हो तो अब बिना तलाक लिए और इद्त पूरी किए किसी दूसरे से निकाह करना दुरुस्त नहीं।

मस'ला १९— जिस मर्द के निकाह में चार औरतें हों अब उससे पांचवीं औरत का निकाह दुरुस्त नहीं और उन चारों में से अगर एक को तलाक दे दी तो जब तक तलाक की इद्त पूरी न हो चुके कोई औरत उस से निकाह नहीं कर सकती।

मस'ला २०— सुन्नी लड़की का निकाह शीआ मर्द के साथ बहुत से आलिमों के फत्वे में ठीक नहीं।

मस'ला २१— किसी मर्द ने किसी औरत के साथ जिना किया तो अब उस औरत की मां और उस औरत की औलाद को उस मर्द से निकाह करना ठीक नहीं।

मस'ला २२— किसी औरत ने जयानी की ख्याहिश के साथ बदनीयती से किसी मर्द को हाथ लगाया तो अब उस औरत की मां और औलाद को उस मर्द से निकाह करना जायज नहीं। इसी तरह अगर किसी मर्द ने किसी औरत पर हाथ डाला तो वह मर्द उसकी मां और औलाद पर हशाम हो गया।

मस'ला २३— रात को अपनी बीवी को जगाने के लिए उठा मगर गलती से लड़की या सास पर हाथ पड़ गया और बीवी समझकर जबानी की ख्याहिश के साथ उसको हाथ लगाया तो अब वह मर्द अपनी बीवी पर हमेशा के लिए हराम हो गया। अब कोई सूरत जायज़ होने की नहीं है और लाज़िम है कि वह मर्द अपनी औरत को तलाक दे दे।

मस'ला २४— किसी लड़के ने अपनी सौतेली मां पर बदनीयती से हाथ डाल दिया तो अब वह औरत अपने शौहर पर बिल्कुल हराम हो गई। अब वह किसी सूरत से हलाल नहीं हो सकती और अगर सौतेली मां ने सौतेले लड़के के साथ ऐसा किया तब भी यही हुक्म है।

मस'ला २५— जिस औरत का शौहर न हो और उसको बदकारी से हमल हुआ, उसका निकाह भी दुरुस्त है लेकिन बच्चा पैदा होने से पहले सोहबत करना ठीक नहीं अलबत्ता जिस ने ज़िना किया था अगर उसी से निकाह हुआ तो सोहबत भी ठीक है।

3. वली या मालिक

लड़के और लड़की से निकाह करने का हक रखने वाले को वली कहा जाता है।

मस'ला १— लड़की और लड़के का वली सबसे पहले उसका बाप है। अगर बाप न हो तो दादा। वह न हो तो परदादा। अगर उनमें से कोई न हो तो सगा भाई, वह न हो तो सौतेला यानी बाप शरीक भाई, फिर भतीजा, फिर भतीजे का लड़का और उसके बाद भतीजे का पोता। ये भी न हो तो सगा चचा, फिर सौतेला चचा, यानी बाप का भाई, फिर सगे चाचा का लड़का, फिर उसका पोता फिर सौतेले चचा का लड़का और पोता। ये कोई न हों तो बाप का चचा वली है। फिर

उसकी औलाद, अगर बाप का चचा और उसके लड़कें, पोते परपोते कोई न हों तो माँ वली है फिर दादी, फिर नानी, फिर नाना फिर हकीकी बहन जो बाप शरीक हो फिर जो भाई बहन माँ शरीक हों, फिर फूफी, फिर मामू, फिर खाला वगैरा।

मस'ला २— नाबालिग शख्स किसी का वली नहीं हो सकता और काफिर किसी मुसलमान का वली नहीं हो सकता और मजनून, पागल भी किसी का वली नहीं हो सकता।

मस'ला ३— बालिग यानी जवान औरत खुदमुख्तार है चाहे निकाह करे या न करे और जिसके साथ जी चाहे करे कोई शख्स उससे जबरदस्ती नहीं कर सकता। अगर वह खुद अपना निकाह किसी से कर ले तो निकाह हो जाएगा चाहे वली को खबर हो या न हो; चाहे वली खुश हो या चाहे नाखुश—हर तरह निकाह दुरुस्त है। हाँ, अगर अपने मेल में निकाह नहीं किया, अपने से कम ज्ञात वाले से निकाह कर लिया और वली नाखुश है तो फत्या उस पर है कि निकाह दुरुस्त न होगा। और अगर अपने मेल में ही किया लेकिन जितना महर उसके दर्मियान खानदान में बाँधा जाता है जिसको शरअ में महरें मिसल कहते हैं उससे बहुत कम पर निकाह कर लिया तो इन सूरतों में निकाह तो हो गया लेकिन उसका वली उस निकाह को तुड़वा सकता है। मुसलमान हाकिम से फरियाद करे वह निकाह तोड़ दे लेकिन उस फरियाद का हक उस वली को है जिसका जिक्र माँ से पहले आया है, यानी बाप से लेकर दादा व चचा के बेटों पोतों तक।

मस'ला ४— किसी वली ने जवान लड़की का निकाह बिना उससे पूछे और बिना इजाजत लिए कर दिया तो वह निकाह उसकी इजाजत पर है। अगर वह लड़की इजाजत दे तो निकाह हो गया और अगर वह राजी न हो और इजाजत न दे तो नहीं हुआ।

मस'ला ५— जवान कुंवारी लड़की से वली ने आकर कहा कि वह उसका निकाह फला-फला के साथ किए देता है या उसने कह

दिया है। इस पर वह लड़की चुप हो गई। या मुस्कुरा दी या रोने लगी तो बस यही इजाजत है। अब वह बली निकाह कर दे तो ठीक हो जाएगा या कर चुका था तो दुरुस्त हो गया। यह बात नहीं है कि जब ज़बान से कहे तब ही इजाजत समझी जाए। जो लोग ज़बरदस्ती करके ज़बान से कबूल कराते हैं, बुरा करते हैं।

मस'ला ६— बली ने इजाजत लेते वक़्त शौहर का नाम नहीं लिया, न उसको पहले से मालूम है तो ऐसे वक़्त चुप रहने से रज़ामन्दी साबित न होगी और इजाजत न समझेंगे बल्कि नाम व निशान बताना ज़रूरी है जिससे लड़की इतना समझ जाए कि फलों शख्स है। इसी तरह अगर महर नहीं बतलाया और महर मिस्ल से बहुत कम पर निकाह पढ़ दिया तो औरत की इजाजत के बिना निकाह न होगा। इसके लिए कायदे के मुताबिक़ फिर इजाजत लेनी चाहिए।

मस'ला ७— अगर लड़की कुंवारी है बल्कि एक निकाह पहले हो चुका है अब दूसरा निकाह है और उससे उसके बली ने इजाजत ली और पूछा तो बस चुप रहने से इजाजत न होगी बल्कि ज़बान से कहना चाहिए। अगर उसने ज़बान से नहीं कहा सिर्फ़ चुप रहने से निकाह कर दिया तो निकाह मौकूफ़ रहा। बाद में अगर ज़बान से मंज़ूर करे तो निकाह हो गया और मंज़ूर न करे तो नहीं हुआ।

मस'ला ८— बाप के होते हुए चचा भाई वगैरा किसी और बली ने कुंवारी लड़की से इजाजत मांगी तो अब सिर्फ़ चुप रहने से इजाजत न होगी बल्कि ज़बान से इजाजत होगी। हां अगर बाप ने ही उनको इजाजत लेने के लिए भेजा था तो सिर्फ़ चुप रहने से इजाजत हो जाएगी। मतलब यह है कि जो बली सबसे पहला आदमी इजाजत ले तब चुप रहने से इजाजत होगी और अगर हक़ था दादा का और पूछा भाई ने तो ऐसे वक़्त चुप रहने से इजाजत न होगी।

मस'ला ९— यही हुक्म लड़के का है। अगर जवान हो तो उस पर ज़बरदस्ती नहीं कर सकते और बली उसकी इजाजत के बगैर

निकाह नहीं कर सकता। अगर बिना पूछे निकाह कर देगा तो इजाजत पर रुका रहेगा और अगर इजाजत दे दी तो हो गया। नहीं तो नहीं हुआ। अलबत्ता इतना फर्क है कि लड़के के सिर्फ चुप रहने से इजाजत नहीं होती ज़बान से कहना और बोलना चाहिए।

मस'ला १०— अगर लड़की या लड़का नाबालिग हो तो खुदमुख्तार नहीं है, बगैर वली के उनका निकाह नहीं होता। अगर उसने वली के बिना निकाह कर लिया या किसी और ने निकाह कर दिया तो वली की इजाजत पर मौकूफ है। अगर वली इजाजत देगा तो निकाह होगा वरना नहीं होगी और वली को उससे निकाह करने, न करने का पूरा हक है, जिससे चाहे कर दे। नाबालिग लड़के और लड़कियां इस निकाह को उस वक़्त रद्द नहीं कर सकते चाहे वह नाबालिग लड़की कुंवारी हो या पहले और कोई निकाह हो चुका हो और रुख़्सती भी हो चुकी हो—दोनों का एक हुक्म है।

मस'ला ११— नाबालिग लड़की या लड़के का निकाह अगर बाप या दादा ने किया है तो जवान होने के बाद भी उस निकाह को रद्द नहीं कर सकते चाहे अपने मेल में किया हो या बेमेल, कम ज्ञात वाले से कर दिया हो और चाहे महर मिस्ल पर निकाह किया हो या उससे बहुत कम पर निकाह कर दिया हो, हर तरह निकाह सही है और जवान होने के बाद भी वह कुछ नहीं कर सकते।

मस'ला १२— कायदे से जिस वली को नाबालिग लड़की का निकाह करने का हक है वह परदेस में है और इतनी दूर है कि अगर उसका इन्तज़ार करें और उससे मशवरा लें तो वह मौका हाथ से जाता रहेगा और पैग़ाम देने वाला इतना इन्तज़ार न करेगा या फिर ऐसी जगह मुश्किल से मिलेगी तो ऐसी सूरत में उसके बाद वाला वली भी निकाह कर सकता है। अगर उसने बिना उससे पूछे निकाह कर दिया तो निकाह हो गया और अगर इतनी दूर न हो तो बगैर उसकी राय लिए दूसरे वली को निकाह न कराना चाहिए। अगर करेगा तो उस वली की इजाजत पर मौकूफ रहेगा जब वह इजाजत देगा तब सही होगा।

4. मेल और बेमेल आदमी

मस'ला १— शरअ में इसका बड़ा ख्याल किया गया है कि बेमेल और बेजोड़ निकाह न किया जाए यानी लड़की का निकाह किसी ऐसे मर्द से न करो जो उसके बराबर दर्जे और उसकी टक्कर का नहीं है।

मस'ला २— बराबरी कई तरह की होती है एक तो नसब में बराबर होना दूसरे मुसलमान होने में, तीसरे दीनदारी में, चौथे उमर में, पांचवें पेशे में।

मस'ला ३— नसब में बराबरी तो यह है कि शैख सैयद, अन्सारी और अलवी ये सब एक-दूसरे के बराबर हैं, यानी अगरधे सैयदों का रुतबा औरों से बढ़कर है लेकिन अगर सैयद की लड़की शैख के यहां ब्याही गई तो यह न कहेंगे कि अपने मेल में निकाह नहीं हुआ बल्कि यह भी मेल ही है।

मस'ला ४— नसब में एतबार बाप का है मां का नहीं। और बाप सैयद है तो लड़का भी सैयद है अगर बाप शैख है तो लड़का भी शैख है, मां चाहे जैसी हो। अगर किसी सैयद ने बाहर की कोई औरत घर में डाल ली और उससे निकाह कर लिया तो लड़के सैयद हुए और शरअ के एतबार से सब एक ही मेल के कहलाएंगे।

मस'ला ५— मुगल पटान सब एक कौम हैं मगर शैखों व सैयद की टक्कर के नहीं। अगर शैख या सैयद की लड़की उनके यहां ब्याही गई तो कहेंगे कि बेमेल और घटकर निकाह हुआ।

मस'ला ६— मुसलमान होने में बराबरी का एतबार सिर्फ मुगल पटान वगैरा और कौमों में है। शैखों, सैयदों, अलवियों और अन्सरियों में उसका कुछ एतबार नहीं है तो जो शख्स खुद मुसलमान हो गया और उसका बाप काफिर था वह शख्स उस औरत के बराबर का नहीं

जो खुद भी मुसलमान है और उसका बाप भी मुसलमान था और जो आदमी खुद भी मुसलमान है और उसका बाप भी मुसलमान है लेकिन उसका दादा मुसलमान नहीं वह उस औरत के बराबर का नहीं जिसका दादा भी मुसलमान है।

मस'ला ७— दीनदारी का यह मतलब है कि ऐसा शख्स जो दीन का पाबन्द नहीं लुच्चा, शोहदा, शराबी, बदकार आदमी नेकबख्त, पारसा, दीनदार औरत के बराबर न समझा जाएगा।

मस'ला ८— माल में बराबरी के ये मायने हैं कि बिल्कुल मुफलिस, मुहताज मालदार औरत के बराबर का नहीं है और अगर वह बिल्कुल मुफलिस नहीं, बल्कि जितना महर पहली रात को देने का दस्तूर है उतना महर दे सकता है तो अपने मेल और बराबरी का है अगरचे सारा महर न दे सके और यह ज़रूरी नहीं है कि जितने मालदार लड़की वाले हैं लड़का भी उतना ही मालदार हो या उसके करीब-करीब मालदार हो।

मस'ला ९— पेशे में बराबरी यह है कि जुलाहे दर्जी के मेल के और जोड़ के नहीं। इसी तरह नाई, धोबी वगैरा भी दर्जी के बराबर नहीं।

मस'ला १०— दीवाना, पागल आदमी होशियार, समझदार औरत के मेल का नहीं।

5. महर

मस'ला १— निकाह में चाहे महर का कुछ जिक्र करें या न करें हर हाल में निकाह हो जाएगा लेकिन महर देना पड़ेगा बल्कि अगर कोई यह शर्त कर ले कि वह महर न देगा और बे-महर निकाह करेगा तब भी महर देना पड़ेगा।

मस'ला २— महर की कम-से-कम मियददार पौने तीन रुपये भर

चाँदी है और ज्यादा की कोई हद नहीं चाहे जितना बांधे। लेकिन महर का ज्यादा बढ़ना अच्छा नहीं है। सो अगर किसी ने सिर्फ एक रुपया भर चाँदी या एक रुपया या अठन्नी बांध कर निकाह किया तब भी पौने तीन रुपये चाँदी देनी पड़ेगी। शरीअत में इस से कम महर नहीं हो सकता और अगर रुख्सती से पहले ही तलाक दे दी तो सिर्फ उसका आधा दे।

मस'ला ३— अगर निकाह के वक़्त महर का बिल्कुल ज़िक्र ही नहीं किया गया कि कितना है या इस शर्त पर निकाह किया जाता है, कुछ महर न देंगे, फिर दोनों में से कोई मर गया या ऐसी तन्हाई व यकजाई हो गई जो शरअ में मोतबर है तब भी महर दिलाया जाएगा। और इस सूरत में महर मिस्ल देना होगा। और अगर उस सूरत में उस तरह की तन्हाई से पहले मर्द ने तलाक दे दी तो महर पाने की मुस्तहक नहीं है बल्कि सिर्फ एक जोड़ा कपड़ा पाएगी और यह जोड़ा देना मर्द पर वाजिब है, न देगा तो गुनाहगार होगा।

मस'ला ४— जोड़े में सिर्फ चार कपड़े मर्द पर वाजिब हैं, एक कुर्ता, एक सरबन्द यानी ओढ़नी, एक पायजामा या साड़ी (जिस चीज़ का दस्तूर हो) और एक बड़ी चादर जिसमें सर से पैर तक सिमट सके। इसके सिवा और कोई कपड़ा वाजिब नहीं।

मस'ला ५— मर्द की जैसी हैसियत हो वैसे ही कपड़े देने चाहिए। अगर मामूली व गरीब आदमी हो तो सूती कपड़े और बहुत गरीब आदमी नहीं लेकिन बहुत अमीर भी नहीं तो टसर के और जो बहुत मालदार हो तो उम्दा रेशमी कपड़े देने चाहिए। लेकिन हर हाल में यह ख्याल रहे कि जोड़े की कीमत महर मिस्ल के आधे से न बढ़े और एक रुपया छः आने भर चाँदी के जितने दाम हों उससे कम कीमत भी।

मस'ला ६— निकाह के वक़्त तो कुछ महर नहीं माना गया लेकिन निकाह के बाद मिथां बीवी, दोनों ने अपनी खुशी से कुछ तय कर लिया तो वही दिलाया जाएगा। अलबत्ता अगर तन्हाई व यकजाई

मिलने से पहले ही तलाक मिल गई तो इस सूरत में महर पाने की मुस्तहिक नहीं है बल्कि सिर्फ वही एक जोड़ा कपड़ा मिलेगा।

मस'ला ७- सौ या हजार रुपये अपनी हैसियत के मुताबिक महर तय किया फिर शौहर ने अपनी खुशी से कुछ महर और बढ़ा दिया और कहा कि वह सौ रुपये की जगह डेढ़ सौ रुपये देगा तो जितने ज्यादा देने को कहे वे भी वाजिब हो गए। न देगा तो गुनाहगार होगा और अगर तन्हाई व यकजाई होने से पहले तलाक मिल गई तो जितना असल महर था उसी का आधा दिया जाएगा जितना बाद में बढ़ाया था उसको न गिना जाएगा। इसी तरह औरत ने अपनी खुशी व रजामन्दी से अगर कुछ माफ कर दिया तो जितना माफ किया है उतना माफ हो गया अब उसके पाने की मुस्तहिक नहीं है।

मस'ला ८- अगर शौहर ने कुछ दबाव डालकर, धमका कर, दिक करके महर माफ करा लिया तो उसके माफ कराने से माफ नहीं हुआ। अब भी उसके जिम्मे अदा करना वाजिब है।

मस'ला ९- महर में रुपये पैसे, सोना, चांदी कुछ तय नहीं किया बल्कि कोई गांव, बाग या कुछ जमीन तय हुई तो यह भी दुरुस्त है। जो कुछ तय किया है वही देना पड़ेगा।

मस'ला १०- जहां कहीं पहली ही रात को सब महर देने का दस्तूर हो वहां पहली रात ही सारा महर ले लेने का औरत को हक है अगर पहली रात न मांगा तो जब मांगे तब मरद को देना वाजिब है। देर नहीं कर सकता।

मस'ला ११- हिन्दुस्तान में दस्तूर है कि महर का लेन-देन तलाक या मर जाने के बाद होता है कि जब तलाक मिल जाती है तब औरत महर का दावा करती है या मरद मर गया तो कुछ माल छोड़ गया तो उस माल में से लेती है और अगर औरत मर गई तो उसके वारिस महर के दावेदार होते हैं और जब तक मियां बीवी साथ रहते

हैं तब तक न कोई देता है न वह मांगती है तो ऐसी जगह इस दस्तूर की वजह से तलाक मिलने से पहले महर का वावा नहीं कर सकती।

मस'ला १२— महर की नीयत से शौहर ने जो कुछ दिया तो जितना दिया उतना महर अदा हो गया। देते वक़्त औरत से यह बताना जरूरी नहीं है कि उसे महर दे रहा है।

मस'ला १३— मर्द ने कुछ दिया मगर औरत कहती है कि वह चीज़ शौहर ने उसे यूँ ही दी, महर में नहीं। लेकिन मर्द कहता है कि यह मैंने महर दिया है तो मर्द की बात का एतबार किया जाएगा। अलबत्ता अगर खाने-पीने की चीज़ थी तो उसको न समझेंगे।

मस'ला १४— किसी ने दस, बीस, सौ या हजार रुपए अपनी हैसियत के मुताबिक कुछ महर तय किया और बीवी को रुख़सत करा लिया और उससे सोहबत की या सोहबत नहीं की मगर तन्हाई में मियां बीवी किसी ऐसी जगह रहे जहां सोहबत करने से रोकने और मना करने वाली कोई बात न थी तो पूरा महर जितना तय किया अदा करना वाजिब है और अगर ऐसी कोई बात नहीं हुई थी कि लड़की या लड़का मर जाए तब भी पूरा महर देना वाजिब है और अगर ऐसी कोई बात नहीं हुई और मर्द ने तलाक दे दी तो आधा महर देना वाजिब है।

मस'ला १५— शौहर नामर्द है लेकिन दोनों मियां बीवी में वैसी तन्हाई हो चुकी तब भी पूरा महर पाएगी।

मस'ला १६— किसी ने बीवी समझकर ग़लती से किसी ग़ैर औरत से सोहबत कर ली उसको महरें भिन्न देना पड़ेगा और उस सोहबत को जिना नहीं कहेंगे, न कुछ गुनाह होगा बल्कि अगर पेट रह गया तो उस लड़के का नसब भी ठीक है। उसके नसब में कोई धब्बा नहीं और उसको हरामी कहना दुरुस्त नहीं और जब मालूम हो गया कि वह अपनी औरत न थी तो अब उस औरत से अलग रहे अब सोहबत करना दुरुस्त नहीं और उस औरत को भी इदत में बैठना

याजिब है। अब बगैर इइत पूरी किए अपने मियां के पास रहना और मियां से सोहबत करना बुरुस्त नहीं।

मस'ला १७— जितना महर पेशगी देने का दस्तूर है, अगर उतना महर पेशगी न दिया तो औरत का हक है कि जब तक उतना न पाए तब तक मर्द को हमबिस्तर न होने दे और अगर एक बार सोहबत कर चुका है तब भी इख्तियार है कि अब दूसरी या तीसरी बार काबू न पाने दे और अगर वह अपने साथ परदेस ले जाना चाहे तो उतना महर लिए बिना परदेस न जाए।

6. महरें मिस्ल

मस'ला १— महरें मिस्ल या खानदानी महर का यह मतलब है कि उस औरत के बाप के घराने में कोई दूसरी औरत देखे जो उसके मिस्ल हो यानी वह अगर कम उम्र है तो वह भी निकाह के वक़्त कम उम्र हो। अगर यह खूबसूरत है तो वह भी खूबसूरत हो, इसका निकाह कुंवारेपन में हुआ और उसका निकाह भी कुंवारेपन में हुआ हो। निकाह के वक़्त जितना मालदार यह है उतना ही मालदार वह भी थी। जिस देश की यह रहने वाली है उसी देश की वह भी हो। अगर यह दीनदार, होशियार, सलीकादार, पढ़ी-लिखी हो तो वह भी ऐसी ही हो। मतलब जिस वक़्त उसका निकाह हुआ है उस वक़्त उन बातों में वह भी उसके मिस्ल थी जिससे अब निकाह हुआ तो जो महर उसका तय हुआ था वही इसका महरें मिस्ल है।

7. काफ़िरों का निकाह

मस'ला १— काफ़िर लोग अपने मज़हब के एतबार से जिस तरीक़े से निकाह करते हों, शरीअत उसे भी मोतबर रखती है और अगर वे दोनों एक साथ मुसलमान हो जाएं तो अब निकाह दोहराने

की ज़रूरत नहीं यही निकाह अब भी बाकी है।

मस'ला २— अगर दोनों में से एक मुसलमान हो गया, दूसरा नहीं हुआ तो निकाह जाता रहा। अब भिया-बीवी की तरह रहना-सहना दुरुस्त नहीं है।

8. बीवियों में बराबरी करना

मस'ला १— जिस आदमी की कई बीवियां हों तो मर्द पर वाजिब है कि सबको बराबर रखे। जितना एक औरत को दिया है दूसरी भी उतने की ही दावेदार हो सकती है। अगर वह एक के पास एक रात रहा तो दूसरी के पास भी एक रात रहे। उस के पास दो या तीन रातें रहा तो दूसरी के पास भी दो या तीन रातें रहे। जितना माल, जेवर, कपड़े उसको दिए उतने ही की दूसरी औरत भी हकदार है।

मस'ला २— जिसका नया निकाह हुआ और जो पुरानी हो चुकी दोनों का हक बराबर है, कुछ फर्क नहीं।

मस'ला ३— बराबरी सिर्फ रात के रहने में है दिन के रहने में बराबरी होना ज़रूरी नहीं। अगर दिन में एक के पास ज्यादा रहा और दूसरी के पास कम रहा तो कुछ हर्ज नहीं और रात में बराबरी वाजिब है अगर एक के पास मरिब के वक़्त हो आया और दूसरी के पास इशा के बाद आया तो गुनाह हुआ अलबत्ता जो शरूख रात को नौकरी में लगा रहता हो और दिन में घर में रहता हो जैसे चौकीदार, पहरेदार, उसके लिए दिन को बराबरी का हुक्म है।

मस'ला ४— एक औरत से ज्यादा मुहब्बत है और दूसरी से कम तो इसमें कुछ गुनाह नहीं क्योंकि दिल अपने इख़्तियार में नहीं होता।

मस'ला ५— सफ़र में जाते वक़्त बराबरी वाजिब नहीं जिसको जी चाहे साथ ले जाए और बेहतर यह है कि पांसा डाल ले जिसका

नाम निकले उसे ले जाए ताकि कोई अपने दिल में नाखुश न हो।

मस'ला ६- सोहबत करने में बराबरी करना वाजिब नहीं है यानी अगर एक की बारी सोहबत की है तो दूसरी की बारी में भी सोहबत करे, यह जरूरी नहीं।

9. दूध पीना और पिलाना

मस'ला १- जब बच्चा पैदा हो तो मां पर दूध पिलाना वाजिब है अलबत्ता अगर मालदार हो और कोई अन्ना तलाश कर सके तो मां का दूध न पिलाने में कुछ भी गुनाह नहीं।

मस'ला २- किसी लड़की को बिना मियां की इजाजत लिए दूध पिलाना ठीक नहीं हां अगर कोई बच्चा भूख के मारे तड़पता हो और उसके मर जाने का डर हो तो ऐसे वक़्त बिना इजाजत भी दूध पिला दें।

मस'ला ३- ज्यादा-से-ज्यादा दूध पिलाने की मुद्दत दो बरस है। दो बरस के बाद दूध पिलाना हराम है, बिल्कुल दुरुस्त नहीं।

मस'ला ४- अगर बच्चा कुछ खाने-पीने लगा और इस वजह से दो बरस से पहले दूध छुड़ा दिया तब भी कुछ हर्ज नहीं।

मस'ला ५- जब बच्चे ने किसी और औरत का दूध पीया तो वह औरत उसकी मां बन गई और उस अन्ना का शौहर जिसके बच्चे का वह दूध है उस बच्चे का बाप हो गया और उसकी औलाद उसके दूध शरीक भाई बहन हो गए और निकाह हराम हो गया तो जो रिश्ते नसब के एतबार से हराम हैं वे रिश्ते दूध के एतबार से भी हराम हो जाते हैं। अगर ढाई बरस के बाद दूध पिया हो तो इसका बिल्कुल एतबार नहीं, सबके नज़दीक निकाह दुरुस्त है।

मस'ला ६— जब बच्चे के गले में दूध चला गया तो सब रिश्ते हराम हो गए चाहे दूध थोड़ा गया हो या बहुत।

मस'ला ७— अगर बच्चे ने छाती से दूध नहीं पीया बल्कि उसने अपना दूध निकाल कर उसके मुंह में डाल दिया तो उससे भी सब रिश्ते हराम हो गए। इसी तरह अगर बच्चे की नाक में दूध डाल दिया तब भी सब रिश्ते हराम हो गए और अगर कान में डाल दिया तो इसका कोई एतबार नहीं है।

मस'ला ८— अगर औरत का दूध पानी या दवा में मिलाकर पिलाया तो देखना चाहिए कि दूध ज्यादा पिया है या पानी या दोनों बराबर। अगर दूध ज्यादा हो या दोनों बराबर हों तो जिस औरत का दूध है, वह मां हो गई। और सब रिश्ते हराम हो गए और अगर दवा या पानी ज्यादा है तो इसका कुछ एतबार नहीं, वह औरत मां नहीं बनी।

मस'ला ९— औरत का दूध बकरी या गाय के दूध में मिल गया और बच्चे ने भी पी लिया तो देखे ज्यादा कौन है। अगर औरत का दूध ज्यादा हो या दोनों बराबर हों तो सब रिश्ते हराम हो गए और जिस औरत का दूध है, वह बच्चा उसकी औलाद बन गया। अगर बकरी या गाय का दूध ज्यादा है तो इसका कुछ एतबार नहीं, यह समझा जाएगा कि जैसे उसने पीया ही नहीं।

मस'ला १०— मुर्दा औरत का दूध दूहकर किसी बच्चे को पिला दिया तो इससे भी सब रिश्ते हराम हो गए।

मस'ला ११— दो लड़कों ने एक बकरी या एक गाय का दूध पीया तो इससे कुछ नहीं होता, वह भाई-बहन नहीं हुए।

मस'ला १२— जवान मर्द ने अपनी बीवी का दूध पी लिया तो वह हराम नहीं हुई अलबत्ता बहुत गुनाह हुआ क्योंकि दो बरस के बाद दूध पीना बिल्कुल हराम है।

मस'ला १३— एक लड़का, एक लड़की है, दोनों ने एक ही औरत का दूध पीया है तो निकाह नहीं हो सकता। चाहे वह एक ही जमाने में पीया हो या एक ने पहले, या दूसरे ने कई बरस बाद, दोनों का एक हुक्म है।

मस'ला १४— एक लड़की ने किसी की बीवी का दूध पीया तो उस लड़की का निकाह न तो उस आदमी से हो सकता है न उसके बाप-दादा के साथ और न उस आदमी की औलाद के साथ बल्कि उस आदमी की जो औलाद दूसरी बीवी से है उससे ठीक नहीं है।

मस'ला १५— अब्बास नामी एक शरूस ने खदीजा का दूध पीया और खदीजा के शौहर कासिम की एक दूसरी बीवी जैनब थी जिसको तलाक मिल चुकी है तो अब जैनब भी अब्बास से निकाह नहीं कर सकती क्योंकि अब्बास जैनब के मियां की औलाद है और मियां की औलाद से निकाह दुरुस्त नहीं। इसी तरह अगर अब्बास अपनी औरत को छोड़ दे तो वह औरत कासिम के साथ निकाह कर सकती है क्योंकि वह उस का सुतर है। कासिम की बहन और अब्बास का निकाह नहीं हो सकता क्योंकि वे दोनों फूफी भतीजे हुए चाहे वह कासिम की सगी बहन हो या दूध शरीक बहन, दोनों का एक हुक्म है अलबत्ता अब्बास की बहन से कासिम निकाह कर सकता है।

मस'ला १६— अब्बास की एक बहन साजिदा है और साजिदा ने एक औरत का दूध पीया लेकिन अब्बास ने नहीं पिया तो उस दूध पिलाने वाली औरत का निकाह अब्बास से हो सकता है।

मस'ला १७— अब्बास के लड़के ने जाहिदा का दूध पीया तो जाहिदा का निकाह अब्बास से हो सकता है।

मस'ला १८— कासिम और जाकिर दो भाई हैं और जाकिर की एक दूध शरीक बहन है तो कासिम के साथ उसका निकाह हो सकता है अलबत्ता जाकिर के साथ नहीं हो सकता है।

मस'ला १९— औरत का दूध किसी दवा में डालना जायज नहीं। अगर डाल दिया तो अब उसका खाना और लगाना जायज नहीं बल्कि हराम है। इसी तरह दवा के लिए आंख या कान में दूध डालना भी जायज नहीं। मतलब यह कि औरत के दूध से किसी तरह का नफा उठाना और उसको अपने काम में लाना दुरुस्त नहीं।

10. तलाक़

मस'ला १— जो शौहर जवान हो चुका हो और वह दीवाना व पागल न हो तो उस के तलाक़ देने से तलाक़ हो जाएगी और जो लड़का अभी जवान नहीं हुआ और दीवाना व पागल, जिसकी अवल ठीक नहीं इन दोनों के तलाक़ देने से तलाक़ नहीं हो जाती।

मस'ला २— सोते हुए आदमी के मुंह से निकला कि तुझको तलाक़ है या यूँ कह दिया कि 'मेरी बीवी को तलाक़' तो इस बड़बड़ाने से तलाक़ न पड़ेगी।

मस'ला ३— किसी ने जबरदस्ती किसी से तलाक़ दिला दी। बहुत मारा कूटा, धमकाया कि तलाक़ दे दे नहीं तो उसे मार दिया जाएगा और इस मजबूरी से तलाक़ देने से भी तलाक़ हो जाती है।

मस'ला ४— शौहर के सिवा किसी और को तलाक़ देने का हक़ नहीं है अलबत्ता अगर शौहर ने किसी से कह दिया कि वह तलाक़ दे तो वह भी तलाक़ दे सकता है।

मस'ला ५— तलाक़ देने का हक़ सिर्फ़ मर्द को ही है। जब मर्द ने तलाक़ दे दी, तो हो गई। औरत का इसमें कुछ बस नहीं चाहे मंजूर करे या न करे, हर तरह तलाक़ हो गई। औरत अपने मर्द को तलाक़ नहीं दे सकती।

मस'ला ६— मर्द को सिर्फ़ तीन तलाक़ें देने का इस्तिथार है, ज्यादा का नहीं अगर चार-पांच बार दे दे तब भी तीन तलाक़ें हुईं।

मस'ला ७— जब मर्द ने जवान से कह दिया कि उसने अपनी बीवी को तलाक दे दी और इतने जोर से कहा कि खुद उन लफ्जों को सुन लिया। बस इतना कहते ही तलाक पड़ गई चाहे किसी के सामने कहे या अकेले में और चाहे बीवी सुने या न सुने हर हाल में तलाक हो गई।

मस'ला ८— तलाक तीन तरह की है : एक तो ऐसी तलाक जिसमें निकाह बिल्कुल टूट जाता है और अब बगैर निकाह किए उस मर्द के पास रहना जायज़ नहीं। अगर फिर उसी के पास रहना चाहे और मर्द भी उसको रखने पर राज़ी हो तो फिर निकाह करना पड़ेगा। ऐसी तलाक को बाइन तलाक कहते हैं।

दूसरी तलाक वह है जिसमें निकाह ऐसा टूटा कि दोबारा निकाह भी करना चाहे तो पहले औरत को किसी दूसरे से निकाह करना होगा और जब वहां तलाक हो जाए तब बांद इद्त उससे निकाह हो सकेगा। ऐसी तलाक को मुगल्लिज़ा कहते हैं।

तीसरी तलाक वह होती है जिसमें निकाह अभी नहीं टूटा, साफ लफ्जों में एक या दो तलाक दे देने के बाद अगर मर्द पशोमान हुआ तो फिर से निकाह करना ज़रूरी नहीं, बगैर निकाह किए भी उसे रख सकता है। फिर मियां-बीवी की तरह रहने लगा तो दुरुस्त है अलबत्ता अगर मर्द तलाक देने के बाद भी बात पर जमा रहा और उससे नहीं फिरा तो जब तलाक की इद्त गुज़र जायेगी तब नकाह टूट जायेगी और जुदा हो जायेगी। जब तक इद्त न गुज़रे तब तक रखने न रखने दोनों बातों का इख्तियार है, ऐसी तलाक को रजई तलाक कहते हैं। अलबत्ता अगर तीन तलाकों दे दी तो अब इख्तियार नहीं।

मस'ला ९— तलाक देने के दो तरीक़े हैं : मैंने अपनी बीवी को तलाक दे दी। मतलब यह कि ऐसी साफ़ बात कह दी जिसमें तलाक देने के सिवा कोई और मानी नहीं निकल सकते, ऐसी तलाक को सरीह (प्रकट) तलाक कहते हैं।

दूसरा तरीका यह है कि साफ-साफ नहीं कहे और ऐसे गोलमोल कहा जिन में तलाक का मतलब भी निकल सकता है और तलाक के सिवा दूसरे मानी भी निकल सकते हैं। जैसे: कोई कहे कि मैंने तुझको दूर कर दिया तो इसका एक मतलब तो यह कि मैंने तुझको तलाक दे दी। दूसरा मतलब यह हो सकता है कि तलाक नहीं दी लेकिन अब तुझको अपने पास नहीं रखूंगा। हमेशा अपने मायके में ही पड़ी रहे। तेरी खबर न लूंगा या यूँ कहा कि मुझे तुझ से कोई मतलब नहीं। तू मुझ से जुदा हो गई, मैंने तुझको अलग कर दिया, जुदा कर दिया। मेरे घर से चली जा, निकल जा हट दूर हो। अपने मां-बाप के घर जाकर बैठ, अपने घर जा, मेरा तेरा निबाह न होगा या इसी तरह के और लफ्ज जिनमें दोनों मतलब निकल सकते हैं। ऐसी तलाक को किनाया (इशारा, प्रतीकात्मक) कहते हैं।

मस'ला १०— अगर साफ-साफ लफ्जों में तलाक दी तो जवान से निकलते ही तलाक हो गई। चाहे तलाक देने की नीयत हो या न हो बल्कि हँसी और दिल्लगी में कहा हो, हर तरह हो गई साफ लफ्जों में तलाक देने में तीसरी तरह की तलाक पड़ती है यानी इद्दत के खत्म होने तक उसके रखने न रखने का इख्तियार है और एक बार कहने से एक ही तलाक पड़ेगी। न दो पड़ेंगी, न तीन। अलबत्ता अगर तीन बार कहे या यूँ कहे कि तुझको तीन तलाकें दे दी तो तीन तलाकें हो गई।

मस'ला ११— किसी ने एक तलाक दी तो जब तक औरत इद्दत में न रहे तब तक दूसरी और तीसरी तलाक देने का इख्तियार रहता है। अगर देगा तो हो जाएगी।

मस'ला १२— किसी ने यूँ कहा कि तुझको तलाक दे दूंगा तो इस तरह कहने से तलाक नहीं हुई। इसी तरह अगर किसी बात पर यूँ कहा कि अगर फ़लां काम करेगी तो तलाक दे दूंगा तब भी तलाक नहीं हुई चाहे वह काम करे या न करे। हाँ, अगर यूँ कह दे कि फ़लां काम

करे तो तलाक है तो उसके कर लेने से तलाक पड़ जाएगी।

मस'ला १३— किसी ने अपनी बीवी को तलाकन (तलाक पाने वाली) कह कर पुकारा तब भी तलाक पड़ गई अगरचे हँसी में ही कहा हो।

मस'ला १४— किसी ने कहा कि जब तू लखनऊ जाए तो तुझको तलाक है तो जब तक लखनऊ न जाएगी तलाक न पड़ेगी। जब वहां जाएगी तब पड़ जाएगी।

मस'ला १५— अगर साफ-साफ तलाक नहीं दी बल्कि गोल-मोल लफ्ज़ कहे और इशारे किनाए से तलाक दी तो इन लफ्ज़ों के कहने के वक़्त अगर देने की नीयत की तो तलाक हो गई और पहली तरह की यानी बाइन तलाक हुई अब बग़ैर निकाह किए नहीं रख सकता। और अगर तलाक की नीयत न थी बल्कि दूसरे मायनों से कहा था तो तलाक नहीं हुई अलबत्ता अगर करीने से मालूम हो जाए कि तलाक देने की ही नीयत थी तो अब वह झूठ कहता है तो अब औरत उसके पास न रहे और यही समझे कि उसे तलाक मिल गई। जैसे: बीवी ने गुस्से में कहा कि मेरा तेरा निबाह न होगा, भुझको तलाक दे दे। उसने कहा—अच्छा मैंने छोड़ दिया तो यहां औरत यह समझे कि उसे तलाक दे दी।

मस'ला १६— किसी ने तीन बार कहा—तुझे तलाक! तलाक! तलाक! तो तीनों तलाकें हो गई या गोल-मोल अल्फाज़ में तीन बार कहा तब भी तीन तलाकें हो गई।

11. रुख़सती से पहले तलाक़

मस'ला १— अमी मियां के पास न जाने पाई कि उसने तलाक दे दी या रुख़सती तो हो गई लेकिन अमी मियाँ-बीवी में तनहाई न होने पाई थी कि उससे पहले ही तलाक दे दी तो तलाक बाइन पड़ी घाहे

साफ लफ्जों में दी या गोल-मोल लफ्जों में। ऐसी औरत को जब तलाक दी जाए तो तलाक बाइन ही पड़ती है और ऐसी औरत के लिए तलाक की इदत भी कुछ नहीं है। तलाक मिलने के बाद ही दूसरे मर्द से निकाह कर सकती है और ऐसी औरत को तलाक देने के बाद अब दूसरी तीसरी तलाक देने का भी इख्तियार नहीं। अगर देगा तो न पड़ेगी अलबत्ता अगर पहली बार ही यह कह दे कि तुझको दो या तीन तलाकें दीं तो जितनी दी हैं सब पड़ गई अगर यूँ कहा कि तुझको दो तलाक हैं, तब भी ऐसी औरत को एक ही तलाक पड़ेगी।

मस'ला २— अगर मियाँ बीबी में तन्हाई या एकजाई हो चुकी हो या अभी न हुई हो तो ऐसी औरत को साफ-साफ लफ्जों में तलाक देने से तलाक रजई पड़ती है जिसमें बिना निकाह किए भी रख लेने का इख्तियार होता है और गोल-मोल लफ्जों से बाइन तलाक पड़ती है और इदत में भी बैठना पड़ेगा बिना इदत पूरी किए किसी दूसरे शख्स से निकाह नहीं कर सकती और इदत के अन्दर उसका मर्द दूसरी और तीसरी तलाक भी दे सकता है।

12. तीन बार तलाक देना

मस'ला १— अगर किसी ने अपनी औरत को तीन तलाकें दे दीं तो अब वह औरत उस मर्द के लिए हराम हो गई। अब अगर फिर से निकाह कर लिया तब भी औरत का उस मर्द के पास रहना हराम है और यह निकाह नहीं हुआ। साफ लफ्जों में तीन तलाकें दी हों या गोल-मोल लफ्जों में सब का एक हुक्म है।

मस'ला २— तीन तलाकें एकदम दे दीं जैसे यूँ कह दिया तुझ को तलाक है। तलाक है या अलग कर के तीन तलाकें दीं जैसे आज एक दी, एक कल, एक परसों या एक इस महीने में, एक दूसरे महीने में एक तीसरे महीने में यानी इदत के अन्दर-अन्दर तीनों तलाकें दे

दीं—सब का एक हुक्म है साफ लफ्जों में तलाक देकर फिर रोक रखने का इख्तियार उस वक़्त होता है जब तीन तलाकों न दे बस एक या दो दें। जब तलाक दे दीं तो अब कुछ नहीं कर सकता।

मस'ला ३— किसी ने अपनी औस्त को तलाक रजई दी। फिर मियाँ राजी हो गया और रोक रखा। फिर दो-चार बरस में किसी बात पर गुस्सा आया तो एक तलाक रजई और दे दी जिसमें रोक रखने का इख्तियार होता है। फिर जब गुस्सा उतरा तो रोक रखा और नहीं छोड़ा। ये दो तलाकें हो चुकीं। अब उसके बाद अगर कभी एक तलाक और दे देगा तो तीन पूरी हो जाएंगी और उसका वही हुक्म होगा कि बिना दूसरा शौहर किए उस मर्द से निकाह नहीं हो सकता। इसी तरह अगर किसी ने तलाक बाइन दी जिसमें रोक रखने का इख्तियार नहीं होता निकाह टूट जाता है। फिर पशोमान हुआ और मियाँ-बीवी ने राजी होकर फिर से निकाह पढ़वा लिया। कुछ ज़माने के बाद फिर गुस्सा आया और एक तलाक बाइन दे दी और गुस्सा उतरने के बाद निकाह पढ़वा लिया। ये दो तलाकें हुईं। अब तीसरी बार अगर तलाक देगा तो फिर वही हुक्म है कि दूसरा शौहर किए बगैर उससे निकाह नहीं कर सकती।

मस'ला ४— तीन तलाकें देने के बाद अगर फिर उसी मर्द के साथ रहना चाहे और निकाह करना चाहे तो इसकी सिर्फ एक सूरत है। वह यह कि पहले किसी और मर्द से निकाह करके हमबिस्तर हो। फिर वह दूसरा मर्द मर जाए या तलाक दे दे तो इहत पूरी करके पहले शौहर से निकाह कर सकती है। अगर दूसरा ख़ाबिन्द तो किया लेकिन अभी वह सोहबत न करने पाया था कि मर गया या सोहबत करने से पहले ही तलाक दे दी तो इसका कुछ एतबार नहीं। पहले मर्द से जब ही निकाह हो सकता है कि दूसरे मर्द ने सोहबत भी की हो, बिना उसके पहले मर्द से निकाह दुरुस्त नहीं।

मस'ला ५— अगर दूसरे मर्द से इस शर्त पर निकाह हुआ कि सोहबत करके औरत को छोड़ देगा तो इस तरह इकरार लेने का

एतबार नहीं। उसको इस्तिथार है कि उसको छोड़े या न छोड़े और जब भी चाहे छोड़ दे और यह इकरार कर के निकाह करना बहुत गुनाह है और हराम है अगर इस निकाह के बाद दूसरे खाविन्द ने सोहबत कर के छोड़ दिया या मर गया तो पहले खाविन्द के लिए हलाल हो गई।

मस'ला ६— निकाह करने से पहले किसी औरत को कहा— अगर मैं तुझ से निकाह करूँ तो तुझको तलाक है जब उस औरत से निकाह करेगा तो निकाह करते ही तलाक बाइन पड़ जाएगी। अब बिना निकाह किए उसे नहीं रख सकता और अगर यूँ कहा कि अगर तुझ से निकाह करूँ तो तुझ पर दो बाइन तलाकें पड़ गईं और अगर तीन तलाकों को कहा था तो तीनों हो गईं और अब तलाक मुगल्लिजा हो गई।

मस'ला ७— निकाह होते ही जब तलाक उस पर पड़ गई तो उसने उसी औरत से फिर से निकाह कर लिया तो अब दूसरे निकाह करने से तलाक पड़ेगी। हाँ, अगर यूँ कहा कि जितनी बार तुझ से निकाह करूँगा हर बार तुझको तलाक है तो जब निकाह करेगा, हर बार तलाक पड़ जाया करेगी। अब उसी औरत को रखने की कोई सूरत नहीं। दूसरा शौहर करके अगर उस मर्द से निकाह करेगी तब भी तलाक पड़ जाएगी।

मस'ला ८— किसी ने कहा : जिस औरत से निकाह करूँ उसे तलाक, जिस औरत से निकाह करेगा उस पर तलाक पड़ जाएगी अलबत्ता तलाक पड़ने के बाद अगर फिर उसी औरत से निकाह कर लिया तो तलाक नहीं पड़ेगी।

मस'ला ९— अगर बीवी से कहा : अगर तू फलां काम करे तो तुझको तलाक। अगर तू मेरे पास से जाए तो तुझको तलाक और अगर तू उस घर में जाए तो तुझको तलाक या किसी बात के होने पर तलाक दी तो जब वह उस काम को करेगी तब तलाक हो जाएगी। अगर न करेगी तो नहीं होगी और तलाक रजई पड़ेगी जिसमें बगैर निकाह के

भी रोक रखने का इख्तियार होता है। अलबत्ता अगर कोई गोल-मोल लफ्ज़ कहता है जैसा अगर फलां काम करेगी तो तुझ से मेरा कोई वास्ता नहीं तो जब वह उस काम को करेगी तब तलाक बाइन पड़ेगी बशर्त कि मर्द ने उस लफ्ज़ को कहते वक़्त तलाक की नीयत की हो।

मस'ला १०— अगर यूँ कहा कि फलां काम करे तो तुझ को दो तलाक़ें या तीन तलाक़ें, तो जितनी तलाक़ें कही उतनी ही हो गई।

मस'ला ११— औरत ने घर से बाहर जाने का इरादा किया। मर्द ने कहा कि अभी न जा। औरत न मानी तब मर्द ने कहा अगर तू बाहर जाएगी तो तुझ पर तलाक़ तो इसका हुक्म यह है कि अभी बाहर जाएगी तो तलाक़ पड़ेगी और अभी न गई, कुछ देर में गई तो तलाक़ न रहेगी। क्योंकि इसका यही मतलब था कि अभी न जाए फिर कभी जाए ये मतलब नहीं कि उम्र भर न जाए।

13. बीमार आदमी का तलाक़ देना

मस'ला १— बीमारी की हालत में किसी ने औरत को तलाक़ दे दी। फिर औरत की इहत अभी ख़त्म न हो पाई थी कि उसी बीमारी में मर गया तो शौहर के माल में से जितना बीवी का हिस्सा होता है उतना ही औरत को भी मिलेगा चाहे एक तलाक़ दी हो या दो तीन और चाहे तलाक़ रजई दी हो या बाइन, सबका/एक ही हुक्म है। अगर इहत ख़त्म हो चुकी तब वह मरा तो हिस्सा न पाएगी। इसी तरह अगर मर्द उसी बीमारी में नहीं बल्कि उससे अरका हो गया था फिर बीमार हो गया और मर गया—तब भी हिस्सा पाएगी चाहे इहत ख़त्म हो चुकी हो या न हुई हो।

मस'ला २— औरत ने तलाक़ मांगी थी इसलिए मर्द ने तलाक़

दी थी औरत हिस्सा पाने की हकदार नहीं चाहे इदत के अन्दर मरे या इदत के बाद, दोनों का एक ही हुक्म है।

मस'ला ३— बीमारी की हालत में औरत से कहा कि अगर तू घर से बाहर जाए तो तुझ पर तलाक बाइन है और फिर औरत बाहर गई और तलाक बाइन हो गई तो इस सूरत में हिस्सा न पाएगी कि उसने ऐसा काम क्यों किया जिससे तलाक पड़ी और अगर यूँ कहा कि अगर तू खाना खाए तो तुझको तलाक बाइन है। या यूँ कहा कि अगर तू नमाज़ पढ़े तो तुझको तलाक बाइन है। ऐसी सूरत में अगर वह इदत के अन्दर मर जाएगा तो औरत को हिस्सा मिलेगा क्योंकि औरत के इख्तियार से तलाक नहीं पड़ी क्योंकि खाना खाना और नमाज़ पढ़ना तो ज़रूरी है।

मस'ला ४— किसी भले-चंगे आदमी ने अपनी बीवी से कहा कि जब वह घर से बाहर निकले तो उसे तलाक बाइन है फिर जिस वक़्त वह घर से बाहर निकली उस वक़्त वह बीमार था और उसी बीमारी में इदत के अन्दर मर गया तब भी हिस्सा न पाएगी।

मस'ला ५— तन्दुरुस्ती के ज़माने में कहा : जब तेरा बाप परदेस से आए तो तुझको तलाक है। जब वह परदेस से आया उस वक़्त मर्द बीमार था और उसी बीमारी की हालत में यह कहा और उसी बीमारी में मर गया तो हिस्सा पाएगी।

14. तलाक़ के बाद बीवी को रोक लेना

मस'ला १— जब किसी ने एक या दो रज़ई तलाक दी तो इदत ख़त्म होने से पहले मर्द को इख्तियार है कि उसको रोक रखे। फिर से निकाह करने की ज़रूरत नहीं है और चाहे राज़ी हो या न हो, उसको

कुछ इख्तियार नहीं है और अगर तीन तलाक दे दी तो इसमें यह इख्तियार नहीं।

मस'ला २— रजअत कर लेने यानी रोक रखने का तरीका यह है कि या तो साफ-साफ- ज़बान से कह दे कि मैं तुझको फिर से रख लेता हूँ, तुझे न छोड़ूँगा या यूँ कह दे कि मैं अपने निकाह में तुझको रोकता हूँ या औरत से नहीं कहा, किसी और से कहा कि मैंने अपनी बीवी को फिर से रख लिया और तलाक न दी। बस इतना कहने से वह फिर उसकी बीवी हो गई।

मस'ला ३— जब औरत को रोक रखना मंजूर हो तो बेहतर है कि दो-चार लोगों को गवाह बना ले कि शायद कुछ झगड़ा पड़े तो कोई मुकर न सके। अगर किसी को गवाह न बनाया तो अकेले में ऐसा कर लिया तब भी ठीक है। मतलब तो हासिल हो ही गया।

मस'ला ४— अगर औरत की इदत गुजर चुकी तब ऐसा करना चाहा तो कुछ नहीं हो सकता। अब अगर औरत मंजूर करे और खुश हो तो फिर से निकाह करना पड़ेगा। बिना किए नहीं रह सकती। अगर वह रखे भी तो औरत को उसके पास रहना दुरुस्त नहीं।

मस'ला ५— जिस औरत को एक या दो रजई तलाक मिली हों जिसमें मर्द को तलाक से रोकने का हक होता है तो ऐसी औरत को मुनासिब है कि सूब बनाव-सिंंगार करके रहे ताकि मर्द का दिल उसकी तरफ झुक जाए और वह उसे रोक ले। और अगर मर्द तलाक देने से मानता न हो तो मर्द को मुनासिब है कि जब घर में आए खांस-खांसकर आए ताकि औरत अगर उसका बदन खुला हो ढक ले और उसकी किसी बेमौका निगाह न पड़े। जब इदत पूरी हो चुके तो किसी और जगह जाकर रहे।

मस'ला ६— अगर अभी रोका न हो तो उस औरत को अपने साथ सफर में ले जाना जायज़ नहीं और औरत को उस मर्द के साथ

जाना भी दुरुस्त नहीं।

मस'ला ७— जिस औरत को एक या दो तलाक बाइन दे दी जिसमें रोक रखने का एख्तियार नहीं होती तो इसका हुक्म यह है कि अगर किसी और मर्द से निकाह करना चाहे तो इद्दत के अन्दर निकाह दुरुस्त नहीं और खुद उसी से निकाह मंजूर हो तो अन्दर भी हो सकता है।

मस'ला ८— औरत को रोकने का एक तरीका यह भी है कि ज़बान से तो कुछ कहा नहीं लेकिन उससे सोहबत कर ली या उसका बोसा लिया, प्यार किया, या जवानी की ख्वाहिश के साथ उसको हाथ लगाया तो इन सब सूरतों में वह फिर उसकी बीवी हो गई। दोबारा निकाह नहीं करना पड़ेगा।

मस'ला ९— जिस औरत को हैज़ आता हो उसके लिए तलाक इद्दत तीन हैज़ है। जब तीन हैज़ पूरे हो चुके तो इद्दत गुज़र चुकी। जब यह बात मालूम हो गई तो अब समझना चाहिए कि अगर तीसरा हैज़ पूरे दस दिन आया है तब तो जिस वक़्त खून बन्द हुआ और दस दिन पूरे हो गए उस वक़्त इद्दत ख़त्म हो गई और रोक रखने का जो एख्तियार मर्द को था, जाता रहा। चाहे औरत नहा चुकी हो या अभी नहीं नहाई हो, इस का कुछ एतबार नहीं। अगर तीसरा हैज़ दस दिन से कम आया और खून बन्द हो गया लेकिन अभी औरत ने गुस्ल नहीं किया और न कोई नमाज़ उसके ऊपर वाजिब हुई तो अब भी मर्द का एख्तियार बाकी है। अब भी अपने इरादे से रोकेगा तो फिर उसकी बीवी बन जाएगी अलबत्ता अगर उसने खून बन्द होने पर गुस्ल कर लिया या गुस्ल तो नहीं किया लेकिन एक नमाज़ का वक़्त गुज़र गया यानी एक नमाज़ की कज़ा उस पर वाजिब हो गई—इन दोनों सूरतों में मर्द का एख्तियार जाता रहा। अब वह औरत को बग़ैर निकाह किए नहीं रख सकता।

मस'ला १०— जिस औरत से अभी सोहबत न की हो, चाहे

तन्हाई हो चुकी हो उसको तलाक देने से रोक रखने का एख्तियार नहीं रहता क्योंकि उसको जो तलाक दी जाए वह बाइन पड़ती है।

मस'ला ११— अगर दोनों एक जगह अकेले में तो रहे लेकिन मर्द कहता है कि उसने सोहबत नहीं की। फिर इस इकरार के बाद तलाक दे दी तो अब तलाक का एख्तियार उसको नहीं है।

15. बीवी के पास न जाने की कसम

मस'ला १— जिसने कसम खा ली और यूँ कह दिया कि खुदा की कसम! अब सोहबत न करूंगा या खुदा की कसम! तुझ से कभी सोहबत न करूंगा या कसम खाता हूँ कि तुझसे सोहबत न करूंगा या किसी और तरह कहा तो उसका हुक्म यह है कि अगर सोहबत न की तो चार महीने गुजरने के बाद औरत पर तलाक बाइन पड़ जाएगी। अब बगैर निकाह किए मियाँ-बीवी की तरह नहीं रह सकते और अगर चार महीने के अन्दर ही अन्दर उसने कसम तोड़ डाली और सोहबत कर ली तो तलाक न पड़ेगी अलबत्ता कसम तोड़ने का कफ़फ़ारा देना पड़ेगा। ऐसी कसम खाने को शरीअत में 'ईला' कहते हैं।

मस'ला २— हमेशा क लिए सोहबत न करने की कसम नहीं खाई बल्कि चार महीने के लिए कसम खाई और यूँ कहा खुदा की कसम चार महीने तक तुझ से सोहबत न करूंगा तो इससे ईला हो गया। इसका भी यही हुक्म है कि अगर चार महीने तक सोहबत न करे तो कसम का कफ़फ़ारा दे।

मस'ला ३— अगर चार महीने से कम के लिए कसम खाई तो इसका कुछ एतबार नहीं, इससे 'ईला' न होगा। चार महीने से एक दिन भी कम करके कसम खाए तब भी 'ईला' न होगा। अलबत्ता जितने दिनों की कसम खाई है उतने दिन से पहले सोहबत करे तो कसम

तोड़ने का कफ़ारा देना पड़ेगा और अगर सोहबत न की तो औरत को तलाक़ न पड़ेगी और कसम भी पूरी रहेगी।

मस'ला ४— किसी ने सिर्फ़ चार महीने की कसम खाई फिर अपनी कसम नहीं तोड़ी इसलिए चार महीने के बाद तलाक़ पड़ गई और तलाक़ के बाद फिर उसी मर्द से निकाह हो गया तो अब उस निकाह के बाद अगर चार महीने तक सोहबत न करे तो कुछ हर्ज नहीं, अब कुछ न होगा।

मस'ला ५— अगर औरत को तलाक़ बाइन दे दी, फिर उसने सोहबत न करने की कसम खा ली तो 'ईला' नहीं हुआ। अब फिर से निकाह करने के बाद अगर सोहबत न करे तो तलाक़ न होगी लेकिन जब सोहबत करेगा तो कसम तोड़ने का कफ़ारा देना पड़ेगा। अगर तलाक़ रजई दे देने के बाद ईहत के अन्दर ऐसी कसम खाई तो 'ईला' हो गया। अब अगर रोक रखे और सोहबत न करे तो चार महीने के बाद तलाक़ पड़ जाएगी और अगर सोहबत करे तो कसम का कफ़ारा दे।

मस'ला ६— खुदा की कसम नहीं खाई बल्कि यूँ कहा कि अगर तुझ से सोहबत करूँ तो तुझको तलाक़ है तब भी 'ईला' हो गया। सोहबत करेगा तो रजई तलाक़ पड़ जाएगी और कसम का कफ़ारा देना पड़ेगा। अगर सोहबत न की तो चार महीने के बाद तलाक़ बाइन पड़ जाएगी।

16. बीवी को मां के बराबर कह देना

मस'ला १— किसी ने अपनी बीवी से कहा कि तू मेरी मां के बराबर है। तू मेरे हिसाब से मां के बराबर है। अब तू मेरे लिए मां के बराबर है। मां की तरह है—तो इसका मतलब देखना चाहिए अगर यह

मतलब लिया कि ताजीम और बुजुर्गी में मां के बराबर है, या यह मतलब लिया कि वह बिल्कुल बुढ़िया है उम्र में उसकी मां के बराबर है तब तो यह कहने से कुछ नहीं हुआ।

इस तरह अगर उसने कहते वक़्त कुछ नीयत नहीं कि और कुछ मतलब नहीं लिया। यूँ ही बक दिया तब भी कुछ नहीं हुआ। अगर इस तरह कहने से तलाक़ देने और छोड़ देने की नीयत है तो उसको तलाक़ बाइन पड़ गई। और तलाक़ देने की भी नीयत थी और औरत का छोड़ना भी मकसूद नहीं था बल्कि सिर्फ़ इतना कहा कि अगरचे तू मेरी बीवी है, अपने निकाह से तुझ को अलग नहीं करता लेकिन अब तुझ से कभी सोहबत न करूंगा। तुझ से सोहबत करने को अपने ऊपर हराम कर लिया, बस रोटी कपड़ा ले और पड़ी रहे। इसको शरअ में जिहार कहते हैं।

इसका हुक्म यह है कि यह औरत रहेगी तो उसी के निकाह में लेकिन मर्द जब तक कफ़ारा अदा न करे तब तक सोहबत करना या जवानी की इच्छा के साथ हाथ लगाना, मुँह चूमना, प्यार करना हराम है। जब तक कफ़ारा न देगा तब तक वह औरत हराम रहेगी चाहे जितने बरस गुज़र जाएं। जब मर्द कफ़ारा दे दे तो दोनों मियां बीवी की तरह रहें। फिर से निकाह करने की ज़रूरत नहीं। इसका कफ़ारा दिया जाता है।

मस'ला २- अगर कफ़ारा देने से पहले ही सोहबत कर ली तो बड़ा गुनाह हुआ : अल्लाह तआला से तौबा इस्तिफ़ार करे और आगे पक्का इरादा करे कि अब बिना कफ़ारा दिए फिर कभी सोहबत न करेगा। औरत को चाहिए कि जब तक मर्द कफ़ारा न दे तब तक उसको अपने पास न आने दे।

मस'ला ३- अगर बहन के बराबर या बेटे या फूफी या और किसी के बराबर जिसके साथ निकाह हमेशा हराम होता है कहा इसका भी यही हुक्म है।

मस'ला ४— किसी ने कहा कि तू मेरे लिए सूअर के बराबर है तो अगर तलाक़ देने या छोड़ने की नीयत की थी तब तो तलाक़ पड़ गई और अगर जिहार की नीयत की तो कुछ नहीं हुआ। इसी तरह अगर कुछ नीयत नहीं की हो तब भी कुछ नहीं हुआ।

मस'ला ५— अगर जिहार में चार महीने या इससे ज्यादा मुदत सोहबत न की और कफ़ारा न दिया तो तलाक़ नहीं पड़ी। इससे 'ईला' नहीं होता।

मस'ला ६— जब तक कफ़ारा न दे तब तक मुंह देखना, बातचीत करना हराम नहीं अलबत्ता पेशाब की जगह को देखना दुरुस्त नहीं।

मस'ला ७— अगर हमेशा के लिए जिहार नहीं किया बल्कि कुछ मुदत तय कर दी। जैसे यह कहा साल भर या चार महीने के लिए तू मेरी मां के बराबर है तो जितनी मुदत तय की है उतनी मुदत तक जिहार रहेगा और अगर इस मुदत के अन्दर सोहबत करना चाहे तो कफ़ारा दे और अगर इस मुदत के बाद सोहबत करे तो कुछ न देना पड़ेगा और बीवी हलाल हो जाएगी।

मस'ला ८— जिहार का लफ़्ज़ अगर कई बार कहे जैसे दो या तीन बार यही कहा कि तू मेरे लिए मां के बराबर है तो जितनी बार कहा उतने कफ़ारे देने पड़ेंगे अलबत्ता अगर दूसरी और तीसरी बार कहने से खूब मजबूत और पक्के हो जाने की नीयत हो। नए सिर से जिहार करना मकसूद न हो तो एक ही कफ़ारा दे।

मस'ला ९— अगर कई औरतों से ऐसा कहा तो जितनी बीवियां हों उतने ही कफ़ारे दे।

मस'ला १०— अगर बराबर का लफ़्ज़ नहीं कहा न मिस्ल और तरह का लफ़्ज़ कहा बल्कि यूँ कहा कि तू मेरी बहन है तो इससे कुछ नहीं हुआ औरत हराम नहीं हुई लेकिन ऐसा कहना बुरा और गुनाह है।

मस'ला ११— अगर यूँ कहा कि तू मेरे लिए माँ की तरह हराम है या अगर तलाक़ देने की नीयत हो तो तलाक़ पड़ेगी और जिहारा की नीयत की हो या कुछ नीयत न की हो तो जिहारा हो जाएगा। कफ़ारा देकर सोहबत करना बुरास्त है।

17. कफ़ारा अदा करना

मस'ला १— जिहारा का कफ़ारा उसी तरह है जिस तरह रोज़ा तोड़ने का कफ़ारा है। दोनों में कुछ फर्क नहीं।

मस'ला २— अगर ताक़त हो तो साठ रोज़े लगातार रखे। कोई रोज़ा टूटने न पाए और जब तक रोज़े ख़त्म न हो चुकें तब तक औरत से सोहबत न करे। अगर रोज़े ख़त्म होने से पहले उसी औरत से सोहबत कर ली तो अब रोज़े फिर से रखे चाहे दिन को उस औरत से सोहबत की हो या रात को और चाहे जानकर ऐसा किया हो या भूल से—सबका एक ही हुक्म है।

मस'ला ३— अगर शुरु महीने यानी पहली तारीख़ से रोज़े रखने शुरू किए तो पूरे दो महीने रोज़े रख ले चाहे पूरे साठ दिन हों और तीस दिन का महीना हो या इससे कम दिन हों, दोनों तरह कफ़ारा अदा हो जाएगा और अगर पहली तारीख़ से रोज़े रखना शुरू नहीं किए तो पूरे साठ रोज़े रखे।

मस'ला ४— अगर रोज़े रखने की ताक़त न हो तो साठ मिस्कीनों को दो वक़्त खाना खिलाए या कच्चा अनाज दे दे। अगर सब फकीरों को अभी नहीं खिला चुका था कि बीच में सोहबत कर ली गुनाह तो हुआ मगर इस सूरत में कफ़ारा दोहराना न पड़ेगा।

मस'ला ५— किसी के जिहारा के कफ़ारे थे उसने साठ मिस्कीनों

को चार-चार सेर गेहूँ दे दिए और यह समझा कि कफ़फारे से दो-दो सेर देता है इसलिए दोनों कफ़फारा अदा हो गया तब भी एक ही कफ़फारा अदा हुआ। दूसरा कफ़फारा फिर दे और अगर एक कफ़फारा रोज़ा तोड़ने का था ज़िहार का इसमें ऐसा हो तो दोनों अदा हो गए।

18. बीवी को बदचलन कहना

मस'ला १— जब कोई अपनी बीवी को ज़िना की तोहमत लगाए या जो लड़का पैदा हुआ उसको यह कहे कि मेरा लड़का नहीं है, नामालूम किस का है तो उसका हुक्म यह है कि औरत काज़ी और शरई हाकिम के पास जाए और फरियाद करे तो हाकिम दोनों से कसम ले। पहले वह शौहर से इस तरह कहलाए—मैं खुदा को गवाह कर के कहता हूँ कि जो तोहमत मैंने इसको (बीवी को) लगाई है उसमें मैं सच्चा हूँ। चार बार शौहर इस तरह कहे। फिर पांचवीं बार कहे—अगर मैं झूठा हूँ तो मुझ पर खुदा की लानत हो। जब मर्द पांचवीं बार कह चुके तो औरत चार बार इस तरह कहे—मैं खुदा को गवाह करके कहती हूँ कि शौहर ने जो तोहमत लगाई है उस तोहमत में यह झूठा है अगर पांचवीं बार कहे—अगर इस तोहमत को लगाने में यह सच्चा हो तो मुझ पर खुदा का गज़ब दूटे। जब दोनों कसम खा चुकें तो हाकिम दोनों में जुदाई करा दे। इस तरह एक तलाक़ बाइन पड़ जाएगी और यह लड़का बाप का न कहा जाएगा, बल्कि उसको माँ के हवाले कर दिया जाएगा। इसी कस्माकस्मी को शरअ में लिआन कहते हैं।

19. महर के बदले तलाक़ देना

मस'ला १— अगर मियां बीवी में किसी तरह का निबाह न हो सके और मर्द तलाक़ भी न देता हो तो औरत को जायज़ है कि कुछ माल देकर या अपना महर देकर अपने मर्द से कहे कि इतना रुपया लेकर मेरी जान छोड़ दे या यूँ कहे कि जो मेरा महर तेरे ज़िम्मे है उसके बदले में मेरी जान छोड़ दे। उसके जवाब में मर्द कहे—मैंने छोड़ दिया तो इससे औरत पर एक तलाक़ बाइन पड़ गई। रोके रखने का इख़्तियार मर्द को नहीं है अलबत्ता अगर मर्द ने उसी जगह बैठे-बैठे जवाब नहीं दिया बल्कि उठ खड़ा हुआ या मर्द तो नहीं उठा औरत उठ खड़ी हुई तब मर्द ने कहा—अच्छा मैंने छोड़ दिया तो इससे कुछ नहीं हुआ। सवाल-जवाब दोनों एक जगह होने चाहिए। इस तरह जान छुड़ाने को शरअ में खुलअ कहते हैं।

मस'ला २— मर्द ने औरत से कहा : मैंने तुझे तलाक़ दी। औरत ने कहा : मैंने कबूल किया तो तलाक़ हो गई। अलबत्ता अगर औरत ने कबूल नहीं किया तो कुछ नहीं हुआ लेकिन औरत अगर अपनी जगह बैठी रही और मर्द यह कहकर उठ खड़ा हुआ और औरत ने उसके उठने के बाद कबूल किया तब भी तलाक़ हो गई।

मस'ला ३— मर्द ने सिर्फ़ इतना कहा मैंने तुझे तलाक़ दी और औरत ने कबूल कर लिया। रुपये पैसे का ज़िक्र न मर्द ने किया न औरत ने। तब भी जो हक़ मर्द का औरत पर है सब माफ़ हो गया। अगर मर्द के ज़िम्मे महर बाकी है तो वह भी माफ़ हो गया लेकिन अगर पा चुकी है तो अब उसको फेरना वाजिब नहीं। अलबत्ता इद्त ख़त्म होने तक रोटी, कपड़ा और घर भी देना पड़ेगा। हाँ, अगर औरत ने कह दिया हो कि इद्त की रोटी, कपड़ा और रहने को घर भी शौहर से न लेगी तो वह भी माफ़ हो गया।

मस'ला ४— अगर तलाक देते वक़्त कुछ माल का भी ज़िक्र कर दिया जैसे यूँ कहा—सौ रुपये के बदले मैंने तुझे तलाक दी, फिर औरत ने कबूल कर लिया तो तलाक हो गई। अब औरत के ज़िम्मे सौ रुपये देने बाजिब हो गए। वह अगर अपना महर पा चुकी हो तब भी सौ रुपये देने पड़ेंगे। उसने अगर महर अभी न पाया हो तब भी देने पड़ेंगे और महर भी न मिलेगा क्योंकि वह तलाक की वजह से माफ हो गया।

मस'ला ५— तलाक में अगर मर्द का कुसूर हो तो मर्द का रुपया और माल जो महर मर्द के ज़िम्मे है उसके बदले में तलाक देना बड़ा गुनाह और हराम है अगर औरत का ही कुसूर हो तो जितना महर दिया है उससे ज़्यादा न लेना चाहिए। बस महर के ही एवज़ में तलाक दे। अगर महर से ज़्यादा ले लिया तो भी ख़ैर। बेजा तो हुआ लेकिन गुनाह नहीं।

मस'ला ६— औरत तलाक लेने पर राज़ी न थी मर्द ने उस पर ज़बर्दस्ती की और तलाक लेने पर मजबूर किया यानी मार-पीट कर धमका कर तलाक दी तो तलाक पड़ गई लेकिन माल औरत पर बाजिब नहीं। अगर मर्द के ज़िम्मे महर बाकी हो तो वह भी माफ नहीं हुआ।

मस'ला ७— मर्द ने कहा—मैंने सौ रुपये के एवज़ में तलाक दे दी तो औरत के कबूल करने पर मौकूफ है। अगर कबूल न करे तो न पड़ेगी। अगर वह कबूल कर ले तो एक तलाक बाइन पड़ गई लेकिन अगर जगह बदल जाने के बाद कबूल किया तो तलाक नहीं पड़ी।

मस'ला ८— औरत ने कहा कि तीन सौ रुपये के एवज़ में मुझ को तीन तलाक दे दे। इस पर मर्द ने एक ही तलाक दी तो सिर्फ एक सौ रुपया मर्द को मिलेगा। और अगर दो तलाकें दीं तो दो सौ रुपये, अगर तीन दे दीं तो पूरे तीन सौ रुपये तो औरत से दिला दिए जाएंगे और सब सूरतों में तलाक बाइन पड़ेगी क्योंकि यह माल का बदला है।

20. शौहर का लापता हो जाना

जिस औरत का शौहर लापता हो गया हो, मालूम नहीं कि जिन्दा है या मर गया तो औरत अपना दूसरा निकाह नहीं कर सकती बल्कि इन्तज़ार करती रहे कि शायद आ जाए। जब इन्तज़ार करते-करते इतनी मुद्दत गुज़र जाए कि शौहर की उम्र नव्वे बरस की हो जाए तो अब हुक्म लगा देंगे कि वह मर गया होगा। सो औरत अगर अभी जवान हो और निकाह करना चाहे तो शौहर की उम्र नव्वे बरस की होने के बाद इद्दत पूरी कर के निकाह कर सकती है मगर शर्त यह है कि उसके मरने का हुक्म किसी शरई हाकिम ने लगाया हो।

21. इद्दत

मस'ला १— जब किसी का मियां तलाक़ दे दे या तलाक़ व 'ईला' वगैरा या किसी और तरह निकाह टूट जाए या शौहर मर जाए तो इन सब सूरतों में थोड़ी मुद्दत तक एक घर में रहना पड़ता है। जब तक यह मुद्दत ख़त्म न हो जाए तब तक औरत कहीं भी नहीं जा सकती। न किसी और मर्द से अपना निकाह कर सकती है। जब वह मुद्दत पूरी हो जाए तो जो जी चाहे करे, इस मुद्दत के गुज़रने को 'इद्दत' कहते हैं।

मस'ला २— अगर मियां ने तलाक़ दे दी तो तीन हैज़ आने तक शौहर के ही घर में, जिसमें तलाक़ मिली वहीं बैठी रहे। उस घर से बाहर न निकले। न दिन को, न रात को, न किसी दूसरे से निकाह करे। जब पूरे तीन हैज़ ख़त्म हो जाएं तो इद्दत ख़त्म हो गई। अब जहां जी चाहे जाए। मर्द ने ख़्वाह एक तलाक़ दी हो या दो तीन तलाक़ें दी

हों और तलाक बाइन दी हो या तलाक रजई—सबका एक हुक्म है।

मस'ला ३— अगर छोटी लड़की को तलाक मिल गई जिसको अभी हैज नहीं आता या इतनी बुढ़िया है कि अब हैज आना बन्द हो गया है, उन दोनों की इद्त तीन महीने है। वह तीन महीने बैठी रहे। इसके बाद एख्तियार है जो जी चाहे करे।

मस'ला ४— किसी लड़की को तलाक मिल गई। उसने महीनों के हिसाब से इद्त शुरू की। इद्त के अन्दर ही एक या दो महीने के बाद हैज आ गया तो अब पूरे तीन हैज आने तक बैठी रहे। जब तक तीन हैज पूरे न हों इद्त खत्म न होगी।

मस'ला ५— अगर किसी को पेट है उसी ज़माने में तलाक मिल गई हो तो बच्चा पैदा होने तक बैठी रहे, यही उसकी इद्त है। जब बच्चा पैदा हो गया तब इद्त खत्म हो गई।

मस'ला ६— अगर किसी ने हैज के ज़माने में तलाक दे दी तो जिस हैज में तलाक दी है उस हैज का कुछ एतबार नहीं, उसको छोड़कर तीन हैज और पूरे करे।

मस'ला ७— तलाक की इद्त उस औरत पर है जिसको सोहबत के बाद तलाक मिली हो या सोहबत तो अभी नहीं हुई मगर मियां बीबी में तन्हाई व एकजाई हो चुकी है तब तलाक मिली हो।

मस'ला ८— इद्त के अन्दर खाना, कपड़ा उसी मर्द के जिम्मे वाजिब है जिस ने तलाक दी है।

मस'ला ९— किसी ने अपनी औरत को तलाक बाइन दी या तीन तलाकें दे दीं फिर इद्त के अन्दर धोखे में उससे सोहबत कर ली तो अब धोखे की सोहबत की वजह से एक इद्त और वाजिब हो गई। अब तीन हैज और करे। जब तीन हैज और गुजर जाएंगे तो दोनों इद्तें खत्म हो जाएंगी।

मस'ला १०— मर्द ने तलाक बाइन दे दी और जिस घर में इद्त के लिए बैठी है उसी में वह भी रहता है तो खूब अच्छी तरह पर्दा बांधकर आड़ कर ले।

22. मौत की इद्त

मस'ला १— किसी का शौहर मर गया तो वह चार महीने और दस दिन तक इद्त में बैठे। शौहर के मरते वक़्त वह जिस घर में रहा करती थी उसी घर में रहना चाहिए। बाहर निकलना दुरुस्त नहीं अलबत्ता अगर कोई गरीब औरत है जिसके पास गुज़ारे के लिए खर्च नहीं। उसने पकाने की नौकरी कर ली तो उसको बाहर जाना और निकलना दुरुस्त है लेकिन रात को अपने घर में ही रहा करे, चाहे सोहबत हो चुकी हो या नहीं हो चुकी हो और चाहे हैज़ आता हो या न आता हो—सबका एक हुक्म है। अलबत्ता अगर वह औरत पेट से थी इस हालत में शौहर मरा तो बच्चा होने तक इद्त में बैठे। अब महीनों का कुछ एतबार नहीं है। अगर भरने से दो-चार घड़ी बाद पैदा हो गया तब भी इद्त खत्म हो गई घर भर में जहां जी चाहे, वहां रहे।

मस'ला २— अगर किसी का शौहर चांद की पहली तारीख़ में मरा और औरत को हमल नहीं तो चांद के हिसाब से चार महीने दस दिन पूरे करे और पहली तारीख़ को नहीं मरा है तो हर महीना तीस-तीस दिन का लगातार चार महीने दस दिन पूरे करना चाहिए। तलाक की इद्त का भी यही हुक्म है कि अगर हैज़ नहीं आता, न पेट आता है और चांद की पहली तारीख़ को तलाक़ मिल गई तो चांद के हिसाब से तीन महीने पूरे कर ले। चाहे उन्तीस का चांद हो या तीस का। अगर उसे पहली तारीख़ को तलाक़ नहीं मिली है तो हर महीना तीस दिन का लगाकर तीन महीने पूरे करे।

मस'ला ३— किसी ने अपनी बीमारी में तलाक़ बाइन दे दी और तलाक़ की इदत अभी पूरी न होने पाई थी कि वह मर गया तो देखना चाहिए कि तलाक़ की इदत में बैठने में ज्यादा दिन लगेंगे या मौत की इदत पूरी करने में। जिस इदत में ज्यादा दिन लगेंगे वह इदत पूरी करे और अगर बीमारी में तलाक़ रजई दी है और अभी तलाक़ की इदत न गुजरी थी कि शौहर मर गया तो उस औरत पर वफात की इदत लाजिम है।

मस'ला ४— किसी का शौहर मर गया मगर उसकी खबर नहीं मिली। चार महीने दस दिन गुजर चुकने के बाद खबर आई तो उसकी इदत पूरी हो चुकी। जब से खबर मिली है तब से उसे इदत में बैठना जरूरी नहीं। इसी तरह अगर शौहर ने तलाक़ दे दी मगर उसे मालूम नहीं हुआ। बहुत दिन बाद खबर मिली और जितनी इदत उसके जिम्मे थी वह खबर मिलने से पहले ही गुजर चुकी तो उसकी भी इदत पूरी हो गई। अब इदत में बैठना वाजिब नहीं है।

मस'ला ५— औरत किसी काम के लिए घर से बाहर कहीं गई थी या अपनी पड़ोसन के घर गई थी कि इतने में उसका शौहर मर गया तो अब उसी वक़्त वहां से चली आए और जिस घर में रहती थी वहीं रहे।

मस'ला ६— कुछ जगह दस्तूर है कि शौहर के मरने के बाद साल भर तक इदत के तौर पर बैठी रहे, यह बिल्कुल हराम है।

23. सोग करना

औरत जब तक इदत में रहे तब तक न तो घर से बाहर निकले, न अपना दूसरा निकाह करे। न कुछ बनाव-सिंंगार करे—ये सब बातें उस पर हराम हैं। इस सिंंगार न करने और मैले-कुचैले रहने को सोग कहते हैं।

मस'ला १— जब तक इहत खत्म न हो तब तक खुरबू लगाना, कपड़े बसाना, जेवर पहनना, फूल पहनना, सुर्मा लगाना, पान खाकर मुंह लाल करना, मिस्सी मलना, सर में तेल डालना, कंधी करना, मेहंदी लगाना, अच्छे कपड़े पहनना, रेशमी और रंगे हुए भड़कदार कपड़े पहनना ये सब बातें हराम हैं।

मस'ला २— सर में दर्द होने की वजह से तेल डालने की जरूरत पड़े तो जिस तेल में खुरबू न हो वह तेल डालना दुरुस्त है। इसी तरह दवा के लिए सुर्मा लगाना भी जरूरत के वक़्त दुरुस्त है। लेकिन रात को लगाये और दिन को साफ़ कर डाले और सर मलना और नहाना भी दुरुस्त है। जरूरत के वक़्त कंधी करना भी दुरुस्त है जैसे किसी ने सर मला या जुएं पड़ गई। लेकिन न पट्टी जमाये न बारीक कंधी से कंधी करे जिससे बाल चिकने हो जाते हैं बल्कि मोटे बनवाने वाली कंधी करे ताकि खूबसूरती न आने पाए।

मस'ला ३— सोग करना ऐसी औरत पर वाजिब है जो बालिग हो। नाबालिग लड़की पर वाजिब नहीं। उसको ये सब बातें दुरुस्त हैं अलबत्ता घर से बाहर निकलना और दूसरा निकाह करना उसे भी दुरुस्त नहीं।

मस'ला ४— शौहर के अलावा किसी और के मरने पर सोग करना दुरुस्त नहीं अलबत्ता अगर शौहर मना न करे तो अपनी अजीज़ और रिश्तेदार के मरने पर भी तीन दिन तक बनाव-सिंगार छोड़ देना दुरुस्त है। इससे ज़्यादा करना बिल्कुल हराम है।

24. रोटी कपड़ा

मस'ला १— बीवी का रोटी कपड़ा मर्द के ज़िम्मे वाजिब है। औरत चाहे कितनी ही मालदार हो मगर खर्च मर्द के ही ज़िम्मे है।

मस'ला २— जितने ज़माने तक शौहर की इजाज़त से अपने मां-बाप के घर रहे वह उतने ज़माने का रोटी कपड़ा भी मर्द से ले सकती है।

मस'ला ३— औरत बीमार पड़े तो बीमारी के ज़माने का रोटी कपड़ा पाने की हकदार है चाहे मर्द के घर बीमार पड़े या अपने मैके में। लेकिन अगर बीमारी की हालत में मर्द ने बुलाया और वह नहीं आई तो अब उसके पाने की हकदार नहीं रही। बीमारी की हालत में रोटी कपड़े का खर्च मिलेगा। दवा, इलाज, हकीम, तबीब का खर्च मर्द के जिम्मे नहीं—अपने पास से खर्च करे। अगर मर्द दे दे तो उसका एहसान है।

मस'ला ४— औरत हज करने गई तो इतने ज़माने का रोटी कपड़ा मर्द के जिम्मे नहीं। अलबत्ता अगर मर्द भी साथ हो तो उस ज़माने का खर्च भी मिलेगा। लेकिन रोटी कपड़े का जितना खर्च घर में मिलता था उतना ही पाने की हकदार है। ज़्यादा जो कुछ लगे अपने पास से लगाए और रेल व जहाज का खर्च भी मर्द के जिम्मे नहीं है।

मस'ला ५— रोटी कपड़े में दोनों की रियायत की जाएगी। अगर दोनों मालदार हों तो अमीरों की तरह रोटी कपड़ा मिलेगा और दोनों गरीब हों तो गरीबों की तरह। अगर मर्द गरीब हो और औरत अमीर हो या औरत गरीब हो और मर्द अमीर तो ऐसा रोटी कपड़ा दे कि अमीरों से कम हो और गरीबों से बढ़ा हुआ हो।

मस'ला ६— अगर औरत बीमार है कि घर का काम-काज नहीं कर सकती बल्कि ऐब समझती है तो पका-पकाया खाना दिया जाएगा। और अगर दोनों बातों में से कोई बात न हो तो घर का सब काम-काज अपने हाथ से वाजिब है। यह सब काम वह खुद करे। मर्द के जिम्मे सिर्फ़ इतना है कि चूल्हा, घबकी, कच्चा अनाज, लकड़ी, खाने-पीने के बर्तन वगैरा ला दे। औरत अपने हाथ से पकाए और खाए।

24. रहने का घर

मस'ला १— मर्द के जिम्मे यह भी वाजिब है कि बीवी के रहने के लिए कोई ऐसी जगह दे जिसमें शौहर का कोई रिश्तेदार न रहता हो। यह बिल्कुल खाली हो ताकि मिया बीवी बिल्कुल बेतकल्लुफी से रह सकें। अलबत्ता अगर औरत खुद सब के साथ रहना गयारा करे तो साझे के घर में रहना दुरुस्त है।

मस'ला २— घर में से एक जगह मर्द को अलग दे दे ताकि वह अपना माल व असबाब हिफाजत से रखे और खुद उसमें रहे-सहे और उसका ताला कुंजी अपने पास रखे। किसी और को उसमें दखल न हो। बस औरत के ही कब्जे में रहे तो यह हक अदा हो गया।

मस'ला ३— जिस तरह औरत को इजाजत है कि अपने लिए कोई अलग घर मांगे जिसमें मर्द का कोई रिश्तेदार न रहने पाए सिर्फ औरत के कब्जे में रहे, इसी तरह मर्द को इजाजत है कि जिस घर में औरत रहती है वहां उसके रिश्तेदारों को न आने दे, न मां को न बाप को, न भाई को, न किसी रिश्तेदार को।

मस'ला ४— औरत अपने मां-बाप को देखने के लिए हफ्ते में एक बार जा सकती है और मां-बाप के सिया और महरम रिश्तेदारों से मिलने के लिए साल भर में एक बार जा सकती है इससे ज्यादा का इजाजत नहीं। इसी तरह उनके मां-बाप भी हफ्ते में एक बार यहाँ आ सकते हैं।

मस'ला ५— अगर बाप बहुत बीमार है और उसका कोई खबर लेने वाला नहीं तो जरूरत के मुताबिक वहां रोज जाया करे। अगर बाप बेदीन काफिर हो तो भी यह हुक्म है बल्कि अगर शौहर मना भी करे तब भी जाना चाहिए। लेकिन शौहर के मना करने पर जाने से रोटी कपड़े का हक न रहेगा।

मस'ला ६— जिस औरत को तलाक मिल गई वह भी इदत तक रोटी कपड़ा, रहने का घर पाने की हकदार है अलबत्ता जिसका शौहर मर गया उसका रोटी कपड़ा और घर मिलने का हक नहीं। उसको मीरास सब चीजों में मिलेगी।

26. हलाली लड़का

मस'ला १— जब किसी शौहर वाली औरत के औलाद होगी तो वह उसी शौहर की औलाद कहलाएगी। किसी पर यह शक करना कि वह लड़का उसके शौहर का नहीं है, बल्कि फलाने का है, दुरुस्त नहीं। उस लड़के को हरामी कहना भी दुरुस्त नहीं। अगर इस्लामी दुकूमत हो तो ऐसा कहने वाले को कोड़े लगाए जाएं।

मस'ला २— हमल की मुदत कम-से-कम छः महीने और ज्यादा-से-ज्यादा दो बरस है। छः महीने से पहले बच्चा पैदा नहीं होता और ज्यादा से ज्यादा दो बरस पेट में रह सकता है, उससे ज्यादा पेट में नहीं रह सकता।

मस'ला ३— शरीअत का कायदा है कि जब तक हो सके तब तक लड़के को हरामी न कहें। जब विल्कुल मजबूर हो जाए तो हरामी होने का हुक्म लगाएं और औरत को गुनाहगार ठहराएं।

मस'ला ४— किसी का शौहर मर गया तो मरने के वक़्त से अगर दो बरस के अन्दर लड़का पैदा हुआ तो तो वह हरामी नहीं बल्कि शौहर का लड़का है।

मस'ला ५— निकाह के बाद छः महीने से कम में लड़का पैदा हुआ तो वह हरामी है और पूरे छः महीने या इससे ज्यादा मुदत में हुआ तो वह शौहर का है। उस पर भी शक करना गुनाह है। अलबत्ता अगर

शौहर इन्कार करे और कहे कि मेरा नहीं है तो लिआन का हुक्म होगा।

मस'ला ६— निकाह हो गया लेकिन अभी रुख्सती नहीं हुई थी कि लड़का पैदा हो गया तो वह लड़का शौहर से ही है, हरामी नहीं है। और उसको हरामी कहना दुरुस्त नहीं। अगर शौहर का न हो तो इन्कार करे और इन्कार करने पर लिआन का हुक्म होगा।

27 . औलाद का पालना

मस'ला १— मियां-बीवी में जुदाई हो गई और तलाक मिल गई मगर गोद में बच्चा है तो उसके पालने का हुक्म माँ को है, बाप उसको नहीं छीन सकता। लेकिन लड़के का सारा खर्च बाप को ही देना पड़ेगा। अगर माँ खुद न पाले बल्कि बाप के हवाले कर दे तो बाप को लेना पड़ेगा और जबरदस्ती औरत को नहीं दे सकता।

मस'ला २— अगर माँ हो या न हो लेकिन मर्द ने बच्चे को लेने से इन्कार कर दिया तो पालने का हक ताई और नानी को है उसके बाद दादी को। यह भी न हो तो सगी बहनों को हक है कि वह अपने भाई की परवरिश करें। सगी बहनें न हों तो सौतेली बहनें। मगर जो बहनें ऐसी हों कि उनकी और उस बच्चे की माँ एक हो, वह पहले हैं और जो बहनें ऐसी हों कि उनका और बच्चे का बाप एक है, वे पीछे हैं। फिर खाला और फूफी है।

मस'ला ३— बच्चे के रिश्तेदारों में से अगर कोई औरत बच्चे की परवरिश के लिए न मिले तो अब बाप ज्यादा हकदार है, फिर दादा बगैरा—उसी तरीक़ा से जो निकाह के मौके पर यली के ब्यान में बताया जा चुका है।

मस'ला ४— लड़का जब तक सात बरस का न हो तब तक

परवरिश का हक माँ का रहता है जब सात बरस का हो गया तो बाप अब उसको जबरदस्ती ले सकता है। अब उसको रोकने का हक नहीं है।

28. कसम खाना

मस'ला १— किसी ने कसम खाई कि कभी तेरे घर न जाऊंगा। फिर उसके दरवाजे की दहलीज पर खड़ा हुआ या दरवाजे के छज्जे के नीचे खड़ा हो गया, अन्दर नहीं गया तो कसम नहीं टूटी और अगर दरवाजे के अन्दर चला गया तो कसम टूट गई।

मस'ला २— किसी ने कसम खाई कि उस घर में न जाऊंगा। फिर जब वह गिर कर खंडहर हो गया तब उसमें गया तो कसम टूट गई और बिल्कुल मैदान हो गया ज़मीन बराबर हो गई और घर का निशान बिल्कुल मिट गया या उसका खेत बन गया या मस्जिद बनाई गई या बाग बनाया गया तब उसमें गया तो कसम नहीं टूटी।

मस'ला ३— कसम खाई कि उस घर में न जाऊंगा फिर जब वह घर गिर गया और फिर से बनवा लिया गया तब उस में गया तो कसम टूट गई।

मस'ला ४— कसम खाई कि उस घर में न रहूंगा उसके बाद फौरन उस घर से सामान उठा ले जाने का बन्दोबस्त करना शुरू कर दिया तो कसम नहीं टूटी और अगर फौरन शुरू नहीं किया, कुछ देर ठहर गया तो कसम टूट गई।

मस'ला ५— कसम खाई कि यह दूध न पीयूंगा। फिर वही दूध जमा कर दही बना लिया तो उसके खाने से कसम न टूटेगी।

मस'ला ६— कसम खाई कि गोरत न खाऊंगा फिर मछली खाई

या कलेजी या ओझड़ी तो कसम नहीं दूटी।

मस'ला ७— कसम खाई कि रोटी न खाऊंगा तो उस देश में जिन चीजों की रोटी खाई जाती है कभी न खाना चाहिए, नहीं तो कसम टूट जाएगी।

मस'ला ८— किसी लड़की ने कसम खाई कि उस लड़की से कभी न बोलूंगी फिर वह जवान हो गई या बुढ़िया हो गई तब बोली तो कसम टूट गई।

मस'ला ९— किसी औरत ने कसम खाई कि कभी तेरा मुंह न देखूंगी, तेरी सूरत न देखूंगी तो मतलब यह है कि तुझ से मेल-जोल न रखूंगी। अगर कहीं दूर से सूरत देख ली तो कसम नहीं दूटी।

मस'ला १०— कसम खाई कि उस चारपाई या उस तख्त पर न बैठूंगा फिर उस पर दरी या कालीन बिछा कर बैठ गया तो कसम टूट गई।

29. दीन से फिर जाना

मस'ला १— अगर खुदा-न-खास्ता कोई औरत अपने दीन व ईमान से फिर गई तो तीन दिन की मोहलत दी जायेगी और जो उसको शक पड़ा हो तो उस शक का जवाब दे दिया जाएगा। अगर इतनी मुद्दत में मुसलमान हो गई तो खैर, नहीं तो हमेशा के लिए कैद कर देंगे। जब तौबा करेगी तब छोड़ेंगे। अगर मर्द काफिर हो जाता है तो तीन दिन के बाद कत्ल कर देंगे।

मस'ला २— जब किसी ने कुफ्र का कलिमा ज़बान से निकाला तो ईमान जाता रहा और जितनी नेकियां और इबादत उसने की थीं सब अकारथ गयीं, निकाह टूट गया। अगर फर्ज हज कर चुका तो वह

भी अकारथ गया अब अगर तौबा करके फिर मुसलमान हुआ तो अपना निकाह फिर से पढ़वाये और फिर दूसरा हज करे।

मस'ला ३— इसी तरह अगर किसी औरत का शौहर बेदीन हो जाए तो भी निकाह जाता रहा। अब जब तक वह तौबा करके फिर से निकाह न करे औरत उससे कोई वास्ता न रखे।

मस'ला ४— जब कुफ्र का कलिमा ज़बान से निकाला तो ईमान जाता रहा। हँसी दिल्लगी में कुफ्र की कोई बात कहे और दिल में न हो तब भी यह हुक्म है। जैसे: किसी ने कहा कि क्या खुदा को इतनी कुदरत नहीं जो फलों काम कर दे। इसका जवाब दिया—हाँ, नहीं है तो इसके कहने से काफिर हो गया।

मस'ला ५— किसी ने कहा—उठो नमाज़ पढ़ो। जवाब दिया—कौन उठक-बैठक करे। रोजे रखने को किसी ने कहा तो जवाब दिया—कौन भूखा मरे या वह रोज़ा रखे जिसके घर खाना न हो—यह सब कुफ्र है।

मस'ला ६— किसी को कोई गुनाह करते देखकर किसी ने कहा—खुदा से नहीं डरता। जवाब दिया—हाँ, नहीं डरता, तो काफिर हो गया।

मस'ला ७— किसी ने नमाज़ पढ़ना शुरू की। इतिफाक से उस पर कोई मुसीबत पड़ गई। उस ने कहा कि सब नमाज़ की वजह से है तो काफिर हो गया।

मस'ला ८— किसी का लड़का मर गया उस ने यूँ कहा या अल्लाह यह जुल्म मुझ पर क्यों किया? मुझे क्यों सताया? तो इस तरह कहने से काफिर हो गया।

मस'ला ९— किसी ने यूँ कहा—अगर खुदा भी मुझ से कहे तो यह काम न करूँ या यूँ कहा—जिब्राईल भी उतर आए तो उन का कहना न करूँ तो काफिर हो गया।

30. ज़िबह करना

मस'ला १— ज़िबह करने का तरीका यह है कि जानवर का मुंह क़िबले की तरफ़ करके तेज़ छुरी हाथ में लेकर 'बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर' कहकर उसके गले को काटे यहाँ तक कि चार रग कट जाएं—एक नरख़रा जिससे सांस लेता है। दूसरी वह रग जिससे दाना-पानी जाता है और दो वह रग जो नरख़रे के दायें-बायें होती हैं। अगर इन चारों में से तीन रगें कट गईं तब भी दुरुस्त है। उसका खाना हलाल है। और अगर जानवर मुर्दार है तो उसका खाना दुरुस्त नहीं।

मस'ला २— ज़िबह करते वक़्त जान कर बिस्मिल्लाह नहीं कहा तो वह मुर्दार है और उस का खाना हराम है। और अगर मूल जाए तो उस का खाना दुरुस्त है।

मस'ला ३— कुन्द छुरी से ज़िबह करना मकरूह और मना है। इसी तरह ठंडा होने से पहले उसकी खाल खींचना, हाथ-पांव तोड़ना और काटना भी मकरूह है।

मस'ला ४— ज़िबह करने में मुर्गी का गला कट गया तो उसका खाना दुरुस्त है। मकरूह भी नहीं, अलबत्ता इतना ज़िबह कर देना मकरूह है। मुर्गी मकरूह नहीं है।

मस'ला ५— मुसलमान का ज़िबह करना बहरहाल दुरुस्त है, चाहे औरत ज़िबह करे या मर्द। चाहे पाक हो या नापाक। मगर काफ़िर का ज़िबह किया हुआ जानकर खाना हराम है।

31. हलाल और हराम चीज़ें

मस'ला १— शिकार करके जो जानवर परिन्दे खाते हैं या उनकी गिज़ा सिर्फ़ गन्दगी है तो उनका खाना जायज़ नहीं है। जैसे: शेर, भेड़िया, गीदड़, बिल्ली, कुत्ता, बन्दर, शिकार, बाज़, गिद्ध

वगैरा। जो जानवर ऐसे न हों जैसे: मैना, फाखता, थिड़िया, बटेर, तोता, मुर्गाबी, नील गाय, हिरन, बत्ख, खरगोश वगैरा—वे सब जायज़ हैं।

मस'ला २— बिज्जु, गोह, कछुआ, मिड़, गधा व गधी का गोस्त खाना और गधी का दूध पीना दुरुस्त नहीं। घोड़ा खाना जायज़ है लेकिन बेहतर नहीं। दरिया के जानवरों में से बस मछली हलाल है। बाकी सब हराम है।

मस'ला ३— मछली और टिट्ठी को बगैर ज़िबह किए हुए खाना दुरुस्त है। इसके सिवा और कोई जानदार चीज़ ज़िबह किए बगैर खाना दुरुस्त नहीं। जब कोई चीज़ मर गई तो हराम हो गई।

मस'ला ४— जो मछली मर कर पानी के ऊपर उल्टी तैरने लगे उसका खाना दुरुस्त नहीं।

मस'ला ५— ओझड़ी खाना हलाल है। हराम और मकरूह नहीं है।

मस'ला ६— किसी चीज़ में चींटियाँ मर गई तो निकाले बगैर खाना जायज़ नहीं। अगर एक-आध चींटी मुंह में चली गई तो मुर्दार खाने का गुनाह हुआ। कुछ बच्चे बल्कि बड़े भी गूलर के अन्दर के मुंगों समेत गूलर खा जाते हैं और यूँ समझते हैं कि उनके खाने से आंख नहीं दुखती तो यह हराम है। इस तरह मुर्दार खाने का गुनाह होता है।

मस'ला ७— जो मुर्गी गन्दी पलीद चीज़ें खाती फिरती हो उसको तीन दिन रख कर ज़िबह करना चाहिए। बगैर बन्द किए हुए खाना मकरूह है।

32. नशे की चीज़ें

मस'ला १— शराब सब पर हराम और नजिस है। ताड़ी का भी यही हुक्म है। दवा के लिए भी इसका पीना दुरुस्त नहीं। बल्कि जिस

दवा में ऐसी चीज़ें पड़ी हों उसका लगाना भी ठीक नहीं।

मस'ला २— शराब के सिवा और जितने नशे हैं जैसे अफीम, जायफल, जाफरान वगैरह इनका यह हुकूम है कि दवा के लिए इतनी मिकदार खा लेना ठीक है कि बिल्कुल नशा न आए और उस दवा का लगाना ठीक है कि बिल्कुल नशा न आए। उस दवा का लगाना भी ठीक है जिसमें ये चीज़ें पड़ी हों मगर इतना खाना कि नशा हो जाए तो हराम है।

मस'ला ३— ताड़ी और शराब के सिरके का खाना ठीक है।

मस'ला ४— कुछ औरतें बच्चों को अफीम देकर लिटा देती हैं कि वे नशे में पड़े रहें, रोएं-धोएं नहीं, यह हराम है।

33. चांदी सोने के बर्तन

मस'ला १— मर्द और औरत को सोने-चांदी के बर्तनों में खाना-पीना जायज़ नहीं बल्कि इन चीज़ों का किसी तरह से इस्तेमाल करना ठीक नहीं। जैसे: सोने के चमचे से खाना-पीना, खिलाल से दांत साफ करना, गुलाब छिड़कना, सुर्मेदानी या सलाई से सुर्मा लगाना, इत्रदान से इत्र लगाना, खासदान में पान रखना, चांदी की प्याली से तेल लगाना, चांदी के पायों वाले पलंग पर लेटना-बैठना, चांदी सोने की आर्सी में मुंह देखना—ये सब हराम हैं। अलबत्ता औरत को आर्सी की जीनत के लिए पहने रहना ठीक है मगर मुंह बिल्कुल न देखे। मतलब यह है कि सोने चांदी की चीज़ों का इस्तेमाल करना किसी तरह ठीक नहीं है।

34. लिबास और पर्दा

मस'ला १— छोटे लड़कों को कड़े हंसली वगैरह कोई ज़ेवर और

रेशमी कपड़ा या मखमल पहनाना जायज़ नहीं। इसी तरह रेशम और सोने चांदी का तावीज़ बनाकर पहनाना और कुसुम व जाफ़रान का रंगा हुआ कपड़ा पहनाना भी ठीक नहीं। गर्ज जो चीज़ें मर्दों को हराम हैं वह लड़कों को भी नहीं पहननी चाहिए। अलबत्ता बाना अगर सूत का हो और ताना रेशमी तो ऐसा कपड़ा लड़कों को पहनाना जायज़ है। इसी तरह अगर किसी मखमल का रुआं रेशम का न हो तो वह भी ठीक है। और यह सब मर्दों को भी ठीक है। गोटा, लचका लगाकर कपड़े पहनना भी ठीक है लेकिन वह लचका चार अंगुल से ज़्यादा चौड़ा न होना चाहिए।

मस'ला २— सच्ची कामदार टोपी या कोई और कपड़ा लड़कों को ऐसे वक़्त जायज़ है जब उस पर घना काम न हो। अगर इतना ज़्यादा काम है कि ज़रा दूर से देखने से काम ही काम मालूम होता है कपड़ा बिल्कुल दिखाई नहीं देता तो उसका पहनाना जायज़ नहीं है। यही हाल रेशमी काम का है कि अगर इतना घना हो तो लड़कों को पहनाना जायज़ नहीं।

मस'ला ३— बहुत बारीक कपड़ा जैसे: मलमल, जाली, आबे रबा, वगैरा का पहनना और नंगे रहना दोनों बराबर हैं। हदीस शरीफ में आया है कि ऐसे कपड़े पहनने वाली औरतें क़ियामत के दिन नंगी समझी जाएंगी और कुर्ता और दुपट्टा दोनों बारीक हों तो और भी ग़ज़ब है।

मस'ला ४— औरत को मर्दाना जूता पहनना और मर्दाना सूरत बनाना जायज़ नहीं। हज़रत रसूल मकबूल सल्ल० ने ऐसी औरतों पर लानत फरमाई है।

मस'ला ५— औरतों को जेवर पहनना जायज़ है लेकिन ज़्यादा न पहनना बेहतर है। जिसने दुनिया में न पहना उसको आख़िरत में बहुत मिलेगा। बजता हुआ जेवर पहनना ठीक नहीं। ऐसा जेवर छोटी लड़की को भी पहनना जायज़ नहीं। सोने चांदी के अलावा और किसी

भी चीज़ का जेवर पहनना ठीक है। जैसे: पीतल, गिलट, रांग वगैरा। मगर अंगूठी सोने चांदी के अलावा और किसी भी चीज़ की ठीक नहीं।

मस'ला ६— औरत को सारा बदन सर से पैर तक छुपा रखने का हुक्म है। गैर महरम के सामने खोलना ठीक नहीं अलबत्ता बूढ़ी औरत को मुंह, हथेली और टखने से नीचे पैर खोलना ठीक है। बाकी और बदन का खोलना ठीक नहीं। माथे पर से दुपट्टा अवसर सरक जाता है और वे उसी तरह गैर महरम के सामने आ जाती हैं यह जायज़ नहीं। गैरमहरम के सामने एक बाल भी नहीं खोलना चाहिए बल्कि जो बाल कंधी में दूटते हैं वे और कटे हुए नाखून भी किसी ऐसी जगह डालें कि किसी गैरमहरम की निगाह न पड़े वरना गुनाहगार होगी। इसी तरह अपने बदन यानी हाथ पैर वगैरा किसी हिस्से को भी ना महरम मर्द के बदन से लगाना ठीक नहीं।

मस'ला ७— औरत का अपने शौहर से किसी जगह का पर्दा नहीं है और मर्द को उसके सामने और औरत को मर्द के सामने सारे बदन का खोलना ठीक है। मगर बिना ज़रूरत ऐसा करना अच्छा नहीं।

मस'ला ८— अपने पीर के सामने आना ऐसा ही है कि जैसे किसी गैरमहरम के सामने आना—इसलिए यह भी जायज़ नहीं। इसी तरह नामहरम रिश्ते जैसे: देवर, जेठ, बहनोई, नन्दोई, घयाज़ाद, मामू ज़ाद वगैरा शरअ में गैर हैं। इन सब से गहरा पर्दा होना चाहिए।

मस'ला ९— मनहार से चूड़ियां पहनना बड़ी बेहूदा बात है।

मस'ला १०— हर हफ्ते नहा-धोकर नाफ से नीचे और बगलों वगैरा के बाल दूर करके बदन को साफ करना मुस्तहब है और हफ्ते में न हो तो पन्द्रहवें दिन सही। ज्यादा से ज्यादा चालीस दिन। इससे ज्यादा की इजाज़त नहीं। अगर चालीस दिन गुज़र गए और बाल साफ नहीं किए तो गुनाह होगा।

मस'ला ११— किसी जानदार चीज़ को आग में जलाना ठीक

नहीं। जैसे: भिड़ों का फूंकना, खटमल वगैरा पकड़कर आग में डाल देना—यह सब नाजायज़ है। मिश्कात शरीफ में है—कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने इस बात से मना फरमाया है। अगर भजबूरी हो कि बिना फूँके काम न चले तो फिर भिड़ों का फूंक देना या चारपाई में खौलता हुआ पानी डाल देना ठीक है।

मस'ला १२— किसी बात की शर्त लगाना जायज़ नहीं अलबत्ता एक ही तरफ से हो तो ठीक है।

मस'ला १३— जब दो आदमी चुपके-चुपके बातें करते हों तो उनके पास नहीं जाना चाहिए। छुपकर उनकी बातें सुनना बड़ा गुनाह है। हदीस शरीफ में आया है कि जो कोई दूसरों की तरफ कान लगाए और उनको नागवार हो तो कियामत के दिन उस के कान में गर्म-गर्म सीसा डाला जाएगा।

मस'ला १४— शौहर के साथ जो बातें हुई हों जो कुछ मसला पेश आया हो, किसी और से उसका कहना बड़ा गुनाह है।

मस'ला १५— किसी के साथ हँसी-मज़ाक करना कि उसको नागवार हो या तकलीफ हो, ठीक नहीं।

मस'ला १६— पच्चीसी, चौसर, ताश खेल खेलना ठीक नहीं और अगर बाज़ी बढ़कर खेले तो पूरा जुआ है और हराम है।

मस'ला १७— जब लड़का लड़की दस बरस के हो जाएं तो लड़कों को मां, बहन के पास और लड़कियों को बाप के पास लिटाना ठीक नहीं अलबत्ता अगर लड़का बाप के पास और लड़की मां के पास लेटे तो जायज़ है।

मस'ला १८— जब किसी को छींक आए तो 'अलहम्दु लिल्लाह' कहना चाहिए। और जब अलहम्दु लिल्लाह कह लिया तो सुनने वाले पर इसके जवाब में :

“यरहमुकल्लाह”

(खुदा तुझ पर रहम करे)

कहना वाजिब है; न कहेगा तो गुनाहगार होगा। यह ख्याल रखना चाहिए कि अगर छींकने वाली औरत और लड़की हो तो उसे ‘यरहमुकल्लाह’ कहना चाहिए। फिर छींकने वाला इसके जवाब में :

‘यगफिरुल्लाहु लना व लकुम’

(खुदा हमारी और तुम्हारी मगफिरत करे)

कहे। लेकिन यह छींकने वाले के जिम्मे नहीं बल्कि बेहतर है।

मस‘ला १९— छींक के बाद ‘अलहम्दु लिल्लाहि’ कहते कई लोगों ने सुना तो सब को ‘यरहमुकल्लाह’ कहना वाजिब नहीं। अगर उनमें से एक कह दे तो सब की तरफ से अदा हो जाएगा लेकिन अगर किसी ने जवाब न दिया तो सब गुनाहगार होंगे।

मस‘ला २०— अगर कोई बार-बार छींके और ‘अलहम्दु लिल्लाह’ कहे तो सिर्फ तीन बार ‘यरहमुकल्लाह’ कहना वाजिब है। इसके बाद कहना वाजिब नहीं।

मस‘ला २१— जब हुजूर सल्ल० का नामे मुबारक ले, पढ़े या सुनें तो दरुद शरीफ पढ़ना वाजिब हो जाता है। अगर न पढ़ा तो गुनाह हुआ। लेकिन अगर एक जगह कई बार नाम लिया तो हर बार दरुद शरीफ पढ़ना वाजिब नहीं एक ही बार पढ़ लेना काफी है। अलबत्ता अगर जंगह बदल जाने के बाद फिर नाम सुना तो फिर दरुद शरीफ पढ़ना वाजिब हो गया।

मस‘ला २२— बच्चों की बाबरी दगैरा बनवाना दुरुस्त और जायज़ नहीं। या तो सारा सर मुंडवा दें या पूरे सर पर बाल रखें।

मस‘ला २३— औरतों को भी ‘अस्सलामु अलैकुम’ कहना और

हाथ मिलाना सदाब है। इसको रियाज देना चाहिए कि वे आपस में हाथ मिलाया करें। मर्द औरत सबके लिए इसका हुक्म है।

मस'ला २४— जहां आप मेहमान हों, किसी फकीर वगैरा को सेटी खाना न दें। मेज़बान से पूछे बगैर देना गुनाह है।

मस'ला २५— कहीं रास्ते, गली या बगल में कोई मेहमानदारी हुई या वाज कह दिया गया और सब के जाने के बाद कुछ मिला या और कहीं कोई चीज़ पड़ी हुई पाई तो उसको खुद ले लेना दुरुस्त नहीं, हराम है। अगर उठाएं तो इस नीयत से उठाएं कि उसके मालिक को तलाश करके दे देंगे।

मस'ला २६— अगर कोई चीज़ पाई और उसे न उठाया तो गुनाह नहीं। लेकिन अगर यह डर हो कि अगर उस को न उठाएंगे तो कोई और ले लेगा और जिस की वह चीज़ है उसे न मिलेगी तो उसका उठा लेना और मालिक को पहुंचाना वाजिब है।

मस'ला २७— जब किसी ने कोई पड़ी हुई चीज़ उठा ली तो अब मालिक का तलाश करना और तलाश करके उसे दे देना उसके ज़िम्मे हो गया। अगर उस चीज़ को वहीं डाल दिया या उठाकर अपने घर ले आया लेकिन मालिक को तलाश न किया तो गुनाहगार हुआ।

मस'ला २८— बहुत तलाश करने और मशहूर करने के बाद जब बिल्कुल मायूसी हो जाए कि अब उसका कोई बली-चारिस नहीं मिलेगा तो उस चीज़ को खैरात कर दे— अपने पास न रखें। अलबत्ता अगर यह खुद मोहताज हो तो खुद रख ले और अपने काम में ले आये।

मस'ला २९— पालतू कबूतर, तोता, मैना या कोई और चिड़िया उसके घर में आ गई और उसने उसे पकड़ लिया तो मालिक को तलाश करके पहुंचाना वाजिब हो गया। खुद ले लेना हराम है।

मस'ला ३०— बाग में अमरुद, आम वगैरा पड़े हों तो उनको

बिना इजाजत उठाना और खाना हराम है।

मस'ला ३१— किसी मकान या जंगल में कुछ खजाना यानी गड़ा हुआ माल निकल आया तो इसका भी वही हुक्म है, जो पड़ी हुई चीज का है। खुद ले लेना जायज़ नहीं। तलाश और कोशिश के बाद अगर पता न लगे तो उसको खैरात कर दे और गरीब हो तो खुद ले सकता है।

35. खुदा के लिए देना

मस'ला १— अपनी कोई जायदाद जैसे मकान, बाग, गांव, वगैरा को खुदा की राह में फकीरों और गरीबों मिस्कीनों के लिए बिक्रफ कर दिया कि उस गाँव की सब आमदनी फकीरों और मुहताजों पर सर्फ कर दी जाए या बाग के सब फल-फूल गरीबों को दे दिए जाएं। उस मकान में मिस्कीन लोग रहा करें, किसी और के काम न आए तो इसका बड़ा सवाब है। मरने से सब नेक काम खत्म हो जाते हैं लेकिन यह ऐसा नेक काम है कि जब तक वह जायदाद रहेगी कियामत तक इसका बराबर सवाब मिलता रहेगा। जब तक फकीरों को नफा मिलता रहेगा उसके आमालनामे में सवाब लिखा जाएगा।

मस'ला २— जिस चीज को बिक्रफ किया अब यह चीज उसकी नहीं रही, अल्लाह की हो गई। अब उसको बेचना या किसी को देना दुरुस्त नहीं। अब उसमें कोई भी शरख़्स दखल नहीं दे सकता। वह जिस बात के लिए बिक्रफ है उससे वही काम लिया जाएगा, और कुछ नहीं हो सकता।

मस'ला ३— मस्जिद की कोई चीज जैसे ईंट, गारा, चूना, लकड़ी, पत्थर वगैरा कोई चीज अपने काम में लाना दुरुस्त नहीं चाहे

कितनी ही निकम्मी हो गई हो। घर के काम में नहीं लानी चाहिए, बल्कि उसे बेचकर मस्जिद के खर्च में लगा देना चाहिए।

मस'ला ४— वक्फ में यह शर्त ठहरा लेना भी दुरुस्त है कि जब तक मैं जिन्दा हूँ, उस वक्फ की आमदनी चाहे पूरी की पूरी या आधी, तिहाई अपने खर्च में लाई जाएगी। फिर मेरे मरने के बाद फलां नेक जगह खर्च हुआ करे या पहले मेरी औलाद को इतना दिया जाया करे फिर जो बचे वह उस नेक जगह में खर्च हो जाए यह भी दुरुस्त है।

36. बदन के बाल

मस'ला १— पूरे सर पर बाल रखना, कानों की लौ तक या उससे कुछ नीचे सुन्नत है और कतरवाना भी दुरुस्त है। मगर सब कतरवाना और आगे की तरफ कुछ हद तक बड़े रखना जो आजकल का फैशन है, जायज नहीं और इसी तरह कुछ हिस्सा मुंडवाना, कुछ रहने देना दुरुस्त नहीं।

मस'ला २— औरत को सर मुंडवाना और बाल कतरवाना हराम है। हदीस शरीफ में इसके लिए लानत आई है।

मस'ला ३— लबों का इतना कतरवाना कि होठों के बराबर हो जाए सुन्नत है और न मुंडवाने में एहतियात है।

मस'ला ४— मूँछ दोनों तरफ दराज रहने देना सुन्नत है बशते कि लबें बड़ी न हों।

मस'ला ५— दाढ़ी मुंडवाना और कतरवाना हराम है अलबत्ता एक मुट्ठी से जो ज्यादा हो उसे कतरवा देना दुरुस्त है और चारों तरफ से सुझौल और बराबर करा लेना भी दुरुस्त है।

मस'ला ६— रुख़सार की तरफ़ जो बाल बढ़ जाएं उनका ख़त बनवाना दुरुस्त है।

मस'ला ७— गले के बाल मुंडवाने न चाहिए, मगर इमाम अबू यूसुफ़ की नज़र में इनमें कुछ ख़राबी नहीं है।

मस'ला ८— लबों के नीचे के बाल मुंडवाने को कुछ लोगों ने बिदअत कहा है इसलिए ऐसा नहीं करना चाहिए। गुदी के बाल बनवाना भी मकरूह है।

मस'ला ९— जीनत के लिए सफ़ेद बाल का चुनना मना है।

मस'ला १०— नाक के बाल उखाड़ना नहीं चाहिए, बल्कि कैंची से कतर डालने चाहिए।

मस'ला ११— सीने और कमर के बाल बनाना जायज़ है मगर वह आदाब के खिलाफ़ है।

मस'ला १२— नाफ़ के नीचे के बाल मर्द के लिए उस्तरे से दूर करना बेहतर है। मूंडते वक़्त शुरुआत नाफ़ के नीचे से करे। दवा लगाकर साफ़ करना भी जायज़ है। औरत के लिए सुन्नत यह है कि चुटकी या चिमटी से दूर करे, उस्तरा न लगे।

मस'ला १३— बग़ल के बाल नोचने से दूर किए जाएं मगर उस्तरे से मुंडवाना भी जायज़ है।

मस'ला १४— पैर के नाखून दूर करना सुन्नत है।

मस'ला १५— हाथ के नाखून इस तरतीब से कतरवाना बेहतर है कि दायें हाथ की शहादत की उंगली से शुरू करें और छंगुलिया तक कटवाए। फिर बायें हाथ की छंगुलिया से शुरू करें और दायें हाथ के अंगूठे पर ख़त्म करे। पैर की उंगलियों में दायीं छंगुली से शुरू करें और बायीं छंगुली पर ख़त्म करें। इसके खिलाफ़ भी दुरुस्त है।

मस'ला १६— कटे हुए नाखून और बाल दफन कर देना चाहिए, या किसी महफूज जगह डाल दें मगर नजिस और गन्दी जगह न डालें।

मस'ला १७— नाखून का दांत से काटना मकरूह है। इससे कोढ़ की बीमारी हो जाती है।

मस'ला १८— जनावत की हालत में बाल बनाना, नाखून या नाफ से नीचे के बाल दूर करना मकरूह है।

मस'ला १९— बाल, लब और नाखून कतरवाने के लिए जुमे का दिन सब से अफ़ज़ल है।

8. लेन-देन

1. बेचना और मोल लेना

जब एक आदमी ने कहा कि मैंने यह चीज़ इतने दामों पर बेच दी है और दूसरे ने कहा—मैंने ली तो वह चीज़ बिक गई। जिसने मोल ली वही उसका मालिक हो गया।

मस'ला १— बेचने और मोल लेने के लिए हुक्म उस वक़्त है कि दोनों तरफ से यह बातचीत एक ही जगह बैठे-बैठे हुई हो और अगर दरमियान में जगह बदल गई तो खरीद व बिक्री सही न होगी।

मस'ला २— किसी ने कहा यह चीज़ आठ आने में दे दो। उसने कहा मैंने दे दी। इससे खरीद व फरोख्त नहीं हुई अलबत्ता उसके बाद अगर खरीदने वाले ने फिर कह दिया कि मैंने ले ली तो बिक गई।

मस'ला ३— किसी ने बिना पूछगुछ किए चार अमरुद टोकरी से निकाले और मालिक के हाथ पर पैसे रख दिए। उसने खुशी से दाम लिए तो खरीद व बिक्री हो गई। चाहे किसी ने ज़बान से कुछ न कहा हो।

मस'ला ४— किसी ने कहा कि यह चीज़ में इतने दामों में ले रहा हूँ। माल वाले ने कहा—ले लो तो खरीद बिक्री हो गई।

मस'ला ५— किसी ने कहा कि कुछ चीज़ें पच्चीस पैसे में बेचो तो खरीदार को हफ़ नहीं कि बिना उसकी इजाज़त के उनमें से कुछ चीज़ें ले ले और कुछ छोड़ दे। हाँ अगर हर चीज़ की कीमत अलग-अलग बता दे तो जो चीज़ चाहे खरीद सकता है।

मस'ला ६— बेचने और मोल लेने में यह भी जरूरी है कि जो सौदा खरीदे हर तरह से मामला साफ़ कर ले। कोई बात ऐसी गोल-मोल न रखे जिससे झगड़ा हो और कीमत भी साफ़ तय हो जानी चाहिए। अगर दोनों में एक बात भी अच्छी तरह मालूम और तय न होगी तो खरीद और बिक्री ठीक न होगी।

मस'ला ७— किसी ने एक रुपये की कोई चीज़ खरीदी। खरीदार कहता है कि पहले चीज़ दो तब रुपया मिलेगा और मालिक कहता है कि तुम पहले रुपया दो तब चीज़ दूंगा तो पहले दाम दिलवाए जाएंगे तब वह चीज़ उसको दिलवाएंगे।

2. कीमत का मालूम करना

मस'ला १— किसी ने मुट्ठी बन्द करके कहा कि जितने दाम मेरे हाथ में हैं उतने की फ़लानी चीज़ दे दी और मालूम नहीं कि हाथ में क्या है तो ऐसी खरीद व बिक्री दुरुस्त नहीं।

मस'ला २— किसी शहर में दो किस्म के रुपए चलते हैं तो यह भी बता दे कि फ़लां रुपए के बदले में यह चीज़ लेता हूँ अगर यह न

बतलाया तो जिस रुपए का ज्यादा रिवाज है वही देना पड़ेगा। अगर दोनों का रिवाज बराबर है तो खरीद बिक्री फासिद होगी।

मस'ला ३— किसी ने कहा कि आप यह चीज़ ले लें जो दाम होंगे आप से वाजिबी ले लिए जाएंगे। भला आप से ज्यादा लूंगा या यह कहा कि मैं कीमत फिर बता दूंगा या इस तरह कहा कि जो आप चाहें दे देना, मैं इन्कार न करूंगा। तो इन सब सूरतों में लेन-देन फासिद है।

मस'ला ४— किसी दुकानदार से लेन-देन चलता है। जिस चीज़ की ज़रूरत पड़ती है उसी की दुकान से आ जाती है। कीमत मालूम नहीं की जाती और महीने पर हिसाब कर दिया जाता है यह भी दुरुस्त है।

मस'ला ५— किसी ने एक रुपए का कुछ खरीदा तो ^{दीखाने के} है कि रुपया दे या अठन्नियां या चवन्नियां। हाँ! अगर एक रुपए के पैसे दे तो बेचने वाले को एख्तियार है कि चाहे पैसे ले या न ले।

3. मोल भाव करना

मस'ला १— अनाज, गल्ला वगैरा सब चीज़ों में एख्तियार है चाहे तौल के हिसाब से ले या यूँ मोल कर के ले। जैसे: गेहूँ की एक ढेरी एक रुपए में खरीदी। ढेरी में चाहे जितने गेहूँ निकलें सब उसी के हैं।

मस'ला २— उपले, आम, अमरुद, नारंगी वगैरा में भी एख्तियार है गिनती के हिसाब से ले या वैसे ढेर का मोल कर ले।

मस'ला ३— अगर आम का एक टोकरा एक रुपए में इस शर्त पर खरीदा कि उसमें चार सौ आम हैं। फिर जब गिने गए तो तीन सौ

ही निकले तो खरीदार को एख्तियार है कि ले या न ले, अगर लेना है, तो एक रुपया पूरा न देना पड़ेगा बल्कि पच्चीस पैसे सैकड़ा के हिसाब से दाम देने होंगे।

मस'ला ४— अगर कोई दुपट्टा या कोई और ऐसा कपड़ा खरीदा कि उसमें से कुछ फाड़ डालें तो बेकार और खराब हो जाएगा और खरीदते वक़्त यह शर्त की थी कि दाईं मीटर का है। मगर जब वह नापा तो कम निकला तो दाम कम न होंगे, पूरे देने पड़ेंगे। हां खरीदार को एख्तियार है, चाहे ले या न ले। अगर कपड़ा कुछ ज्यादा निकला तो उसी का है। उसके बदले में ज्यादा दाम न देने पड़ेंगे।

मस'ला ५— अगर रात को दो रेशमी कमरबन्द एक रुपए के लिए, मगर जब सुबह को देखा तो मालूम हुआ कि उनमें एक सूती है तो दोनों का लेन-देन ठीक नहीं हुआ। दोबारा फिर से बातचीत करके लेन-देन हो।

4. उधार लेना

मस'ला १— अगर किसी ने कोई सौदा खरीदा और कहा कि दाम फिर दूंगा तो ठीक। और अगर यूँ कहा कि मैं इस शर्त पर खरीदता हूँ कि दाम फिर दूंगा तो लेन-देन फासिद हो गया।

मस'ला २— किसी ने खरीदते वक़्त यूँ कहा कि फलां चीज़ हमको दे दो, जब खर्च आएगा तब दाम ले लेना। या यूँ कहा कि जब मेरा भाई आएगा तब दे दूंगा तो यह लेन-देन खराब हो गया। कुछ-न-कुछ वक़्त तय कर लेना चाहिए।

मस'ला ३— नवद रुपयों पर पन्द्रह रुपये के बीस किलोग्राम गेहूँ बिकते हैं मगर किसी को उधार लेने की वजह से पन्द्रह किलो गेहूँ दिए

तो यह लेन-देन ठीक है मगर उसी वक़्त मालूम हो जाना चाहिए कि उधार लेगा।

मस'ला ४— अगर दुकानदार ने खरीदार से यूँ कहा कि अगर नक़द लोगे तो पन्द्रह रुपए के बीस किलो गेहूँ होंगे और उधार लोगे तो पन्द्रह किलो होंगे तो यह जायज़ नहीं।

5. फेर देने की शर्त

मस'ला १— खरीदते वक़्त कि एक दिन या दो-तीन दिन हमको लेने न लेने का एख़्तियार है। जी चाहेगा तो लेंगे, नहीं तो फेर देंगे। तो यह दुरुस्त है।

मस'ला २— किसी ने कहा कि तीन दिन तक मुझको लेने न लेने का एख़्तियार है फिर तीन दिन गुजर गए और उसने कुछ ज़वाब नहीं दिया न वह चीज़ फेरी तो अब उसे फेरने का एख़्तियार नहीं रहा। वो चीज़ लेनी पड़ेगी।

मस'ला ३— तीन दिन से ज़्यादा की वापसी की शर्त करना ठीक नहीं है।

6. बिना देखे चीज़ लेना

मस'ला १— किसी ने कोई चीज़ बिना देखे खरीद ली तो यह लेन-देन ठीक है लेकिन जब देखे तो उसको एख़्तियार है—पसन्द हो तो रखे वरना फेर दे चाहे उसमें कुछ भी ख़राबी न हो।

मस'ला २— किसी ने बिना देखे चीज़ बेच डाली तो उस बेचने वाले को देखने के बाद लेने का एख्तियार नहीं है।

मस'ला ३— अगर कोई चीज़ खाने-पीने की खरीदी हो तो उसमें सिर्फ़ देख लेने से एख्तियार न जाएगा बल्कि घस लेना चाहिए।

7. चीज़ ख़राब निकलना

मस'ला १— जब कोई चीज़ बेचे तो वाजिब है कि जो कुछ उसमें बुराई व ख़राबी हो सब बता दे। न बताना और धोखा देकर बेच डालना हराम है।

मस'ला २— जब ख़रीद चुका तो देखा उस चीज़ में कोई ऐब है तो अब उसे ख़रीदने वाले को एख्तियार है चाहे रख ले या फेर दे। लेकिन अगर रख ले तो पूरे दाम देने पड़ेंगे। उस ख़राबी के बदले में कुछ दाम काट लेना ठीक नहीं। हां अगर बेचने वाला राज़ी हो जाए तो कम करके दाम देना ठीक है।

मस'ला ३— अगर कपड़ा ख़रीदने के बाद काट लिया तब ऐब मालूम हुआ तो अब फेर नहीं सकता। अतबत्ता दाम कम कर दिए जाएंगे लेकिन अगर बेचने वाला कहे कि उसे कटा हुआ कपड़ा दे दिया जाए वह दाम कम नहीं करता और पैसा लौटा देता है तो ख़रीदार मना नहीं कर सकता। अगर कपड़ा काट कर सी भी लिया था और फिर ख़राबी मालूम हुई तो अब उस ख़राबी के बदले दाम कम दिए जाएंगे। बेचने वाला इस सूरत में अपना कपड़ा नहीं ले सकता।

मस'ला ४— किसी ने अंडे खरीदे। जब उन्हें तोड़ा तो सब गन्दे निकले तो सब दाम फेर सकता है और अगर कुछ गन्दे निकले, कुछ अच्छे तो सिर्फ़ गन्दे अंडों के दाम फेर सकता है।

मस'ला ५- अगर खरीदने के बाद ऐब मालूम हुआ लेकिन फिर उससे काम लेने लगे और इस्तेमाल करने लगे तो फेरने का एख्तियार नहीं रहता।

मस'ला ६- बेचते वक़्त, उसने कह दिया कि खूब देख-भाल लो। अगर चीज़ में कुछ ऐब निकले या खराब हो तो चीज़ वाला जिम्मेदार नहीं। इस कहने पर जिसने लिया तो अब चीज़ में चाहे जितने ऐब निकलें खरीदार को फेरने का एख्तियार नहीं है इस तरह बेचना भी दुरुस्त है।

8. ग़लत लेन-देन

मस'ला १- जो लेन-देन शरअ में बिल्कुल ग़लत हो और यह समझे कि खरीदा और बेचा ही नहीं उसे झूठ लेन-देन कहते हैं। इसका हुक्म यह कि खरीदने वाला उसका मालिक नहीं हुआ। इसलिए खरीदने वाले को न तो खुद इस्तेमाल करना जायज़ है न किसी को देना जायज़ है और जो लेन-देन तय हो गया मगर उसमें कुछ खराबी आ गई है तो उसको खराब लेन-देन कहते हैं। इसका हुक्म यह है कि जब तक चीज़ खरीदने वाले के कब्ज़े में न जाए तब तक वह उसकी मिल्कियत में नहीं है। और जब कब्ज़ा कर लिया तो मिल्कियत तो हो गई लेकिन वह हलाल नहीं है इसलिए उसको अपने इस्तेमाल में लाना ठीक नहीं बल्कि ऐसे लेन-देन को तोड़ देना वाजिब है और अगर लेन-देन नहीं तोड़ा बल्कि किसी और के हाथ सब चीज़ बेच डाली तो गुनाह हुआ लेकिन उस दूसरे खरीदने वाले के लिए उसका खाना-पीना और इस्तेमाल करना जायज़ है।

मस'ला २- ज़मींदार लोग जो दस्तूर के मुताबिक अपने तालाब की मछलियां बेच देते हैं, तो झूठा लेन-देन है। जब तक शिकार करके

मछलियाँ न पकड़ी जाएं तब तक उनका कोई मालिक नहीं है और जो कोई पकड़े वही उनका मालिक बन जाता है।

मस'ला ३— किसी की जमीन में खुद-ब-खुद घास आ गई तो वह घास भी किसी की मिल्कियत नहीं—जिसका जी चाहे काट ले जाए। न इसका बेचना ठीक है और न काटने से मना करना ठीक है। अलबत्ता अगर बोया हो या पानी देकर सींचा हो तो उसकी मिल्कियत हो जाएगी। अब बेचना भी जायज़ है और लोगों को मना करना भी ठीक है।

मस'ला ४— जानवर के पेट में जो बच्चा है, पैदा होने से पहले उस बच्चे का बेचना ग़लत है और अगर पूरा जानवर बेच दिया तो दुरुस्त है। लेकिन अगर कह दिया कि बच्चा जब पैदा हो तो वह मेरा है तो यह सौदा ख़राब है।

मस'ला ५— जानवर के थन में जो दूध भरा हुआ है। दूहने से पहले उसे बेचना ग़लत है इसी तरह भैंस, दुग्धा वगैरा के बाल जब तक काट न लें तब तक बालों को बेचना नाजायज़ है।

मस'ला ६— किसी ने इस शर्त पर मकान बेचा एक महीने तक वह खुद उसमें रहेगा या शर्त ठहरा दी कि इतने महीने तक उसे कर्ज़ दे दिया जाए या यह शर्त की कि वह चीज़ उसके घर तक पहुंचा दी जाए तो ये सब ख़राब सौदे हैं।

मस'ला ७— अगर कुछ अनाज, घी, तेल वगैरा भाव तय करके ख़रीदा तो देखिए कि उस लेन-देन के बाद उसने आपके सामने चीज़ की तौल की है या सामने नहीं तौला बल्कि आपसे यह कह दिया कि आप घर जाएं वह चीज़ तौल कर उसके घर भेज देगा। या पहले से तौला तो तीन सूरतें हुईं। पहली सूरत का यह हुक्म है कि जब तक खुद न तौल ले तब तक उसका खाना वगैरा कुछ ठीक नहीं। अगर बिना तौले बेच दिया तो लेन-देन फ़ासिद हो गया।

मस'ला ८— बेचने से पहले उसने आपको तौल कर दिखाया उसके बाद आपने खरीद लिया फिर उसने दोबारा नहीं तौला तो इस सूरत में भी खरीदने वाले को फिर तौलना जरूरी है।

मस'ला ९— कोई मुर्गी, बकरी या गाय वगैरा मरे तो उसकी बिक्री व खरीद झूठी है बल्कि उस मरे हुए जानवर को मंगी या घमार को खाने के लिए देना भी जायज़ नहीं। वैसे ही फेंक देने के लिए उठवा देना चाहिए।

मस'ला १०— जिसके घर में शहद का छत्ता लगा हो वही उसका मालिक है। किसी दूसरे को उसका तोड़ना और लेना ठीक नहीं।

९. नफ़ा लेना या दाम के दाम बेच देना

मस'ला १— एक चीज़ हमने एक रुपये में खरीदी थी तो अब अपनी चीज़ का हम को एख्तियार है चाहे एक ही रुपये में बेच डालें और चाहे दस बीस रुपये में बेचें, इसमें कुछ गुनाह नहीं है। लेकिन अगर मामला इस तरह हुआ कि उसने कहा—छः पैसे रुपया मुनाफ़ा लेकर हमारे हाथ बेच डालो। इस पर आपने कहा—अच्छा हमने रुपये पर छः पैसे नफ़ा लेकर बेचा। अब छः पैसे रुपये से ज़्यादा नफ़ा लेना जायज़ नहीं। इसी तरह अगर आपने यह कहा कि यह चीज़ हम आपको खरीद के दाम पर देंगे कुछ नफ़ा न लेंगे तो अब कुछ नफ़ा लेना ठीक नहीं।

मस'ला २— किसी सौदे को यूँ मोल किया कि छः पैसे रुपये के नफ़े पर बेच डालो। उसने कहा—अच्छा आप वही दे दें। लेकिन अभी

उसने नहीं बताया कि चीज कितने की खरीदी है तो देखिए अगर उसी जगह उठने से पहले यह अपनी खरीद के दाम बता दे तो वह लेन-देन ठीक है और अगर उसी जगह न बताए बल्कि यह कहे कि आप ले जाएं हिसाब देखकर बता दिया जाएगा या कुछ कहे तो यह झूठा सौदा है।

मस'ला ३— लेने के बाद मालूम हुआ कि चीज बेचने वाले ने चालाकी की है और अपनी खरीद ग़लत बताई है और नफ़ा वादे से ज्यादा लिया है तो खरीदने वाले को दाम देने का एख़्तियार नहीं है अलबत्ता यह एख़्तियार है कि अगर लेना मंज़ूर न हो तो वापस कर दे।

मस'ला ४— कोई चीज आपने उधार खरीदी तो अब जब तक दूसरे खरीदने वाले को यह न बतौ दें कि भाई हमने यह चीज उधार ली है। बिना ख़बर किए हुए उस को नफ़े पर बेचना या खरीद के दाम पर बेचना नाजायज़ है।

मस'ला ५— एक कपड़ा एक रुपये का खरीदा, फिर पच्चीस पैसे देकर रंगवाया, धुलवाया या सिलवाया तो यह समझा जाएगा कि एक रुपया पच्चीस पैसे का मोल लिया। इसलिए अब एक रुपये पच्चीस पैसे उसकी कीमत बताकर नफ़ा लेना ठीक है। मगर यह न कहें कि एक रुपया पच्चीस पैसे का मैंने लिया है बल्कि यूँ कहें कि एक रुपया पच्चीस पैसे में यह मुझ को पड़ी है ताकि झूठ न होने पाए।

10. सूद वाला लेन-देन

सूदी लेन-देन बड़ा गुनाह है। कुरआन मजीद और हदीस शरीफ में इसकी बड़ी बुराई आयी है और इससे बचने की बड़ी ज़बरदस्त ताकीद की गई है। हज़रत रसूलुल्लाह सल्ल० ने सूद लेने-देने वाले

और बीच में पड़कर सूद दिलाने वाले, सूदी दस्तावेज़ लिखने वाले गवाह, शाहिद, सब पर लानत फरमाई है कि सब ही गुनाह में बराबर हैं।

हिन्दुस्तान में चार तरह की चीज़ें पाई जाती हैं। एक तो खुद सोना, चांदी या इनकी बनी हुई चीज़। दूसरे इसके सिया वे चीज़ें जो तौल कर बिकती हैं। जैसे: अनाज, गल्ला, लोहा, तांबा, रुई, तरकारी वगैरा, तीसरे वे चीज़ें जो नापकर बिकती हैं। जैसे: कपड़ा। चौथे वे जो गिनती के हिसाब से बिकती हैं जैसे अंडे, आम, अमरूद, नारंगी, बकरी, गाय, घोड़ा वगैरा। इन सब चीज़ों का हुक्म अलग-अलग है।

मस'ला १— चांदी सोना खरीदने की कई सूरतें हैं—एक तो यह कि चांदी को चांदी से और सोने को सोने से खरीदा जैसे एक रुपये की चांदी खरीदनी है या अशरफी से सोना खरीदा। गर्ज कि दोनों तरफ एक ही तरह की चीज़ है। तो ऐसे वक़्त दो बातें वाजिब हैं एक तो यह कि दोनों तरफ की चांदी या दोनों तरफ का सोना बराबर हो। दूसरे यह कि जुदा होने से पहले ही पहले दोनों तरफ से लेन-देन हो जाए, कुछ उधार बाकी न रहे। अगर दोनों बातों में से किसी बात के खिलाफ हुआ तो सूद हो गया जैसे एक रुपये की चांदी आपने ली तो वज़न में एक रुपये के बराबर लेना चाहिए, अगर रुपये भर से कम या ज्यादा ली तो यह सूद हो गया। इसी तरह अगर आपने रुपया तो दे दिया लेकिन उसने अभी चांदी नहीं दी। थोड़ी देर में आप से अलग होकर देने का वादा किया। इसी तरह आपने भी रुपया नहीं दिया। चांदी उधारले ली तो यह भी सूद है।

मस'ला २— दूसरी सूरत यह है कि दोनों तरफ एक तरह की चीज़ नहीं बल्कि एक तरफ चांदी और दूसरी तरफ सोना है तो इसका हुक्म यह है कि वज़न के बराबर होना ज़रूरी नहीं है। एक रुपये का चाहे जितना सोना मिला जायज है। लेकिन जुदा होने से पहले ही लेन-देन हो जाना और कुछ उधार न रहना यहां भी वाजिब है।

मस'ला ३— सबसे आसान बात यह है कि दोनों आदमी जितने चाहे रुपये रखें और जितनी चाहे चांदी रखें मगर दोनों आदमी एक-एक पैसा भी शामिल करें और यह कह दें कि हम उस चांदी और उस पैसे को इस रुपये और इस पैसे के बदले लेते हैं, सारे बखेड़े खत्म हो जाएंगे।

मस'ला ४— अनाज, गोश्त, लोहा, तांबा, तरकारी, नमक वगैरा चीजों में से अगर एक चीज को उसी तरह की चीज से बेचना और बदलना चाहे जैसे गेहूँ देकर दूसरे गेहूँ लिए या आटे के बदले आटा। मतलब यह कि दोनों तरफ एक ही तरह की चीज हो तो इसमें भी इन दो बातों का ख्याल रखना वाजिब है—एक तो यह कि दोनों तरफ बिल्कुल बराबर हो। थोड़ी भी किसी तरफ कमी बेशी न हो वरना सूद हो जाएगा। दूसरी तरफ यह कि उसी वक़्त हाथों हाथ लेन-देन और कब्ज़ा हो जाएगा वरना सूद हो जाएगा।

मस'ला ५— अगर ऐसी चीजें जो तौल कर बिकती हैं एक तरह की चीज न हो। जैसे: गेहूँ देकर धान लिए या जौ, चना, ज्वार, गोश्त तरकारी वगैरा कई चीजें लीं गर्ज कि इधर और चीज है उधर और चीज है। दोनों तरफ एक चीज नहीं तो इस सूरत में दोनों का वज़न बराबर होना वाजिब नहीं। सेर भर गेहूँ देकर चाहे आठ सेर धान वगैरा ले लें सब जायज़ है अलबत्ता वह दूसरी बात यहां भी वाजिब है कि सामने रहते दोनों तरफ से लेन-देन हो जाए। अगर ऐसा न किया तो सूद का गुनाह होगा।

मस'ला ६— अगर इस तरह की चीज जो तौलकर बिकती है। रुपये पैसे से खरीदी या कपड़े वगैरा किसी ऐसी चीज से बदली हैं जो तौलकर नहीं बिकती बल्कि नपने से नापकर बिकती है। जैसे: एक थान कपड़ा देकर गेहूँ वगैरा ले लिए या गेहूँ घने देकर अमरुद, नारंगी, नाशपाती, अंडे ऐसी चीजें लीं जो गिनकर बिकती हैं तो इस सूरत में इन दोनों बातों में से कोई बात भी वाजिब नहीं। एक पैसे के

बदले जितने गेहूँ, आटा, तरकारी खरीदे। गेहूँ, चने देकर चाहे जितने अमरुद, नारंगी वगैरा ले और चाहे उसी वक़्त उस जगह रहते हुए लेन-देन हो जाए चाहे अलग होने के बाद, हर तरह ठीक है।

11. चीज़ की तैयारी से पहले ख़रीद

फसल के कटने से पहले या कटने के बाद किसी को दस रुपये दिए और कहा कि दो महीने बाद फलां महीने की तारीख में हम तुम से इन दस रुपये के गेहूँ लेंगे और भाव उसी वक़्त तय कर लिया कि दस रुपये के पन्द्रह किलो या दस रुपये के बीस किलो गेहूँ के हिसाब से लेंगे तो यह लेन-देन दुरुस्त है। जिस महीने का वादा हुआ है उस महीने में उसे इसी भाव पर गेहूँ देने पड़ेंगे। चाहे बाज़ार में तेज़ बिकें या सस्ते। बाज़ार के भाव का कुछ एतबार नहीं। यह भी एक तरह का लेन-देन होता है।

इस लेन-देन के जायज़ होने की कई शर्तें हैं। पहली यह है कि गेहूँ वगैरा की कैफ़ियत ख़ूब साफ़-साफ़ इस तरह बता दे कि लेते वक़्त दोनों में झगड़ा न हो। जैसे: यह कह दे कि फलां किस्त का गेहूँ का दाना, बहुत पतला न हो पाला मारा हुआ न हो। उम्दा हो, ख़राब न हो। उसमें कोई चीज़, जौ, चना, मटर, यगैरा न मिली हो। ख़ूब सूखे हों, गीले न हों। अगर उस वक़्त इतना कह दिया कि दस रुपये के गेहूँ दे देना तो नाजायज़ हुआ। यूँ कहा कि दस रुपये के धान दे देना या चावल दे देना। उसे किस्म कुछ न बताई। यह सब नाजायज़ है।

दूसरी शर्त यह है कि भाव तय करें कि दस रुपये के पन्द्रह या बीस किलो के हिसाब से लेंगे। अगर यूँ कहा कि उस वक़्त बाज़ार का भाव हो उस हिसाब से हमको दे देना या उससे दो किलो ज़्यादा दे देना तो जायज़ है।

तीसरी शर्त यह है कि जितने रुपयों के गेहूँ लेने हों उसी वक़्त बता दें कि दस रुपये या बीस रुपये के लेंगे। अगर यह नहीं बताया और यूँ ही गोल मोल कह दिया कि थोड़े रुपए के हम भी ले लेंगे तो यह ठीक नहीं है।

चौथी शर्त यह है कि उसी वक़्त उसी जगह रहते-रहते सब रुपए दे दें। अगर मामला करने के बाद अलग होकर फिर रुपए दिए तो वह मामला खत्म हो गया। अब फिर से तय करना चाहिए।

पांचवीं शर्त यह है कि अपने लेने की मुद्दत कम-से-कम एक महीना तय करें ताकि बाद में झगड़ा न हो अगर दिन, तारीख और महीना तय न किया बल्कि यूँ कहा कि जब फसल कटेगी तब दे देना तो ठीक नहीं।

छठी शर्त यह है कि यह भी तय करें कि फलां जगह वह गेहूँ दे देना यानी उसी शहर में या किसी दूसरे शहर में लेना हो वहां पहुंचाने के लिए कह दें कि हमारे घर पहुंचा देना। गर्ज यह कि जो मंजूर हो साफ बता दें। अगर यह नहीं बताया तो सही नहीं। अगर इन शर्तों के मुताबिक किया तो यह लेन-देन ठीक है वरना नहीं।

मस'ला १— गेहूँ वगैरा गल्ले के अलावा और जो चीज़ें ऐसी हों कि उनकी कैफियत ब्यान करके तय कर दी जाएं ताकि लेते वक़्त कुछ झगड़ा होने का डर न हो उनका लेन-देन भी ठीक है। जैसे: अंडे, ईंटें, कपड़ा।

मस'ला २— इस तरह के लेन-देन होने की शर्त यह है कि जिस वक़्त मामला किया है उस वक़्त से लेकर लेने और वसूल पाने के ज़माने तक वह चीज़ बाज़ार में मिलती रहे। नायाब न हो अगर इस दरमियान में वह चीज़ बिल्कुल नायाब हो जाए कि उस शहर और मुल्क के बाज़ारों में न मिले चाहे दूसरी जगह से बहुत मुसीबत झेल कर मंगवा सके तो यह लेन-देन झूठा हो गया।

12. शिफा (मिल्कियत)

मस'ला १— जिस वक़्त शफी को लेन-देन की ख़बर पहुंची अगर उसी वक़्त मुंह से न कहा कि मैं शिफा न लूंगा तो शिफा झूठा पड़ जायेगा फिर उस शख्स को दावा करना जायज़ नहीं यहां तक कि शफी के पास ख़त पहुंचा और उसके शुरू में यह ख़बर लिखी है कि फलां मकान बेचा गया और उस वक़्त ज़बान से न कहा कि मैं शिफा न लूंगा तो उसका शिफा झूठा हो गया।

मस'ला २— अगर शफी ने कहा कि मुझ को इतना रुपया दो तो मैं अपने हक्के शिफा से दस्तबर्दार हो जाऊं — इस सूरत में चूँकि अपना हक़ ख़त्म करने पर रज़ामंद हो गया इसलिए शिफा ख़त्म हो गया लेकिन चूँकि यह रिश्तत है इसलिए रुपया लेना हराम है।

मस'ला ३— अगर अभी हाकिम ने शिफा नहीं दिलाया था कि शफी मर गया तो उसके वारिसों को शिफा न पहुंचेगा और अगर ख़रीदार मर गया तो शिफा बाकी रहेगा।

मस'ला ४— शफी को ख़बर पहुंची कि इतनी कीमत का मकान बिका है। उसने दस्तबर्दारी की। फिर मालूम हुआ कि कम कीमत का बिका है, उस वक़्त शिफा ले सकता है। इसी तरह पहले सुना था कि फलां शख्स ख़रीदार है। फिर सुना कि नहीं दूसरा शख्स भी ख़रीदार है। या पहले सुना था कि आधा ही बिका है। और फिर मालूम हुआ कि पूरा बिका है। इन सूरतों में पहली दस्तबर्दारी से शिफा झूठा न होगा।

13. कर्ज़ लेना

मस'ला १— जो चीज़ ऐसी हो कि उसी तरह की चीज़ आप दे

सकते हैं उसका कर्ज लेना ठीक है। जैसे अनाज, अंडे, गोश्त वगैरा। मगर जो चीज़ ऐसी हो कि उस तरह की चीज़ देना मुश्किल है तो उसका कर्ज लेना ठीक नहीं। जैसे: अमरुद, नारंगी, बकरी, मुर्गी वगैरा।

मस'ला २— जिस ज़माने में रुपये के दस सेर गेहूँ मिलते थे उस वक़्त किसी ने पाँच सेर गेहूँ कर्ज लिए फिर गेहूँ सस्ते हो गये और रुपए के बीस सेर मिलने लगे तो उसको वही पाँच सेर देने पड़ेंगे। इसी तरह तेज़ हो गए हैं तो भी वही गेहूँ देने पड़ेंगे जितने दिए गए थे।

मस'ला ३— जैसे गेहूँ आपने दिए थे उसने अच्छे गेहूँ अदा किए तो उसका लेना जायज़ है, यह सूद नहीं है। मगर कर्ज देने के वक़्त यह कहना ठीक नहीं कि उनसे अच्छे लेंगे अलबत्ता वज़न में ज़्यादा नहीं होना चाहिए। ख़ूब ठीक-ठीक तौल कर लेना-देना चाहिए। अगर कुछ झुकता तौल दिया तो कुछ डर नहीं।

मस'ला ४— किसी से कुछ रुपया या गल्ला इस वादे पर कर्ज लिया कि एक महीने या पन्द्रह दिन के बाद अदा कर देंगे और उसने मंज़ूर कर लिया तब मुद्दत का यह ब्यान नाजायज़ है। अगर उसको उस मुद्दत से पहले ज़रूरत पड़े और आप से मांगे या बग़ैर ज़रूरत के मांगे आपको उसी वक़्त अदा करना पड़ेगा।

14. किसी की ज़िम्मेदारी लेना

मस'ला ५— नईम के ज़िम्मे किसी के रुपये पैसे वाजिब थे आपने इसकी ज़िम्मेदारी ले ली कि अगर न देगा तो हम से ले लेना या यूँ कहा कि हम उसके ज़िम्मेदार हैं और हक़दार ने आपकी ज़िम्मेदारी

कबूल कर ली तो अब उसकी अदायगी की ज़िम्मेदारी आपके ज़िम्मे हो गई। अगर नईम ने वह रकम न दी तो आपको देनी पड़ेगी और उस हकदार को हक है कि जिससे चाहे तकाज़ा करे चाहे आप से या नईम से। अब जब तक नईम अपना कर्ज़ अदा न करे या माफ़ न कराए तब तक बराबर आप ज़िम्मेदार रहेंगे अलबत्ता अगर वह हकदार आपकी ज़िम्मेदारी पर माफ़ कर दे और कह दे कि अब आपसे कुछ मतलब नहीं, यह आपसे तकाज़ा न करेगा तो अब आपकी ज़िम्मेदारी न रही। अगर आपकी ज़िम्मेदारी के वक़्त ही उस हकदार ने मंज़ूर न किया और कहा कि आपकी ज़िम्मेदारी का भरोसा न रहा या कुछ और कहा तो आप ज़िम्मेदार नहीं।

मस'ला २— नाबालिग़ लड़का या लड़की अगर किसी की ज़िम्मेदारी ले तो वह ठीक नहीं।

15. वकील बना देना

मस'ला १— जिस काम को आदमी खुद कर सकता है उसमें यह भी *इतिफ़ाक़* है कि किसी और से कह दे कि वह आपका काम कर दे। जैसे: बेचना, मोल लेना, किराया लेना, निकाह करना, नौकर को बाज़ार सौदा लेने भेजना। या नौकर से कोई चीज़ बिकवाई या तांगा, रिश्ता किराये पर मंगवाया। जिससे वह काम कराया गया है शरीअत में उसको वकील कहते हैं।

मस'ला २— आपने नौकर से गोश्त मंगवाया। वह उधार ले आया तो गोश्त वाला आपसे तकाज़ा नहीं करेगा बल्कि उसी नौकर से तकाज़ा करे और नौकर आपसे तकाज़ा करेगा। इसी तरह अगर कोई चीज़ आपने बिकवाई तो खरीदने वाले से आपको तकाज़ा करने और दाम वसूल करने का हक़ नहीं है। उसने जिससे चीज़ पाई है उसी को

दाम भी देगा। अगर वह खुद आपको दाम दे दे तब भी जायज है।

मस'ला ३— वकील को हटाने का आपको हर तरह का इंतजारा है। जैसे आपने किसी से कहा था कि आपको एक बकरी की जरूरत है। कहीं मिल जाए तो ले लें। फिर कह दिया अब न लें। तो उसे अब लेने का एख्तियार नहीं। अगर वह आदमी अब भी ले तो वह उसी के ज़िम्मे रहेगी।

मस'ला ४— अगर खुद उसको मना नहीं किया बल्कि खत भेजकर मना कर दिया कि अब न ले तब भी वह बरतारफ हो गया।

16. कारोबार में साझेदारी

आपने तिजारत के लिए किसी को रुपये दिये कि उनसे वह तिजारत करे जो कुछ नफा होगा, वह और आप बांट लेंगे। यह जायज है इसको मुजारबत कहते हैं। इसकी कई शर्तें हैं :

मस'ला १— जितना रुपया देना हो बता दें और उसे तिजारत के लिए भी दें। अपने पास न रखें। अगर रुपये उसके हवाले न किए और अपने पास ही रखे तो यह बिगड़ा हुआ मामला है।

(२) नफा बांटने की सूरत में तय कर लें और बता दें कि आपको कितना मिलेगा और उसे कितना। अगर यह बात तय न हुई बस इतना ही कहा आप और व नफा बांट लेंगे तो यह अच्छा मामला नहीं है।

(३) नफा बांटने का तरीका यह है कि जितना भी नफा हो उसमें यह करें कि दस रुपये आपके बाकी उसके, या दस रुपए उसके और बाकी आपके। या इस तरह तय करें कि आधा आपका या एक हिस्सा उसका बाकी हिस्से आपके। या एक हिस्सा एक का बाकी तीन हिस्से दूसरे के। गर्ज यह कि नफे की तबसीम हिस्सों के एक हिसाब से

करना चाहिए। जो कुछ नुकसान होगा वह मालिक के ज़िम्मे हैं। रुपया उसी का गया।

साझेदारी दो तरह की होती है—एक शिर्कते इमलाक कहलाती है। जैसे: एक आदमी मर गया और उसके तर्क में कुछ वारिसान शरीक हैं या रुपया मिलाकर दो आदमियों ने एक चीज़ खरीदी या एक आदमी ने दो आदमियों को कोई चीज़ हिस्सा यानी बख़्शाशकर दी, इसका हुक्म यह है कि किसी को उसके इस्तेमाल का हक दूसरे की इजाजत लिए बग़ैर नहीं।

दूसरी शर्त उकूद है। यानी दो आदमियों ने आपस में तय किया कि दोनों आपस में साझेदारी में तिजारत करेंगे। यह साझेदारी दो तरह की होती है।

पहली शिर्कत मनान है। जैसे: दो आदमियों ने थोड़ा-थोड़ा करके जमा किया कि उसका कपड़ा या गुल्ला खरीदकर तिजारत करें। इस में यह शर्त है कि दोनों के हिस्से का माल नक्द हो। अगर एक का नक्द और दूसरे का उधार है तो यह साझेदारी ठीक नहीं होगी।

दूसरी तरह की शिर्कत सनाय या कारीगरी भी है। जैसे: दो दर्जी या रंगरेज़ आपस में तय कर लें कि जिसके पास जो काम आये उसे कबूल करें और जो मज़दूरी मिले आपस में आधी-आधी, तिहाई या चौथाई के हिसाब से बांट लें।

जो काम एक ने लिया दोनों पर लाज़िम हो गया। जैसे: एक साझीदार ने सीने के लिए एक कपड़ा लिया तो कपड़े वाला जिस तरह उससे तकाज़ा कर सकता है। दूसरे साझीदार से भी सिलवा सकता है। इसी तरह जैसे वह कपड़ा सीने वाला मज़दूरी मांग सकता है दूसरा भी मज़दूरी ले सकता है। और जिस तरह उसे मज़दूरी देने से मालिक शुष्कदोश हो जाता है उसी तरह अगर दूसरे शरीक को दे दी तो

ज़िम्मेदारी से बरी हो गया।

दो आदमियों ने मिलकर बाज़ार से गेहूँ मंगवाए तो बांटते वक़्त दोनों का मौजूद होना ज़रूरी नहीं है। दूसरा हिस्सेदार मौजूद न हो तब भी ठीक-ठीक तौलकर उसका हिस्सा अलग करके अपना हिस्सा अलग कर लेना ठीक है। जब अपना हिस्सा अलग कर लिया तो खायें पीयें या किसी को दे दें। जो जी चाहे करें, सब जायज़ है। इसी तरह घी, तेल, अंडे का हुक्म है। गर्ज़ यह कि जो चीज़ ऐसी है कि उसमें फर्क न होता हो जैसे कि अंडे—अंडे सब बराबर हैं या गेहूँ के दो हिस्से किए तो जैसे एक हिस्सा वैसे दूसरा हिस्सा दोनों बराबर हैं। ऐसी सब चीज़ों का वही हुक्म है कि दूसरे के मौजूद न होने पर भी हिस्सा बांट लेना ठीक है। लेकिन दूसरे ने भी अपना हिस्सा न लिया था कि किसी तरह जाता रहा तो फिर वह दोनों का नुक़सान होगा। जिस चीज़ में फर्क होता है। जैसे: अमरुद, नारंगी वगैरा। इनका हुक्म यह है कि जब तक दोनों हिस्सेदार मौजूद न हों हिस्सा बांट लेना ठीक नहीं है।

17. अमानत

मस'ला १— किसी ने आपके पास कोई चीज़ अमानत के तौर पर रखी और वह आपने ले ली तो अब उसकी हिफ़ाज़त करना आप पर बाज़िब हो गया। अगर हिफ़ाज़त में कमी और लापरवाही की और वह चीज़ ख़राब हो गई तो उसका तावान देना पड़ेगा अलबत्ता अगर हिफ़ाज़त में कोई कमी नहीं हुई मगर किसी और वजह से वह जाती रही जैसे चोरी हो गई या घर में आग लग गई और उसमें वह चीज़ जल गई तो उसका तावान नहीं ले सकता बल्कि अमानत रखने के वक़्त यह इक़रार कर लिया कि अगर चीज़ जाती रही तो अमानत रखने वाला ज़िम्मेदार है, उससे दाम ले लिए जाएं। तब भी उसे तावान लेने का हक़ नहीं। वैसे आप अपनी खुशी से दे दें तो दूसरी बात है।

मस'ला २— किसी ने कहा—मैं ज़रा काम से जाता हूँ। मेरी चीज़

रख लें। आपने कहा—अच्छ रख दो। या आप कुछ नहीं बोले। वह आपके पास रख कर चला गया तो अमानत हो गई। अलबत्ता अगर आपने कह दिया कि आप नहीं जानते और किसी के पास रख दो या और कुछ कहकर मना कर दिया। फिर भी रखकर चला गया तो अब वह चीज़ आपकी अमानत में नहीं है। अलबत्ता अगर उसके चले जाने के बाद आप ने उठाकर रख ली तो अमानत हो जाएगी।

मस'ला ३— जिसके पास कोई अमानत हो उसे एख्तियार है कि खुद अपनी हिफाज़त में रखे या अपने किसी रिश्तेदार के पास रख दे जो एक ही घर में एक साथ रहते हों। जिनके पास अपनी चीज़ भी ज़रूरत के वक़्त रख देता हो लेकिन अगर कोई दयानतदार न हो तो उसके पास रखना ठीक नहीं। ख़त्म हो जाने पर तावान देना पड़ेगा और रिश्तेदार के सिवा और किसी के पास भी पराई अमानत का रखना बग़ैर मालिक की इजाज़त के ठीक नहीं।

मस'ला ४— घर में आग लग गई तो ऐसे वक़्त ग़ैर के पास भी अमानत रख देना जायज़ है। लेकिन जब वह बात ख़त्म हो जाए तो उसी वक़्त ले लेना चाहिए। अगर अब वापस नहीं लेगा तो तावान देना पड़ेगा। इसी तरह मरते वक़्त अगर कोई अपने घर का आदमी मौजूद न हो तो पड़ोसी के सुपुर्द कर देना ठीक है।

मस'ला ५— अगर किसी के कुछ रुपये पैसे अमानत रखे तो उन्हीं रुपये पैसे को हिफाज़त से रखना वाजिब है। न तो अपने रुपयों में उनका मिलाना जायज़ है और न उनका ख़र्च करना ही जायज़ है। यह न समझें कि रुपया-रुपया सब बराबर है। उसे ख़र्च कर दें। जब मांगे तो अपना रुपया दे देंगे। अलबत्ता अगर उसने इजाज़त दे दी ऐसी सूरत में ख़र्च करना ठीक है लेकिन इसका यह हुक्म है कि अगर वही रुपया अलग रहने दें तब वह रुपया अमानत समझा जाएगा। अगर जाता रहा, आप के ज़िम्मे कर्ज़ हो गया, अमानत नहीं रही। इसलिए अब बहरहाल आपको देना पड़ेगा।

मस'ला ६— किसी ने रखने को रुपया दिया। आपने पर्स में रख लिया, कमरबन्द में बांध लिया लेकिन डालते वक़्त वह रुपया कमरबन्द या पर्स में नहीं पड़ा बल्कि नीचे गिर गया। मगर आप यही समझे कि आपने पर्स में रख लिया तो तावान न देना पड़ेगा।

मस'ला ७— जब वह अमानत मांगे तो उसी वक़्त दे देना वाजिब है। बिला उद्ध न देना और देर करना जायज़ नहीं। किसी ने अपनी अमानत मांगी तो आपने कहा—भाई इस वक़्त हाथ खाली नहीं है। कल ले लेना। उसने कहा—अच्छा कल ही सही। तब तो कुछ हर्ज नहीं और अगर कल लेने पर राज़ी न हुआ और न देने से नाराज़ होकर चला गया तो अब वह चीज़ अमानत नहीं रही। अब अगर वह जाती रही तो तावान देना पड़ेगा।

मस'ला ८— किसी से कोई कपड़ा, ज़ेवर, चारपाई या बर्तन वगैरा कोई चीज़ कुछ दिन के लिए मांग ली कि ज़रूरत है। और ज़रूरत निकल जाने पर दे देंगे तो इसका यह हुक्म भी अमानत की तरह है। अब उसको अच्छी तरह हिफ़ाज़त से रखना वाजिब है। अगर हिफ़ाज़त के बावजूद भी यह जाती रहे तो जिसकी चीज़ है उसको तावान लेने का हक़ नहीं है बल्कि अगर आपने इकरार भी कर लिया है कि अगर जाएगी तो हम से ले लेना, तब भी तावान देना ठीक नहीं। अलबत्ता अगर हिफ़ाज़त न की और इस वजह से जाती रही तो तावान देना पड़ेगा। मालिक को हर वक़्त एख़्तियार है कि जब चाहे अपनी चीज़ ले ले आपको इन्कार करना ठीक नहीं। अगर मांगने पर चीज़ न दी तो फिर ख़त्म हो जाने पर तावान देना पड़ेगा।

18. किसी को कुछ देना

मस'ला १— आपने किसी को कोई चीज़ दी और उसने उसे मंज़ूर कर लिया। मुंह से कुछ नहीं कहा बल्कि आपने उसके हाथ पर

रख दी और उसने ले ली तो अब वह चीज उसकी हो गई आपकी नहीं रही बल्कि वही उसका मालिक है। इसको शरअ में हिबा कहते हैं। इसकी कई शर्तें हैं। जैसे: एक तो उसके हवाले कर देना और उसका कब्ज़ा कर लेना है अगर आपने यह कहा कि यह चीज हमने आपको दे दी। उसने कहा—हमने ले ली। लेकिन अभी आपने उसके हवाले नहीं की तो यह देना ठीक नहीं हुआ। अभी तक वह चीज आप की ही मिल्कियत है। अलबत्ता अगर उसने उस चीज पर अपना कब्ज़ा कर लिया तो अब कब्ज़ा कर लेने के बाद उसका मालिक बनेगा।

मस'ला २— बन्द सन्दूक में कुछ कपड़े दे दिए लेकिन उसकी ताली नहीं दी तो कब्ज़ा नहीं हुआ। जब कुजी देंगे तब कब्ज़ा होगा। उस वक़्त उसका मालिक बनेगा।

मस'ला ३— अगर किसी को आधी, तिहाई या चौथाई चीज दें, पूरी न दें तो इसका हुक्म यह है कि देखें कि वह चीज किस तरह की है। आधी बांट देने के बाद भी काम की रहेगी या नहीं। अगर बांट देने के बाद काम की न रहे कि जैसे: चक्की, चौकी, पलंग, पत्तीली, लोटा, कटोरा, प्याला, सन्दूक, जानवर वगैरा; ऐसी चीजों को बगैर बांटे भी आधी, तिहाई जो कुछ देना मंज़ूर हो, देना जायज़ है अगर वह कब्ज़ा कर ले तो जितना हिस्सा आपने दिया है वह उसका मालिक बन गया और वह चीज साझे में हो गई और अगर वह चीज ऐसी है कि बांटने के बाद भी काम की रहेगी। जैसे: ज़मीन, घर, कपड़े का थान, जलाने की लकड़ी, अनाज, दूध, दही वगैरा तयसीम किये उनका देना ठीक नहीं है। अगर आपने उस बर्तन का आधा घी उसको दे दिया और वह कहे कि हमने ले लिया तो यह देना ठीक नहीं हुआ बल्कि अगर वह बर्तन पर भी कब्ज़ा कर ले तब भी उसका मालिक नहीं हुआ। अभी भी सारा घी आपका ही है। हाँ, अगर उसके बाद उसमें का आधा घी कर के उसके हवाले कर दे तो अब अलबत्ता वह उसका मालिक हो जाएगा।

मस'ला ४— एक थान कपड़ा, मकान या नाग वगैरा दो आदमियों

ने मिल कर आधा खरीदा तो जब तक तक्सीम न कर ले तब तक अपना आधा हिस्सा किसी को देना ठीक नहीं।

मस'ला ५— नाबालिग लड़का या लड़की अपनी किसी चीज को दे दे तो उसका देना ठीक नहीं है और उसका लेना भी नाजायज है।

19. बच्चों को चीज देना

मस'ला १— किसी तकरीब में छोटे बच्चों को जो कुछ दिया जाता है उससे बच्चे को देना मवसद नहीं होता बल्कि मां-बाप को देना मवसद होता है इसलिए वह सब नेयता बच्चे की मिल्कियत नहीं बल्कि मां-बाप उसके मालिक हैं जो चाहे सो करें। अलबत्ता अगर कोई आदमी खास बच्चे को ही कोई चीज दे तो फिर वही बच्चा उसका मालिक है। अगर बच्चा कब्ज़ा न करे या कब्ज़ा करने के लायक न हो तो अगर बाप हो तो उसका कब्ज़ा कर लेने से और अगर बाप न हो तो दादा के कब्ज़ा कर लेने से बच्चा मालिक हो जाएगा। अगर बाप दादा मौजूद न हों तो बच्चा जिसकी परवरिश में है उसको कब्ज़ा करना चाहिए। बाप-दादा के होते मां, नानी, दादी वगैरा और किसी का कब्ज़ा करना ठीक नहीं है।

मस'ला २— जो चीज हो अपनी सब औलाद को बराबर देना चाहिए। लड़का-लड़की सबको बराबर दें। अगर कभी किसी को ज्यादा दे दिया तो भी कुछ हर्ज नहीं। लेकिन जिसे कम दिया उसे नुक्सान देना मवसूद न हो, नहीं तो कम देना ठीक नहीं।

मस'ला ३— जो चीज नाबालिग की मिल्कियत हो उसका हुक्म यह है कि उसी बच्चे के काम में लगाना चाहिए। किसी को अपने काम में लगाना जायज नहीं। खुद मां-बाप भी अपने काम में न लाएं। न किसी बच्चे के काम में लाएं।

मस'ला ४- कुछ देकर फेर लेना बड़ा गुनाह है लेकिन कोई वापस ले ले और जिसको दी थी वह अपनी खुशी से दे भी दे तो अब वह उसका मालिक बन जाएगा। मगर कुछ बातें ऐसी हैं जिन से फेर लेने का एख्तियार बिल्कुल आपको नहीं रहता। जैसे आपने किसी को बकरी दी। उस आदमी ने उसको खिला-खिलाकर खूब मोटा-ताजा किया तो अब उसे फेर लेने का एख्तियार नहीं है। या किसी को ज़मीन दी, उसने घर बनाया या बाग लगाया तो फेर लेने का एख्तियार बाकी नहीं है। अगर फेरे तो सिर्फ बकरी फेर सकता है उसके बध्वे नहीं ले सकता।

20. किराये पर लेना

मस'ला १- आपने महीने भर के लिए घर किराये पर लिया और अपने कब्जे में कर लिया तो महीने के बाद किराया देना पड़ेगा चाहे उसमें रहना हुआ हो या खाली पड़ा रहा हो। किराया बहरहाल वाजिब है।

मस'ला २- दर्जी कपड़ा सीकर या रंगरेज रंग कर, धोबी कपड़ा धोकर लाया तो उसको एख्तियार है कि जब तक आपसे उसकी मज़दूरी न ले तब तक आपको कपड़ा न दे। बग़ैर मज़दूरी दिये उससे ज़बरदस्ती लेना ठीक नहीं। अगर किसी मज़दूर से गल्ले की एक बोरी दस पैसे पर उठवाई तो वह अपनी मज़दूरी मांगने के लिए आपका गल्ला नहीं शोक सकता। क्योंकि वहां से लाने की वजह से गल्ले में कोई बात पैदा नहीं हुई और पहली सूरत में एक नई बात कपड़े में पैदा हो गई।

मस'ला ३- अगर किसी ने यह शर्त कर ली कि उसका कपड़ा आप ही सीयें, आप ही धोएं तो आप दूसरे को नहीं दे सकते, खुद ही

करें। अगर यह शर्त नहीं तो किसी और से वह काम कराया जा सकता है।

मस'ला ४— अगर मकान किराये पर लेते वक़्त कुछ मुद्दत बयान की कि कितने दिन के लिए रुपया दिया है या किराया तय नहीं किया, यूँ ही ले लिया या शर्त कर ली कि जो कुछ उसमें गिर जाएगा यह भी आप अपने पास से ही बनवा दिया करेंगे या किसी को घर इस धादे पर दिया कि वह उसकी मरम्मत करा दिया करे और उसका यही किराया है तो यह सब झूठा इजारा है। अगर यूँ कह दे कि आप इस घर में रहो और मरम्मत करा दिया करो। किराया कुछ नहीं तो यह रियायत है और जायज़ है।

मस'ला ५— किसी ने यह कहकर मकान किराये पर लिया कि दो रुपये माहवार दिया करेंगे तो एक महीने के लिए इजारा हुआ। महीने के बाद उसमें से उठा देने का एख्तियार है। फिर जब दूसरे महीने में आप रहे तो एक ही महीने का इजारा अब ठीक हो गया। इसी तरह हर महीने में नया इजारा होता रहोगा अलबत्ता अगर यह भी कह दे कि चार महीने या पांच महीने रहूँगा तो जितनी मुद्दत बताई है उतनी मुद्दत तक इजारा ठीक हुआ। उससे पहले मालिक आपको नहीं उठा सकता।

मस'ला ६— कोई घर किराये पर लिया वह बहुत टपकता है या कुछ हिस्सा उसका गिर पड़ा या कोई और ऐसी बात निकल आई जिससे अब रहना मुश्किल है तो अब इजारे का तोड़ देना ठीक है और अगर बिल्कुल ही गिर पड़ा तो खुद ही इजारा टूट गया। आपके तोड़ने या मालिक के राज़ी होने की ज़रूरत नहीं रही।

मस'ला ७— जब किराये पर लेने और देने वाला कोई मर जाए तो इजारा टूट जाता है।

मस'ला ८— अगर कोई ऐसी मजबूरी पैदा हो जाए कि इजारे

को तोड़ना पड़े तो मजबूरी के वक़्त तोड़ देना ठीक है। जैसे: कहीं जाने के लिए तांगा किराये पर लिया। फिर ख्याल बदल गया। अब जाने का इरादा नहीं रहा तो इजारा तोड़ना ठीक है।

मस'ला ९— यह भी एक दस्तूर है कि किराया तय करके उसको ब्याना दे देते हैं। अगर जाना हुआ तो फिर उसको पूरा किराया दे देते हैं। अगर जाना है तो उस किराये में से मुजरा हो जाता है और जाना न हुआ तो वह बयाना हज़म कर लेता है, वापस नहीं करता। यह ठीक नहीं बल्कि उसको वापस दे देना चाहिए।

21. तावान लेना

मस'ला १— रंगरेज़, धोबी, दर्जी वगैरा किसी पेशेवर से कोई काम कराया तो वह चीज़ जो उसको दी है उसके पास अमानत है। अगर चोरी हो जाए या किसी और तरह बिना इरादा मजबूरी से खत्म हो जाए तो उससे तावान लेना ठीक नहीं। अलबत्ता अगर उसने वह चीज़ इस तरह खराब की कि कपड़ा फट गया या बढ़िया रेशमी कपड़ा भट्टी पर चढ़ा दिया और खराब हो गया तो उसका तावान लेना दुरुस्त है। अगर कपड़ा खो गया और वह कहता है कि मालूम नहीं क्यों कर गया और क्या हुआ उसका लेना भी ठीक है। और अगर वह कहे कि यहां चोरी हो गई उसमें जाता रहा तो तावान लेना ठीक नहीं।

मस'ला २— किसी मजदूर को घी, वगैरा पहुंचाने को कहा। उससे वह रास्ते में गिर पड़ा तो उसका तावान लेना जायज़ है।

मस'ला ३— बच्चा खिलाने वाले नौकर की लापरवाही से बच्चे का जेवर या कुछ और चीज़ जाती रही तो उसका तावान लेना ठीक है।

22. बिना इजाजत चीज़ लेना

मस'ला १— किसी चीज़ को ज़बरदस्ती ले लेना या पीठ पीछे उसकी बग़ैर इजाजत ले लेना बड़ा गुनाह है। कुछ औरतें अपने शौहर या किसी और अज़ीज़ की कोई चीज़ बिना इजाजत ले लेती हैं—यह ठीक नहीं है। अगर कोई चीज़ बिना इजाजत ले ली है तो अगर वह चीज़ अभी मौजूद हो तो वही चीज़ फेर देनी चाहिए और अगर ख़र्च हो गई हो तो उसका हुक्म यह है कि अगर ऐसी चीज़ थी कि उसकी जैसी बाज़ार में मिल सकती है। जैसे: गुल्ला, घी, तेल, रुपया-पैसा -जैसी चीज़ ली वैसी ही चीज़ मंगाकर देना वाजिब है और ऐसी चीज़ लेकर ख़त्म कर दी कि उस जैसी मिलना मुश्किल है तो उसकी कीमत देनी पड़ेगी। जैसे: मुर्री, बकरी, अमरुद, नारंगी वगैरा।

मस'ला २— चारपाई का एक आधा पाया टूट गया या पट्टी या चूल टूट गई या और कोई चीज़ ली थी वह ख़राब हो गई तो ख़राब होने से जितना नुक़सान हुआ हो, देना पड़ेगा।

मस'ला ३— पराये रुपये से बिना इजाजत तिजारत की तो उससे जो नफ़ा हो उसका लेना दुरुस्त नहीं बल्कि असली रुपये मालिक को वापस दे और जो कुछ नफ़ा हो उसको ऐसे लोगों में ख़ैरात कर दे जो बहुत मुहताज हों।

मस'ला ४— किसी का नगीना लेकर अंगूठी पर रख लिया तो अब उसकी कीमत देनी पड़ेगी। अंगूठी तोड़कर नगीना निकलवाकर देना वाजिब नहीं।

मस'ला ५— सुई, धागा, पान, तम्बाकू, कत्था, छलिया वगैरा किसी की चीज़ बग़ैर इजाजत लेना दुरुस्त नहीं है और कुछ लिया है उसके दाम देना वाजिब है या फिर उससे कह कर माफ़ करा ले।

23. गिरवी रखना

मस'ला १— आपने किसी से दस रुपए कर्ज लिए और भरोसे के लिए अपनी कोई चीज़ उसके पास गिरवी रख दी कि आपको एतबार न हो तो उसकी वह चीज़ अपने पास रख लें, जब रुपया अदा कर देगा तो वह अपनी चीज़ वापस ले लेगा, यह जायज़ है।

मस'ला २— जब आपने कोई चीज़ गिरवी रख दी तो अब बगैर कर्ज अदा किए अपनी चीज़ मांगने और वापस लेने का हक नहीं है।

मस'ला ३— जो चीज़ आपके पास किसी ने गिरवी रखी तो अब उस चीज़ का काम में लाना उससे किसी तरह का नफ़ा उठाना, ऐसे बाग़ के फल खाना ऐसी ज़मीन का गुल्ला या रुपया लेकर खाना या ऐसे घर में रहना ठीक नहीं है।

मस'ला ४— अगर बकरी, गाय वगैरा रखी हो तो उसका दूध बच्चा वगैरा जो कुछ हो जिसके पास गिरवी है उसे लेना दुरुस्त नहीं। वह भी मालिक ही का है। दूध को बेच कर गिरवी में शामिल कर लें। जब वह आपका कर्ज अदा कर दे तो गिरवी की चीज़ और दाम सब वापस कर दें मगर खिलाई के दाम काट लें।

24. मन्नत मानना

मस'ला १— किसी काम पर इबादत की बात की कोई मन्नत मानी फिर वह काम हो गया जिसके लिए मन्नत मानी थी तो अब मन्नत का करना वाजिब है। मन्नत पूरी न करेंगे तो बहुत गुनाह होगा। लेकिन अगर कोई वाहि़यात मन्नत हो जिसका शरअ में कुछ एतबार

नहीं तो उसका पूरा करना वाजिब नहीं।

मस'ला २— किसी ने कहा—या अल्लाह! मेरा फलां काम हो जाए तो पांच रोजे रखूंगा। तो जब काम हो जाएगा पांच रोजे रखने पड़ेंगे। लगातार या एक-एक दो-दो करके पूरे करें और अगर यह कहा कि पांचों रोजे लगातार रखूंगा तो सब लगातार रखने पड़ेंगे।

मस'ला ३— अगर यूं कहा कि जुमे का रोजा रखूंगा या मुहर्रम की पहली तारीख दसवी तारीख तक रोजे रखूंगा तो खास जुमे के दिन रोजा रखना वाजिब नहीं और मुहर्रम की उन्हीं तारीखों में रोजा रखना वाजिब नहीं। जब चाहे दस रोजे रख ले लेकिन दसों लगातार रखने पड़ेंगे चाहे मुहर्रम या किसी और महीने में—सब जायज हैं। इसी तरह अगर यह कहा कि मेरा यह काम हो जाएगा तो कम रोजा रखूंगा तब भी एख्तियार है, जब चाहे रखे।

मस'ला ४— किसी ने मन्नत मानी कि उसकी खोई हुई चीज मिल जाए तो उसके मिल जाने पर आठ रकअत नमाज़ पढ़ेगा चाहे एक दम आठों रकअत की नीयत बांध ले या चार रकअत की नीयत बांधे या दो-दो की, पूरा एख्तियार है।

मस'ला ५— अगर यूं मन्नत मानी कि दस मिरकीनों को खाना खिलाऊंगा। अगर दिल में कुछ ख्याल किया कि एक-दो वक़्त खिलाएगा तब तो इसी तरह खिलाए और कुछ ख्याल नहीं तो दो वक़्त दस मिरकीनों को खिलाए और अगर कच्चा अनाज दे तो उसमें भी यही बात है कि अगर दिल में कुछ ख्याल था कि इतना हर एकको देगा तो उतना ही दे। और अगर कुछ ख्याल न था तो हर एकको उतना ही दे कि जितना फित्र के सदक़ों में बताया गया है।

मस'ला ६— इसी तरह मन्नत मानी कि जामा मस्जिद या मक्का में नमाज़ पढ़ेगा तो एख्तियार है जहाँ चाहे पढ़े।

मस'ला ७— किसी औरत ने यह मन्नत मानी कि अगर फलां

काम हो जाएगा तो मीलाद पढ़वा देगी या फलाने मज़ार पर चादर चढ़ायेगी, तो यह दोनों मन्नतें नहीं हैं। इसी तरह मस्जिद में गुलगुले चढ़ाने और अल्लाह भियां का ताक भरने की मन्नत मानी या बड़े पीर की ग्यारहवीं की मन्नत मानी तो यह मन्नत भी ठीक नहीं हुई। इसका पूरा करना वाजिब नहीं।

मस'ला ८— यह मन्नत मानी कि फलां मस्जिद टूटी पड़ी है उसको बनवा देगा या फलांना पुल बंधवा देगा तो यह मन्नत भी ठीक नहीं है। उसके ज़िम्मे कुछ वाजिब नहीं हुआ।

25. कसम खाना

मस'ला १— बिना ज़रूरत बात-बात में कसम खाना बुरी बात है। सच्ची बात पर भी कसम नहीं खानी चाहिए।

मस'ला २— जिसने अल्लाह की कसम खाई और कहा अल्लाह की कसम, खुदा की कसम, इज़्ज़त व जलाल की कसम, खुदा की बुजुर्गी और बड़ाई की कसम तो कसम हो गई। अब उसके खिलाफ करना ठीक नहीं। अगर खुदा का नाम नहीं लिया बस इतना कह दिया—मैं कसम खाता हूँ कि फलाँ काम न करूंगा तब भी कसम खाई गई।

मस'ला ३— अगर इस तरह कहा कि खुदा गवाह है, खुदा को गवाह करके कहता हूँ, या खुदा को हाज़िर नाज़िर जान कर कहता हूँ—तब भी कसम हो गई।

मस'ला ४— कुरआन की कसम या कलाम मजीद की कसम खाकर कोई बात कही तो कसम पूरी हो गई और कलाम मजीद को हाथ में लेकर या उस पर हाथ रख कर कोई बात कही लेकिन कसम

नहीं खाई तो कसम नहीं हुई।

मस'ला ५— यह कहा कि अगर फलों काम करूं तो बेईमान होकर मरूं, मरते वक़्त ईमान नसीब न हो, बेईमान हो जाऊं या इस तरह कहा कि फलों काम करूं तो मुसलमान नहीं, तो कसम हो गई। इसके खिलाफ करने से कफ़ारा देना पड़ेगा मगर ईमान न जाएगा।

मस'ला ६— खुदा के सिवा किसी और की कसम खाने से कसम नहीं होती। जैसे: रसूलुल्लाह की कसम, काबे की कसम, अपनी आंख की कसम, अपनी जवानी की कसम, अपने हाथ-पैरों की कसम, अपने बाप की कसम, तुम्हारी जान की कसम, तुम्हारी कसम, अपनी कसम इस तरह की कसम खाकर इसके खिलाफ करेगा तो कफ़ारा नहीं देना पड़ेगा।

मस'ला ७— किसी दूसरे की कसम दिलाने से कसम नहीं होती। जैसे: किसी ने आपसे कहा कि आपको खुदा की कसम! यह काम ज़रूर करो तो यह कसम नहीं हुई। इसके खिलाफ करना ठीक है।

मस'ला ८— कसम खाकर उसके साथ ही इंशाअल्लाह (अगर अल्लाह ने चाहा) लफ़्ज़ कह दिया। खुदा की कसम इंशाअल्लाह नहीं करूंगा तो कसम नहीं हुई।

मस'ला ९— अगर ऐसी बात पर कसम खाई जो अभी नहीं हुई बल्कि आइन्दा होगी। जैसे: खुदा की कसम! आज पानी बरसेगा, खुदा की कसम आज मेरा भाई आएगा। फिर वह नहीं आया और पानी नहीं बरसा तो कफ़ारा देना पड़ेगा।

मस'ला १०— किसी ने गुनाह करने की कसम खाई कि खुदा की कसम! आज फलाने की चीज़ चुराकर लाऊंगा, खुदा की कसम आज न पढ़ूंगा, खुदा की कसम अपने मां-बाप से कभी न बोलूंगा तो ऐसी कसम का तोड़ देना वाजिब है और कसम तोड़ने का कफ़ारा दे दे, नहीं तो गुनाह होगा।

मस'ला ११— अगर किसी ने कसम तोड़ डाली तो इसका कफ़ारा यह है कि दस मुहताजों को दो वक़्त का खाना खिला दे। कच्चा अनाज दे दे और हर फकीर को अंग्रेजी तौल से छटाक रुपर पौने दो सेर गेहूँ देना चाहिए बल्कि एहतियात के लिए पूरे दो सेर दे दे। अगर जौ दे तो उसके दुगने दे। बाकी और सब तरकीब फकीरों को खिलाने की वही हैं जो रोज़े के कफ़ारे में ब्यान हो चुकी हैं। फकीरों को कपड़े पहना दे। हर फकीर को इतना कपड़ा दे जिससे बदन का हिस्सा ढक जाए। जैसे: चादर या बड़ा लम्बा कुर्ता दे दिया तो कफ़ारा अदा हो गया, लेकिन वह कपड़ा बहुत पुराना नहीं होना चाहिए। अगर हर फकीर को सिर्फ़ एक लुंगी या एक जामा दे दिया तो कफ़ारा अदा नहीं हुआ। अगर लुंगी के साथ कुर्ता भी हो तो अदा हो गया। उन दोनों में एख़्तियार है चाहे कपड़ा दे या खाना खिलाए, हर तरह कफ़ारा अदा हो गया। यह हुक्म उसी वक़्त है जबकि मर्द को कपड़ा दे और अगर किसी ग़रीब औरत को कपड़ा दिया तो इतना होना चाहिए कि सारा बदन ढक जाए और उससे नमाज़ पढ़ सके। इससे कम हो तो कफ़ारा अदा नहीं होगा।

मस'ला १२— किसी ने कई बार कसम खाई। जैसे: एक बार कहा कि खुदा की कसम फलाना काम न करूंगा। फिर उसी दिन या उसके दूसरे दिन या तीसरे दिन गर्ज इसी तरह तीन बार कहा या यूँ कहा कि खुदा की कसम, अल्लाह की कसम, कलाम मजीद की कसम फलाना काम करूंगा फिर वह कसम तोड़ दी तो इन सब कसमों का एक ही कफ़ारा दे दे।

मस'ला १३— किसी के ज़िम्मे कसमों के बहुत कफ़ारे जमा हो गए तो हरएक का अलग-अलग कफ़ारा देना चाहिए।

26. वसीयत

मस'ला १— यह कहना कि मेरे मरने के बाद मेरा इतना माल फलां आदमी को दें या फलां काम में दे दें, वसीयत है—चाहे यह तन्दुरुस्ती में कहे या बीमारी में। फिर चाहे उस बीमारी में मर जाए या तन्दुरुस्त हो जाए और इसी तरह जिस बीमारी में आराम हो जाए उसमें भी ठीक है। बीमारी में मर जाए तो वसीयत है।

मस'ला २— अगर किसी के ज़िम्मे नमाज़ें, रोज़े या कसम वगैरा का कफ़ारा बाकी रह गया और इतना माल भी मौजूद हो तो मरते वक़्त उसके लिए वसीयत करना ज़रूरी और वाजिब है। इसी तरह किसी पर कुछ कर्ज़ हो या उसके पास कुछ अमानत रखी हो उसकी वसीयत करना भी वाजिब है। न करेगा तो गुनाहगार होगा। कुछ रिश्तेदार अगर गरीब हों जिनको शरअ से कुछ मीरास पहुंचती हो और उसके पास बहुत माल व दौलत है तो उनको कुछ दिला देना और वसीयत कर जाना मुस्तहब है। और बाकी लोगों के लिए वसीयत करने न करने का एख़्तियार है।

मस'ला ३— मरने के बाद मुर्दे के माल से पहले तो उसके कफ़न दफ़न का सामान करें। फिर जो कुछ हो उससे कर्ज़ अदा करें। अगर मुर्दे का सब माल कर्ज़ अदा करने में लगे तो सारा कर्ज़ में लगा दें। वारिसों को कुछ न मिलेगा। इसलिए कर्ज़ अदा करने की वसीयत पर बहरहाल अमल करें। अगर सब माल उस वसीयत की वजह से खर्च हो जाए तब भी कुछ परवाह न करें बल्कि अगर वसीयत भी कर जाए तब भी कर्ज़ पहले अदा कर देंगे और कर्ज़ के सिवा और चीज़ों की वसीयत का एख़्तियार सिर्फ़ माल में होता है यानी जितना माल छोड़ा है उसकी तिहाई में से अगर वसीयत पूरी हो जाए तो वसीयत पूरी करेंगे लेकिन तिहाई माल से ज्यादा वारिसों के ज़िम्मे वाजिब नहीं।

मस'ला ४— जिस शख्स को मीरास में माल मिलने वाला हो।

जैसे: मां-बाप, शौहर बेटा वगैरा तो इनके लिए वसीयत करना सही नहीं और जिस रिश्तेदार का उसके माल में कुछ हिस्सा न हो या रिश्तेदार ही न हो कोई गैर हो उसके लिए वसीयत करना ठीक है। लेकिन तिहाई माल से ज्यादा दिलाने का हक नहीं।

मस'ला ५— नाबालिग लड़की की वसीयत ठीक नहीं।

मस'ला ६— संख्त बीमारी की हालत (जिसमें बीमार मर जाए) में अपना कर्ज माफ कराने का एख्तियार नहीं है। अगर किसी वारिस पर कर्ज आता था, उसको माफ कर दिया तो वह माफ नहीं हुआ। लेकिन अगर सब वारिस यह माफी मंजूर करें और बालिग हों तब माफ होगा और किसी ने माफ नहीं किया तो तिहाई से जितना भी ज्यादा होगा माफ होगा। अक्सर दस्तूर चला आता है कि बीबी मरते वक़्त अपना महरमाफ करदेती हैयह माफ करना सही नहीं।

मस'ला ७— मर जाने के बाद उसके माल में से गोर व कफ़न से जो बचे तो सबसे पहले उसका कर्जा अदा करना चाहिए। बीबी का महर भी कर्ज में शामिल है। इसी तरह लड़कियों का हिस्सा भी जरूर देना चाहिए क्योंकि शरअ में उनका भी हक है।

मस'ला ८— मुर्दे के माल से लोगों की मेहमानदारी, आने वालों की खातिर मदारात खिलाना-पिलाना, सदका खैरात वगैरा कुछ करना जायज़ नहीं। इसी तरह मरने के बाद दफन करने तक जो कुछ अनाज वगैरा फकीरों को दिया जाता है। मुर्दे के माल में उसको देना भी हARAM है। मुर्दे को हरगिज़ सवाब नहीं पहुंचता बल्कि सवाब समझना संख्त गुनाह है। इसका बांट देना ऐसा ही है जैसे गैर का माल चुराकर दे देना। सब माल वारिस को बांट देना चाहिए।

27. मौत के बारे में

फ़रमाया रसूले खुदा सल्ल० ने—मौत को याद करो इसलिए मौत को याद करना गुनाहों को दूर करता और दुनिया से बेज़ार करता है। जब आखिरत की तलब और वहां नेमतों की स्वाहिश और यहां के दर्दनाक अज़ाब का खौफ़ होगा तो यह ज़रूरी होगा नेक कामों में तरक्की करेगा। गुनाहों से बचेगा।

जिस दुनिया की मज़मूत की जाती है उससे वे चीज़ें मुराद हैं। जो खुदा से गाफिल करें। बेस मालूम हुआ कि मौत की याद और उसका ध्यान रखना और आखिरत के सफर के लिए तैयार करना लाज़िम है।

हदीस शरीफ में है कि हर जुमे को मां-बाप (अगर वह मर गये हों) की कब्र का चक्कर लगाना या उसे घूमना मना है चाहे किसी नबी की कब्र हो या वली की।

कब्र के करीब जाकर पहले कहें :-

السَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا أَهْلَ الْقُبُورِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُسْلِمِينَ
يَغْفِرُ اللَّهُ لَنَا وَلَكُمْ وَأَنْتُمْ سَلَفُنَا وَنَحْنُ بِالْآثَارِ

“अस्सलामु अलैकुम या अहलल कुबूरि मिनल मोमीनीन वल मुस्लिमीन यग़िफ़रुल्लाहु लना व लकुम- व अन्तुम स-ल-फुना व नहनु बिल आसार

(ऐ कब्र में रहने वाले सब मोमिनों और मुसलमानों की तरफ से तुम पर सलामती हो। अल्लाह हमारी और तुम्हारी बख्शिश करे। तुम हमसे पहले जा चुके हो और हम तुम्हारे पीछे आ रहे हैं)

फिर कबले की तरफ पीठ करे और मैय्यत की तरफ मुंह करके जितना हो सके कुरआन शरीफ पढ़े।

हदीस में आया है कि जो शख्स कब्रों पर गुज़रे और सूरः इख्लास (सूरः ११२ पारा ३०) ग्यारह बार पढ़कर मुर्दे को बख़्शे या अलहम्दु शरीफ सूरः इख्लास और सूरः तकासुर पढ़कर उसका सवाब कब्रिस्तान वालों को बख़्शे या सूरः यासीन (सूरः ३६ : पारा २२) कब्रिस्तान में पढ़े तो मुर्दों के अज़ाब में खुदा कमी करेगा और पढ़ने वालों को उन मुर्दों के हिसाब से सवाब मिलेगा। खुदा हम सब को खैर की तौफ़ीक अता करे। और ईमान पर खात्मा करे आमीन।

28. नाच रंग की महफ़िलें

शादियों में दो तरह के नाच होते हैं। एक तो रंडी वगैरा का नाच जो मर्दाने में कराया जाता है। दूसरा वह जो खास तौर पर औरतों की महफ़िल में होता है कि कोई डोमन, मीरासन नाचती है और कूल्हे वगैरा मटका-घटका कर तमाशा करती है। ये दोनों हराम और नाजायज़ है।

रंडी के नाच में जो-जो गुनाह और खराबियां हैं उनको सब जानते हैं कि नामहरम औरत को सब मर्द देखते हैं। यह आंख का जिना है। उनके बोलने और गाने की आवाज़ सुनते हैं, उससे बातें करते हैं यह जुबान का जिना है। उसकी ओर मन का झुकाव होता है। यह दिल का जिना है। जो ज़्यादा बे-हया हैं उसको हाथ भी लगाते हैं। यह हाथ का जिना है। उसकी ओर चलकर जाते हैं। यह पांव का जिना है। कुछ बदकारी भी करते हैं तो यह असल जिना है।

हदीस शरीफ में यह मज़मून साफ-साफ आ गया है कि जिस

तरह बदकारी जिना है उसी तरह आंख से देखना, कान से सुनना, पांव से चलना वगैरह। इन सब बातों से जिना का गुनाह होता है। फिर गुनाह को खुल्लम खुल्ला करना, शरीअत में और भी बुरा है।

हदीस शरीफ में यह मजमून आया है कि जब किसी कौम में बे-हयाई और गंदगी इतनी फैल जाए कि लोग खुल्लम खुल्ला करने लगे तो जरूर उनमें प्लेग और ऐसी बीमारियां फैल पड़ती हैं कि उनके बुजुर्गों में कभी नहीं हुई।

अब समझो कि जब यह नाच ऐसी बुरी चीज़ है तो कुछ आदमी, जो शादी के मौके पर इसका सामान करते हैं या दूसरी तरफ वालों पर तकाज़ा करते हैं—ये लोग कितने गुनाहगार होते हैं। बल्कि यह महफिल कराने वाला, जितने आदमियों को गुनाह की तरफ बुलाता है, जितना अलग-अलग सबको गुनाह होता है, वह सब मिलाकर उस अकेले को उतना ही होगा। जैसे मान लो मज्लिस में सौ आदमी आए, तो जितना गुनाह हर-हर आदमी को हुआ, वह सब उस अकेले को हुआ यानी मज्लिस को पूरे सौ आदमियों का गुनाह हुआ, बल्कि उसकी देखा-देखी, जो कोई जब कभी ऐसा जल्सा करेगा उसका गुनाह भी उसको होगा, बल्कि उसके मरने के बाद भी, जब तक उसकी बुनियाद डाला हुआ सिलसिला चलेगा, उस वक़्त तक बराबर उसके नाम-ए-आमाल में गुनाह बढ़ता रहेगा। फिर उस मज्लिस में बाजा-गाजा भी बे-धड़क बजाया जाता है। जैसे तबला, सारंगी वगैरह। यह भी एक गुनाह हुआ।

प्यारे नबी सल्ल० ने फरमाया है कि मुझको मेरे पालनहार ने इन बाजों को मिटाने का हुक्म दिया है। ख्याल करने की बात है कि जिसके मिटाने के लिए प्यारे नबी सल्ल० शरीफ लायें उसको रौनक देने वाले के गुनाह का क्या ठिकाना।

दुनिया का नुक़सान इसमें औरतों के लिए यह है कि कभी उनके शौहर या दुल्हा की तबीयत नाचने वाली पर आ जाती है और अपनी

बीबी से दिल हट जाता है। यह सारी उम्र रोती है फिर गुज़ब यह है कि इसको नाम व इज़्ज़त बढ़ाने की वजह समझती है और इसको न होने को जिल्लत और शादी की बेरौनफ़ी जानती है और गुनाह पर घमंड करना और गुनाह न करने को बे-इज़्ज़ती समझना—इससे ईमान चला जाता है तो यह देखो कितना बड़ा गुनाह है।

कुछ लोग कहते हैं कि लड़की वाला नहीं मानता, बहुत मजबूर करता है उनसे पूछना चाहिए कि लड़की वाला अगर यह जोर डाले कि ज़नाना लिबास पहन कर तुम खुद नाचो तो क्या लड़की लेने के लिए तुम खुद नाचोगे या गुस्से से भर कर मरने-मारने को तैयार हो जाओगे और लड़की न मिलने की कुछ परवाह न करेंगे।

मुसलमानों का फर्ज़ है कि शरीअत ने जिसको हराम किया है, उससे उतनी ही नफरत होनी चाहिए जितनी अपनी तबीयत के खिलाफ कामों से होती है। तो जैसे इसमें शादी होने की कुछ परवाह नहीं होती, उसी तरह शरीअत के खिलाफ कामों से साफ जवाब दे देना चाहिए कि चाहे शादी करो चाहे न करो, हम हरगिज़ नाच न होने देंगे। इसी तरह उसमें शरीक भी नहीं होना चाहिए, न देखना चाहिए।

अब रह गया वह नाच जो औरतों में होता है, उसको भी ऐसा ही समझना चाहिए। चाहे उसमें ढोल गैरह किसी किस्म का बाजा हो या न हो, हर तरह का नाजायज़ है। किताबों में बंदरों के नाच-तमाशों तक को मना लिखा है तो आदमियों का नाचना किस तरह बुरा न होगा। फिर यह कि कभी घर के मर्दों की भी नज़र पड़ती है और उसमें वही खराबियाँ होती हैं, जिनका अभी ध्यान हुआ और कभी यह नाचने वाली गाती भी हैं और घर के बाहर मर्दों के कानों में आवाज़ पहुँचती है। जब मर्दों को औरतों का गाना सुनना गुनाह है, तो औरत इस गुनाह की वजह बनी, वह भी गुनाहगार होगी।

कुछ औरतें उस नाचने वाली के सिर पर टोपी रख देती हैं और मर्दों की शक्ल या रूप बनाना हराम है, तो इस गुनाह की तज़ज़ीज़

करने वाली भी गुनाहगार होगी और अगर बाजा उसके साथ हो तो बाजें की भी बुराई अभी लिख चुके हैं।

इसी तरह गाना है। चूँकि अवसर गाने वाली जवान, अच्छी आवाज़ वाली, इश्क और मुहब्बत के मजमून याद रखने वाली खोजी जाती हैं और अवसर उसकी आवाज़ गैर मर्दों के कानों में पहुँचती है और इस गुनाह की वजह घर की औरतें होती हैं और कभी-कभी ऐसे मजमूनों के शेरों से कुछ औरतों के दिल भी खराब हो जाते हैं। फिर रात-रात भर यह सिलसिला रहता है। बहुत-सी औरतों की नमाज़ें सुबह की रह जाती हैं, इसलिए यह भी मना है। मतलब यह है कि हर किस्म का नाच और राग बाजा जो आजकल हुआ करता है, सब गुनाह है।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اِنَّ الْحَمْدَ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ
وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ
وَاتَّبَاعِهٖ اَجْمَعِيْنَ بِرَحْمَتِكَ يَا رَحِمَ الرَّاحِمِيْنَ .

(और हमारी तरफ से आखिरी दावत है कि बेशक सब तारीफें अल्लाह ही के लिए हैं जो सब आलमों का पालने वाला है। दरुद व सलाम नाज़िल हो ऊपर रसूले करीम सल्ल० और उनकी सब औलाद और असहाब पर अल्लाह की रहमतों के साथ। ऐ सब रहमत करने वालों से ज्यादा रहम करने वाले।)